TEXT LIGHT
WITHIN THE BOOK
ONLY

प्रत्यावर्त्तन

द्वितीय खण्ड

लेखक

अप्टन सिंक्लेअर

प्राची प्रकाशन

कलकत्ता

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182482

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 83/S61P Accession No. G.H.243

Author सिंक्लेअर, अप्टन। Vol. II

Title प्रत्याक्रमण। 1955

This book should be returned on or before the date last marked below.

प्रत्यावर्त्तन

द्वितीय खण्ड

●

मूल लेखक

अप्टन सिंक्लेअर

अनुवादक

नन्दकुमार पाण्डेय

प्रकाशक

प्राची प्रकाशन

१२, चौरंगी स्क्वायर,

कलकत्ता—१

प्रकाशक :—
प्राची प्रकाशन
१२, चौरंगी स्कायर,
कलकत्ता—१

प्रथम संस्करण जून १९५५
मूल्य दो रुपया

मुद्रक :—
जेनरल प्रिण्टिङ्ग वर्क्स लि०
८३, पुराना चीनाबाजार स्ट्रीट,
कलकत्ता।

तृतीय भाग

अध्याय १५

● क्या यह राजद्रोह है ? ●

(१)

हड़ताल पूरे दो सप्ताह चली किन्तु लैनी उसे अन्त तक देखने के लिये ठहरा नहीं। वह जानता था कि इसका अन्त किस प्रकार होगा। इसीलिये अधिक समय न नष्ट करके वह अमेरिका के लिये रवाना हो गया। उसने रेम्ब्राण्ड्ट का जो बहुमूल्य चित्र खरीदा था उसे सावधानी के साथ पैक करके जहाज पर रखवा दिया और स्वयं वायुयान द्वारा लिस्बन और अजोर के रास्ते न्यूयार्क के लिये रवाना हो गया। इस बार वह वाशिंगटन नहीं गया क्योंकि उसके पास कोई विशेष समाचार न था। एडगरमियर में शान्ति-रेडियो पर उसने एक भाषण देते हुए अपने श्रोताओं को बताया कि फ्रांस की इस हड़ताल का अमेरिका तथा शेष स्वतन्त्र संसार पर क्या प्रभाव पड़ सकता है। देश के अन्दर शान्ति बनाये रखने के लिये यह आवश्यक है कि मजदूरों को यह समझाया जाय कि शिक्षा, संगठन तथा शान्तिपूर्ण सामाजिक उपायों द्वारा उनकी स्थिति में सुधार हो सकता है। साथ ही शेष संसार में शान्ति की रक्षा के लिये यह आवश्यक है कि राष्ट्र संघ की शक्ति बढ़ायी जाय और सोवियत रूस के विक्षिप्त नेताओं के मन में यह धारणा भलीभांति प्रस्थापित कर दी जाय कि युद्ध के अतिरिक्त उनका मनोरथ पूर्ण होने का कोई दूसरा उपाय नहीं है और युद्ध हुआ तो उनकी पराजय निश्चित है।

रेडियो पर इस प्रकार के विचारों का व्यक्तीकरण होने का यह अर्थ था कि प्रतिवाद के रूप में भिन्न भिन्न प्रकार की आलोचनाएं प्रत्यालोचनाएं आवें। वही हुआ भी। साधारण डाक के अतिरिक्त तार, टेलीफोन और केबिलग्राम द्वारा भिन्न भिन्न प्रकार की टिप्पणियां आयीं। कई आलोचनाएं अत्यन्त कटु थीं; किन्तु कुछ लैनी के विचारों का समर्थन तथा अनुमोदन भी करती थीं। शान्ति परिवार को इस बात में ही संतोष था कि उसके श्रोताओं ने इन विचारों को सम-

झने और परखने का प्रयत्न किया। किसी राष्ट्र की चिन्तनधारा—संसार की चिन्तनधारा का तो कहना ही क्या—को बदलने का कार्य अनिवार्यतः धीमा और कष्टप्रद होता है। इसमें वर्षों का समय लग सकता है। और कठिनाई की बात यह थी कि समय बहुत ही कम था।

लारेल ने लैनी को बहुत कुछ बताया। उसकी अनुपस्थितिमें रेडियो पर कौन कौन वक्ता आए, श्रोताओं पर उनका क्या प्रभाव पड़ा, भविष्य के लिये क्या क्या योजनाएं बनीं—इन सारी बातों की चर्चा की। लैनी के लिये और भी बहुत से काम थे। पत्रों का एक अम्बार लगा हुआ था ; प्रत्येक पत्र को पढ़-कर उसका उत्तर देना आवश्यक था। हिसाब किताब देखना भी आवश्यक था। शान्ति परिवार ने खर्च का यह हिसाब लगाया था कि वह पांच वर्ष तक काम करेगा और प्रति सप्ताह प्रायः चार हजार डालर का नुकसान रहेगा। किन्तु वस्तुतः नुकसान इतना अधिक न निकला। फलस्वरूप भविष्य के लिये काफी रुपया बच रहा था। यह प्रश्न विचाराधीन था कि भविष्य में संसार को शान्ति-परिवार के परामर्श की आवश्यकता रहेगी अथवा नहीं। इस प्रश्न पर मतभेद था। रिक का कहना थो कि यह शीत-युद्ध अभी कम से कम बीस वर्ष चलेगा; दूसरी ओर बर्नहाड्ट मान्क का विश्वास था कि आगामी वर्ष ही शीत-युद्ध वास्तविक अग्नि-युद्ध में परिवर्तित हो जाएगा।

लैनी ने मान्क को टेलीफोन करके फ्रित्ज के बारे में जिज्ञासा प्रकट की। मान्क ने कहा कि अभी तक उसका कोई पता नहीं लग सका है। "इस बात को लेकर अधिक परेशान होना व्यर्थ है। लाखों व्यक्ति इसी प्रकार गायब हो चुके हैं और भविष्य में भी होते रहेंगे।"

एडगरमीयर में लैनी इस बात की चर्चा अन्य किसी व्यक्ति के साथ न कर सकता था। फलस्वरूप वह अपनी छाती पर पत्थर रखकर चुप हो रहा। किन्तु मन ही मन चिन्ताओं का अन्तहीन जाल अपने ताने बाने फैलाते रहा। वह जानता था कि पहले नाजी लोग और अब कम्युनिस्ट नेता अपने कैदियों पर कैसा भयानक अत्याचार करते हैं। वे अत्याचार के नये नये साधनों का आविष्कार करने में लगे रहते हैं। मन ही मन वह कल्पना किया करता था कि वह सुन्दर

जर्मन युवक इस समय किसी बंदीगृह में अत्याचारियों द्वारा घिरा हुआ होगा और उससे प्रश्न पर प्रश्न पूछे जा रहे होंगे। उसकी आंखों के सामने तेज बिजली के लट्टू प्रतिक्षण चमकते रहते होंगे। कभी उसे अंगूठों के बल लटका दिया जाता होगा, कभी उसके नाखूनों में आलपीनें खोंस दी जाती होंगी। कभी उसे ऐसे विचित्र यंत्रणागृह में रख दिया जाता होगा कि किसी करवट बैठना या सोना सम्भव न हो। प्रतिक्षण उसे यह बताया जाता होगा कि अभी और भयानक अत्याचार शेष हैं। यंत्रणाओं का क्रम तब तक विविध रूप में चलता रहेगा जब तक कि वह अपना "अपराध" स्वीकार करके कागज पर हस्ताक्षर न कर देगा।

लैनी मन ही मन सोच रहा था कि वे लोग उससे क्या पूछ रहे होंगे। क्या वे उसके उन सहपाठियों के नाम जानना चाहते होंगे जिन पर नाजी होने का संदेह होगा? क्या फ्रित्ज अत्याचार से घबरा कर अपने सहपाठियों का भेद खोल देगा? क्या वे लोग उससे 'वोल्किरचरबण्ड' का भेद जानना चाहेंगे? क्या वे उससे उसके पिता के बारे में कुछ पूछेंगे?—या वे लोग उससे यह पूछ रहे होंगे कि वह अमरीकी क्षेत्र में क्यों गया था और उस रहस्यमय व्यक्ति से क्यों मिला था जो "रिआस" रेडियो पर हर फ्रोहलिच के नाम से भाषण दिया करता था। फ्रित्ज बेचारे को इस बात की कल्पना भी न होगी कि लैनी उसके अत्याचारियों के पहुंच के बाहर सुदूर अमेरिका में है।

(२)

इस सोच विचार से एक बड़ी विचित्र बात हुई और लैनी के मन में वे पुराने प्रश्न फिर उत्पन्न हो गए जिनका उत्तर वह इतने दिनों से खोज रहा था। बहुत दिनों की बात हुई। प्रथम महायुद्ध चल रहा था। लैनी अपने पिता के साथ कनेक्टीकट में रहता था। एक दिन प्रातःकाल उसने बिस्तर पर आँखें खोलीं तो देखा कि पलङ्ग के पास रिक खड़ा हुआ है। रिक उन दिनों वायु सेना में एक वायुयान चालक के रूप में काम कर रहा था। यह स्वप्न ही था क्योंकि जब लैनी ने आंखें मल कर दुबारा देखा तो रिक का कोई चिन्ह न था। एक छाया सी आई और चली गयी। उसने एक शब्द भी न कहा था किन्तु उसके मुख-मण्डल पर गहरी उदासी का भाव था। लैनी के मन में यह आशंका हुई कि यह एक

भयानक अपशगुन है और उसका सबसे प्रिय मित्र अब इस संसार में नहीं रहा। बाद में उसकी यह आशंका साधार प्रमाणित हुई थी क्योंकि जिस समय यह छाया लैनी को दिखाई पड़ी थी उसी समय रिक एक भयानक दुर्घटना की चपेट में आकर बुरी तरह घायल हुआ था।

इस घटना के बारह वर्ष बाद न्यूयार्क में लैनी की भेंट एक पोलिश महिला से हुई। इस महिला में प्रेतात्माओं का "मीडियम" बनने की विलक्षण शक्ति थी। लैनी और इर्मा बार्नेस, जो उस समय लैनी की पत्नी थी, इस पोलिश महिला को अपने घर पर ले आए थे और उसे स्थायी रूप में अपने पास रख लिया था। इसके दस वर्ष बाद लैनी ने इर्मा को तलाक देकर लारेल से विवाह कर लिया। और यह देखा गया कि लारेल भी प्रेतात्माओं को बुलाने के लिये एक उपयुक्त "मीडियम" है।

किन्तु लारेल को अपनी इस आदिभौतिक शक्ति के प्रयोग के लिये अधिक अवसर न मिलता था क्यों कि वह सदा सांसारिक झमेलों में फंसी रहती थी। प्रतिदिन प्रातःकाल उसकी डाक का थैला आ जाता था और भिन्न भिन्न पत्रों को पढ़ने तथा उनका उत्तर देने में काफी समय निकल जाता था। इसके अतिरिक्त उसे रेडियो पर भाषण देने के लिये नये नये वक्ताओं का प्रबन्ध भी करना पड़ता था। अपने दोनों बच्चों की देखरेख का उत्तरदायित्व भी कुछ कम न था। कार्य व्यस्त लारेल पर महाकवि वर्डस्वर्थ की उक्ति अक्षरशः चरितार्थ होती थी—

"The world is too much with us ; Late and soon,
Getting and spending we lay waste our powers"

एक दिन संन्ध्या के समय दिन भर के कार्यभार से थक कर लारेल बिस्तरपर लेट कर आराम कर रही थी। लैनी बगल के कमरे में बैठा हुआ कुछ पढ़ रहा था। इतने में ही उसे ऐसा लगा मानों लारेल कुछ कह रही हो। पहले तो उसने सोचा कि शायद वह अपने सेक्रेटरी को कोई पत्र लिखा रही हो। किन्तु उसने कमरे में सेकरेटरी को प्रवेश करते हुए न देखा था। इसके अतिरिक्त लारेल के स्वर में कुछ ऐसी विचित्रता थी कि उसका ध्यान बरबस उधर आकृष्ट हो गया। वह चपचाप उठकर दबे पैरों दरवाजे तक गया और देखा कि लारेल

ध्यानमग्न सी बैठी है, उसकी आंखें बन्द हैं और वह धीरे धीरे कुछ बड़बड़ा रही है। लैनी समझ गया कि लारेल पर किसी प्रेतात्मा का आगमन हो गया है। वह चुपचाप खड़ा रहा और ध्यानपूर्वक सुनता गया—

"—यह स्थान" लारेल कह रही थी, "यहां बहुत से लोग हैं। मुझे यह स्थान पसंद नहीं है। सब दुखी प्रतीत हो रहे हैं। सब बीमार लगते हैं। सब लेटे हुए हैं। यह कोई अच्छी जगह नहीं है। अंधेरा सा है। मुझे साफ साफ दिखाई नहीं पड़ता। मेरा कोई अपराध नहीं है। मैं नहीं जानती कि मैं यहां क्यों आयी हूँ और ये लोग मुझसे क्या चाहते हैं।"

कुछ देर के लिये वह चुप हो गयी। अत्यन्त मृदु स्वर में लैनी ने कहा, "आप हैं क्या मैदम ?"

ब्यूटी बड के घर में उस वृद्धा पोलिश महिला को "मैदम" के नाम से पुकारा जाता था।

"अरे, तुम भी यहां हो लैनी ?" आवाज ने कहा। यह आवाज लारेल के कण्ठ से निकल रही थी किन्तु न जाने क्यों वह कुछ भिन्न सी प्रतीत होती थी। लैनी इस बात का निश्चय न कर पा रहा था कि यह भिन्नता वास्तविक है या काल्पनिक।

"बहुत दिनों से मुझे तुम्हारा समाचार न मिला था लैनी।"

"मैं बाहर गया हुआ था और कार्यव्यस्त भी बहुत अधिक था।"

"तुम्हारे पुराने मित्रों को तुम्हारी आवश्यकता है। वे मेरे पास बहुधा तुम्हारा पता ठिकाना पूछने के लिये आया करते हैं।"

लैनी ने अपनी जेब से पेन्सिल निकाल ली और लारेल की बगल में बैठकर लिखने लगा। कुर्सी लाने के लिये समय न था इसलिये वह फर्श पर ही बैठ गया था। "इस समय आप कहां हैं, मैदम ?" उसने धीरे से प्रश्न किया।

"मुझे कुछ पता नहीं है। बड़ी विचित्र बात है। यहां कुछ लोग दिखाई दे रहे हैं जो जर्मनी से आए हैं। किन्तु वे यह नहीं बताते कि वे यहां क्यों आए हैं! एक नवयुवक दिखाई दे रहा है—एक मिनट ठहरो। वह कुछ कहना चाहता

है। उसके बाल भूरे और आंखें नीली हैं ; कद लम्बा है। वह तुमसे कुछ कहना चाहता है पर यह बात असम्भव है। वह बेहोश हो गया है।"

"यदि वह बेहोश है तो मुझसे बात करने के लिये उत्सुक कैसे है ?"

"बेहोश तो उसका शरीर हुआ है, आत्मा जाग रही है। उसकी आत्मा तुमसे कुछ कहना चाहती है। वह कहता है उसका नाम फर्डीनेण्ड है और तुम उसे जानते हो।"

"हाँ, मैं उसे जानता हूं। उसे क्या हुआ है ?"

"उस पर बड़ा भयानक अत्याचार हुआ है। मैं समझती हूँ वह यहां अधिक समय तक टिक न सकेगा।"

"क्या आप का मतलब यह है कि वह मर रहा है ?"

"नहीं, वह बेहोश हो गया है। शीघ्र ही होश में आ जायगा। वह मुझसे कह रहा है कि मैं तुम्हे बता दूं कि—ठहरो, वह अंगरेजी बोल रहा है, किन्तु उसका उच्चारण विदेशी सा है। मैं समझती हूं वह जर्मन है।"

"हां, मैदम। वह जर्मन ही है।"

"वह मुझसे कह रहा है कि मै तुम्हें बता दूं कि उसने अभी तक अपना भेद प्रकट नहीं किया है। वह चाहता है कि तुम उसे साहस दो। वह इस समय भयानक विपत्ति में है।"

"उससे कह दो कि मैं उसे हृदय से प्यार करता हूँ। मैदम, उससे यह भी कह दो कि मैं उसका विश्वास करता हूं। उसे सांत्वना दो। कह दो कि उसके हृदय में जो शक्ति है वह उससे कोई भी न छीन सकेगा।"

"वह तुम्हारी बातें सुन रहा है। वह तुमसे कुछ कहना चाहता है। एक कविता सी प्रतीत होती है—अंगरेजी में। प्रारम्भ में "हश !" शब्द है। कोई लोरी सी है। क्या तुम्हें ऐसी कोई कविता याद आ रही है?"

"हां, मैदम। यह कविता है–हश ! एन्ड हीड नाट फॉर ऑल थिन्गस् पास!"

"वह कह रहा है कि यह एक अत्यन्त सुन्दर कविता है।"

"उसे कह दो कि अत्याचार सहन करने की एक सीमा होती है। सीमा पार

होते ही मनुष्य उस लोक में पहुंच जाता है, जहां शान्ति ही शान्ति है। उससे कह दो कि वह हिम्मत न हारे।"

"अब वह होश में आ गया है और अपने शत्रुओं के सम्मुख जा रहा है।—लैनी मुझसे कुछ बातें करो ; मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है।"

इस बार लैनी को कोई संदेह न रहा। यह उस वृद्धा पोलिश महिला की आवाज ही थी जो लारेल के कण्ठ से निकल रही थी। वृद्धा महिला इस संसार में एकदम अकेली थी और उसने मन ही मन लैनी को अपने पुत्र के रूप में मान लिया था।

"मैं पिछले कुछ समय से बड़ा कठोर परिश्रम कर रहा हूं। तृतीय महायुद्ध की सम्भावना उपस्थित हो गई है और मैं तथा लारेल दोनों ही इसे रोकने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं।"

"किन्तु, मुझे मत भूलना लैनी। मेरी याद करते रहना।"

(३)

आवाज समाप्त हो गई। लैनी प्रतीक्षा की मुद्रा में चुप चाप बैठा रहा। थोड़ी ही देर में लारेल ने दो एक आहें खीच कर करवट ली और अपनी आंखें खोल दीं। लैनी की ओर आश्चर्यमिश्रित भाव से देखते हुए उसने कहा, "मैं सो गयी थी।'

"नहीं, तुम समाधि की अवस्था में थीं। मैदम आई थीं।"

लारेल चौंक कर उठ बैठी। उसे इस प्रकार के आदिभौतिक अनुभवों के प्रति बड़ा कौतूहल रहता था। "मुझे बताओ क्या क्या हुआ!"

"बड़ी विचित्र बात थी वह। किन्तु इसके सम्बन्ध में मैं अभी कुछ बता नहीं सकता। इसे गुप्त रखना आवश्यक है। संक्षेप में, एक व्यक्ति कम्युनिस्टों के हाथ पड़ गया है। वे लोग उस पर कठोर से कठोर अत्याचार कर रहे हैं।—और सबसे अधिक विचित्र बात तो यह है कि उसने एक कविता का जिक्र किया जो कि मैंने उसे सुनायी थी।"

यह एक ऐसी समस्या थी जिसे लैनी पिछले तीस वर्षों से सुलझाने का प्रयत्न कर रहा था। उसे प्रेतात्माओं के अस्तित्व पर विश्वास करने की इच्छा न होती

थी । वह इस बात पर विश्वास न करना चाहता था कि उसने अभी जो कुछ देखा वह एक आदिभौतिक चमत्कार था और उस पोलिश महिला की प्रेतात्मा वस्तुतः लारेल के शरीर में आ गयी थी। वह इस समस्या पर विचार करने लगा । कहीं यह उसके मस्तिष्क की सुप्त भावनाओं का प्रत्यक्षीकरण तो न था ? उसके मन में मैदम की स्मृति अब भी ताजी थी ; फ्रित्ज मेसनर के भाग्य पर वह एक लम्बे अर्से से विचार कर रहा था, वह गीत भी उसके मन में था । यह गीत एण्ड्रू लैन्ग नामक एक कवि का था और कुछ समय पूर्व एक अंगरेजी पत्रिका में प्रकाशित हुआ था । लैनी को यह बड़ा अच्छा लगा था और उसने पत्रिका से फाड़ कर अपने पास रख लिया था। कविता का एक छन्द इस प्रकार था।

"जीवन चक्र निरन्तर गतिमय
महाकाल की मिटती कब लय ?
प्रतिक्षण लाता है परिवर्तन—
मृत्यु चिरन्तन ; नश्वर जीवन।"

इन पंक्तियों में मनुष्य की असहाय निरावलम्ब आत्मा का आर्त्तनाद था। भाग्य की विडम्बना को मेटना मनुष्य के बूते के बाहर की बात है। आज से प्रायः तीन हजार वर्ष पूर्व पैगम्बर ने घोषणा की थी "मानव का अस्थिमज्जामय शरीर घास की भांति नश्वर है"। किन्तु प्रश्न यह है कि जब यह मानव घास सूख कर झड़ जाती है तब क्या होता है ? क्या वह सदा के लिए विलीन हो जाती है ! हमारी सहज बुद्धि तो यही कहती है। किन्तु आज के युग में सहज बुद्धि का बुरा हाल है। उदाहरण के लिए आइंसटाइन के नये सिद्धान्त सहज बुद्धि को चुनौती दे रहे हैं। दो शताब्दी पूर्व दार्शनिक इमानुअल कान्ट ने यह घोषणा की थी कि समय कोई वास्तविकता नहीं है बल्कि वह हमारे विचारों की एक सरणि मात्र है। सहज बुद्धि इसका क्या अर्थ लगायेगी ? यह कहना कि समय अपने आप में कुछ नहीं बल्कि विचारों की एक सरणि मात्र है इस ओर संकेत करता है कि अतीत में जो कुछ अस्तित्वमय था वह आज भी अस्तित्वमय है और भविष्य में जो अस्तित्वमय होगा वह इस समय भी अस्तित्वमय है।

सहज बुद्धि इन दार्शनिक उड़ानों की अपेक्षा "टेलीपैथी" पर विश्वास करना

अधिक सरल कार्य समझती है। किन्तु टेलीपैथी किस प्रकार कार्य करती है? निश्चय ही समाधि की अवस्था में लारेल अपने पति के अन्तर्मन में प्रविष्ट हो गयी थी और अनजान में ही उसने उन सारे रहस्यों को प्राप्त कर लिया था जो कि अन्य किसी प्रकार से जानने का कोई उपाय न था। किन्तु समाधि अवस्था भंग होने पर उसे इन बातों की कोई स्मृति न रह गई थी। लैनी ने कभी उस कविता का जिक्र न किया था और 'फर्डीनेण्ड' नाम का तो उसने किसी भी अवस्था में लारेल के सामने उच्चारण न किया था।

अब उसने लारेल को बता दिया कि वह एक जर्मन युवक को जानता है जिसे रूसी पुलिस पकड़ कर ले गयी है। मैदम इस युवक के बारे में ही कह रही थी। लारेल ने कहा, "हम सब के मस्तिष्क अन्त में एक ही हैं"। उसका तात्पर्य केवल अपने तथा लैनी के मस्तिष्क से न था। उसका संकेत उस जर्मन युवक तथा मैदम के मस्तिष्क की ओर भी था। लैनी ने अमेरिका के सबसे अधिक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक विलियम जेम्स की चर्चा की। जेम्स ने वर्षों तक बोस्टन की एक महिला, श्रीमती पाइपर के सम्बन्ध में अनुसंधान कार्य किया था। इस महिला की आदिभौतिक शक्ति की बड़ी ख्याति थी; वह एक आश्चर्यजनक "मीडियम" थी। उस पर कभी किसी प्रकार के छल-कपट का अभियोग न लगाया जा सका था। जेम्स ने इस महिला के सम्बन्ध में अपना वह निर्णय दिया था कि या तो उसे वस्तुतः प्रेतात्माओं से संदेश प्राप्त होते थे या उसमें ऐसी शक्ति थी कि संसार के प्रत्येक मनुष्य के मन के अन्दर प्रविष्ट होकर गुप्त रहस्यों का पता लगा लेती थी !!

लैनी समस्या पर अपने दृष्टिकोण से विचार करने लगा। क्या उसे फ्रित्ज मेसनर के सम्बन्ध में जो जानकारी मिली है वह ठीक है? यदि लारेल ने समाधि की अवस्था में जो कुछ कहा उसका एक अंश भी सत्य है तो इसका यह अर्थ होगा कि बेचारे फ्रित्ज पर भयानक अत्याचार हुआ था जिसके कारण वह संज्ञाशून्य हो गया था। कैसी विचित्र बात है कि जब उसका चेतन मन संज्ञाशून्य हो गया तब उसका अवचेतन मन एक "मीडियम" के साथ बातें करता रहा! और इसके बाद जब वह फिर से होश में आ गया तब "मीडियम" के साथ बातें करना असम्भव हो गया। सहज बुद्धि तो इस प्रकार की बातों को एक दम काल्पनिक ही कहेगी।

किन्तु क्या अवचेतन मन स्वयं एक काल्पनिक धारणा नहीं प्रतीत होता ? प्रत्येक मनोवैज्ञानिक कहता है कि हमारे अन्दर एक "सुप्त" मन नाम की वस्तु रहती है। किन्तु सहज बुद्धि की दृष्टि से जागरूकता ही मन का एकमात्र लक्षण है।

भौतिकतावादी मनोवैज्ञानिक मन की आणविक व्याख्या करते हैं। उनके अनुसार मस्तिष्क के प्रत्येक अणु में जो विद्युत प्रवाह रहता है उसमें परिवर्तन होने से ही नये विचार का उदय होता है। तो मनुष्य के मन का क्या इतना ही रहस्य है ? क्या मानव मन अरबों खरबों अणु-परमाणुओं का एक सामूहिकीकरण मात्र है ? क्या इन अणु परमाणुओं के आकस्मिक स्थान परिवर्त्तन के फलस्वरूप ही हमारे विचारों का उदय अस्त होता है ? एक व्यक्ति ने एक साम्राज्य की नींव डाली, दूसरे ने एक पुस्तक लिखी, तीसरे ने एक संगीत रचना की।—और यह सब केवल इन अणु-परमाणुओं के आकस्मिक स्थान परिवर्तन से ही हो गया ? यह सहज बुद्धि है।

(४)

लैनी यदा-कदा "डेली वर्कर" समाचार पत्र पढ़ लेता था क्यों कि वह कम्युनिस्टों के कार्यकलाप की यथासम्भव जानकारी रखना चाहता था। एक दिन उसने पढ़ा कि हैन्सी रोबिन किसी पूर्वी मोहल्ले में संगीत आयोजन करने जा रहा है। उसने लारेल से इसकी चर्चा की। लारेल इस समय मुक्त थी ; उसकी बच्ची बड़ी हो गई थी और उसकी सेवा सुश्रूषा का भार एक कुशल नर्स पर थो। उसने लैनी से कहा, "चलो, हम लोग हैन्सी का संगीत सुन आवें।"

उन्हों ने किसी के साथ इसकी चर्चा न की क्यों कि वे यह दिखाना चाहते थे कि अब उन्हें हैन्सी और बेस के मामलों में कोई विशेष दिलचस्पी नहीं है।

मोटर में दोनों शहर आए। एक अच्छे होटल में साँध्य भोजन करने के उपरान्त दोनों उस हाल की ओर चले जहां संगीतका आयोजन किया गया था। उनकी गाड़ी विशेष तड़क भड़कदार न थी कि लोगों का ध्यान आकर्षित करने लगे। इसके अतिरिक्त वहां और भी बहुत सी गाड़ियां आई थीं। दूर दूर से लोग इस प्रसिद्ध वायलिन—वादक का संगीत सुनने के लिए आए थे। लैनी ने बालकनी की दो सीटें ले लीं। यहां किसी जाने पहचाने व्यक्ति के साथ भेंट हो जाने की

सम्भावना कम थी। चारों ओर लोगों की भीड़ थी। इस भीड़ में अधिकांश नवयुवक और विदेशी थे। ये लोग अपने आप को "सर्वहारा समाज के सदस्य" बताते थे। यह कोई अपमान अथवा लज्जा की बात न थी। लैनी और लारेल स्वयं सर्वहारा वर्ग के प्रति सहानुभूतिशील थे और सदा सामाजिक न्याय का समर्थन करते थे। किन्तु जब ये लोग घृणा और बर्बरता से अतिरंजित विद्रोह की बातें करने लगते थे तो लैनी और लारेल कुण्ठित हो उठते थे।

इस भीड़ में बहुत से व्यक्ति ऐसे भी थे जो केवल संगीत के आकर्षण से आए थे। संगीत में वर्ग भावना और वर्ग-शत्रुता नहीं रहती। जब हैन्सी काले कपड़ों में सुसज्जित होकर वायलिन लिए हुए रंगमंच पर आया तब श्रोताओं ने उल्लास पूर्ण करतल ध्वनि से उसका स्वागत किया। किन्तु यह कहना कठिन था कि कितने व्यक्ति संगीतज्ञ हैन्सी का स्वागत कर रहे थे और कितने नये क्रान्तिवादी हैन्सी का।

हैन्सी के साथ एक नवयुवक सहकारी भी था। उसने लैनी को बता दिया था कि पार्टी के आदेश के अनुसार ही उसे इस नवयुवक को अपने साथ रखने के लिये वाध्य होना पड़ा है। हैन्सी एक प्रसिद्ध व्यक्ति था और पार्टी ने इस बात का निश्चय किया था कि उसकी प्रसिद्धि तथा आर्थिक क्षमता का अधिक से अधिक शोषण किया जाय।

बेस अब एक गुप्त सदस्य का कार्य करती थी। उसने अपना पार्टी-कार्ड वापस कर दिया था और सदस्यों की तालिका से उसका नाम काट दिया गया था। पार्टी के गुप्त सदस्य कभी प्रकाश में नहीं आते और पार्टी प्रेस में भी उनके नाम का उल्लेख नहीं किया जाता। यद्यपि पार्टी ने बेस को यह आदेश न दिया था कि वह हैन्सी को तलाक दे दे तथापि उसे इस बात का कड़ा आदेश था कि वे दोनों साथ साथ कहीं न जांय। संक्षेप में बेस की सम्पूर्ण क्रियाशीलता गुप्त हो गयी थी। पार्टी के किसी सदस्य के साथ उसे न देखा जा सकता था; पार्टी के दफ्तर में भी उसका आना जाना बन्द हो गया था। रूसी राजदूतावास जैसे स्थानों में तो उसकी उपस्थिति एकदम अकल्पनीय ही थी।

हैन्सी रंगमंच पर कभी किसी प्रकार का प्राक्कथन न करता था; उसका संगीत

स्वयं पंचमुख होकर बोलता था। यदि कभी किसी प्रकार की वर्ग भावना का समावेश आवश्यक भी होता था तो वह श्रोताओं की कल्पना द्वारा अपने आप हो जाता था। हैन्सी ने अपना वायलिन वादन शुरू किया और धीरे धीरे चरमोत्कर्ष की ओर बढ़ने लगा। अन्त में संगीत की गति क्रमशः तीव्र होती हुई एक ऐसे स्तर पर पहुंच गयी कि श्रोतागण अपने उत्साह को दबा न सके। उन्होंने करतल ध्वनि से हैन्सी का ऐसा स्वागत किया जैसा कि किसी विजयी सेनापति को ही प्राप्त होता है। भीड़ का यह उच्छृङ्खल उत्साह देखकर लारेल घबरा गयी। उसने लैनी से कहा, "हैन्सी आवश्यकता से अधिक आगे बढ़ रहा है। इससे तो लाभ के स्थान पर हानि हो रही है।"

भीड़ ने बार बार इस संगीत की पुनरावृत्ति का अनुरोध किया। अन्त में जब हैन्सी थक गया उसने "होम स्वीट होम" गीत बजाया और जलसा हंसी खुशी के साथ समाप्त हुआ। संगीत समाप्त होते ही लोग हैन्सी की ओर दौड़ पड़े। स्त्रियां सबसे आगे थीं। सदा ऐसा ही होता था। लोग हैन्सी के लिये पागल थे। वह रंगमंचपर अपनी वायलिन आगे किये हुए सुरक्षा की मुद्रा में खड़ा था। उसे भय था कि लोग उसके साथ हाथ मिलाने के लिये आग्रह न करें। वह कभी इसके लिये राज़ी न होता था क्योंकि उसकी कोमल उंगलियां बड़ी मूल्यवान थीं।

किन्तु उसके दो सच्चे मित्रों ने उसे परेशान न किया। कारण इन्हें भय था कि कहीं बेस भी यहां न बैठी हो। कम से कम उसका कोई न कोई गुप्तचर यहां अवश्य था।

(५)

घर लौटते समय लारेल ने लैनी से कहा, "तुम्हे हैन्सी से मिल कर उसे सांत्वना देनी चाहिए। वह बेचारा इस समय बड़ा दुःखी प्रतीत होता है।"

दूसरे दिन सबेरे लैनी एक सार्वजनिक टेलीफोन-घर से हैन्सी को टेलीफोन करनेके के लिये गया। वह जानता था कि इस समय बेस अपने काम पर निकल गयी होगी। उसने टेलीफोन पर अपनी आवाज बदल ली। मन ही मन उसने

निश्चय कर लिया था कि यदि हैन्सी के स्थान पर अन्य कोई व्यक्ति टेलीफोन उठाएगा तो वह चुपचाप "गलत नम्बर" कह कर टेलीफोन रख देगा।

किन्तु इसकी कोई आवश्यकता न पड़ी। टेलीफोन हैन्सी ने ही उठाया। लैनी ने शीघ्रता के साथ कहा, "कल सेण्ट्रल पार्क के उत्तरी कोने में सबेरे दस बजे आ जाओ।" हैन्सी ने सहमति जनायी और दोनों ने टेलीफोन रख दिये। सारा काम इतनी शीघ्रता के साथ सम्पन्न हुआ था कि लैनी को पूर्ण विश्वास था कि किसी गुप्तचर को सुनने का अवसर न मिला होगा।

भेंट के लिये लैनी ने यह स्थान केवल इसलिये चुना था क्योंकि वहां प्रातः काल किसी कम्युनिस्ट के रहने की सम्भावना न थी। यहां मुख्यतः बच्चेऔर उनकी नर्सें ही आती थीं। इसके अतिरिक्त, उसने सोचा, प्रातःकाल दस बजे कम्युनिस्ट लोग अपने अपने काम धन्धों में लगे रहेंगे ; पार्क में मटर गश्ती करने के लिये न आयेंगे। यह सब सोचकर ही लैनी ने इस स्थान को चुना था। वह समय के कुछ पूर्व ही वहां पहुंच गया और अपना समाचार पत्र खोलकर पढ़ने लगा। थोड़ी ही देर में एक टैक्सी आयी। किन्तु लैनी ने अखबार से अपना सिर न उठाया। वह पहले की भांति सिर गड़ाए हुए पढ़ने में तल्लीन बना रहा। इधर टैक्सी से एक व्यक्ति निकला। उसने ड्राइवर को किराया देकर बिदा किया। जब तक टैक्सी दृष्टि से ओझल न हो गयी वह मैदान में टहलता रहा। इसके बाद वह शीघ्रता से आकर लैनी के पास बैठ गया। लैनी ने उसे इशारा किया और दोनों लैनी की गाड़ी में बैठकर उत्तर की ओर चल पड़े। ज्यार्ज वाशिन्गटन पुल पार करके गाड़ी शहर के बाहर खुले स्थान में आ गयी। चारों ओर की दृश्यावली बड़ी सुन्दर थी किन्तु इस ओर किसी का ध्यान न था। लैनी सोच रहा था कि किसी छोटे मोटे भोजनालय में भोजन करके हैन्सी के साथ बातें करूंगा। किन्तु इस बात की आशंका थी कि हैन्सी से जवाब तलब किया जायगा कि वह दिन भर कहां रहा।

"मुझे बहाना करना पड़ेगा कि मैं सिनेमा देखने चला गया था। क्या तुमने हाल में ही कोई फिल्म देखी है?" हैन्सी ने कहा।

सौभाग्यवश लैनी ने हाल ही में एक फिल्म देखी थी। उसने सारी कहानी

"किन्तु हो सकता है कि तब तक रूस वालों को हमारे कई महत्वपूर्ण भेदों का पता लग जाय।"

"मुझे इस सम्बन्ध में अधिक कुछ नहीं बताया जाता किन्तु मेरा अनुमान है कि सरकार इन लोगों के साथ एक खेल खेल रही है। इन गिरोहवालों को जान बूझ कर कुछ ऐसी जानकारी रूस भेज देने दी जाती है जो ऊपर से सच्ची प्रतीत होती है किन्तु वस्तुतः नकली होती है। तुम जानते ही हो कि किसी भी बड़े उद्योग धन्धे में नाना प्रकार के शोध कार्य होते रहते हैं। कई सफल होते हैं और कई असफल रह जाते हैं। किन्तु कोई भी शोध-योजना काफी रुपया खर्च करने के बाद ही सफल अथवा असफल प्रमाणित होती है। ब्लू प्रिन्ट, माडेल आदि अनेकों प्रकार की चीजें शोध कार्य के प्रसंग में बनती हैं। सरकार के आदमी उन योजनाओं से सम्बन्धित कागजों को कम्युनिस्टों के हाथों में पड़ जाने देते हैं जो असफल प्रमाणित हो चुकी हैं। किन्तु कम्युनिस्ट लोग इन्हे बहुमूल्य रहस्य समझ कर लाखों रुपये खर्च करके भिन्न भिन्न गुप्त उपायों द्वारा इन्हें रूस भेजने का प्रयत्न करते रहते हैं। अन्त में यह समय और धन की बर्बादी ही प्रमाणित होगी और रूस वाले शायद इन्हें चुरानेवाले गुप्तचरों को गोली मार देंगे। यह अच्छा ही होगा क्यों कि इससे हमारी परेशानी मिट जायगी।"

"संसार दिन पर दिन एक आतंकपूर्ण नाटक के रूपमें परिणत होता जा रहा है। हमें इसे सहन करने के लिये अपने आप को काफी तयार करना पड़ेगा।" लैनी ने कहा।

"मैं अपने आप को यथासम्भव रूप में अनुशासनबद्ध करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। किन्तु यह मेरे स्वभाव के प्रतिकूल है। मैं एक भावना-प्रधान व्यक्ति हूं। फिर भी मैं अपने अन्दर यथासम्भव दृढ़ता लाने की चेष्टा कर रहा हूं। कदाचित यह प्रक्रिया मेरे संगीत को नष्ट कर डाले।"

"तुम्हारी यह वायलिन तभी तक तुम्हे आनन्द प्रदान कर सकती है जब तक कि तुम स्वतन्त्र संसार में हो। यदि तुम्हे साइबेरिया में भेज दिया जाय तो तुम्हारा संगीत किस काम आएगा?"

(६)

लैनी ने हैन्सी को फ्रित्ज मेसनर का नाम तो नहीं बताया किन्तु उसके मामले का संक्षेप में वर्णन कर दिया। उसने कहा कि एक जर्मन युवक जो अमरीकियों के लिए गुप्तचर का काम कर रहा था अचानक गायब हो गया है और उसका कोई पता सूराग नहीं मिल रहा है। "यहां न्यूयार्क में कम्युनिज्म का अर्थ केवल वर्ग-युद्ध है किन्तु वहां वह वर्ग-युद्ध और राष्ट्रीय युद्ध दोनों ही रूपों में चलता है। वह इतने भयानक रूप में चल रहा है कि तुम शत्रु के हाथों द्वारा अपने गले को जकड़ते हुए अनुभव कर सकते हो।"

लैनी ने हैन्सी को लेखक-सम्मेलन की बात भी बतायी। उसने यह भी बता दिया कि अब "रिआस" पर प्रतिबन्ध नहीं रहा और वह रूसियों के मिथ्या प्रचार का मुहतोड़ उत्तर देने के लिये स्वतंत्र है। उसने हैन्सी को पेरिस में होने वाली हड़ताल की बात भी बतायी। पेरिस के दृश्यों की चर्चा करते हुए उसने कहा, "कम्युनिस्ट नेता थोरेज ने कहा था कि यह चुनाव नहीं बल्कि युद्ध है।"

हैन्सी के लिए ये बातें बड़ी महत्वपूर्ण थी। इनसे उसे काफी सांत्वना मिली। उसे लगा कि वह संसार में अकेला नहीं है, अनेकों अन्य व्यक्ति भी उसी की सी परिस्थित में हैं। उसे विश्वास हो गया कि वह अपनी पत्नी के विरुद्ध गुप्तरूप में जो क्रियाशीलता कर रहा है वह पूर्णतया न्यायसंगत है। लैनी बेस को हैन्सी की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह जानता था। हैन्सी के साथ बेस का विवाह होने के वर्षों पूर्व लैनी अपनी सौतेली बहन के मानसिक गठन को भली भांति समझ गया था। उस समय वह एक निर्दोष उत्सुक और प्रसन्न बालिका थी। और आज? आज एक सीमान्त चिन्तन धारा के चक्कर में पड़ कर वह कैसी कठोर और उग्र हो उठी थी!! लैनी को यह समझने में देर न लगी कि हैन्सी के मन में उसके प्रति प्रेम और घृणा की दो परस्पर विरोधी धाराएं साथ साथ कैसे प्रवाहित हो रही हैं।

"मैं बेस के सम्बन्ध में कुछ स्पष्ट बातें करना चाहता हूं।" हैन्सी ने कुछ रुक कर कहा।

"पिछली बार जब उसके साथ मेरी बातें हुई थीं मुझे इतना क्रोध आ गया था कि मैं उसके कान उमेठने वाला था।" हैन्सी ने उत्तर दिया।

"वह मुझे एक तमगे के रूप में देखती है। जिस प्रकार सैनिक लोग अपनी वर्दी पर तमगे लगा कर शान से घूमते हैं उसी प्रकार वह मुझको अपनी एक जीत के रूप में समझती है। इसका उसे बड़ा गर्व है। किन्तु वह मुझे अपनी जायदाद ही समझती है। मुझे वह विचारों की स्वतंत्रता नहीं दे सकती। वह मुझ पर ठीक उसी प्रकार निगरानी रखती है जिस प्रकार कि लोग अपने हीरे जवाहरात की रखवाली करते हैं। यदि कोई व्यक्ति मेरे समीप आने की चेष्टा करता है तो वह भड़क उठती है।"

"वह आखिर कम्युनिस्ट है और कम्युनिस्ट स्त्रियां शील को कोई विशेष महत्व नहीं देतीं।"

"हे भगवान! कम्युनिस्ट स्त्रियों को तो बचपन से ही इस बात की शिक्षा दी जाती है कि वे येन केन प्रकारेण पुरुषों को फुसला कर अपनी ओर ले आने की चेष्टा करें। कम्युनिस्ट पार्टी में यह प्रथा है कि यदि नेता ने किसी व्यक्ति की ओर इशारा कर दिया तो फिर महिला सदस्याओं का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि जिस प्रकार भी हो उसे फांस कर पार्टी में ले आवें। यदि पार्टी समझती है कि किसी व्यक्ति से उसका काम निकल सकता है तो वह उसे अपने दल में लाने का हर सम्भव प्रयत्न करती है। यदि उसने देखा कि कोई वकील उसका मामला लड़ सकता है अथवा विधायिका का कोई सदस्य उसे वोट दे सकता है, अथवा कोई प्रेस रिपोर्टर उसका प्रचार कार्य कर सकता है अथवा कोई धनी व्यक्ति उसके "सहयात्री-संगठनों" को रुपया प्रदान कर सकता है तो पार्टी येन केन प्रकारेण उस व्यक्ति को अपनी ओर ले आने का प्रयत्न करेगी। और इस कार्य में महिला सदस्याएं सब कुछ करने के लिए तयार रहेंगी।"

"क्या बेस भी ऐसी ही हो गयी है?" लैनी ने प्रश्न किया।

"मुझे क्या पता? वह कभी दिन दिन भर, कभी एक-एक सप्ताह तक गायब रहती है। जब लौट कर आती है तब यह नहीं बताती कि वह कहां गयी थी। बस वह इतना ही कहती है कि 'पार्टी का काम' था। शायद 'पार्टी के काम' के अन्दर सब कुछ आ जाता है। किन्तु मुझसे से वह पूरी पूरी कैफियत लेने में नहीं चूकती। मुझे क्षण क्षण की कैफियत देनी पड़ती है। मुझे उसे सन्तुष्ट रखना

पड़ता है। क्यों कि पार्टी वाले मेरी उपयोगिता के सम्बन्ध में बेस के मन्तव्य पर ही निर्भर करते हैं। यदि वह कह दे कि मैं पार्टी के लिए किसी काम का नहीं हूँ तो मुझे तुरन्त निकाल बाहर किया जाय।"

"हैं तो वे लोग बड़े भयानक!"

"उनमें कुछ अच्छे व्यक्ति भी हैं। ये बेचारे पार्टी के प्रचार से प्रभावित होकर आ गये हैं। इनका विश्वास है कि पार्टी का उद्देश्य वही है जो वह कहती है अर्थात् शान्ति, प्रेम, तथा समानता। ये समझते हैं कि कम्युनिस्ट पार्टी वस्तुतः मजदूरों की हितचिन्तक है और शोषण को समाप्त करना चाहती है। किन्तु पार्टी में शामिल होने के बाद उन्हें वास्तविकता का पता लगने में देर नहीं लगती। साल दो साल में जब उनका स्वप्न भंग हो जाता है तब वे पार्टी को छोड़ कर चले जाते हैं किन्तु इस साल दो साल की अवधिमें पार्टी उनकी ख्याति और प्रतिष्ठा का पूरा पूरा शोषण कर लेती है। उनका नाम पार्टी के साथ सदा के लिए सम्बद्ध हो जाता है और इस प्रकार उनका सारा जीवन नष्ट हो जाता है।"

"शायद इसीलिए इनमें से अनेकों व्यक्ति पार्टी को छोड़ कर उसका पर्दाफाश करने का साहस नहीं कर पाते।"

"कम्युनिस्ट पार्टी का आधारभूत सिद्धान्त है घृणा। मैंने इसका गहरा अध्ययन किया है। यह पुरुष और स्त्री दोनों के मन मस्तिष्क को पूरी तरह नष्ट कर देता है। कहने को तो वे लोग यही कहते हैं कि वे केवल अपने वर्ग-शत्रुओं से घृणा करते हैं। किन्तु बात इतनी सीधी सादी नहीं है। पार्टी के अन्दर भी फूट पड़ जाती है और एक दल दूसरे दल से घृणा करने लगता है। इसके अतिरिक्त शक्तिलिप्सा सबके मन में रहती है। जो सत्तारूढ़ हो जाते हैं उनसे नीचे वाले घृणा और ईर्ष्या करने लगते हैं। पार्टी के किसी भी सम्मेलन को देख लो गाली गलौज के दर्शन अनिवार्य रूप में होंगे। एक दल दूसरे दल को प्रतिक्रियावादी, ट्राटस्कीवादी, सोशल-फासिस्ट, देशद्रोही, वालस्ट्रीट का गुलाम और न जाने क्या क्या कहेगा। पारस्परिक संदेह और प्रतिस्पर्द्धा तो कदम कदम पर रहती है। गाली गलौज को वे लोग बुरा भी नहीं समझते—उनके अनुसार प्रोलीतेरियत

की स्पष्टवादिता इसी प्रकार की होनी चाहिए। मैं यह सब देख कर आश्चर्यचकित हो जाता हूं। हालैण्ड, जर्मनी और अमेरिका—कहीं भी मुझे इस प्रकार की अशिष्टता न दिखाइ पड़ी थी। फिर ये लोग ऐसी बातें कहां से सीख लेते हैं?"

लैनी ने कुछ संकोच के साथ उत्तर दिया; "मेरा विश्वास है कि यह सब रूस की देन है—वर्षों के आतंक और तानाशाही का परिणाम। जहाँ लोगों को अपने जीवन के सम्बन्ध में किसी प्रकार की निश्चिन्तता न हो वहां संदेह की प्रवृत्ति होना एक स्वाभाविक बात ही है। वहां प्रतिक्षण मनुष्य को इस बात का भय रहता है कि कहीं उसे छूरा न मार दिया जाय अथवा जहर न पिला दिया जाय। हम लोग स्वतंत्र संसार में निवास करते हैं। इसी लिये इन सब बातों को नहीं समझ पाते; इनकी कल्पना तक नहीं कर पाते।"

"हां, ऐसी ही बात है।" हैन्सी ने उत्तेजित होकर कहा। "कभी कभी मैं भय से कांप उठता हूँ। मुझे ऐसा लगता है कि मानों मैं फिर से अन्धकारयुगीन अतीत में चला गया हूँ। मैं मन ही मन चिल्ला पड़ता हूँ—हे भगवान! मैं फिर से बर्बर युग का प्राणी हो गया। मैं अब सभ्य समाज का सदस्य नहीं रहा।"

(७)

बातें करते हुए वे लोग वेस्ट पायन्ट नामक स्थान के पास आ गये। यहां पहाड़ों के बीच से हडसन नदी अलस गति से बहती रहती है। वे लोग एक छोटे से होटल के पास आकर खड़े हो गये। इस साधारण से होटल में किसी परिचित व्यक्ति के साथ भेंट हो जाने की कोई सम्भावना न थी। भोजन करने के बाद दोनों बाहर आए और एक निर्जन स्थान में बैठ कर चारों ओर की सुन्दर दृश्यावली देखने लगे। पहाड़ों पर बर्फ की एक हल्की चादर बिछी हुई थी और उस पर सूर्य की सुनहली रश्मियां पड़ कर एक सुन्दर चमक पैदा कर रही थीं। गाड़ी में ताला लगा कर दोनों मित्र एक टीले पर चढ़ गये। यहां से नदी का दृश्य बड़ा ही भव्य प्रतीत होता था। "ओह, यह तो एक दम राइन नदी की भाँति है!" हैन्सी ने उत्तेजित स्वर में कहा। लैनी ने अपनी सहमति प्रकट की। किन्तु राइन की भाँति यहाँ पर आस पास पुराने किले न दिखाई देते थे। यह वह स्थान था जिसे वाशिन्गटन इर्विन्ग ने "रिप वान विन्किल" कहानी लिख कर अमर बना

दिया था। किन्तु इस समय लैनी और हैन्सी को 'रिप वान विन्किल' का ध्यान न आ रहा था। अतीत की अपेक्षा इस समय वे भविष्य के प्रति ही अधिक चिन्तित थे।

एक पत्थर के टुकड़े पर से बर्फ साफ करके दोनों उस पर बैठ गये। नदी के दूसरे किनारे के समानान्तर गति से रेल की पटरी बड़ी दूर तक चली गई थी। आस पास दो एक मकान भी दिखाई दे रहे थे। किन्तु इस क्षेत्र का अधिकांश भाग घने जङ्गलों से ढका हुआ था। प्रकृति बड़ी सुन्दर प्रतीत हो रही थी। किन्तु मनुष्य ने अपने आप पर तथा अपने भाइयों पर अत्याचार करके जिस प्रकार की परिस्थित उत्पन्न कर दी है उसमें यह प्रकृति दर्शन भी बैठे ठाले की बेगार बन गया है।

हैन्सी ने लैनी को अपनी विचित्र प्रेम-कहानी सुनानी शुरू की। आज भी वह बेस को अपने प्राणों से अधिक चाहता था। पुरानी स्मृतियाँ रह रह कर उसके मन और मस्तिष्क को तरङ्गित कर देती थीं। किन्तु उस समय की बेस और आज की बेस में कितना अन्तर हो गया है! आज हैन्सी की बुद्धि ने उसके हृदय के विरुद्ध पूर्ण विद्रोह कर दिया था।

"यह बड़ी भयानक बात है, लेनी।" उसने कहा, "किन्तु अब मेरी अन्तरात्मा बेस को नहीं चाहती।"

"मैं जानता हूं। बेस के प्रति आज मेरी भी यही धारणा है।"

"वह हठी है। वह अपने कुछ सिद्धांतों के साथ चिपकी हुई बैठी है और इनके विरुद्ध एक शब्द भी सुनने के लिए तयार नहीं है। उसके लिये रूस में सब अच्छाइयां ही अच्छाइयां हैं और अमेरिका में केवल बुराइयां। यदि तुम उसे रूस में किसी बुराई की बात बताओगे तो वह चट से अमेरिका में कोई बुराई दिखाकर प्रश्न को टाल देगी। उसकी सहज स्वाभाविक बुद्धि नष्ट हो चुकी है। हम लोग जब रूस गए थे तब अवश्य हमारा अच्छा स्वागत हुआ था। बेस बराबर उसी की चर्चा किया करती है। उसकी समझ में यह बात नहीं आती कि उस समय युद्ध चल रहा था; रूस को हमारी सहायता की आवश्यकता थी और इसीलिये हमारी इतनी आवभगत हुई थी।"

"उस समय तुम वहां के सभी कलाकारों और बुद्धिजीवियों से मिले होगे ?"

"मिला था। किन्तु आज स्थिति बदल गयी है। आज यदि बेस भी रूस जायगी तो वह देखेगी कि वहां के शासक लोग अब अमरीकियों का किन्चित मात्र विश्वास करने के लिए तयार नहीं हैं। शायद स्वयं उसका विश्वास न किया जाय और उसे ऐसे आदेश दिये जायं जो उसे अच्छे न लगें। किन्तु उससे यह सब कहने में कोई लाभ नहीं है।"

"विशेष कर इस समय जब कि तुम बेस के विरुद्ध एफ० बी० आई० के साथ सहयोग कर रहे हो।"

"वह मुझसे जो कुछ कहती है मैं चुपचाप मान लेता हूँ। मैं आंख मूंद कर उसके आदेशों का पालन करते रहता हूँ। इसीलिये वह आज कल मुझ पर बड़ी प्रसन्न रहती है। जब कभी मैं अपने संगीत आयोजन से पार्टी के लिये कुछ पैसा पैदा करा देता हूँ उसकी प्रसन्नता का कोई पारावार नहीं रहता। वह बड़े प्रेम के साथ मेरे पास आती है और अपनी इच्छा के विरुद्ध मुझे उसका आलिंगन करना पड़ता है। यह एक प्रकार का व्यभिचार ही है।"

लैनी ने हंस कर कहा, "तुम यह समझ लो कि तुम पार्टी-रजिस्टर का एक पन्ना फाड़ने का प्रयत्न कर रहे हो।" किन्तु दूसरे ही क्षण गम्भीर होकर उसने कहा, "किन्तु हैन्सी, बेसके साथ तुम्हें किसी न किसी दिन अपना सम्बन्ध तोड़ना ही पड़ेगा।"

"मैं इस कटु सत्य से भली भांति परिचित हूँ।"

"किन्तु अन्त में यह तुम्हारे लिए अच्छा ही होगा।"

"कभी कभी मुझे भी ऐसा ही लगता है। मैं अपने आपको यह समझाने का प्रयत्न करता हूँ कि एकाकी जीवन अच्छा रहेगा। किन्तु दूसरे ही क्षण मुझे तुम्हारी और लारेल की याद आ जाती है और मैं सोचने लगता हूँ कि दाम्पत्य जीवन भी कितना आनन्दमय हो सकता है। मुझे सच बताओ, लैनी, क्या तुम सचमुच उतने ही सुखी हो जितने कि ऊपर से दिखाई पड़ते हो।"

लैनी मुस्करा पड़ा। उसने कहा, "गत महायुद्ध के पूर्व एक जर्मन दार्शनिक काउण्ट कैसरलिंग यहां अमेरिका में आया था। उसने एक भाषण दिया था। मुझे

उसकी बातें अच्छी न लगी थीं किन्तु उसकी एक बात बड़े मार्के की थी। उसने कहा था कि "विवाह एक अन्तहीन खींचतान ही है।' लारेल के कुछ निश्चित विचार हैं और वह इनमें परिवर्त्तन करना पसन्द नहीं करती। कभी कभी वह ऐसी बातें करने लगती है जो मैं भली भांति जानता हूँ किन्तु उसे रोकना शिष्टाचार के विरुद्ध समझ कर चुप रह जाता हूँ। शान्ति-परिवार के सम्बन्ध में भी कभी कभी मैं उसके विचारों से सहमत नहीं हो पाता। यदि उसकी बात सच निकलती है तब भी मैं उसके साथ सहमत नहीं हो पाता। किन्तु इतना सब होने पर भी हम दोनों सुखी हैं। विवाह के सम्बन्ध में मेरा निश्चित विचार है कि इसकी सफलता दो बातों पर निर्भर करती है—प्रेम और पवित्रता।"

कुछ क्षणों तक चुप रह कर लैनी ने प्रश्न किया, "अच्छा, मुझे एक बात बताओ। क्या वे लोग बेस को गिरफ्तार करने के लिए कृतसंकल्प हैं?"

"उन्हों ने मुझे आश्वासन दिया है कि वे बेस के सम्बन्ध में अधिक से अधिक उदारता दिखायेंगे किन्तु उसे गिरफ्तार करना आवश्यक है। बात यह है कि वह छोटे-मोटे व्यक्तियों को पकड़ कर असली अपराधी को कैसे छोड़ सकते हैं? इसके अतिरिक्त बेस को गिरफ्तार न किया गया तो यह समझा जायगा कि एक बड़े पूंजीपति की लड़की होने के कारण ही उसे छोड़ दिया गया। वे लोग मुझे पूरी बात नहीं बताते किन्तु जो कुछ जानकारी मेरे पास है उसके आधार पर मैं यह कह सकता हूं कि यह एक सनसनीखेज मामला होगा। समाचारपत्रों में यह कार्यवाही बड़े भव्य शीर्षकों के साथ प्रकाशित होगी।"

"भण्डाफोड़ कब तक होगा? कुछ बता सकते हो?"

"इस सम्बन्ध में मुझे किंचित मात्र अनुमान नहीं है। गिरफ्तारियां किसी भी क्षण हो सकती हैं। सरकारी आदमी सरगर्मी के साथ इस मामले में लगे हुए हैं। ज्यों ही उन्हें विश्वास हो जायगा कि उनके पास पर्याप्त प्रमाण आ गए हैं त्यों ही वे सारे अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लेंगे।"

"और तुम्हारा क्या होगा? क्या तुम्हे भी गवाही देनेके लिये जाना पड़ेगा।"

"अभी तक मैं कोई निश्चय नहीं कर पाया हूं। उन लोगों ने भी इस सम्बन्ध

में मुझसे कुछ नहीं कहा है। वे लोग तो यही कहते हैं कि तुम अपना काम किये जाओ। किन्तु मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि मैं यह तनाव कब तक सह सकूंगा। एक बात और भी है। यदि उन्होंने बेस को गिरफ्तार कर लिया तो मैं पार्टी में रहकर क्या करूंगा? मैं वहां किसी कम्युनिस्ट लड़की से शादी करके अपना यह जासूसी का पेशा चालू नहीं रखना चाहता। और मैं 'भूमिगत' भी नहीं हो सकता क्योंकि मैं एक प्रसिद्ध व्यक्ति हूं। ऐसी अवस्था में पार्टी के लिये गाने बजाने तथा रुपया इकट्ठा करने के अतिरिक्त मेरा वहां और क्या काम रहेगा?"

(८)

सुदूर वृक्षों की कतार की ओट में सूर्य धीरे धीरे डूब रहा था। दोनों उठ खड़े हुए और अपनी गाड़ी में बैठ कर शहर की ओर चल पड़े। रास्ते में हैन्सी ने कहा।

"मुझे बेस को अपनी सफाई देनी होगी कि मैं दिन भर कहां गायब रहा। मुझे एक विचार सूझा है। बेनी स्टल्ट्ज नामक एक युवक को मैंने कुछ दिनों तक संगीत की शिक्षा दी है। अब उसे "फिलहारमोनिक" में स्थान प्राप्त हो गया है। पिछली बार जब मैं उससे मिला था तो उसने कहा था कि उसने किसी नये संगीत की रचना की है। वह मुझे यह संगीत सुनाना चाहता था। मैंने उसे वचन दिया था कि मैं समय निकाल कर किसी दिन उसके पास आ जाऊंगा। मैं उसे टेलीफोन किये देता हूँ। यदि वह घर पर होगा तो मैं वहां चला जाऊंगा और फिर वहीं से बेस को टेलीफोन करके कह दूंगा कि मैं अपने शिष्य का संगीत सुन रहा हूं। नहीं तो बेस अवश्य ही मेरी सचाई को परखने के लिये चुपचाप बेनी को टेलीफोन करके भेद तक पहुँचने का प्रयत्न करेगी। वह बेनी को उसके नये संगीत पर बधाई देने के बहाने अथवा इस बहाने कि मैं अपना छाता तो वहां नहीं भूल आया—किसी भी बहाने उसे टेलीफोन कर सकती है। समझे? मेरा विवाह 'पार्टी लाइन" के साथ हुआ है।"

शहर के समीप आकर हैन्सी एक दूकान के सामने उतर पड़ा और वहां से बेनी स्टल्ट्ज के घर पर टेलीफोन किया। सौभाग्य से बेनी घर पर ही था।

उसने हैन्सी से तुरन्त आने का अनुरोध किया। हैन्सी ने बाहर आकर लैनी को यह संवाद बताया और कृतज्ञता के स्वर में कहा "आज का दिन बड़ा ही सुहावना रहा। बहुत दिनों बाद मुझे ऐसी सुख-शान्ति का अनुभव हुआ है।"

लैनी की गाड़ी आगे बढ़ गयी। हैन्सी सतर्कता के साथ भूगर्भ रेलवे स्टेशन की ओर बढ़ा। उसे इस बात का भय था कि कहीं कोई कामरेड उसे इस प्रकार पैदल भूगर्भ रेलवे स्टेशन की ओर जाते न देख ले! उसकी यह आशंका स्वाभाविक भी थी। वह एक प्रसिद्ध व्यक्ति था। "डेली वर्कर" में कम से कम महीने में एक बार उसका चित्र अवश्य प्रकाशित होता था। और अभी दो तीन दिन पहले ही उसने हजारों व्यक्तियों के सामने अपनी संगीत कला का प्रदर्शन किया था। इस प्रकार के प्रसिद्ध कलाकार से यह आशा नहीं की जा सकती कि वह न्यूयार्क की गलियां नापते फिरेगा। इसका क्या ठीक है कि उसे गली की किसी भी मोड़ पर कोई न कोई प्रशंसक मिल जाय और फिर वह चारों ओर इस महान संगीतज्ञ के साथ अपनी मुलाकात की चर्चा करते फिरे : "आप क्या समझते हैं, मैंने साक्षात हैन्सी राबिन को गलियारे से जाते हुए देखा था। मैं उनसे बातें करना चाहता था। किन्तु इसके लिये साहस न बटोर पाया।"

(९)

फिर २५ दिसम्बर आ गया। बड़े दिन का यह पर्व १६०२ वीं बार आया था। आज से १६०२ वर्ष पूर्व धर्माधिपतियों ने यह निश्चय किया था कि बड़े दिन का पर्व बसन्त ऋतु में न मनाया जाय क्योंकि इससे वह एक प्रतिस्पर्द्धी धर्म के नेता मिथ्रास के जन्मदिन का द्योतक हो जाता है। फलस्परूप तब से बड़ा दिन दिसम्बर मास में मनाया जाने लगा। सदा की भांति इस बार भी बड़े दिन के अवसर पर बड परिवार के लोग एक साथ एकत्रित होंगे, अपना ईर्ष्या द्वेष भूलकर एक दूसरे के लिये शुभकामनाएं प्रकट करेंगे और उल्लास के अतिरेक में आवश्यकता से अधिक भोजन कर लेंगे।

पारिवारिक प्रीति-भोज में भाग लेने के लिये लैनी और लारेल भी अपनी मोटर में बैठकर रवाना हुए। उनकी बच्ची नर्स के साथ पिछली सीट पर बैठी थी। बड़ा बेटा भी, जो अब पांच वर्ष का हो चुका था सीट के एक ओर खिड़की

से सट कर बैठा हुआ था। वह रास्ते के रंग बिरंगे दृश्यों को देख देख कर बड़े आनन्द का अनुभव कर रहा था। अमरीकी सड़क सचमुच बड़ी आकर्षक होती है। इतिहास के आरम्भ से अब तक इससे अधिक विचित्र वस्तु कहीं नहीं दिखाई दी। हर आकार प्रकार तथा रंग रूप की गाड़ियां सड़क पर आ जा रही थीं और जब कभी कोई भारी भरकम ट्रक उधर से निकल जाती थी बच्चा उत्तेजित होकर चिल्ला पड़ता था। चारों ओर बर्फ की परत सी बिछी हुई थी। तालाबों का पानी जम गया था और बच्चे उसमें स्केटिन्ग करने लगे थे। सर्दी के कारण उनके मुंह से भाफ निकल रही थी। किन्तु मोटर के अन्दर सर्दी न लग रही थी। संसार भांति भांति के रहस्यों तथा वैचित्र्यों से व्याप्त है। बच्चे को क्षण क्षण में किसी नयी बात के दर्शन हो जाते और वह कौतूहलवश अपने माता पिता से प्रश्न करने लगता।

यात्रा समाप्त होने पर बड-परिवार का वह पुराना शानदार मकान दिखाई पड़ा जिसे बच्चा इसके पूर्व देख चुका था। चारों ओर आगन्तुकों की भीड़ सी हो गयी थी। एक वृक्ष था जिसके चारों ओर वार्षिक उत्सव मनाया जा रहा था। भांति भाँति के उपहार सजे हुए रखे थे। यथासमय भोज हुआ। बच्चों को एक अलग कमरे में खिलाया गया। वे अपने अपने परिवार तथा स्कूल की बातें करते रहे। लैनी का बच्चा अभी किण्डर गार्टन में ही जाता था। अभी उसकी आयु स्कूल जाने लायक न हुई थी। इसीलिये वह स्कूल जानेवाले बच्चों की बातें बड़े ध्यान से सुन रहा था।

(१०)

फ्रांसिस और स्क्रबी भी अपनी गाड़ी में आए थे। फ्रांसिस इसके पूर्व भी रोबी और एस्थर के अतिथि के रूप में यहां आ चुका था। अब उसे परिवार के नये सदस्यों के साथ भेंट करने तथा उनके साथ टेबिल टेनिस खेलने का जो अवसर प्राप्त हुआ था उससे वह बड़ा सन्तुष्ट था।

इधर लारेल महिलाओं से बातें करके यह जानने का प्रयत्न करने लगी कि शान्ति प्रोग्राम के सम्बन्ध में उनके क्या विचार हैं। दूसरी ओर लैनी अपने बन्धु-बान्धवों के राजनैतिक विचारों से अवगत होने का प्रयत्न करने लगा। वह

उन्हे अपनी पिछली यात्रा के अनुभव सुनाने लगा। परिवार के सभी सदस्य यह जानते थे कि लैनी एक समय कट्टर समाजवादी था किन्तु बाद में उसके विचारों में बहुत कुछ उदारता आ गयी थी। वे बड़ी उत्सुकता के साथ उसकी बातें सुन रहे थे। कई व्यक्तियों ने यह जिज्ञासा प्रकट की कि बर्लिन से अमरीकियों के भगाए जाने की सम्भावना कितनी दूर तक है। कुछ ने यह जानना चाहा कि फ्रांस में जो हड़ताल हुई थी और जिसने फ्रांस को एक प्रकार से अपने अधिकार में ले लिया था उसका अन्तर्राष्ट्रीय महत्व कितनी दूर तक है। क्या योरोप की रक्षा होने की कोई आशा है या हम लोग व्यर्थ ही अनाप शनाप रूप में इतना रुपया बहा रहे हैं? परिवार के बहुत से सदस्यों का विश्वास था कि लैनी स्वयं कम्युनिस्ट विचारधारा से सहानुभूति रखनेवाला व्यक्ति है। किन्तु इन लोगोंके मन में भी लैनी की बातें सुनने का बड़ा आग्रह था क्योंकि वे जानते थे कि लैनी सभी महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मिल चुका है और उसे बहुत सी भीतरी बातें मालूम हैं। किन्तु लैनी जानता था कि इस मण्डली में गणतन्त्र पर विश्वास रखनेवाला वही एक व्यक्ति है—नौकर चाकरों में शायद गणतन्त्र के दो एक समर्थक निकल आवें किन्तु इस कुलीन समाज में तो इसकी कोई सम्भावना नहीं है। किन्तु समय की गति इसी ओर चल रही थी, वस्तुस्थिति को स्वीकार कर लेने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय न था।

भोज समाप्त होने पर लैनी ने अपनी पत्नी के साथ अपने घर लौट जाने की इच्छा प्रकट की। किन्तु रोबी ने उसे रोक लिया। उन्होंने कहा कि रात के समय लौटना ठीक न होगा; सड़कों पर शराबियों की मोटरें भरी होंगी। इसके अतिरिक्त वे एकान्त में अपने पुत्र के साथ कुछ बातें कहना चाहते थे। फलस्वरूप लैनी रुक गया। दूसरे दिन प्रातःकाल वह अपने पिता के साथ परिवार के पुस्तकालय में बैठकर बातें करने लगा। पुस्तकालय में भांति भांति की पुस्तकों का एक अम्बार सा लगा हुआ था। वृद्ध रोबी ने बड़े चाव के साथ इनका संग्रह किया था और आजीवन इन्हें पढ़ने की सोचते रहे थे। किन्तु इस समय पिता-पुत्र की वार्ता पुस्तकों के सम्बन्ध में न थी, वह थी बेस के सम्बन्ध में। लैनी ने कहा कि उसे बेस के सम्बन्ध में कोई नई बात नहीं मालूम हो सकी है। बेस उसके पास

एक बार आयी थी—यह उलाहना देने के लिये कि वह हैन्सी को अपनी ओर फोड़ने का प्रयत्न कर रहा है। इसके अतिरिक्त उसे और कुछ नहीं मालूम।

रोबी को इस बात का कोई पता न था कि हैन्सी एफ० बी० आई के साथ सहयोग करके बेस पर छिपे छिपे नजर रख रहा है। लैनी यह न चाहता था कि उसके मुंह से अनजान में कोई ऐसी बात निकल जाय कि यह रहस्य उसके पिता को मालूम हो जाय। इसीलिये वह बड़ी सतर्कता के साथ बातें कर रहा था। उसने कहा कि मिस्टर पोस्ट के साथ वह भेंट न कर सका और उसे एफ० बी० आई के कार्यकलाप के सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। किन्तु उसने यह संकेत अवश्य कर दिया कि सरकार इस दिशा में काफी गम्भीर दृष्टिकोण ले रही है और परिवार को बुरे से बुरा समाचार सुनने के लिये तयार रहना चाहिये।

इसके बाद लैनी की पेरिस-यात्रा की चर्चा शुरू हुई। ब्रूयने परिवार की बातें हुईं। रोबी इस बात को जानते थे कि उनके मित्र तथा सहयोगी मोशिये डेनिस का देहान्त हो चुका है। किन्तु वे डेनिस के पुत्र तथा उत्तराधिकारी के सम्बन्ध में यह जानना चाहते थे कि बड-अलिंग परिवार के सम्बन्ध में उसका क्या दृष्टिकोण है और उसके राजनैतिक विचार किस प्रकार के हैं। उन्होंने कहा कि यदि फ्रांस कम्युनिस्टों के हाथों में चला जाय तो शेष योरोप भी बालू के किले की भांति ढह पड़ेगा। लैनी ने वार्त्तालाप के तारतम्य में अपने पिता को इरविन्ग ब्राउन की बात बतायी और इस बात की चर्चा भी की कि वह योरोप में मार्शल योजना को लोकप्रिय बनाने के लिए कैसा अथक परिश्रम कर रहा है। किन्तु रोबी को मार्शल-योजना में कोई विशेष दिलचस्पी न थी और वे अमेरिकन फेडरेशन आफ लेबर के भी विरुद्ध थे। उनका विश्वास था कि ट्रेड यूनियनों के नेता छिपे हुए कम्युनिस्ट ही हैं। किन्तु अपने पुत्र के मुंह से यह सुन कर कि वे लोग फ्रांस में कम्युनिस्टों से लड़ने के लिये अपने पसीने की कमाई पानी की भांति बहा रहे हैं वृद्ध रोबी के मस्तिष्क में एक नये कौतूहल का उदय हुआ। कारण यह है कि वे हृदय से एक कट्टर रिपब्लिकन उद्योगपति थे।

(११)

कुछ देर बाद लैनी अपने परिवार के साथ घर की ओर रवाना हुआ। किन्तु

उसने जोहानीस रोबिन को टेलीफोन कर दिया था कि वह रास्ते में रुक कर उनसे मिलेगा। जोहानीस के घर पर भी बड़े दिन की पार्टी थी और लैनी ने सोचा था कि इन मित्रों की उपेक्षा करना ठीक न होगा। श्रीमती रोबिन के लिये यह पार्टी विशेष आनन्दपूर्ण न थी क्योंकि उनके परिवार में एक विशाल रिक्तता की सृष्टि हो गयी थी। किन्तु बच्चों के लिये ये अवसर सदा आनन्दपूर्ण रहते हैं। हैन्सी और बेस इसमें भाग लेने के लिये न आए थे क्योंकि उन्हें "पार्टी का कोई अत्यावश्यक कार्य" समाप्त करना था।

हैन्सी कभी कभी अपनी माता से मिलने के लिये आता था और प्रत्येक बार उसे देखते ही माता के नेत्रों से अश्रुधारा अविरल रूप में प्रवाहित हो उठती थी। इस समय भी लैनी और लारेल के सामने हैन्सी की चर्चा करते हुए उनकी आंखें सजल हो उठी थीं। वृद्धा के मन में लैनी के प्रति बड़ा ममत्व था किन्तु मन ही मन उनके मन में यह भावना थी कि उनके पुत्र के सर्वनाश के लिये बड परिवार ही उत्तरदायी है। उनकी इच्छा थी कि हैन्सी का विवाह बेस के साथ न होकर किसी सीधी सादी यहूदी लड़की से होता तो सब ठीक हो जाता। लैनी यह कहने ही वाला था कि यहूदी लड़कियां भी कभी कभी कम्युनिस्ट हो जाती हैं किन्तु न जाने क्या सोचकर वह चुप रह गया।

हैन्सी और बेस के दोनों पुत्र इस समय अपनी छुट्टियां बिताने के लिये यहीं पर रह रहे थे। दोनों लड़के स्वस्थ और सुन्दर थे। एक की आयु दस वर्ष की थी, दूसरे की बारह वर्ष की। वे लोग बाहर बगीचे में बर्फ से खिलौने बना बना कर प्रसन्न हो रहे थे किन्तु उनकी दादी का हृदय अवसादग्रस्त था। वे जानती थीं कि ये दोनों बच्चे एक प्रकार से अनाथ ही हैं। उनके माता पिता एक ऐसे काम में लगे हुए हैं जिसकी चर्चा तक नहीं की जा सकती। ये बच्चे जन्म के अनुसार आधे यहूदी और आधे ईसाई थे। किन्तु वस्तुतः वे ईसाई तथा यहूदी दोनों धर्मों से अनभिज्ञ थे—उन्हे ईश्वर शब्द के गम्भीर अर्थ की कोई जानकारी न थी। किन्तु दादी प्रतिदिन इन बच्चों को धार्मिक उपाख्यानों से सुन्दर सुन्दर कहानियां सुनाया करती थीं। अब भी उनके मनमें यह विश्वास था कि किसी

दिन जब कम्युनिस्ट पार्टी इनके मस्तिष्कों पर अधिकार करने का प्रयत्न करेगी तब यह शिक्षा दीक्षा काम आएगी।

लारेल ने वृद्धा को अपने दोनों बच्चे दिखाए। लैनी ने वृद्ध जोहानीस के साथ बातें कीं। उनका स्वास्थ्य अब निम्नगामी हो चला था। लैनी ने उन्हें बताया कि उसने अपनी पिछली यात्रा के अवसर पर बर्लिन तथा पेरिस में क्या क्या देखा। उसने उन्हे बताया कि अमेरिका तो एक उद्विग्न सागर में 'शान्ति-द्वीप' की भांति प्रतीत होता है। यहां निवास करते हुए योरोप की भयानक स्थिति की कल्पना तक नहीं की जा सकती। वृद्ध जोहानीस ने अपनी सहमति जनाते हुए कहा कि यदि योरोप तथा एशियावालों को अमेरिका में चले आने की छूट दे दी जाय तो वहां की आधी जनता यहां चली आवे !!

एक विशेषज्ञ की भांति उन्हों ने यह मंतव्य दिया कि पश्चिमी योरोप समाप्त हो चुका है और उसका पतन अनिवार्य है। एक समय जोहानीस ने जर्मनी में विशाल सम्पत्ति का अर्जन किया था और बाद में नाजियों ने सब कुछ छीनकर उन्हें भिखारी बना दिया था। किन्तु वे जर्मनी की नस नस से परिचित थे। जर्मनी की वर्तमान स्थिति का हाल भी उन्हें शरणार्थियों से प्राप्त होता रहता था। पिछले कुछ समय से वे ग्रीक सभ्यता के पतन का अध्ययन कर रहे थे। उनको दृष्टि में यह बात एकदम स्पष्ट हो गयी थी कि छोटे छोटे प्राचीन ग्रीक राज्यों ने आपस में लड़ भिड़ कर उस गौरवपूर्ण सभ्यता का सर्वनाश किया था और अन्त में उत्तर से अपेक्षाकृत बर्बर मैसीडोनियन लोगों ने आकर इन सभ्य और सुसंस्कृत ग्रीकों पर अधिकार कर लिया था। इस समय भी इतिहास की वैसी ही पुनरावृत्ति हो रही है। सीमाएं मिटती जा रही हैं; एक के बाद एक देश का पतन हो रहा है। भूलुण्ठित कंकालों की चरचराहट वातावरण में स्पष्ट रूप से सुनी जा सकती है।

लैनी को याद आया कि कल संध्या के समय जब वह अपने सौतेले भाई पर्सी बड के साथ बातें कर रहा था उसने एक बड़ी मनोरञ्जक बात बतायी थी। पर्सी हाल ही में अफ्रीका में शिकार करके लौटा था। उसने बताया कि किस प्रकार उसे किसी ऊंचे पेड़ पर मचान में बैठे बैठे रात रात भर शेर की प्रतीक्षा

में जागते रहना पड़ता था। नीचे एक बकरी बांध दी जाती थी। भय के कारण वह बेचारी अनवरत रूप में चिल्लाती रहती थी। इसके बाद जब शेर आता था वह एक थप्पड़ से ही उसका प्राणान्त कर देता था। पर्सी ने इस करुण दृश्य का बड़ा ही सजीव चित्रण किया था। उसने बताया था कि शेर अपने शिकार के टुकड़े टुकड़े कर डालता है और आस पास जमा हो जानेवाले छोटे मोटे पशुओं की ओर ऐसी घृणा और क्रोध से गुर्राता है कि हृदय कांप उठता है। ये छोटे मोटे पशु कुछ दूरी पर जाकर खड़े हो जाते हैं—इस आशा से कि अपना पेट भर कर शेर जो बचा खुचा अंश छोड़ देगा उससे ये अपना काम चला लेंगे।

जोहानीस ने अपनी सहमति जनाते हुए कहा कि आज ठीक इसी प्रकार की वस्तुस्थिति है। अन्तर केवल इतना ही है कि आक्रमणकारी शेर नहीं बल्कि भालू है। उन्होंने कहा कि रेडियो सुनते समय जेकोस्लोवाकिया, पोलैण्ड, हंगरी और रूमानिया की हड्डियों की चर्चराहट स्पष्ट रूप में सुनाई पड़ती है। शीघ्र ही ग्रीस और ईरान का नम्बर आएगा—और इसके बाद पृथ्वी के दूसरे छोर पर स्थित सुदूर कोरिया का!

(१२)

लैनी ने घर पहुँच कर जोहानीस के परामर्श के अनुसार काम करना शुरू किया। उसे नित्य नये नये रेडियो ब्राडकास्ट सुनने पड़ते थे, भांति भांति की पत्र पत्रिकाएं पढ़नी पड़ती थीं। रिक के पैर में चोट आ गयी थी। इसलिये वह चल फिर न पाता था। वह लेटे लेटे ये पत्र-पत्रिकाएं पढ़ता रहता था और आवश्यक स्थानों पर चिन्ह लगा देता था। सप्ताह में एक या दो बार शान्ति-परिवार के सारे सदस्य मिलकर वस्तुस्थिति पर विचार कर लेते थे। जनवरी मास में ब्रिटिश सरकार ने "प्रोटोकोल एम" नामक एक गुप्त कागज प्रकाशित कर दिया। इस गुप्त कागज के जरिये सोवियत सरकार ने अपने एजेण्टों को आदेश दिया था कि वे जिस प्रकार भी हो योरोप में मार्शल-योजना को असफल करने की चेष्टा करें। कुछ ही दिन बाद "प्रवदा" में यह समाचार निकला कि सोवियत सरकार ने डिमीट्रोव को बाल्कान संघ के निर्माण से सम्बन्धित योजना को स्थगित कर देने का आदेश दिया है। यह डिमीट्रोव एक समय एक प्रसिद्ध क्रान्ति-

कारी नेता के रूप में पूज्यनीय था। नाजियों ने 'राइख्स्टाग अग्निकाण्ड' के लिए उसे उत्तरदायी घोषित किया था। किन्तु अब सोवियत रूस की नीति डिमीट्रोव के विरुद्ध हो गयी थी। बालकान संघ बनना सोवियत रूस के लिये सुविधाजनक न था क्योंकि वह इन देशों को एक एक करके हड़पने की इच्छा रखता था।

इसी मास में फ्रांस की कम्युनिस्ट पार्टी की ओर से यह मांग की गयी कि वहां के संसद के कम्युनिस्ट सदस्य जेकस डकलोज को फ्रांस का वायस-प्रेसीडेण्ट बना दिया जाय। स्मरणीय है कि फ्रांस की एक पत्रिका में इस व्यक्ति का जो लेख प्रकाशित हुआ था उसी ने अमेरिका की कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर एक हलचल की सृष्टि कर दी थी और ब्राउडर के स्थान पर फोस्टर को सत्तारूढ़ कर दिया था। फ्रांस में डकलोज को उप-राष्ट्रपति बना देने का अर्थ था उस राष्ट्र की आत्महत्या। इसी मास में फ्रांक का अधिकृत रूप में मूल्यपात किया गया और विनिमय दर ११९ फ्रांक प्रति डालर के स्थान पर २१४ फ्रांक प्रति डालर कर दी गयी।

फर्वरी मास में सोवियत सरकार ने ईरान के विरुद्ध यह आक्षेप लगाया कि वह अमेरिका से सहायता प्राप्त कर रहा है। जेकोस्लोवाकिया की ओर से यह आपत्ति प्रकट की गयी कि उसकी पुलिस में कम्युनिस्ट घुसते जा रहे हैं। चार दिन बाद तथाकथित कम्युनिस्ट कार्यकारिणी ने जेकोस्लोवाकिया के सभी सरकारी विभागों, समाचार पत्रों तथा रेडियो स्टेशनों पर अधिकार कर लिया। अमेरिका ब्रिटेन तथा फ्रांस ने इस तानाशाही के विरुद्ध प्रतिवाद किया किन्तु कोई लाभ न हुआ। शिकारी अपने मचान से चिल्ला कर शेर को भगा सकता है किन्तु रूसी भालू टस से मस नहीं होता।

उधर उत्तरी कोरिया से और भी निराशाजनक समाचार आ रहे थे। सोवियत सरकार ने स्पष्ट रूप में यह घोषणा कर दी थी कि वह राष्ट्र संघ को उत्तरी कोरिया की स्थिति का निरीक्षण न करने देगी। दो सप्ताह बाद उत्तरी कोरिया में सोवियत सरकार की ओर से एक तथाकथित गणतन्त्र की स्थापना हो गयी और एक विशाल जन-सेना संगठित करने का आयोजन होने लगा। किन्तु सोवियत शब्दावली में गणतन्त्र का क्या अर्थ है इसे सारे संसार ने भली भांति समझ लिया था। वहां गणतन्त्र का अर्थ यह था कि प्रत्येक चुनाव के लिए केवल एक

प्रार्थी रहेगा और जो लोग दास-मजदूर-शिविरों से बचना चाहेंगे वे इस मनोनीत प्रार्थी को ही अपना वोट देंगे। चुनाव फल ९९'८ प्रतिशत के आस पास निकला करेगा। "जनता की सरकार" का अर्थ यह होगा कि यह सरकार जनता पर शासन करेगी। 'जनता की सेना' का अर्थ होगा बलात भर्ती। और इस प्रकार बलात तयार की गयी सेना को क्रेमलिन के महाप्रभु जहां चाहें झोक देने के लिये स्वतन्त्र रहेंगे! हथियों की चर्चराहट बढ़ती जा रही थी!!



अध्याय १६

● मेरी तलवार निकालो ●

(१)

लैनी और लारेल जब कभी किसी समाचारपत्र-विक्रेता की दूकान से गुजरते समाचारपत्रों के शीर्षकों पर एक दृष्टि अवश्य डाल लेते। वे रेडियो पर समाचार सुनने में भी कभी लापरवाही न दिखाते। किन्तु समाचार पत्र पढ़ने तथा रेडियो सुनने के अतिरिक्त उनके पास कुछ और भी आवश्यक कार्य थे। वे अपना सारा समय समाचार पत्रों और रेडियो को न दे सकते थे। सप्ताहों तक प्रतीक्षा करने के बाद भी जब उन्हें वह समाचार न मिला जिसके लिये उनके मन में इतनी उत्सुकता थी तब वे अपने दैनन्दिन कार्यों में मन लगाने लगे। उन्हे प्रतिदिन अपने कार्यालय की डाक देखना पड़ता था, पत्रों के उत्तर लिखने पड़ते थे और घर पर पांडुलिपियों का सम्पादन करना पड़ता था। कभी कभी वे कोई नई पुस्तक भी पढ़ लेते थे। इन सब कार्यों में उनका काफी समय लग जाता था।

इस प्रकार एक दिन किसी दूसरे व्यक्ति को वह समाचार उनसे पहले प्राप्त हो गया जिसकी इतने दिनों से प्रतीक्षा हो रही थी। लैनी अपने कार्यालय में बैठा हुआ अपने सेक्रेटरी को पत्रों के उत्तर लिखा रहा था। इसी समय किसी ने दरवाजा खटखटाया। लेनी ने दरवाजा खोला तो देखा कि उसके कार्यालय में काम करनेवाली एक लड़की खड़ी है। यह लड़की आने वाली डाक के लिफाफे खोलने का कार्य करती थी। इस समय उत्तेजना के कारण उसका चेहरा लाल हो गया था और श्वास प्रश्वास असंतुलित हो रहा था। "क्षमा कीजिये मिस्टर बड··· किन्तु एक बड़ी भयानक बात हो गयी है!"

"क्या हुआ?" लैनी ने प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखते हुए पूछा। किन्तु मन ही मन उसने अनुमान लगा लिया था।

"मिस्टर बड! मेरी बहन न्यूयार्क में रहती है। 'डेली मिरर' नामक समा-

चार पत्र में काम करती है। उसने मुझे अभी अभी टेलीफोन करके बताया है कि मुख्य पृष्ठ पर बड़े बड़े अक्षरों के साथ यह शीर्षक जा रहा है कि—"

"हां, हां। बताओ तो।" लैनी ने उसे आश्वासन देते हुए कहा।

"कि हैन्सी रोबिन गिरफ्तार हो गया है।"

"हे भगवान!" लैनी ने आश्चर्यचकित होकर कहा। "इसका क्या अर्थ हुआ?"

लड़की ने घबराहट के स्वर में कहा "और, और—"

"और क्या?"

"और श्रीमती हैन्सी रोबिन को भी गिरफ्तार कर लिया गया है।" वह कदाचित "आपकी बहन" कहना चाहती थी किन्तु उसे साहस न हुआ।

"उन्हें किस लिये गिरफ्तार किया गया है?"

"कहा जाता है कि वे कम्युनिस्ट जासूसों के रूप में काम कर रहे थे!"

लैनी कुर्सी से उछल पड़ा। पत्र लिखने का कार्य स्थगित करके वह अपने रेडियो वाले कमरे में चला गया। उसे मालूम था कि किस समय किस स्थान से समाचार प्राप्त किया जा सकता है। उसका सेक्रेटरी तथा कार्यालय के अन्य कर्मचारी पीछे पीछे आ गए। लैनी चाहता तो दरवाजा बन्द कर सकता था। किन्तु उसने ऐसा करना उचित न समझा। यह कर्मचारियों के प्रति एक प्रकार की निर्दयता होती। उसने सोचा कि आखिर यह समाचार छिपा तो रहेगा नहीं; कुछ ही देर बाद यह समाचार पत्रों में निकल जाएगा। ऐसी अवस्था में इन्हें अभी से क्यों न बता दिया जाय। उसने रेडियो खोल दिया; कार्यालय के सारे व्यक्ति कमरे में आकर खड़े हो गए। रेडियो कह रहा था—

"·····गिरफ्तारियां जारी हैं। एफ० बी० आई० ने इस विषय पर कोई मन्तव्य प्रकट करने से इनकार कर दिया है। जिस स्थान पर फोटो प्रिण्टों को लाया जाता था उसके सम्बन्ध में एफ० बी० आई ने कोई संकेत नहीं किया है किन्तु अफवाह के अनुसार यह डेलानसी स्ट्रीट में है। वहां पर फोटो प्रिण्टों तथा अन्य कागजों से भरी हुई एक लारी खड़ी थी। अधिकांश अभियुक्तों को वहीं पर निरफ्तार किया गया था; कुछ की गिरफ्तारी उनके घरों पर हुई थी। इस मामले

के साथ जिन रूसियों का सम्बन्ध है उनमें से एक के सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि उसे राजनैतिक छूट प्राप्त है। किन्तु एफ० बी० आई ने इस विषय पर किसी प्रकार का मत प्रदर्शित करने से इनकार कर दिया है। एफ० बी० आई इस दल पर कई महीनों से अपनी आंख जमाए हुए था! उसे दल के अड्डे तथा अभियुक्तों के घरों में काफी प्रमाण प्राप्त हुए हैं।

"अभी तक इस बात का पता नहीं चल सका है कि श्री हैन्सी रोबिन तथा श्रीमती रोबिन के घर की तलाशी ली गई है या नहीं। किन्तु दोनों ही व्यक्ति खुले आम कम्युनिस्ट पार्टी के साथ सम्बन्धित रहे हैं और उन्होंने अपने राजनैतिक विश्वासों को छिपाने का कोई प्रयत्न नहीं किया। हैन्सी रोबिन की गिरफ्तारी से संगीत संसार में एक तहलका मच जायगा। हैन्सी संसार के सर्वश्रेष्ठ वायलिन वादकों में गिने जाते हैं और उनकी पत्नी ने अधिकांश अवसरों पर उनका साथ दिया था। दोनों योरोप की विस्तृत यात्रा कर चुके हैं और दो वर्ष रूस में रहे हैं। वहां की वस्तुस्थिति के सम्बन्ध में उन्होंने संतोष प्रकट किया था।

"बेसी बड रोबिन का जन्म कनेक्टीकट के सबसे अधिक सम्भ्रान्त और धनी परिवार में हुआ था। उनके पिता राबर्ट बड, बड-अलिन्ग-एयरक्राफ्ट कम्पनी के प्रेसीडेन्ट हैं और माता एस्थर रेमसन बड फर्स्ट नैशनल बैन्क आफ न्यूकासेल के प्रेसीडेण्ट की पुत्री हैं। हैन्सी रोबिन के पिता का नाम है जोहानीस रोबिन जो एक समय जर्मनी के महत्वपूर्ण उद्योगपतियों में से एक थे और जिन्हें नाजियों ने भिखारी बनाकर जेल में बन्द कर दिया था। अब आप बड-अलिन्ग-एयरक्राफ्ट कम्पनी में सेल्स मैनेजर के पद पर काम करते हैं।

"कुछ और महत्वपूर्ण खबरें हैं। किन्तु उनकी चर्चा करने के पूर्व एक दूसरी बात का उल्लेख कर दिया जाता है। यदि आप 'बेबीस्किन' साबुन का व्यवहार करते हैं तो आप विश्वास रख सकते हैं कि आप की त्वचा बच्चों की त्वचा की भाँति मुलायम बनी रहेगी। 'बेबीस्किन' साबुन इटली से आनेवाले विशुद्ध जैतून के तेल से बनता है। इसमें दक्षिण के टापुओं से आनेवाला सुन्दर नारियल का तेल भी मिलाया जाता है। हम आप को यह आश्वासन दे सकते हैं कि यदि

आप 'बेबीस्किन' साबुन का व्यवहार केवल एक सप्ताह भी कर लेंगे तो आपको इसकी उत्कृष्टता का पता चल जायगा।··· ··· अब दूसरी खबरें सुनिये।···"

(२)

इस समाचार से लैनी का उद्विग्न हो जाना स्वाभाविक ही था। वह तेजी के साथ अपनी मोटर की ओर बढ़ा। घर जाकर लारेल को हैन्सी और बेस की गिरफ्तारी का समाचार देने के लिये वह उद्विग्न हो रहा था। लैनी के जाने के बाद कार्यालय के कर्मचारी गण एक स्थान पर एकत्रित होकर उत्तेजित स्वर में इस घटना की चर्चा करने लगे।

घर पहुंच कर लैनी ने देखा कि लारेल को एक पड़ोसी के जरिए पहले ही यह समाचार मिल चुका है। एकान्त में पति पत्नी को लौकिक अभिनय की आवश्यकता न पड़ी। दरवाजा बन्द करके दोनों शान्तिपूर्वक इस घटना पर विचार करने लगे। लैनी ने कहा, "एफ० बी० आई वाले चाहते हैं कि हैन्सी अपना काम चालू रखे। इसीलिए सबके साथ उसको भी गिरफ्तार किया गया है। यदि उसे छोड़ दिया जाता तो पार्टी को संदेह हो जाती।"

"वे लोग उसे कब तक हाजत में रखेंगे? तुम्हारा क्या अनुमान है?"

"मुझे कानूनी मामलों के सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है किन्तु उन लोगों की जमानत तो हो ही जायगी।"

"बेचारा हैन्सी! इस घटना से उसकी ख्याति को काफी बट्टा लगेगा।"

"किन्तु दूसरी ओर वह कम्युनिस्ट पार्टी का पूर्ण विश्वासपात्र बन जायगा। मैं समझता हूँ सरकार ने उसे केवल इस उद्देश्य से गिरफ्तार किया है।"

इसी समय टेलीफोन की घन्टी बज उठी। लैनी समझ गया कोई कौतूहल-प्रवण व्यक्ति यह जानना चाहता है कि लैनी और लारेल ने अपने मित्र की गिरफ्तारी के सम्बन्ध में क्या रुख लिया है। इस बात का भय था कि कहीं दिन भर टेलीफोनों का तांता न लगा रहे।

थोड़ी ही देर बाद फिर घन्टी बजी। लैनी ने रिसीवर उठाया। एक स्त्री की आवाज सुनाई पड़ी···"मिस्टर बड? मैं हूं मर्सी कोलफाक्स। क्या अब मुझे भूल

गये ? एक बार ग्रीनविच गाँव में आपने मेरे स्टूडियो में चाय पी थी। उस बात को कई वर्ष हुए।"

"हां, हां मुझे याद आ गया।" लैनी ने नम्रतापूर्वक कहा। "कहिये, आप क्या कहना चाहती हैं ?"

"मैं लिबरल डिफेन्स लीग की सेक्रेटरी हूं। मैं आपसे अविलम्ब मिलना चाहती हूं।"

"क्या आप एडगारमीयर आ सकती हैं ?"

"प्रसन्नता के साथ।"

"तब आ जाइये। मैं दिन भर घर में ही रहूंगा।"

"मैं पहली ही गाड़ी से रवाना हो रही हूं।"

लैनी ने रिसीवर रख दिया। मिसीं कोलफाक्स के कई नाम हैं—उदाहरण के लिए ब्रायन माअर और बोस्टन ब्लेक बे। पुराने जमाने में मैं इससे ग्रीनविच गांव में कई बार मिल चुका हूं। यह सभी उग्र राजनैतिक दलों के साथ किसी न किसी रूप में सम्बन्धित रही है। किसी ने मुझसे कहा था कि वह कम्युनिस्ट है। किन्तु मैंने कोई ध्यान न दिया था। किन्तु उन दिनों मुझे इसकी कोई परवाह न थी उन दिनों मैं संगठित मोर्चे पर विश्वास रखता था। कम्युनिस्ट लोग मेहनती थे और इसीलिए हम लोग इन्हे उपयोगी समझते थे।"

"अब वह तुम्हारे पास किस उद्देश्य से आ रही है ?"

"वह अपने आप को लिबरल डिफेंस लीग का सेक्रेटरी बताती है। यह अवश्य कोई कम्युनिस्ट मोर्चा होगा, इसमें कोई संदेह नहीं। इन्होंने सारे सुन्दर सुन्दर शब्दों को अपना बना लिया है और उन्हे इस प्रकार विषाक्त कर दिया है कि 'उदार', 'गणतांत्रिक' 'लोकतांत्रिक' आदि शब्द अब कम्युनिस्ट शब्द बन चुके हैं। वह आकर मुझसे यही कहेगी कि मैं बेस की जमानत ले लूं। और उसके मुकदमे का खर्च उठाने की दिशा में लीग की सहायता करूं।"

"तुम उसे क्या उत्तर दोगे ?"

"मैं बहुत कुछ कहूंगा। बड़ा तमाशा रहेगा। तुम दरवाजे की आड़ से सारी बातें सुनना।"

"और उसका नाम है मर्सी !! एक कम्युनिस्ट के लिए यह नाम कितना हास्यस्पद है !"

"कदाचित उसके पूर्वज कट्टर धार्मिक लोग रहे होंगे। आज भी उसे अपनी वंश परम्परा का कुछ न कुछ अभिमान अवश्य होगा।"

(३)

मर्सी कोलफाक्स को लैनी के घर तक पहुंचने में प्रायः दो घन्टे का समय लग गया। वह टैक्सी में आयी थी। शायद उसने पूरे रास्ते के लिए ही टैक्सी कर ली थी। लैनी ने जब उसे पहले पहल देखा था तब वह स्वस्थ और सबल प्रतीत हुई थी। उसका चेहरा गोल था, सिर पर भूरे २ बाल थे जिन्हे उसने काट कर बहुत ही छोटे कर लिए थे। अब उसके बाल सफेद हो गये थे और पूर्वापेक्षा लम्बे थे। किन्तु अभी तक उसके चेहरे पर रेखायें न पड़ने पायी थीं और उसका हाव भाव प्रभावोत्पादक बना हुआ था। लैनी के बैठकखाने में आते ही उसने कहा, "मै समझती हूं आपने वह भयानक समाचार सुन लिया होगा।"

"मैं उसे तीन बार रेडियो पर और कम से कम बारह बार टेलीफोन पर सुन चुका हूं। मेरे लिये यह समाचार बड़ा ही दुखदायी है। मेरा सारा परिवार इससे क्षुब्ध हो उठा है। हम लोग इतना तो जानते थे कि हैन्सी और बेस कम्युनिस्ट हैं किन्तु हम यह न जानते थे कि वे गुप्त क्रियाशीलता में लगे हुए हैं।"

"आपके मुंह से इस प्रकार की बातें सुन कर मुझे आश्चर्य हो रहा है। जब तक मुकदमे का फैसला न हो जाय आप यह कैसे कह सकते हैं ? मैं आपको विश्वास दिलाती हूं कि हैन्सी और बेस एक दम निर्दोष हैं। उनके विरुद्ध जाली मुकदमा चलाया गया है। यह हमारे विरोधियों का षड़यंत्र मात्र है।"

"मुझे आशा है कि आपकी बात सच निकलेगी। किन्तु इस सम्बन्ध में कोई चर्चा करने के पूर्व मैं आपसे एक प्रश्न पूछना चाहता हूं—क्या आप कम्युनिस्ट हैं ?"

महिला का स्वर तुरन्त बदल गया। नपे तुले शब्दों में उसने कहा, "मैं आप से बतला चुकी हूं कि मैं लिबरल डिफेन्स लीग की सेक्रेटरी हूं। मैं आपसे इसी रूप में मिलने के लिए आई हूं।"

"किन्तु मैं आपकी संस्था से परिचित नहीं हूं, मिस कोलफाक्स। मैं उसके सेक्रेटरी को समझ कर ही उसके सम्बन्ध में कोई धारणा बना सकता हूं। क्या आप कम्युनिस्ट हैं?"

'मेरे व्यक्तिगत विश्वासों का इस मामले के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है, मिस्टर बड।"

'मेरे लिए यह प्रश्न मवत्वपूर्ण है। मुझे आशा है कि आप मेरे प्रश्न का स्पष्ट उत्तर देने की कृपा करेंगी।"

"मैं आपके पास जिस काम के लिए आई हूं---'

"यदि मेरे प्रश्न का उत्तर न देंगी तो मैं आप को कम्युनिस्ट मान लेने के लिए बाध्य हो जाऊंगा।"

"आप जो चाहें समझ सकते हैं। किन्तु आप मेरी बात सुनने की कृपा कीजिये, मिस्टर बड।"

"आपकी बात मैं अवश्य सुनूंगा, मिस कोलफाक्स। किन्तु अब मैंने समझ लिया है कि मैं एक कम्युनिस्ट के साथ बातें कर रहा हूँ।"

"मैं आप से यह कहना चाहती हूं मिस्टर बड, कि इन गिरफ्तारियों ने यह प्रमाणित कर दिया है कि हमारी सरकार में बहुत से प्रतिक्रियावादी तत्व भरे हुए हैं और वे उन थोड़े से साहसी बुद्धिजीवियों को दबाने का प्रयत्न कर रहे हैं जिन्होंने शान्ति के पक्ष में अपनी आवाज उठाने का साहस किया था।"

लैनी का स्वर भी कुछ कम स्पष्ट न था। "अपने इस बात को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया है कि आप कम्युनिस्ट हैं। किन्तु मिस कोलफाक्स, मैं बहुत से कम्युनिस्टों से मिल चुका हूं और मुझे उनके नारों के सम्बन्ध में पूरी पूरी अभिज्ञता है। इसीलिए जब कोई कम्युनिस्ट शान्ति और स्वतंत्रता की बातें करने लगता है तो मैं क्षण भर के लिए भी उसके चक्मे में नहीं आता। मैं आप से तर्क नहीं करना चाहता। मैं आप को केवल इतना ही बताना चाहता हूं कि आप के शब्दों का मेरी दृष्टि में कोई मूल्य नहीं है।"

"क्या यह बात आपके लिए एकदम अर्थशून्य है कि आपकी बहन और बहनोई

को पकड़ कर जेल में बन्द कर दिया जाय—हैन्सी रोबिन को जो कि हमारे युग के सर्वश्रेष्ठ संगीतज्ञों में गिना जाता है।"

"मैंने इस सम्बन्ध में जो दुःख मनाना था वह बहुत पहले मना लिया था—उस समय जब कि मैंने उन्हे कम्युनिज्म की ओर बढ़ते हुए देखा था। मैंने उन्हे उसी समय चेतावनी दे दी थी। इस सम्बन्ध में मेरा मन एकदम साफ है।"

"तो क्या आपका यह अर्थ है कि आप अपनी बहन को जेल में सड़ते रहने देंगे?"

"मैं इस बात को भली भांति जानता हूँ कि मेरी बहन जेल में कुछ घन्टों से अधिक न रहेगी। मैं जानता हूं कि मेरी बहन उस गुप्त संगठन की सदस्य है जिसके पास करोड़ों रुपये हैं। यह रुपया कुछ तो विदेशों में हमारे शत्रुओं के यहां से आया है और कुछ देश के बुद्धू पूंजीपतियों से। इस रुपये से ही उसकी जमानत होने दीजिए। लाल वकीलों की फीस इस कोष से ही निकलने दीजिए। मैं इस कार्य में अपना रुपया खर्च करने के लिए तयार नहीं हूं।"

"आपकी बातें सुनकर मैं तो अवाक हो गई हूं, मिस्टर बड।"

"मुझे इसका दुःख है। मैं व्यंग्य के स्वर में नहीं बोल रहा, मिस कोलफाक्स। आपके नाम से ही मैं इस बात का अनुमान लगा सकता हूं कि आपके पूर्वज धार्मिक व्यक्ति थे। बेस और मेरे पूर्वज भी ऐसे ही थे। मैं जानता हूं कि आप ने अच्छे से अच्छे उद्देश्यों से अनुप्रेरित होकर ही कम्युनिस्टों के साथ योगदान किया है। आपके हृदय में दरिद्र जनता के लिए सहानुभूति और दया है। किन्तु आपका आदर्शवाद एक गलत रास्ते की ओर मुड़ गया है और यह एक भयानक बात है। मैं चाहता हूं कि आप इस मायामरीचिका से निकल कर वस्तुस्थिति को स्पष्ट रूप में देखने का प्रयत्न करें और यह समझें कि आप गुण्डों के दल में बहक गयी हैं। आप की क्रांति आज प्रतिक्रांति के रूप में परिवर्तित हो गयी है। उन आदर्शों और स्वप्नों का आज कोई पता नहीं है जिनने पहले के लोगों को अनुप्रेरित किया था। आज तो आप की क्रान्ति इतिहास की विभीषिका ही बन गई है। आप और मेरे जैसे आदर्शवादियों के लिए आज कम्युनिज्म में कोई स्थान नहीं है; वे लोग तभी तक आपका उपयोग कर रहे हैं जब तक कि वे

जानते हैं कि आप से उनका कोई मतलब सिद्ध हो रहा है। किन्तु काम निकल जाने के बाद वे आपका दूध की मक्खी की भांति निकाल फेकेंगे। फिर जेल या दास-मजदूर-शिविर ही आपके लिये एकमात्र स्थान रह जाएंगे। वहां आठ सौ कैलोरी प्रति दिन के हिसाब से आपको भोजन मिलेगा और तीन वर्ष के अन्दर ही आप का शरीर नष्ट हो जायगा। इसके बाद वे आपको एक काल कोठरी में ले जाकर गोली मार देंगे।"

कट्टर धार्मिक पूर्वजों की सन्तान काष्ठवत बैठी हुई थी। उसकी मुट्ठियां मजबूती के साथ बंधी हुई थीं। उसके मोटे मोटे गालों पर उत्तेजना की लाली दौड़ गई थी।

"मैं समझ गई, मिस्टर बड। आप लाल-विरोधियों के मिथ्या प्रचार का शिकार हो गये हैं और अब आप के उद्धार की कोई आशा नहीं रह गई।"

"लाल-विरोधी? क्या कह रही हैं आप? क्या रूस की कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास की स्पष्ट-चर्चा करना लाल-विरोधी प्रचार है? क्या जनता को यह बताना लालविरोध है कि अब कम्युनिस्ट पार्टी ने पूर्ण रूप में साम्राज्यवादी जारों की नीति अपना ली है? क्या आपको यह नहीं मालूम कि लेनिन ने यह आश्वासन दिया था कि कुछ समय बाद राज्य-संस्था समाप्त हो जायगी? किन्तु उसकी कितनी समाप्ति आपने देखी है? क्या आप जानती हैं कि लेनिन के आदर्शवादी पुराने मित्रों की एक एक करके नृशंस हत्या कर डाली गई? मिस कोलफाक्स, मैं स्वयं रूस हो आया हूं। मेरे मामा जेस ब्लेकलेस भी एक आदर्शवादी व्यक्ति थे। वे एक अच्छे कलाकार थे। किन्तु उन्होंने अपना सारा जीवन पार्टी के आदर्श की पूर्ति के लिए लगा दिया था। किन्तु याल्टा सम्मेलन के समय जब मैं उनसे एकान्त में मिला था तो मैंने देखा था कि वे एक निराश और दुःखी व्यक्ति हैं और उनका स्वप्न बुरी तरह भंग हो चुका है। लिन्कन स्टेफेन्स का भी यही हाल हुआ। क्या आपने कभी इस बात पर विचार किया है कि स्टालिन और 'डोपायू' के सर्दारों ने कितने बोलशिवकों की हत्या करायी है? अच्छा, मैं आपको बताता हूं। सुनिए--जिनोवीव, रीकोव, राकोव्स्की, कामेनेव, बुखारिन, क्रीलेनको, स्मिरनोव, तुकाशेव्स्की, पिआटाकोव, कारारवान—"

"रहने दीजिए।" वृद्धा महिला ने लैनी को रोकते हुए कहा। "मुझे बताया गया था कि आप एक उदार व्यक्ति हैं। किन्तु मैं देख रही हूं कि मैंने व्यर्थ ही अपना समय नष्ट किया।"

"मुझे विश्वास है कि मैंने अपना समय नष्ट नहीं किया। मैंने आपके अर्न्त-मन में एक बीज डाल दिया है। सम्भव है वह वर्षों तक यों ही पड़ा रहे। किन्तु किसी न किसी दिन उसमें फल फूल अवश्य लगेंगे। किसी न किसी दिन आपके विचारों में परिवर्तन अवश्य होगा। यदि वह समय आ जाय और आप अपने पूर्वजों की भांति गणतंत्र तथा सच्ची स्वतंत्रता पर विश्वास करने लगें तो किसी भी काम के प्रसंग में निस्संकोच भाव से मेरे पास आ सकती हैं। मैं आपकी सहा-यता करने का भरसक प्रयत्न करूंगा।"

बिना एक शब्द कहे महिला उठ खड़ी हुई और क्रुद्ध भाव से कमरे के बाहर निकल गई। उसके जाते ही लारेल जो आड़ से सब कुछ सुन चुकी थी मुस्कराते हुए बाहर निकल आई।

"मुझे भय था कि कहीं वह अपनी कर्त्तव्य भावना से प्रेरित होकर तुम पर गोली न चला दे।" लारेल ने मुस्कराते हुए कहा।

(४)

लैनी ने अपने पिता से मुलाकात की। उसे यह जानने का बड़ा कौतूहल था कि उसके पिता और विशेषकर एस्थर हैन्सी तथा बेस की गिरफ्तारी के फलस्वरूप कितनी दूर तक विचलित हुए हैं। रोबी ने कहा, "एस्थर के सम्बन्ध में मैं बड़ा चिन्तित था क्योंकि उसे मैं इस अशुभ समाचार के लिये पहले से तयार न कर पाया था। किन्तु मेरी आशंका निराधार निकली। उसने स्वयं अपने आप को तयार कर लिया था।"

लैनी को आश्चर्य न हुआ। वह जानता था कि एस्थर रेमसन बड भी कट्टर माता पिता की सन्तान हैं और वे संसार की गतिविधि को समझने के लिये पर्याप्त बुद्धि रखती हैं। रोबी ने कहा, "उसने बेस के साथ बहुत समय पूर्व इस प्रसंग में बातचीत की थी और वह समझ गयी थी कि बेस के उद्धार की कोई सम्भावना नहीं रही। किन्तु एस्थर अब इस बात पर जोर दे रही है कि मैं एक बार जेल में

बेस के साथ भेंट करूं और यदि वह इस बात का आश्वासन दे दे कि भविष्य में वह कम्युनिस्टों के साथ किसी प्रकार का लेन देन न रखेगी तो मैं उसकी जमानत लेकर उसका मुकदमा लड़ने की तयारी करूं।"

"किन्तु बेस इसके लिये तयार न होगी।" लैनी ने कहा।

"मैं जानता हूँ। किन्तु हमें उसे एक अवसर अवश्य देना चाहिये ताकि हमारा मन साफ रहे। एस्थर कहती है कि यदि मैं न जाऊंगा तो वह स्वयं बेस से मिलने के लिये जाएगी। मैंने जोहानीस से बात की थी। वे भी हैन्सी के लिये ठीक यही करने जा रहे हैं। इससे कोई लाभ होने की सम्भावना नहीं है। फिर भी हमें एक बार साथ साथ साथ प्रयत्न कर लेना चाहिये।"

"श्रीमती रोबिन को तो बड़ा सदमा पहुंचा होगा?"

"हां, उनके सम्बन्ध में जोहानीस बड़े चिन्तित हैं। समाचार मिलने के बाद वे बराबर रोती रही हैं; एक क्षण के लिये भी उनके आंसू बन्द नहीं हुए। जोहानीस को भय है कि इस सदमे को वे न सम्हाल सकेंगी। तुम वहां जाकर उन्हे यथासम्भव आश्वासन देने का प्रयत्न करो।"

लैनी के मुखपर अचानक दृढ़ता का भाव आ गया। उसने कहा, "मैं इससे भी अधिक करूंगा। मैं उन्हें अपने कंधे पर सिर रख कर जी भर रोने की छूट दे दूंगा।"

यह कोई नयी बात न होगी। इसके पूर्व भी लैनी और श्रीमती रोबिन बर्लिन में अत्यन्त भयानक परिस्थितियों में मिल चुके थे। उस समय उनका पति नाजियों के हाथ में था जो उसे पूर्णतया भिखारी बना देने के लिये कृतसंकल्प थे। उनका छोटा पुत्र फ्रेडी गायब हो चुका था। स्वयं श्रीमती रोबिन भी एक आतंकित हरिणी की भांति इधर उधर भागती फिर रही थीं। लैनीने सारे परिवार को जर्मनी से भाग निकलने में सहायता पहुँचायी थी। किन्तु बेचारा फ्रेडी रह गया था—वह नादान युवक जो इतनी सुन्दर बंशी बजाता था और जिसने किसी का भी कोई अहित न किया था। नाजियों ने उस पर कठोर अत्याचार किया था और फिर मृतप्राय अवस्था में उसे सीमान्त के पास लैनी को सौंप दिया था। इसके बाद फ्रांस में उसकी मृत्यु हो गयी थी। उसे यहूदी

प्रथा के अनुसार लैनी के रिवेयरा वाले घर के पास दफना दिया गया था। उस बात को आज तेरह वर्ष हुए। आज श्रीमती रोबिन अमेरिका में निरापद बैठी हुई थीं। अब वे पहले की भांति धनी न थीं। किन्तु उनके मन में धन का लोभ कभी न रहा था। वे केवल उतना ही धन चाहती थीं जिससे शान्ति पूर्वक जीवन निर्वाह हो जाय।

(५)

लैनी अपनी मोटर में बैठकर श्रीमती रोबिन के घर की ओर रवाना हुआ। इस समय उसके पास इससे अधिक महत्वपूर्ण कोई कार्य न था। वह हडसन ब्रिज पार करके श्रीमती रोबिन के सुन्दर और शान्तिपूर्ण घर पर पहुँचा। एक यहूदी नौकरानी ने दरवाजा खोला। उसने लैनी को बताया कि मिस्टर रोबिन शहर चले गए हैं। उसने राहेल को बुलाया, जो एक समय फ्रेडी की पत्नी थी किन्तु अब अपने नये पति तथा परिवार के साथ इस मकान में निवास कर रही थी। राहेल ने लैनी का अभिवादन करके कहा कि मां अपने ऊपर वाले कमरे में हैं। उन्होंने भोजन त्याग दिया है और अनवरत रूप में रो रही हैं।

"शायद वे आप से मिल लें।" राहेल ने कहा।

"मैं ऊपर जा रहा हूं। किसी से इस बात की चर्चा मत करना।" लैनी ने चेतावनी दी।

लैनी परिवार का एक पुराना मित्र था। उसने दरवाजा न खटखटाया। आहिस्ते से दरवाजा खोलकर वह कमरे के अन्दर चला गया। उसने देखा कि वृद्धा महिला तकिये में अपना सिर छिपाये हुए रो रही हैं। उनकी हिचकियां बंध गयी हैं। वस्तुतः उनकी आयु अधिक न थी। अभी वे साठ वर्ष की भी न हुई थीं। किन्तु उनका हाव भाव एक वृद्धा की भांति था। इस समय उनके हृदय पर आतंक छाया हुआ था। उनका विश्वास था कि भगवान ने इस समय उनपर कोप किया है। और इस कोप का एकमात्र कारण उनके पाप ही हैं। फ्रेडी की मृत्यु के बाद वे सदा काले कपड़े पहनती थीं और उनके जीवन में कोई व्यक्तिगत आकर्षण न रह गया था। अब उनका जीवन केवल उन लोगों के लिये था जिनके

लिये उनके हृदय में प्रेम था और जिन्हें वे उन अभिशापोंसे बचाए रखना चाहती थीं जिन्होंने उनके जीवन को ग्रस्त कर लिया था।

बचपन से ही उन्हें मुसीबतों का सामना करना पड़ा था। पहले उन्हें रूस से भागना पड़ा था, फिर जर्मनी से। और अब यहां अमेरिका में भी मुसीबतों ने उनका पीछा नहीं छोड़ा! वे सोच रही थीं कि आतंक की ये कैसी रहस्यमयी छायाएं हैं जो अदृश्य रूप में मेरी आत्मा का पीछा कर रही हैं? आज मेरी आत्मा छिन्न भिन्न हुई जा रही है, उसपर आतंक का अंधकार छाया हुआ है! मेरी स्नायु मण्डली का तार तार चूर हुआ जा रहा है!!

लैनी ने दरवाजा बन्द कर दिया ओर वृद्धा के बिस्तर के पास आकर बैठ गया। उसने धीमे स्वर में पुकारा, "माँ!"

वृद्धा ने धीरे से अपना सिर उठा कर लैनी की ओर देखा। लैनी स्तम्भित रह गया। लैनी ने ऐसा अवसादग्रस्त करुण चेहरा पहले कभी न देखा था। उसने बिना किसी प्रकार की भूमिका बांधे स्पष्ट स्वर में कहा, "मां, खबर मिलते ही मैं तुमसे मिलने के लिये चला आया। मैं तुम्हें एक भेद की बात बताए देता हूँ। किन्तु पहले तुम मुझे इस बात का वचन दो कि तुम किसी से इसकी चर्चा न करोगी।"

वृद्धा लैनी की ओर एकटक रूप में देखती रहीं। उनका हाव भाव एकदम विक्षिप्त का सा था। बड़ी कठिनाई से वे केवल इतना की कह पायीं "हां, लैनी।"

"जोहानीस, राहेल या किसी भी व्यक्ति से नहीं। मुझे वचन दो कि तुम किसी को यह भेद न बताओगी।"

"हां, लैनी।"

लैनी ने झुककर धीमे स्वर में कहा, "हैन्सी कम्युनिस्ट नहीं है।"

"क्या?" वृद्धा ने स्तम्भित होकर कहा, "वह जेल में है।"

"हैन्सी सरकार की ओर से एक गुप्तचर का कार्य कर रहा है—एफ० बी० आई की ओर से। उसने कम्युनिस्टों का भेद प्राप्त करने के लिये ही यह स्वांग रचा है।"

वृद्धा की आंखें फैल गयीं, होठ लटक गए। आश्चर्य के साथ उन्होंने कहा, "तब वह जेल में क्यों है?"

"अन्य अभियुक्तों के साथ उसे भी जेल में रखना आवश्यक था। यदि उसे छोड़ दिया जाता तो कम्युनिस्टों को तुरन्त संदेह हो जाता।"

वृद्धा अवाक होकर लैनी की ओर एकटक देखती रह गयीं।

"वह बेस के साथ सहमत होने का स्वांग रचता रहा है किन्तु वस्तुतः वह एक भी प्रश्न पर उसके साथ सहमत न था।"

"अरे, उस औरत की बात मत करो! किन्तु वह तुम्हारी बहन है लैनी; मुझे उसके विरुद्ध कुछ न कहना चाहिए।"

"मां, उसके लिये भी तुम्हारे मन में करुणा और सहानुभूति ही होनी चाहिये, जिस प्रकार कि अन्य अभागी आत्माओं के लिये है। वह कम्युनिस्ट केवल इसीलिये हुई थी क्योंकि उसका विश्वास था कि कम्युनिज्म सामाजिक न्याय तथा दरिद्रों की स्वतन्त्रता का प्रतिपादन करता है। किन्तु यह एक भयानक गलती थी। आज सम्पूर्ण कम्युनिस्ट आन्दोलन चरित्रहीन व्यक्तियों के हाथ में है। बेस को अपनी भूलों के लिये भयानक पश्चाताप करना पड़ेगा। जो भी हो, हैन्सी के लिये तुम्हें चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है।"

"वे कब तक उसे जेल में रखेंगे, लैनी?"

"मुझे पूर्ण विश्वास है कि कम्युनिस्ट लोग एक दो दिन के अन्दर ही उसकी जमानत का प्रबन्ध कर लेंगे। इसके बाद वे हैन्सी को एक देवता के रूप में परिवर्तित कर देंगे और उसका पूर्ण विश्वास करने लगेंगे। फलस्वरूप हैन्सी को पार्टी के भेद सहज ही प्राप्त हो जायंगे।"

"लैनी, मेरा हैन्सी कितना अच्छा है!"

"हां मां। मुझे तुम्हे यह भेद बताने का अधिकार न था। किन्तु मैंने इसीलिये तुम्हे बता दिया क्योंकि मुझे भय था कि कहीं यह आघात तुम्हारे हृदय को चूर्ण न कर दे। किन्तु इस रहस्य को तुम अपने ही तक सीमित रखना।"

"अवश्य, अवश्य, लैनी। ईश्वर साक्षी है!"

"तुम्हें थोड़ा सा अभिनय भी करना पड़ेगा। तुम अपने चेहरे पर प्रसन्नता का

भाव मत लाना। रोने की कोई आवश्यकता नहीं किन्तु तुम्हे अपने आप को चिन्तित और दुःखी दिखाने का प्रयत्न करना पड़ेगा। थोड़े बहुत आँसू भी बहाने पड़ेंगे।"

"ओह, आंसू तो हर्ष के कारण भी वह निकलते हैं। लैनी, तुमने जो कुछ बताया है वह एकदम सत्य है न?"

"तुम मेरे प्रत्येक शब्द का विश्वास कर सकती हो! लारेल को इस बात की जानकारी है। किन्तु अन्य किसी व्यक्ति को इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है; मेरे पिता को भी नहीं। तुम जोहानीस से भी इसकी चर्चा मत करना।"

"किन्तु वे इतने दुःखी हैं!"

"वे पुरुष हैं और इस सदमे को सम्हाल सकते हैं। हैन्सी उन्हें अपनी जमानत न लेने देगा। वह पार्टी के आदेशों के अनुसार ही अभिनय करेगा। इस ओर तुम्हें अपना अभिनय चालू रखना पड़ेगा। तुम परिवार से यह कह सकती हो कि लैनी ने यह आश्वासन दिया है कि हैन्सी की जमानत शीघ्र ही मंजूर हो जायगी और जेल में उसे कोई कष्ट न होगा क्योंकि न्यूयार्क के जेलों में कैदियों को पीटने की प्रथा नहीं है।"

(६)

वृद्धा महिला ने उठकर अपने आंसू पोछे और बाल सम्हाले। इसके बाद दोनों नीचे आए। राहेल तथा नौकरों को कोई आश्चर्य न हुआ क्यों कि वे लोग जानते थे कि लैनी एक जादूगर है जो दुःखी से दुःखी व्यक्ति को भी सांत्वना प्रदान कर सकता है। लैनी के चमत्कारों की कई कहानियां उन्होंने सुन रखी थीं। उदाहरण के लिये जर्मनी में जाकर वह जोहानीस को नाजी जेल से पैसा देकर छुड़ा लाया था। ऐसी अवस्था में क्या वह अपने प्रिय मित्र और सर्वश्रेष्ठ वायलिन-वादक हैन्सी के लिये कोई न कोई चमत्कार न दिखाएगा?

लैनी ने समाचार सुनने के लिये रेडियो खोला। उस दिन किसी नये युद्ध की घोषणा न हुई थी, कोई वायुयान दुर्घटना न हुई थी, कोई जहाज समुद्र में न डूबा था। इसलिये रेडियो वालों को हैन्सी वाले काण्ड का विस्तृत वर्णन देने के लिये पर्याप्त समय प्राप्त हो गया था। यह समाचार काफी मनोरञ्जक भी

था क्योंकि इसमें एक महान संगीतज्ञ तथा एक प्रसिद्ध उद्योगपति की पुत्री अभियुक्तों के रूप में गिरफ्तार हुए थे।—हे भगवान! यह क्या? रेडियो कह रहा था कि एफ० बी० आई के लोग हैन्सी और बेस के घर पर तलाशी लेने के लिए पहुंचे तो उन्हें सैकड़ों संदिग्ध कागज प्राप्त हुए। बगीचे में एक पेड़ के नीचे खोदने पर उन्हें तीन फीट के व्यास वाला एक सिलेन्डर प्राप्त हुआ जिसमें भांति भांति के कागज भरे हुए थे। इसका वजन इतना अधिक था कि वहां से उठाकर ट्रक तक ले जाने के लिये तीन व्यक्ति लगाने पड़े। उन कागजों में क्या था? एफ० बी० आई ने इस प्रश्न पर किसी प्रकार का संकेत देने से इनकार कर दिया है किन्तु वे सारे कागज उठा ले गए हैं और इस समय सम्भवतः पार्टी के गूढ़तम रहस्यों का अध्ययन करने में लगे हुए हैं।

"ह भगवान!" श्रीमती रोबिन ने आर्त्तनाद करते हुए कहा और जेब से रूमाल निकाल कर आंखें पोछ लीं। लैनी को उन आंखों में आंसू न दिखाई दिये। किन्तु यह अभिनय आवश्यक था। वह जानता था कि श्रीमती रोबिन एक धार्मिक महिला हैं और इस प्रकार के अभिनय में उन्हें आनन्द नहीं मिल सकता। किन्तु वह यह भी जानता था कि प्रत्येक स्त्री के हृदय में विधाता ने कुछ न कुछ अभिनय-प्रवणता अवश्य दी है। प्राचीन आख्यायिका में जोव का भी यही निर्णय है। 'वे दुष्टता की कल्पना करती रहती हैं और अर्थशून्य दम्भ की सृष्टि होती रहती है—और उनके मस्तिष्क से छल प्रपंच का अन्तहीन मायाजाल निकलता रहता है!"

(७)

लैनी प्रसन्न चित्त से न्यूयार्क की ओर लौटा। हैन्सी और बेस की गिरफ्तारी के साथ जो जासूसी कहानी सम्बन्धित थी उसकी बात सोच सोच कर वह एक बालक की भांति अधीर हो रहा था। एक अर्से से उसके मन में इस रहस्य के प्रति विराट कौतूहल था। वह मध्यान्ह के समाचार पत्र खरीदने के उद्देश्य से नगर के अन्दर गया। कई समाचार पत्र चुन कर वह लौटा और अपनी गाड़ी को एक स्थान पर खड़ा करके मनोयोगपूर्वक पढ़ने लगा।

प्रत्येक समाचार पत्र में इस कहानी को प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित किया गया

था। इस कहानी में वे सभी तत्व थे जो साधारणतया पाठकों को रुचिकर प्रतीत होते हैं—सनसनीखेज अपराध, पुलिस द्वारा भण्डाफोड़, जीवन के उच्च तथा निम्न स्तर, तड़क भड़क और शान शौकत, सभी कुछ था। बेसी रेमसन बड समाज के सर्वोच्च वर्ग की सदस्या थी। अब वह सुन्दर न रह गयी थी किन्तु एक समय वह बहुत ही आकर्षक थी और समाचार पत्रों ने उसके पहले वाले चित्र ही प्रकाशित किये थे। हैन्सी रोबिन संगीत संसार में उच्च स्थान रखता था, देश और विदेश दोनों में ही उसकी पर्याप्त ख्याति थी। इस मामले में जोन्स एलेक्ट्रिकल वर्क्स का नाम भी आ गया था। यह नाम अवश्य कुछ साधारण सा था। किन्तु युद्ध-काल में उसने सैनिक उपभोग के लिये न जाने कितने बिजली के तार बनाए थे और पिछले कुछ समय में बड़े महत्वपूर्ण आविष्कार किये थे जो अभी तक गुप्त रखे गए थे।

समाचार पत्रों के कार्यालयों में प्रत्येक महत्वपूर्ण व्यक्ति की फाइल रहती है। इस फाइल में उसके जीवन से सम्बन्धित प्रत्येक घटना का विवरण रहता है। अधिक महत्वपूर्ण व्यक्तियों की फाइलें सब समय ताजी रखी जाती हैं; प्रतिदिन उनमें आवश्यक परिवर्द्धन होता रहता है। इसीलिये जब इस प्रकार के महत्वपूर्ण व्यक्तियों की मृत्यु होती है, अथवा विवाह या गिरफ्तारी जैसी कोई असाधारण घटना होती है तो पत्र वालों को इनका जीवन चरित्र प्रकाशित करने में क्षण मात्र का विलम्ब नहीं करना पड़ता। सारी चीज पहले से ही तयार रहती है; केवल अन्तिम घटना उसमें जोड़ दी जाती है। इसीलिये लैनी ने देखा कि इन सारे समाचार पत्रों में हैन्सी तथा रोबिन की विस्तृत जीवनी विधिवत प्रकाशित कर दी गई है। केवल बेस के नाम के सम्बन्ध में कुछ अनिश्चय था; किसी को इस बात का पूरा पूरा पता न था कि उसका वास्तविक नाम बेस है या बेसी। उसके मित्र लोग सुविधानुसार कभी उसे बेस कहते थे और कभी बेसी।

समाचार पत्रों में बेस के पिता और सौतेले भाई का उल्लेख भी किया गया था और दोनों के जीवन पर थोड़ा बहुत प्रकाश डाला गया था। हैन्सी के साथ बेस का प्रथम परिचय किस प्रकार हुआ, वह उसके संगीत समारोहों में किस प्रकार भाग लेती रही और अब दोनों मिल कर किस प्रकार कम्युनिस्ट एजेण्टों के रूप में

काम करने लगे—इन सभी बातों की चर्चा हुई थी। समाचार पत्रों में बताया गया था कि उपरोक्त बिजली के तार बनाने वाले कारखाने में किसी एकाउण्टेण्ट ने कारखाने के गुप्त कागज, फाइलें, मानचित्र आदि चुरा लिये थे। इन चीजों को लेकर वह शनिवार की रात को बेस के पास गया था। बेस इन्हें लेकर न्यूयार्क के एक फोटो स्टूडियो में गयी थी। यह स्टूडियो ऊपर से तो एक स्टेशनरी स्टोर्स के रूप में था किन्तु वस्तुतः कम्युनिस्ट पार्टी के लिये गुप्त कागजों के फोटो प्रिण्ट लेने का कार्य करता रहता था। दूसरे दिन रविवार को वे सारे कागज उस एकाउण्टेण्ट को लौटा दिये गए थे। एफ० बी० आई ने इस प्रसंग में छानबीन करके सारे प्रमाण उपलब्ध कर लिये थे। केवल इतना ही नहीं उसने उन दो रूसियों को भी पकड़ लिया था जो बन्दरगाह पर अपने जहाज में इन फोटो प्रिण्टों को रख कर रूस भेजने की व्यवस्था कर रहे थे। एफ० बी० आई को पूर्ण विश्वास था कि उसे सारे आवश्यक प्रमाण प्राप्त हो गए हैं और इस मामले में उसकी विजय सुनिश्चित है।

लैनी ने यह सारा विवरण पढ़ा। इतने में ही समाचारपत्रों के नये संस्करण निकल आए। उसने इन्हें भी खरीद लिया। इनमें उसे उस "वाश-बायलर' का वर्णन प्राप्त हुआ जो कि बेस के बगीचे में एक वृक्ष के नीचे खोदकर निकाला गया था और जिसमें ऊपर तक भांति भांति के कागज भरे हुए थे।

(८)

लैनी ने घर जाकर लारेल को सारी बातें बताईं। उसने यह भी बता दिया कि उसने हैन्सी की मां को सांत्वना देने के लिये उसे यह बता दिया कि हैन्सी कम्युनिस्ट नहीं है और वह एफ० बी० आई० के गुप्तचर के रूप में कार्य कर रहा है। यह सुनकर लारेल आश्चर्यचकित हो गयी।

"यदि पोस्ट ने मुझे यह भेद बताया होता तो मैं इसे अपने तक सीमित रखने के लिये बाध्य रहता। किन्तु जब कि यह भेद मैंने स्वयं अपने आप प्राप्त किया है तो मैं इसका इच्छानुसार प्रयोग करने के लिये स्वतन्त्र हूँ।" लैनी ने अपना स्पष्टीकरण देते हुए कहा।

सारे दिन टेलीफोन की घण्टी घनघनाती रही थी। यह एक अच्छी खासी

मुसीबत हो गयी थी। प्रत्येक बार उन्हें टेलीफोन उठाना पड़ता था क्योंकि इस बात का कोई ठीक न रहता था कि किस समय कौन सा महत्वपूर्ण समाचार आ जायगा। थोड़ी ही देर बाद रोबी बड ने टेलीफोन किया। उन्होंने बताया कि उन्हे तथा जोहानीस को जेल में हैन्सी तथा बेस से मुलाकात करने की अनुमति प्राप्त हो गयी थी। बेस को एक अलग कोठरी में रखा गया था और उसके साथ एक महिला संतरी को रख दिया गया था। पहले उसने रोबी से मिलनेसे इनकार कर दिया था। किन्तु बाद में राजी हो गयी थी।

वह गम्भीर भाव से बैठी हुई थी। उसे इस बात का दुख था कि उसने अपने पिता तथा माता को क्लेश दिया। किन्तु वह अपनी भूल स्वीकार करने के लिये तयार न थी। वह समझती थी कि उसके विश्वास ठीक हैं और उनमें किसी प्रकार का संशोधन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। वह अपनी जमानत के प्रति पूर्णतया उदासीन थी। उसने कहा कि पार्टी की ओर से जमानत का प्रबन्ध किया गया तो वह उसे सहर्ष स्वीकार कर लेगी किन्तु बड-अलिन्ग-एयर क्राफ्ट कम्पनीके रुपये से जमानत होना स्वीकार न करेगी। वह कट्टर कम्युनिस्ट थी जो जीवन के अन्तिम क्षण तक कम्युनिस्ट बनी रहने के लिये कृतसंकल्प थी।

"ऐसी परिस्थिति है," रोबी ने टेलीफोन पर लैनी से कहा, "यदि कोई जान-बूझकर शहीद बनना चाहे तो क्या किया जा सकता है?"

"एस्थर का क्या विचार है?" लैनी ने प्रश्न किया।

"एस्थर ऊपर से शान्त है। किन्तु भीतर ही भीतर वह निश्चय ही क्षुब्ध है। किन्तु इस सम्बन्ध में किया भी क्या जा सकता है?"

रोबी ने लैनी को यह भी बता दिया कि इस सम्बन्ध में जोहानीस को भी कोई सफलता नहीं मिल सकी है। हैन्सी किसी प्रकार के समझौते के विरुद्ध है, वह इसकी चर्चा तक नहीं करना चाहता।

थोड़ी देर बाद जोहानीस का टेलीफोन आया। "लैनी, तुमने मेरी पत्नी पर कौन सा जादू कर दिया है?"

"मेरे जादू से उन्हें लाभ ही हुआ है, हानि नहीं।" लैनी ने हंस कर कहा।

जोहानीस का स्वभाव पहले जैसा ही बना हुआ था। व्यापार के मामलों

में वे एक अनुभवी और अत्यन्त दक्ष व्यक्ति थे। किन्तु व्यक्तिगत मामलों में वे पूर्णतया उदार और सहृदय थे। उनकी बातों में सदा एक हल्के विनोद का पुट रहता था। वृद्धावस्था उनके स्वभाव को न बदल सकी थी; कम्युनिस्ट आन्दोलन भी नहीं।

लैनी ने कहा, "मैंने श्रीमती रोबिन से कह दिया है कि उनका पुत्र उन्हें हृदय से प्यार करता है और वह समझता है कि उसने कोई अनुचित कार्य नहीं किया। मैंने उन्हें यह भी बता दिया कि अमेरिका की जेलों में कैदियों पर अत्याचार नहीं किया जाता ओर हैन्सी शीघ्र ही जमानत पर छूट कर वापस आ जायगा।"

जोहानीस ने कहा, "मैंने भी उससे यही सब कहा था किन्तु इससे कोई लाभ न हुआ था।"

लैनी इसके उत्तर में यह कहने ही वाला था कि मैंने उनसे यह भी कहा था कि मैं स्वयं कई बार गिरफ्तार हो चुका हूं और इससे कोई विशेष हानि नहीं हुई किन्तु उसे तुरन्त ख्याल आया कि जोहानीस स्वयं जेल में रह आए हैं और उनके सामने इस प्रकार की बातें करना मूर्खता है। इसलिये उसने इस प्रसंग को टालते हुए पूछा, "हैन्सी का क्या विचार है?" जोहानीस ने कहा, "वह पत्थर की भांति कठोर बना बैठा है। उसने मुझसे कहा कि वह अपना कर्त्तव्याकर्त्तव्य भलीभांति जानता है और हम लोगों को इसकी चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है।"

"वे लोग उसके साथ कैसा व्यवहार कर रहे हैं?"

"उसे कोई शिकायत नहीं है। जेल वालों ने उसे उस एकाउण्टेण्ट के साथ रख दिया है जिसने बिजली के कारखाने से कागज चुराए थे। हैन्सी कहता है कि वह एक भला आदमी है और उसके साथ उसकी मित्रता हो गयी है।"

"शायद जेल में वे लोग हैन्सी को वायलिन बजाने की अनुमति दे देंगे। लैनी ने विनोद के स्वर में कहा और दोनों हंस पड़े।

जब लैनी ने अपनी पत्नी को यह समाचार दिया कि हैन्सी को उस एकाउण्टेण्ट के साथ रखा गया है तो उसने तीखे स्वर में कहा, "आश्चर्य है कि सरकार को बेस के साथ रखने के लिये कोई महिला अभियुक्ता न मिली।"

"मान लीजिए कि मैं सहमत हूं। अब आप क्या कहना चाहते हैं?"

"हम लोगों का विचार है कि सरकार के सम्मुख यह बात रखी जाय। कोई व्यक्ति अपनी पत्नी के कार्यों के लिये उत्तरदायी नहीं समझा जा सकता। कानून के अनुसार इस बात को पहले से ही मान्यता नहीं दी जा सकती कि उसे अपनी पत्नी के कार्य कलाप की जानकारी होगी। हम लोगों का विश्वास है कि इस प्रकार का कोई न कोई प्रबन्ध किया जा सकता है कि यदि हैन्सी इस बात का आश्वासन दे दे कि भविष्य में वह किसी प्रकार की कम्युनिस्ट क्रियाशीलता में भाग न लेगा तो उसे अभियोग-मुक्त करके छोड़ दिया जाय। आप तो जानते ही हैं कि वह एक बार वचन देगा तो उसका पालन अवश्य करेगा।"

"मैं जानता हूँ। किन्तु मुझे इस बात की कोई आशा नहीं है कि हैन्सी इस प्रकार का कोई आश्वासन देगा।"

"आशा तो हम लोगों को भी नहीं है, मिस्टर बड। किन्तु एक बार चेष्टा करने में क्या हर्ज है?"

"क्या आपका अभिप्राय यह है कि जेल से छूटने के बाद भी वह कम्युनिस्ट पार्टी के तत्वावधान में संगीत आयोजन करता रहेगा और इस प्रकार उसके लिए पैसा इकठ्ठा करता रहेगा?'

"नहीं मिस्टर बड। भविष्य में वह अपने संगीत का प्रदर्शन पूर्णतया अराजनैतिक संस्थाओं के तत्वावधान में ही करेगा।"

"यह प्रस्ताव किन लोगों की ओर से आया है? क्या वे कम्युनिस्ट हैं?'

"उनमें से दो तो मेरी भांति पादरी हैं, दो कम्युनिस्टों से सहानुभूति रखते हैं और दो व्यक्ति कम्युनिस्ट पार्टी के महत्वपूर्ण सदस्य हैं। प्रस्ताव के पीछे स्वयं पार्टी की अनुमति है। हैन्सी से कहा जायगा कि वह इस प्रस्ताव को स्वीकार करले और भविष्य में इस समझौते का पूर्ण रूप से पालन करता रहे"

"दुर्भाग्यवश, मिस्टर स्मार्थर्स, कम्युनिस्ट लोग अपने वचन का पालन नहीं करते। उन्हें अपने समझौते भंग करने में किंचित मात्र द्विधा नहीं होती। जो भी हो, आप यह प्रस्ताव किसके सम्मुख रखेंगे?'

"गिरफ्तारियां एफ० बी० आई की ओर से हुई हैं। फलस्वरूप इस प्रस्ताव

पर विचार तथा निर्णय करने का अधिकार भी उसेही है। जहां तक मेरा विश्वास है हैन्सी के विरुद्ध उन लोगों के पास कोई ठोस प्रमाण नहीं हैं। यह जानकारी मुझे विश्वसनीय सूत्रों से प्राप्त हुई है।"

'किन्तु न तो मैं उन लोगों को जानता हूँ जिनकी ओर से यह प्रस्ताव आया है, न मैं एफ० बी० आई० के साथ ही किसी प्रकार की घनिष्ठता रखता हूं। आप मेरे पास किस उद्देश्य से आये हैं?'

"हम लोगों को ऐसा लगता है कि इस प्रस्ताव को एफ० बी० आई० तक पहुंचाने के लिए आप ही उपयुक्त व्यक्ति हैं। एफ० बी० आई० आपके राजनैतिक विश्वासों तथा रीति नीति से परिचित है और उसे इस बात का संदेह न होगा कि इस मामले में आपका कोई अनुचित स्वार्थ है।"

"मैं संदेह से नहीं डरता, मिस्टर स्मार्थर्स। किन्तु मुझे इस बात का भय है कि जिन लोगों के लिए मैं यह कार्य करूंगा वे अपने वचन का पालन करने वाले व्यक्ति नहीं है। वे मुझे मूर्ख बनते हुए देख कर मन ही मन हंसेगे।"

मैं आपको विश्वास दिलाता हूं, मिस्टर बड।'

"आप मुझे उन लोगों की ईमानदारी के सम्बन्ध में विश्वास दिलाने के लिए व्यर्थ प्रयत्न कर रहे हैं, मिस्टर स्मार्थ। यह समय का अपव्यय मात्र है। आप मुझे केवल इस बात का ही विश्वास दिला सकते हैं कि आप एक ईसाई और धर्मभीरु व्यक्ति हैं। कम्युनिस्टों के सम्बन्ध में आप मुझे किसी प्रकार का विश्वास दिलाने का प्रयत्न मत कीजिए, उन्हें मैं भली भांति जानता हूं। आप यह तो जानते ही होंगे कि लेनिन ने स्पष्ट रूप में अपने अनुयायियों को हर प्रकार के छल प्रपंच का आश्रय लेने का परामर्श दिया था। कम्युनिस्टों का दर्शन घृणा और छल कपट का दर्शन है। मैं इस बात पर विश्वास नहीं करता कि असत्य से सत्य का अथवा घृणा से प्रेम का जन्म हो सकता है।"

"मैं आपको विश्वास दिलाता हूं, मिस्टर बड, कि इस प्रस्ताव में किसी प्रकार का छल कपट नहीं है।"

"क्या आप मुझे यह बता सकते हैं कि पार्टी के किन नेताओं की ओर से यह प्रस्ताव आया है?"

"मुझे दुःख है मिस्टर बड—मुझे यह बताने का अधिकार नहीं है।"

"देखा आपने! वे आपको चकमा देने का प्रयत्न कर रहे हैं और मुझे भी चकमा देना चाहते हैं। वे लोग हमारी उस सरकार के शत्रु हैं जो हमारी सेवा करती है और जो हर प्रकार से हमारी विश्वास भाजन है।"

"शत्रुओं में भी कभी कभी समझौता हो जाता है, मिस्टर बड। यदि शान्ति की स्थापना होनी है तो उसके पूर्व इस प्रकार का अस्थायी समझौता आवश्यक है।'

"शान्ति? मिस्टर स्मार्थर्स, कम्युनिस्ट लोग जब चाहें शान्ति प्राप्त कर सकते हैं। किन्तु जब तक वे स्टालिन के अनुयायी बने रहेंगे तब तक शान्ति की कोई सम्भावना न रहेगी।"

"तब आप एफ० बी० आई० के पास यह प्रस्ताव लेकर जाने के लिए तयार नहीं हैं?"

"मैं एफ० बी० आई० के पास यह प्रस्ताव लेकर उसी अवस्था में जा सकता हूं जब आप मुझे उन नेताओं के नाम बता दें जिनकी ओर से यह प्रस्ताव आया है। आप स्वयं कम्युनिस्ट नहीं हैं इसलिए आपके आश्वासन के आधार पर मैं एफ० बी० आई० के साथ किसी प्रकार की बात चीत नहीं चला सकता।"

(१०)

दोनों ने एक दूसरे से बिदा ली। लैनी ने घर जाकर लारेल को इस प्रस्ताव की बात बतायी। लैनी ने यह प्रश्न घर पहुंचने के बाद ही उठाया था ताकि किसी दूसरे के कानों में इसकी भनक न पड़ने पावे।

"तुम्हारा क्या विचार है?" लारेल ने प्रश्न किया।

"मैं जाकर पोस्ट को बता दूंगा। किन्तु कम्युनिस्टों को इस बात का पता न चलने पायेगा कि मैंने एफ० बी० आई० से इसकी कोई चर्चा की है।"

उसी समय उसने एफ० बी० आई० के मिस्टर विल्वर पोस्ट के साथ टेलीफोन जुड़ाया और उनसे कहा, "मिस्टर पोस्ट मुझे आपको कुछ आवश्यक समाचार देना है। किन्तु मुझे आप के कार्यालय में न जाना चाहिए। वहां कम्युनिस्ट पार्टी के जासूस अवश्य मड़रा रहे होंगे।"

"आपका अनुमान ठीक है।" पोस्ट ने कहा। दोनों ने एक निश्चित समय

पर किसी स्थान विशेष में मिलने की व्यवस्था कर ली। नियत समय पर लैनी ने वहां पहुंच कर पोस्ट को ब्रुकलिन के उस पादरी के आगमन की बात बता दी।

"स्मार्थर्स ?—अरे हां, उसे हम लोग जानते हैं। वह एक भावुकहृदय व्यक्ति है। स्त्रियों की भांति कोमल। स्त्रियां भी कभी कभी मर्दों के कपड़े पहन लेती हैं।'

लैनी ने अपनी सहमति जनायी और पोस्ट को स्मार्थर्स के प्रस्ताव की पूरी पूरी बात सुना दी। पोस्ट सब कुछ सुन कर जोर से हंस पड़े। इसके बाद तुरन्त गम्भीर होकर बोले, "मैं समझता हूं कि पार्टी के सर्वोच्च नेता इस प्रकार का प्रस्ताव न करेंगे। हैन्सी उनके लिए काफी मूल्यवान है—प्रचारक के रूप में भी और पार्टी के लिए रुपया कमाने वाले व्यक्ति के रूप में भी। किन्तु यह ठीक है कि उन लोगों के मन में हैन्सी की कला-वला के लिए किसी प्रकार की श्रद्धा नहीं है।"

लैनी ने प्रश्न किय, "हैन्सी को आपने शायद इसीलिए गिरफ्तार किया है कि आप भविष्य में उससे काम कराते रहना चाहते हैं।"

"अवश्य।" पोस्ट ने निस्संकोच स्वर में उत्तर दिया।

"अच्छा मान लीजिए कि स्मार्थर्स को हैन्सी से मिलकर उसके सम्मुख यह प्रस्ताव रखने की अनुमति दे दी जाय। आप हैन्सी को पहले से ही सूचित कर सकते हैं कि वह इस प्रस्ताव को मानने से साफ इनकार कर दे। वह पार्टी के प्रति अपनी वफादारी और कम्युनिज्म के आदर्श के लिए बड़ा से बड़ा त्याग करने के लिए अपनी तत्परता व्यक्त करते हुए एक छोटा मोटा भाषण दे दे। इस से पार्टी के अन्दर उसकी प्रतिष्ठा काफी बढ़ जायगी और वह अपने नेताओं का विश्वासभाजन बन जायगा। बेस पर इसका बहुत बड़ा प्रभाव पड़ेगा, यह मैं भली भांति जानता हूं।"

पोस्ट इस प्रस्ताव पर विचार करने लगे। अन्त में उन्होंने कहा, 'विचार तो अच्छा है। किन्तु अधिक समय नहीं है। शीघ्र ही उन्हे न्यायालय में जमानत के लिए पेश किया जायगा और इसमें कोइ संदेह नहीं कि अब तक कम्युनिस्टों ने उनकी जमानत के लिए आवश्यक प्रबन्ध कर लिया होगा। आपके प्रस्ताव को कार्य रूप में परिणत करने के लिए हमें काफी शीघ्रता से काम करना होगा।'

"मैं भी इस प्रश्न पर विचार कर चुका हूं।" लैनी ने कहा, 'आपको इस प्रकार का कोई संकेत न देना चाहिए जिससे यह प्रतीत हो कि आप मुझे जानते हैं अथवा मैं आपको जानता हूं। मेरी राय में सबसे अच्छा उपाय यह होगा कि आप स्वयं स्मार्थर्स को बुला कर उससे पूछें कि क्या वह लैनी बड नामक किसी व्यक्ति को जानता है। जब वह 'हां' कहे तब आप उससे कहिये कि इस व्यक्ति ने मुझे टेलीफोन करके यह प्रस्ताव भेजा है और मैं इस प्रसंग में आप से बात करना चाहता हूं।"

"हां यह ठीक रहेगा।" पोस्ट ने अपनी सहमति जनाते हुए कहा। "इससे किसी प्रकार की हानि होने की सम्भावना तो है ही नहीं कुछ न कुछ लाभ ही होगा। अभियुक्तों के लिए हम लोगों ने जो जाल तयार किया है उसमें दो एक ताने बाने कम हैं। शायद किसी प्रकार इनकी पूर्ति हो जाय।"

"कागजों से भरा हुआ जो सिलेण्डर बेस के बगीचे से निकला था वह काफी महत्वपूर्ण प्रतीत होता है।" लैनी ने उत्सुक स्वर में कहा। लैनी भी आखिर मनुष्य था और वह मानव हृदय की इस दुर्बलता से एकदम परे न था।

"हां मैं आपको इतना बताये देता हूं कि यह एक अत्यन्त सौभाग्य की बात है कि हमें उसका सूराग मिल गया। हम लोग उन कागजों को छांट छांट कर तरतीब से सजा रहे हैं। इस कार्य में हफ्तों का समय लग सकता है। किन्तु आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि यह भेद हमें हैन्सी रोबिन से न प्राप्त हुआ था।"

लैनी ने पोस्ट को उनके कार्यालय के समीप पहुँचा दिया और फिर अपने शान्ति परिवार की ओर रवाना हुआ। रास्ते में उसे बार बार इस रहस्य के प्रति कौतूहल हो रहा था। बेस के जीवन में यह दूसरा जासूस कौन है? उसे याद आया कि किसी व्यक्ति ने उसे दो बार गुमनाम पत्र लिखे थे। क्या यह वही व्यक्ति है जिसने पोस्ट को कागजों से भरे हुए उस सिलेण्डर का भेद बताया है? बेस के घर में दो नौकरानियां थीं और बगीचे में काम करने के लिए एक माली। सम्भव है यह भेद माली ने बताया हो! वैसे तो वह फिनलैंड का निवासी था और ऊपर से देखने पर मूर्ख सा लगता था। किन्तु क्या इस बात की सम्भा-

बना नहीं कि वह वस्तुतः सरकार का गुप्तचर हो और ऊपर से मूर्खता का स्वांग रच रखा हो ?

जिस सिलेण्डर में वे कागज भरे हुए थे उसका व्यास तीन फीट था। उसे गाड़ने के लिए काफी जमीन खोदनी पड़ी होगी। अवश्य ही यह काम रात के समय अथवा रविवार के दिन किया गया होगा। किन्तु माली की दृष्टि से खुदी हुई जमीन के चिन्ह कैसे छिप सकते हैं ? पोस्ट के अनुसार हैन्सी को इसके सम्बन्ध में कोई जानकारी न थी। इसका यह अर्थ हुआ कि यह कार्य उसकी अनुपस्थिति में किया गया था। लैनी ने स्वयं कई बार इस प्रकार की योजनाएं बनाई थीं और वह जानता था कि बेस में भी इस प्रकार के कार्य करने की योग्यता है। किन्तु बेस ने उस समय यह न सोचा था कि उसके विरुद्ध दो गुप्तचर लगे हुए हैं। अब उसे इनमें से एक के प्रति अवश्य ही संदेह हो रहा होगा। किन्तु जेल में संतरी के पहरे के अन्तर्गत वह कर भी क्या सकती थी ?

(११)

समाचारपत्रों के रिपोर्टरों के लिए यह एक अग्नि-परीक्षा का समय था। इस मामले के प्रति सारे देश में एक दुर्दम्य कौतूहल छाया हुआ था। किन्तु रिपोर्टर बेचारे क्या कर सकते थे ? अभियुक्त जेल में बन्द थे और अपने वकीलों के अतिरिक्त अन्य किसी से न मिल सकते थे। एफ० बी० आई० को इस मामले पर जो कुछ कहना था उसने कह दिया था और कोई नयी टीका टिप्पणी करने से इनकार कर दिया था। कम्युनिस्ट पार्टी अवश्य अन्तहीन रूप में बक झक कर रही थी किन्तु उसकी बातों का कोई विशेष मूल्य न था। वह निरा प्रचार था। कम्युनिस्ट पार्टी बराबर यह रट लगाये हुए थी कि अभियुक्त निर्दोष हैं और इनकी गिरफ्तारी आधारभूत नागरिक अधिकारों का अतिक्रमण है।

इस बात का पता चल गया था कि रोबी बड और जोहानीस जेल में बेस तथा हैन्सी से मिलने गये थे। किन्तु दोनों ही व्यक्तियों ने इस विषय की कोई चर्चा करने से इनकार कर दिया था। रिपोर्टरों को मिस्टर लैनी बड से भी कोई नयी जानकारी प्राप्त होने की आशा न थी। वे यही कहते थे कि वे अपनी बहन के विचारों से सहमत न थे किन्तु उनका विश्वास है कि बेस का कर्त्तव्यबोध

निस्संदिग्ध है। भिन्न भिन्न प्रकार के चित्र प्रकाशित करते रहने के अतिरिक्त समाचार पत्रों के पास अन्य कोई उपाय न था। जिस वृक्ष के नीचे से वह सिलेण्डर निकला था उसके अनेकों चित्र समाचार पत्रों में प्रकाशित हो चुके थे। जिस स्टूडियो में गुप्त कागजों के फोटो प्रिन्ट लिए जाते थे उसके भी अनेकों चित्र छप चुके थे। एक समाचार पत्र ने ब्रुकलिन के बन्दरगाह में खड़े हुए एक रूसी जहाज का चित्र लेकर छाप दिया था। बस—और कुछ करने का उपाय न था।

इसीलिये जब 'रेवरेण्ड स्माथर्स' नामक एक व्यक्ति ने अचानक यह घोषणा की कि उसे जेल में हैन्सी रोबिन से भेंट करने की अनुमति प्राप्त हो गई है तो समाचार जगत में हलचल मच गयी। यह खबर फैलने में देर न लगी कि कुछ कला प्रेमी कम्युनिस्टों की ओर से यह प्रस्ताव आया है कि बेस की राजनैतिक क्रियाशीलता कुछ भी क्यों न रही हो उसके कलाकार पति हैन्सी रोबिन को इसकी कोई जानकारी न थी और उसे केवल इस लिये गिरफ्तार किया गया है क्योंकि वह कम्युनिस्ट पार्टी की एक सक्रिय सदस्या के साथ रहता था। एफ० बी० आई के सम्मुख यह प्रस्ताव रखा गया है कि हैन्सी को इस शर्त पर छोड़ दिया जाय कि वह सदा की भांति एक गैरराजनीतिक कलाकार के रूप में अपना जीवन यापन करेगा और कम्युनिस्ट पार्टी के साथ किसी प्रकार का सम्बन्ध न रखेगा।

किन्तु—आगे चलकर रेवडेण्ड स्माथर्स ने कहा—हैन्सो ने इस प्रस्ताव को मानने से साफ इनकार कर दिया। उसने कहा कि वह केवल अपनी पत्नी के प्रति ही वफादार नहीं है, वह विचारों और भाषण की स्वतन्त्रता के आदर्श के प्रति भी श्रद्धालु है। उसने देश के 'लाल-विरोधी गुट' के साथ किसी प्रकार के समझौते पर विचार करने से साफ इनकार कर दिया। उसने केवल यही कहा कि वह निर्दोष है, उसकी पत्नी निर्दोष है और उसका विश्वास है कि अन्य अभियुक्त भी पूर्णतया निर्दोष हैं।

भावुक रेवरेण्ड स्माथर्स अपनी ओर से यह कहना न भूले कि उनका भी यही विश्वास है कि इस मामले से सम्बन्धित सारे अभियुक्त निर्दोष हैं। जब उनसे गुप्त कागजों से भरे हुए उस सिलेण्डर की चर्चा की गयी जो कि बेस के मकान से बरामद हुआ था, उन्होंने कहा कि कम्युनिस्ट पार्टी एक वैध संगठन है और

अमेरिका की राजनैतिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण भाग है। उसे अपने आवश्यक कागजों को सम्हाल कर रखने का पूरा पूरा अधिकार है। जब उसे इस बात का संदेह हुआ कि उसके कागजों का दुरुपयोग हो रहा है और उसके सदस्यों पर संकट आ रहा है तो उसने इन्हें छिपाने का प्रयत्न किया। इसमें कोई अनुचित बात न थी!

आखिर अमेरिका एक स्वतन्त्र देश है। और गिर्जाघर के पादरी का यह काम ही ठहरा कि वह मानव मात्र में सौहार्द और सद्भावना की स्थापना करने का प्रयत्न करे। और इसीलिये रेवरेण्ड स्माथर्स स्पष्ट रूप में कह रहे थे :

"यदि यह कम्युनिस्टों के साथ सह-यात्रा है तो मैं यही कहूंगा कि आप भी आकर इसमें शामिल हो जाइये।"



अध्याय १७

● मानव के पाप ●

(१)

बेस के मामले में कुल मिलाकर सात अभियुक्त थे। किन्तु न्यायालय में केवल छै को पेश किया गया था। सातवां अभियुक्त एक रूसी अधिकारी था और उसने "राजनैतिक छूट" की मांग की थी। उसके सम्बन्ध में अमेरिका की सरकार केवल इतना ही कर सकती थी कि रूस की सरकार से अनुरोध करे कि उसे वापस बुला लिया जाय। अन्य छै अभियुक्तों में ये व्यक्ति थे: बिजली के तार बनाने वाले कारखाने का एकाउण्टेन्ट ओस्कर जोहानसन, बेसी बड रोबिन, हैन्सी रोबिन, कार्ल और लूसीले सेडिन उर्फ कार्पेंटर (फोटोग्राफर) और रूस में पैदा हुआ जे० डम्ब्रोव्स्की।

न्यायालय के कमिश्नर ने कहा कि यह गम्भीर मामला है और बहुधा जमानत स्वीकृत होने के बाद कम्युनिस्ट अभियुक्त वापस आकर न्यायालय में उपस्थित नहीं होते। इसलिए उन्हे बाध्य होकर जमानत ऊंची रखनी पड़ेगी। उन्होंने प्रथम पांच अभियुक्तों के लिये बीस बीस हजार डालर की जमानत स्वीकृत की और अन्तिम अभियुक्त के लिये तीस हजार डालर की। वह जन्म से रूसी होने के कारण अमरीकी नागरिक न था और इसलिए उसके लापता हो जाने की सम्भावना अधिक थी। एक कम्पनी ने अभियुक्तों की जमानत ले ली। निश्चय ही कम्युनिस्टों के साथ इस कम्पनी का कोई न कोई सौदा हुआ था किन्तु यह एक व्यक्तिगत मामला था और न्यायालय के कागजों पर इसका कोई उल्लेख न हुआ। समाचार पत्रों में भी इसकी कोई चर्चा न हुई।

रूसी सरकार को अपने अभियुक्त नागरिक के लिये तीस हजार डालर की रकम निकालनी पड़ी। किन्तु यह कोई विशेष चिन्ताजनक बात न थी। रूस की सरकार के पास साइबेरिया में सोने की अनेकों खदानें थीं—मनहट्टन टापू

की चर्चा की कोई आवश्यकता नहीं। रूस की सरकार के लिए यह बात विशेष रूप से महत्वपूर्ण थी कि उसका कोई नागरिक किसी अमरीकी न्यायालय में अपराधी न प्रमाणित हो। इसके लिए जो भी रुपया खर्च हो रूस की सरकार देने के लिए तैयार थी। एक बार जमानत हो जाने के बाद वह व्यक्ति तुरन्त आंख से ओझल हो जायगा और फिर अमरीकी न्यायालय में उसके दर्शन न होंगे।

किन्तु रूस पहुंच कर उसका क्या होगा? इस प्रसंग में किसी प्रकार का अनुमान लगाना कठिन था। किन्तु कई बातें स्पष्ट थीं। पहली बात तो यह थी कि वह अपने कार्य में असफल रहा था और यह रूस की सरकार की दृष्टि में एक अक्षम्य अपराध था। इसके अतिरिक्त वह अमेरिका में रह कर यह देख चुका था कि अमरीकी लोग कैसे कपड़े पहनते हैं और कैसा खाना खाते हैं और किस प्रकार के नागरिक अधिकारों का उपभोग करते हैं। रूस में कमीशारों को छोड़ कर अन्य कोई व्यक्ति इस प्रकार के अधिकारों की कल्पना भी नहीं कर सकता। रूस पहुँच कर शायद वह रूसियों के साथ इन बातों की चर्चा करनेका प्रलोभन न रोक सके। इसलिये सबसे निरापद उपाय यह था कि उसेभी साइबेरिया की किसी खदान में काम करने के लिए भेज दिया जाय। वहां वह जो चाहे कह सकेगा क्यों कि उसकी जीवनावधि एक दो वर्ष तक ही सीमित रहेगी और जिन व्यक्तियों के साथ वह इन बातों की चर्चा करेगा वे भी इससे अधिक समय तक जीवित न रहेंगे!

धीरे धीरे यह मामला जनता के स्मृति पट पर धुंधला पड़ने लगा। कागजों से भरे हुए उस रहस्यमय सिलेण्डर पर ही यदा कदा कुछ हंसी मजाक हो जाता था, अन्यथा लोग इस घटना को भूल से गये थे। किन्तु लैनी और लारेल इसके प्रति उदासीन न हुए थे। हैन्सी और बेस की जमानत हो गई थी और वे दोनों अपने घर चले गये थे। हैन्सी ने अपने आपको एक वीर पुरुष के रूप में प्रमाणित कर दिया था और बेस की दृष्टि में उसका आदर निश्चय ही अत्यन्त बढ़ गया था। लैनी और लारेल सोच रहे थे कि इसके फल स्वरूप बेस हैन्सी को और भी अधिक चाहने लगेगी।—किन्तु हैन्सी पर क्या बीतेगी? लारेल ने कहा कि हैन्सी निश्चय ही स्थिति को सम्भाल लेगा क्यों कि यौन प्रश्नों पर पुरुष

उतने संवेदनशील नहीं होते जितनी कि स्त्रियां। लैनी ने कहा कि हैंसी का हृदय स्त्रियों की भांति ही है।

और बेस क्या करेगी ? सम्भव है वह भी लापता हो जाय। उसके वकील इसका समर्थन न करेंगे किन्तु पार्टी के नेताओं की दृष्टि में यह एक सरल और सुन्दर उपाय होगा। पार्टी का 'भूमिगत' अंश वाह्य अंश से जानबूझ कर पूर्णतया भिन्न रखा गया था। बहुत से पुराने सदस्यों को भी पार्टी के इस 'भूमिगत' अंश के अस्तित्व का पता न था और उनसे कोई इसकी चर्चा करता तो वे इसे अपने विरोधियों की काल्पनिक उड़ान बता कर टाल देते। यदि किसी सदस्य को 'भूमिगत' किया जाता था तो वाह्य पार्टी के साथ उसका किंचित मात्र सम्बन्ध न रहने पाता था। वह अचानक लापता हो जाता था और पार्टी के अन्य सदस्यों को उसका कोई सुराग न मिल पाता था। वह किसी दूसरे स्थान में जाकर छद्म नाम से काम करने लगता था। यदि उसे किसी समय किसी 'भूमिगत' सदस्य के साथ काम करने का अवसर आता था तब भी वह अपना वास्तविक नाम न बताता था। कोई यह जानने का आग्रह भी न करता था।

किन्तु यदि पार्टी का कोई सदस्य एक बार गिरफ्तार हो जाता और उसका चित्र समाचार पत्रों में प्रकाशित हो जाता तो फिर उसके 'भूमिगत' होने की सम्भावना न रहती थी क्योंकि छिपकर रहना प्रायः असम्भव हो जाता था। इसी लिए ऐसे अवसरों पर अधिक से अधिक ख्याति तथा लोकप्रियता प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता था। सम्भव है बड अर्लिन्ग परिवार की पुत्री बेस भी अपना अधिक से अधिक प्रचार करके 'शहीद' बनने का प्रयत्न करे। इसके लिए सम्भव है वह फिर से हैन्सी के संगीत आयोजनों में सहवादिका के रूप में शामिल होने लगे!

(२)

कम्युनिस्ट सिद्धांतों के आधार पर लैनी का यही अनुमान था। हैन्सी ने भी यही मत प्रकट किया था। और आगे चल कर देखा गया कि यह अनुमान निराधार न था।

न्यायालय की पेशी के प्रायः एक सप्ताह बाद लैनी को एक टेलीफोन मिला।

वही गम्भीर आवाज कह रही थी, "उसी स्थान पर आज प्रातःकाल दस बजे आओ।" लैनी क्षण भर तक सोचता रहा ; इसके बाद इस प्रकार गरज कर बोला जैसे पिंजड़े के अन्दर से कोई शेर बोल रहा हो 'ठीऽ ऽऽऽऽक है।' हंस कर उसने टेलीफोन रख दिया और लारेल को बताया कि किसका टेलीफोन आया था। इसके बाद उसने अपने सेक्रेटरी को बुलाकर दो एक काम स्थगित कर देने का आदेश दे दिया।

अपनी गाड़ी में बैठ कर वह सेन्ट्रल पार्क की ओर रवाना हुआ। वहां हैन्सी के साथ उसकी मुलाकात हो गई। हैन्सी ने तुरन्त कहा, "मैं तुम्हे अपना हार्दिक धन्यवाद जनाता हूं। मेरी मां को तुमने आश्वासन देकर मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया है।"

"उनके साथ तुम्हारी मुलाकात हुई है?"

"सबसे पहले मैं उन्हीं के पास गया था। वे मुझे अपनी बाहों में भर कर बच्चों की भांति रोने लगी थीं। मैं घबरा गया था कि यह एक दर्दनाक दृश्य प्रमाणित होगा। किन्तु वे स्वयं मुझे ऊपर वाले कमरे में ले गयीं और दरवाजा बन्द करके बोलीं 'लैनी ने मुझे सब कुछ बता दिया है।' मैं आश्चर्य चकित रह गया।"

इसके बाद हैन्सीने उल्लास के स्वर में कहा, "मुझे छुट्टी मिल गयी है। पोस्ट ने कह दिया है कि फिलहाल मुझे कम्युनिस्टों वाला काम न करना पड़ेगा।"

"तुम्हे गवाही भी न देनी पड़ेगी?"

"गवाही तो शायद देनी पड़े। किन्तु अब पार्टी के लिये वायलिन बजाते फिरने और रुपया इकठ्ठा करने के काम से पिन्ड छूट गया। अब मैं एक नये संगीत की रचना करने में अपना ध्यान लगाऊंगा।"

"यह तो बड़ी अच्छी बात हुई, हैन्सी। और बेस क्या करेगी?"

"वह 'भूमिगत' हो गयी है; अब वह पार्टी के सदस्यों के साथ किसी प्रकार का सम्बन्ध न रखेगी। सड़क पर उनके साथ भेंट होने पर उन्हे पहचानेगी भी नहीं। वह सारे अमेरिका का भ्रमण करके भिन्न भिन्न स्थानों में अपने भाषण देने की योजना बना रही है। इन भाषणों में वह यह कहेगी कि उसके विरुद्ध एक

जाल बिछाया गया था और उसके घर में जो कागज बरामद हुए थे उनके साथ उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। वे कागज पार्टी के कार्यालयों से चुरा कर लाए गए थे और उन्हे उसके घर में छिपा दिया गया था। कुछ जाली कागज तयार करके इनके साथ मिला दिए गए थे। वह यह कहेगी कि यह 'वाल स्ट्रीट' का षड़यन्त्र है।"

हैन्सी ने लैनी को बताया कि जमानत पर छूटने के बाद पार्टी के नेताओं तथा वकीलों का एक सम्मेलन हुआ था। एक अभियुक्त के रूप में उसने भी इस सम्मेलन में भाग लिया था। अभियुक्तों के बचाव के लिये जो कानूनी योजना बनी थी उसमें उसने भी भाग लिया था। उसने गुप्त रूप में इस योजना का सारा विवरण पोस्ट तक पहुंचा दिया था। इसके बाद उसने पोस्ट से यह अनुरोध किया था कि अब उसे इस काम से छुट्टी दे दी जाय। पार्टी चाहती है कि वह भी बेस के साथ देशव्यापी दौरे पर जाय। वह वायलिन बजाकर भीड़ एकत्रित करे और बेस अपना भाषण देकर कम्युनिस्ट आदर्शों का प्रचार करे तथा अभियुक्तों का मुकदमा लड़ने के लिये पैसा प्राप्त करने का प्रयत्न करे। हैन्सी ने कहा कि वह यह काम नहीं करना चाहता किन्तु पोस्ट का विचार है कि यह एक घातक भूल होगी।

किन्तु हैन्सी ने अपनी पत्नी को समझा बुझाकर राजी कर लिया। उसने उससे कह दिया कि पिछले कुछ दिनों की उत्तेजना ने उसकी स्नायुमण्डली को एकदम क्षत विक्षत कर डाला है और अब उसे थोड़े से विश्राम की आवश्यकता है। उसने कहा कि कम्युनिस्ट आदर्श के प्रति वह सदा की भांति श्रद्धालु है किन्तु वह राजनीति के क्षेत्र की अपेक्षा संगीत के क्षेत्र में काम करना अधिक पसंद करता है। बेस इससे कुछ हतोत्साह अवश्य हुई किन्तु बाद में वह राज़ी हो गयी।

"क्या तुम्हे ऐसा नहीं लगता कि उसे तुम पर संदेह हो सकता है?"

"नहीं, मुझे तो ऐसा नहीं लगता। किन्तु सम्भव है वह मन ही मन मेरे प्रति सशंक हो। आजकल वह बहुत ही सतर्क हो गयी है। उसे अपनी असफलता से गहरा सदमा पहुँचा है और वह मन ही मन यह सोचा करती है

कि किस व्यक्ति ने उसे धोखा दिया। उसने मुझसे कई बार खोद खोद कर पूछा कि तुम्हारे साथ मेरी क्या क्या बातें हुई थीं।"

"बेस के मामले में मैं स्वयं कुछ छान बीन करने की सोच रहा था किन्तु तुम बाजी मार ले गए।" लैनी ने मुस्कराते हुए कहा। उसने अपने हृदय के अन्दर उठनेवाले गुबार को भीतर ही दबा लिया।

(३)

हैन्सी ने लैनी को बताया कि गिरफ्तारियाँ किस प्रकार हुई थीं। प्रातःकाल के समय वह घर पर बेस के साथ नाश्ता कर रहा था। इसी समय प्रायः छै व्यक्ति आ गए। तीन व्यक्ति मोटर में थे और शेष एक स्टेशन-वैगन में। कुछ व्यक्ति दरवाजों पर पहरा देते हुए खड़े हो गए। किसी ने दरवाजे की घण्टी बजायी और नौकर को ठेल कर सब लोग भीतर आ गए।

"इन लोगों को इस बात का किंचित मात्र अनुमान न था कि इस मामले के साथ मेरा कोई सम्बन्ध हो सकता है।" हैन्सी ने कहा। "उन्होंने हम लोगों को कहा कि हम अपना नाश्ता समाप्त कर लें किन्तु हमें विशेष भूख न थी। वे लोग हमें एक दूसरे कमरे में ले गए। हमें दो कुर्सियों पर बैठा दिया गया और सामने एक कुर्सी डालकर पुलिस का आदमी बैठ गया। क्षण भर के लिये भी उसने अपनी आंखें हम लोगों पर से न हटायीं। उसने हमें बातें करने से मना कर दिया था। वे लोग अपने साथ वारण्ट लाए थे। वारण्ट दिखा कर हमसे बोले कि हम लोग चाहें तो उसका निरीक्षण कर सकते हैं। मैंने पोस्ट को पहले से ही आगाह कर दिया था कि घर के नौकर कम्युनिस्ट हैं। इसीलिये पुलिस के आदमियों ने इन्हे अपने बोरिये बिस्तर के साथ पहले ही बिदा कर दिया था। मैं यह दृश्य स्वयं न देख पाया था किन्तु निश्चय ही वे लोग अपने निजी सामान के अतिरिक्त अन्य कुछ भी न ले जाने पाए थे। पुलिसवाले हमें ऊपरवाले कमरे में ले गए और उन्होंने हमें अपने दैनिक उपयोग की कुछ वस्तुएं ले लेने की अनुमति दे दी। दो थैलों में हमने अपने ब्रश, कंघे आदि रख लिये। इसके बाद वे लोग हमें लेकर बाहर आए। एक दूसरे व्यक्ति के साथ मेरे हाथ बांधकर हथकड़ी डाल दी गयी।

इसी प्रकार पुलिस के एक आदमी के साथ बेस का हाथ बांधकर उसे भी हथकड़ी पहना दी गयी। पुलिस के तीन आदमी अपने स्टेशन वैगन के साथ पीछे रह गए। उसके पास एक तलाशी वारन्ट था। इसे मुझे दिखा कर उन्होंने घर की तलाशी ली और एक एक कागज बटोर कर ले गए।"

गिरफ्तारी के बाद अभियुक्तों को हवालात में ले जाया गया था। "दूसरों के सम्बन्ध में मैं नहीं जानता" हैन्सी ने कहा, "किन्तु हम लोगों को तो काफी आराम के साथ रखा गया था। मेरे साथ एकाउण्टेण्ट जोहानसेन को रखा गया था—तुमने समाचार पत्रों में उसकी बात पढ़ी ही होगी। वह डेनमार्क का रहने वाला है। गुमसुम सा रहता है और जब कभी मुंह खोलता है उसके शब्दों में कटुता रहती है। मुझे उसके साथ मित्रता करनी आवश्यक थी। इसलिये मैंने उसे अपनी सोवियत यात्रा का वृत्तान्त बताया। वहां जो जो आश्चर्यजनक बातें देखी थीं उनका विवरण दिया और कहा कि रूस की जनता को मैं हृदय से चाहता हूँ। उसने मुझ पर विश्वास कर लिया—संदेह करने के लिये कोई कारण भी न था। उसने मुझे अपने दुर्भाग्यग्रस्त जीवन की बात बतायी। एक हड़ताल के प्रसंग में उसका सिर फूट गया था और इसके फलस्वरूप वह कम्युनिस्ट हो गया। पार्टी की सदस्यता कई वर्ष पहले ही त्याग कर वह 'भूमिगत' हो गया था। उसने अपना नया नाम रख लिया था और एकाउण्टेण्ट का काम जान बूझकर एक निश्चित उद्देश्य से सीखा था। जोन्स वाले कारखाने में उसे नौकरी मिल गयी। वे कागज उसने तिजोरी से चुराए थे। बेस के साथ उसका परिचय कराया गया था किन्तु वह बेस के वास्तविक नाम अथवा पद से अवगत न था। वह बेस को मारी के रूप में जानता था और बेस उसे जिम के रूप में जानती थी।"

"ये सारी बातें उसने तुम्हे जेल में बतायीं?" लैनी ने प्रश्न किया।

"वह रंगे हाथों गिरफ्तार किया गया था और उसने यह समझ लिया था कि उसका खेल समाप्त हो गया है। इसीलिये उसने किसी प्रकार के दुराव छिपाव की आवश्यकता न समझी। इसके अतिरिक्त वह मुझे भी अपनी ही भांति दुर्भाग्यग्रस्त समझता था। वह कारावास के दण्ड से भयभीत न था। कहता था कि जेल में वह लोगों को सिखा पढ़ा कर कम्युनिज्म में दीक्षित करने

का प्रयत्न करेगा और एक बार वर्ग संघर्ष की चेतना जाग्रत हो जाने पर वे लोग अच्छे कार्यकर्त्ता प्रमाणित होंगे।"

लैनी ने एक दूसरा प्रश्न छेड़ा जिसकी चर्चा वह लारेल के साथ कर चुका था।

"अब यह बताओ हैन्सी, कि क्या तुम उस घर में अकेले पड़े रहना पसंद करोगे?"

"मुझे कोई असुविधा न होगी लैनी। मैं अपने आप को काम में फंसाये रखूंगा।"

"मुझसे तो तुम कभी कभी मिलते रहोगे!"

"बेस अपने दौरे पर आगामी सप्ताह चली जायगी। इसके बाद ही मैं तुमसे मिल सकूंगा। वह तुमसे बहुत डरती है और इस समय उसके साथ मुझे झगड़ा न करना चाहिये—कम से कम तब तक नहीं जब तक कि इस मुकदमे का निर्णय न हो जाय। यदि कम्युनिस्टों को मेरा भेद मालूम हो जायगा तो वे आफत कर देंगे—शायद मुझे गोली मार दें।"

"यदि तुम छिपना चाहो तो मेरे यहां आ सकते हो। तुम बेस से कह सकते हो कि समाचार पत्रों के रिपोर्टरों से तंग आकर तुम वहां चले गए।"

"यह असत्य भी न होगा।" हैन्सी ने कहा, "समाचार पत्रों के रिपोर्टरों ने मेरे घर के नौकरों तक को घूस देनी चाही थी।"

(४)

लैनी ने घर जाकर लारेल को बताया कि हैन्सी अकेले रहने का विचार कर रहा है। किन्तु उसे यह बात पसंद न आयी। "उसके कपड़े लत्तों की सम्हाल कौन करेगा? नौकरों को कौन सम्हालेगा? उन दोनों बच्चों का क्या होगा? और सबसे बड़ी बात तो यह है कि उसे उन महिला प्रशंसकों से कौन बचाएगा जो उसके पीछे पीछे घूमती रहती हैं?'

यह निश्चय हुआ कि पुरुष को कभी अकेला नहीं रहना चाहिए। हैन्सी के सम्बन्ध में तो लारेल का निश्चित मत था कि उसे अकेले रहने की सोचना ही न चाहिए क्योंकि महिलाओं के झुण्ड के झुण्ड उसके पीछे मड़राते रहते हैं। यह

अनिवार्य रूप में आवश्यक समझा गया कि शीघ्र से शीघ्र उसके लिये कोई अच्छी सी पत्नी खोज दी जाय। अन्यथा फिर कोई अभागी स्त्री उसके गले मढ़ जायगी और यह दूसरी दुर्घटना उसके सारे जीवन का सर्वनाश कर देगी।

"किन्तु भगवान के नाम पर तुम हैन्सी से इसकी चर्चा न करना।" लैनी ने चेतावनी देते हुए कहा। "वह चीन भाग जायगा।"

"उसे इन सब बातों को जानने की कोई आवश्यकता नहीं। स्त्रियां सब कुछ सम्हाल लेती हैं। पुरुषों को परेशान होने की कोई आवश्यकता नहीं रहती।"

लारेल ने कागजों का ढेर एक ओर सरका दिया और लैनी ने भी यही किया। इसके बाद दोनों हैन्सी के विवाह के प्रश्न पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने लगे। उनके कार्यालय में जो लड़कियां काम करती थीं उन पर विचार हुआ, जो स्वयं-सेविकाओं के रूप में आती थीं उन पर विचार विमर्श हुआ, जो यदा कदा शान्ति परिवार को पत्र लिखती रहती थीं उनकी बात सोची गयी; लन्दन, पेरिस न्यूयार्क, बाल्टीमार, हालीउड—जहां कहीं भी किसी लड़की का सुराग दिखाई पड़ा उसपर विचार किया गया। किन्तु समस्या का समाधान इतना आसान न था। कुछ की आयु आवश्यकता से अधिक थी, कुछ की कम। कुछ बातूनी थीं और कुछ कुरूप। लैनी ने प्रस्ताव किया कि कुरूपता का प्रश्न अधिक गम्भीर न होगा। किन्तु लारेल ने तुरन्त बात काटते हुए कहा, 'वाह, क्यों नहीं? आखिर हैन्सी भी आदमी है!"

इस बात की आवश्यकता थी कि हैन्सी की नयी जीवन संगिनी में संगीत के प्रति कुछ अभिरुचि हो, अन्यथा मेल ठीक न बैठेगा। यह भी आवश्यक था कि वह बुद्धिमती हो, नहीं तो हैन्सी के साथ उसका निर्वाह होना कठिन हो जाएगा। लड़की ईमानदार और कर्त्तव्य परायण होनी चाहिए— और लारेल का कहना था कि इस प्रकार की लड़कियों का अभाव होता जा रहा है। इस बात पर भी विचार किया गया कि हैन्सी के लिये नयी पत्नी चुनने का कार्य श्रीमती रोबिन को सौंप दिया जाय। श्रीमती रोबिन एक भीतु और धार्मिक महिला थीं और इसलिये इस बात की आशंका थी कि कहीं वे ऐसी दब्बू लड़की न चुन लें जो

हैन्सी को मांस खाते देख कर घबरा उठे या वृद्धा महिलाओं की भांति नकली बालों का चोंगा पहनने लगे ! लैनी की मां ब्यूटी भी बहुत सी लड़कियों से परिचित थीं किन्तु ये लड़कियां पूर्णतया सांसारिक प्रवृत्ति की थीं—न होतीं तो ब्यूटी बड को इनमें किसी प्रकार की दिलचस्पी न रहती। इसलिये यह काम ब्यूटी को नहीं सौंपा जा सकता था।

विनोद के स्वर में लैनी ने कहा कि इस समय योरोप में स्त्रियों की भरमार है और कोई भी योरोपियन स्त्री एक अमरीकी के साथ विवाह करने के लिये तुरन्त तयार हो जायगी क्योंकि उन लोगों की दृष्टि में आज अमेरिका एक स्वप्न-देश है। किन्तु लारेल ने आपत्ति की कि इस समय योरोप की स्त्रियां स्नायु-दौर्बल्य से आग्रस्त हैं और स्वस्थ मन-मस्तिष्क की स्त्री खोज निकालना एक कठिन कार्य होगा। लैनी ने भी स्वीकार किया कि पिछले कुछ दिनों में उसे जितनी योरोपियन स्त्रियों से परिचय प्राप्त करने का अवसर मिला वे सभी मध्यवयस्का थीं और युद्ध की विभीषिका से गुजरने के कारण उनकी प्रकृति असंतुलित हो गयी थी ! इन स्त्रियों से केवल मध्यवयस्क अमरीकी ही शादी कर रहे थे—और इस उदारता के लिये उन्हें गालियां मिल रही थीं।

लैनी ने अन्त में यह सुझाव दिया कि समाचार पत्रों में विज्ञापन क्यों न दे दिया जाय ? किन्तु लारेल ने आपत्ति प्रकट करते हुए कहा कि यह और भी बुरा होगा। "हैन्सी के पीछे औरतों का तांता योंही लगा रहता है। अभी ये उसके घर तक जाने का साहस नहीं करतीं क्योंकि वे जानती हैं कि वह विवाहित है। विज्ञापन देने से यह बात प्रकट हो जायगी कि अपनी पहली पत्नी के प्रति उसे कोई मोह नहीं है। परिणाम यह होगा कि हैन्सी को अपनी जान बचाने के लिये दरवाजों पर दोहरे ताले लगाने पड़ेंगे !"

विवाह की यह चर्चा कुछ अप्रासंगिक सी थी क्योंकि यह समझा जाता था कि वह अपनी विवाहिता पत्नी के साथ बड़े आनन्द से जीवन यापन कर रहा है। इसके अतिरिक्त यह बात भी स्पष्ट थी कि दोनों एक गम्भीर अभियोग के अन्तर्गत सरकारी अभियुक्त हैं और उन्हे किसी अमरीकी जेल में दस से बीस वर्ष के कारावास का दण्ड मिल सकता है। किन्तु जो बातें पुरुषों को असम्भव

प्रतीत होती हैं वे स्त्रियों के लिए सहजसाध्य होती हैं। लारेल ने मन ही मन यह निश्चय कर लिया था कि वह सम्भाव्य स्त्रियों पर नजर रखेंगी और यदि कोई उपयुक्त स्त्री दिखाई दी तो उसे घर पर भोजन के लिये आमंत्रित करके उसके चरित्र को समझने का प्रयत्न करेगी। यदि उसे वह जंच गयी तो वह एक भोज के बहाने हैन्सी को बुला लेगी और दोनों का परिचय करा देगी। और इसके बाद ?—

इसके बाद लैनी हैन्सी से कहेगा, "क्यों हैन्सी कुमारी अमुक के सम्बन्ध में तुम्हारी क्या धारणा है ?" और लारेल कुमारी अमुक से कहेगी, "हैन्सी रोबिन के सम्बन्ध में आपका क्या विचार है ? बेचारे पर मुकदमा चल गया; यह एक दुर्भाग्य की बात है।" इसके बाद यदि यह देखा गया कि दोनों पक्ष एक दूसरे के प्रति संवेदनशील हैं तो फिर लारेल उस महिला से कहेगी :

"शायद आपको मालूम नहीं कि हैन्सी वस्तुतः कम्युनिस्ट नहीं है, वह तो अपनी पत्नी बेस के बहकावे में आकर इस झंझट में पड़ गया। शायद इस प्रश्न पर ही दोनों का वैवाहिक सम्बन्ध टूट जाय। किन्तु आप किसी से इसकी चर्चा मत करियेगा—हैन्सी से भी नहीं।"

सांसारिक मनुष्य इसी प्रकार अपना काम निकाला करते हैं और उद्देश्य अच्छा हुआ तो यह कौशल कोई बुरी बात भी नहीं है।

(५)

मार्च का महीना था—उस मार्च का जो आता तो है शेर की भांति और जाता है मेमने की भांति। किन्तु इस समय वह शेर की मुद्रा में ही था। रात के समय बर्फ पड़ती थी और सबेरे सूर्य निकलने पर बर्फ पिघलने लगती थी। लैनी को सर्दी हो गयी थी इसीलिये वह कार्यालय न जा सका था। उसने देखा कि सामने सुनहली धूप फैली हुई है। अपना ड्रेसिन्ग गाउन पहने हुए वह बाहर आकर बैठ गया। इस अनिश्चित मौसम में सूर्य की प्रत्येक रश्मि बहुमूल्य थी। इतने ही में लारेल आ गयी। वह अपने साथ उस दिन की डाक का एक बण्डल लायी थी। उसने लैनी की चिट्ठियां उसकी ओर बढ़ा दीं।

कुछ चिट्ठियाँ उसके व्यक्तिगत नाम से आयी थीं। किन्तु दीर्घकालीन अभ्यास के फलस्वरूप वह महत्वपूर्ण लिफाफों को एक दृष्टि में ही पहचान लेता था। व्यापारिक पत्र हमेशा छपे हुए लिफाफों में आते थे। जिनके कोने पर फर्म का नाम लिखा रहता था। व्यक्तिगत प्रशंसकों के पत्र हाथ से लिखे हुए होते थे और इनमें से अधिकांश की लिखावट अनाकर्षक तथा कुरुचिपूर्ण होती थी। सबसे पहले लैनी हवाई डाक से आनेवाले लिफाफों को खोलता था—विशेषकर उनको जिन पर जर्मनी की टिकटें लगी होती थीं। आज की डाक में मान्क का एक पत्र आया था। उस पत्र का पहला वाक्य इस प्रकार था : "गूंगी लड़की का कोई पता नहीं है। उसको खोजने के लिये हमने एक आदमी भेजा था किन्तु अभी तक कोई सफलता नहीं मिली है।"

बस, इससे अधिक और कोई संकेत न था। लैनी सोचने लगा। क्या फर्डीनेण्ड ने अन्ना सर्डेन को धोखा दिया? या अन्ना सर्डेन ने ही फर्डीनेण्ड को धोखा दिया था? हस बात की भी सम्भावना थी कि उसे अपनी रुचि के अनुकूल कोई व्यक्ति मिल गया हो और वह उसके साथ भाग गयी हो। किन्तु इसकी कोई अधिक सम्भावना न प्रतीत होती थी क्योंकि वह एक ऐसे देश में थी जहां इस समय पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियां अधिक थीं। यह बात अधिक सम्भव थी कि वह गिरफ्तार हो गयी हो और यदि वह सचमुच गिरफ्तार हो गयी है तो क्या उसने मान्क का भेद खोल दिया है? मान्क और लैनी को बचाने के लिये वह कम्युनिस्टों का अत्याचार सहेगी, यह आशा करने का कोई कारण न था। जाली मुद्रा का उत्पादन करनेवाले जालसाजों को पकड़ने का प्रयत्न करना कोई अपराध नहीं है किन्तु इस मामले में ऐसा प्रतीत हो रहा था कि इन जालसाजों के साथ स्वयं सरकार सहयोग कर रही है। भले ही वह सरकार जर्मन हो अथवा रूसी। यह स्पष्ट था कि उस लड़की ने मान्क और लैनी का भेद खोल दिया तो आगे की कार्यवाही बड़ी कठिन हो जायगी।

लैनी सोचने लगा कि एक कठोर पुलिस-राज्य के विरुद्ध उसके प्रयत्न कहाँ तक सफल हो सकते हैं? उसने हाल में न्यूयार्क के अन्दर एक रूसी गुप्तचर को गिरफ्तार होते हुए देखा था। वह गुप्तचर अपने अमरीकी सहयोगियों के साथ

रंगे हाथों पकड़ा गया था। कानून का आदेश था कि उसे न्यायालय में हाजिर किया जाय और बाद में उसे जमानत पर छोड़ दिया जाय। कानून का यह आदेश भी था कि 'जमानत आवश्यकता से अधिक कड़ी न हो'। वही हुआ भी। किन्तु जमानत होते ही वह अभियुक्त लापता हो गया। समाचार पत्रों में इस आशय का समाचार प्रकाशित हुआ था कि अभियुक्त बाल्टीमार के बन्दरगाह में खड़े हुए एक रूसी जहाज पर चढ़कर भाग गया था। तीस हजार डालर खर्च कर के रूस की सरकार ने अपने गुप्तचर तथा उसके सारे भेदों को वापस प्राप्त कर लिया था और यह तीस हजार डालर की रकम कोई अधिक न थी। रूस की जनसंख्या में इसे विभाजित करने पर यह १/३० 'कोपक' के लगभग निकलेगी जो कि नगण्य ही है!

दूसरी ओर जब सोवियत क्षेत्र में एक अमरीकी जासूस पकड़ा गया था तब श्मशान का सा सन्नाटा छा गया था। रूसवालों की ओर से बराबर यही कहा जाता था कि उन्होंने उस व्यक्ति का नाम तक नहीं सुना। पूछताछ करने पर वे साफ इनकार कर जाते थे और उल्टा यह पूछने लगते थे कि "आपको उस व्यक्ति में क्या दिलचस्पी है?" खुले न्यायालय में पेश करने के स्थान पर उसे किसी कालकोठरी में बन्द कर दिया गया था और उस पर तब तक निर्मम रूप से अत्याचार होता रहा था जब तक कि उसने अपने सारे भेद उगल न दिये थे अथवा पुलिस-राज्य उससे जो कहलवाना चाहता था वह उसने स्वीकार न कर लिया था।

एक गणतांत्रिक समाज व्यवस्था तथा एकतांत्रिक पुलिस-राज्य में आकाश पाताल का अन्तर है। लैनी आजीवन नागरिक अधिकारों का एक प्रबल समर्थक रहा था। किन्तु अब उसके मस्तिष्क में एक नया विचार उठ रहा था: क्या गणतन्त्र के शत्रुओं को भी वे गणतांत्रिक अधिकार दिये जाने चाहिये जिनका मूलोच्छेद ही उनका उद्देश्य है! लैनी जानता था कि गणतन्त्र के शत्रु संसार के प्रत्येक व्यक्ति के आधारभूत अधिकारों को छीनकर उन्हें पोलिटब्यूरो के तेरह व्यक्तियो तक ही सीमित कर देना चाहते हैं!

(६)

मान्क के पत्र में बर्लिन की परिस्थितियों पर भी प्रकाश डाला गया था। बर्लिन की वस्तुस्थिति के प्रति इस पत्र में भी सदा की भांति उसका दृष्टिकोण निराशा जनक था। उसने लिखा था कि "शब्द-युद्ध" दिन दिन उग्रतर होता जा रहा है और सोवियत सरकार इस दिशा में कोई कड़ा कदम उठाने की सोच रही है। उन लोगों का प्रचार कार्य अनवरत रूप में चल रहा था और जर्मनों पर—विशेषकर पूर्वी क्षेत्र के जर्मनों पर उसका बहुत बड़ा प्रभाव पड़ रहा था। दूसरी ओर अमरीकियों का प्रचार कार्य अत्यन्त निर्बल था। "रिआस" की ओर से भरसक प्रयत्न हो रहा था किन्तु उसके पास पैसा न था और जिस नये मकान का आश्वासन उसे प्राप्त हुआ था वह भी अभी तक उसे न मिला था। मान्क ने अपने पत्र में लैनी से अनुरोध किया था कि वह वाशिन्गटन में अधिकारियों से मिल कर इस प्रसंग में कुछ न कुछ करने का प्रयत्न करे।

पत्र के अन्त में लिखा हुआ था : "तुम्हारा मित्र पहाड़ों पर अपने परिवार के साथ सकुशल है। मैंने उससे परिचय प्राप्त कर लिया है।" लैनी समझ गया कि मान्क का संकेत कर्ट मेसनर की ओर है और मान्क "वोल्किश्चरबण्ड" का भण्डाफोड़ करने के लिये पूर्णतया प्रयत्नशील है। लैनी को इस बात का निश्चय था कि कर्ट ने उसे जो यह आश्वासन दिया था कि भविष्य में वह अमेरिका के विरुद्ध किसी प्रकार की क्रियाशीलता में भाग न लेगा, उसे कहां तक निभावेगा। इधर मान्क उसके षड़यन्त्र को भेदने के लिये कोई कोर कसर न उठा रखेगा। लैनी सोचने लगा कि यह उन व्यक्तियों का दल है जो नागरिक स्वतन्त्रता अथवा नैतिकता को विशेष महत्व नहीं देते!

इन चिन्ताजनक विचारों में उलझा हुआ वह घर के अन्दर चला गया और रेडियो खोलकर समाचार सुनने लगा। रेडियो पर उसने एक भयानक वृत्तान्त सुना। यह जान मसारिक की मृत्यु से सम्बन्धित था। समाचार के अनुसार वे अपने मकान की तीसरी मंजिल से या तो स्वयं कूद पड़े थे, अथवा अनजान में वहां से गिर पड़े थे। नीचे आंगन पर उनकी हड्डियां चूर चूर हो गयी थीं। यह समाचार जेकोस्लोवाकिया की कम्युनिस्ट सरकार की ओर से आया था और उसके

अनुसार यह आत्महत्या थी। किन्तु लैनी ने क्षण भर के लिये भी इस पर विश्वास नहीं किया। वह मसारिक के चरित्र से भलीभाँति अवगत था। वह जानता था कि मसारिक युद्ध से घबरा कर भागनेवाले व्यक्ति नहीं थे, वे कम्युनिस्टों से इतनी तीव्र घृणा करते थे कि इस प्रकार आत्महत्या करके स्वयं अपने शत्रुओं का मार्ग साफ कर देने की कल्पना भी उनके लिये कठिन थी। इसीलिये जब बाद में यह समाचार आया कि उनके शयनागार में घुसकर आततायियों ने एक लकड़ी के कुन्दे से उन्हें मार मार कर उनके प्राण ले लिये थे और शव को खिड़की से नीचे फेंक दिया था, तो लैनी को कोई आश्चर्य न हुआ। उसे याद आया कि मसारिक ने उससे बिदा लेते समय कहा था कि "जब तुम्हे मेरी मृत्यु का समाचार मिले तो समझ लेना कि सब कुछ समाप्त हो गया।" उनका संकेत जेकोस्लोवाकिया के भविष्य की ओर था।

यह कम्युनिस्टों की नागरिक स्वतंत्रता थी। अमेरिका में कम्युनिस्ट लोग नागरिक अधिकारों की स्तुति पंचमुख होकर कर रहे थे और अपने लिये इन अधिकारों की मांग कर रहे थे। लैनी यह सोचकर उद्विग्न हो उठा। वह मन ही मन कम्युनिस्टों को गालियां देते हुए कमरे में टहलने लगा। वह उन मूर्खों को भी कोसने लगा जो कम्युनिस्ट वाग्पटुता के शिकार होकर उनकी बातों को सत्य समझ बैठते हैं। अपनी बहन बेस को पकड़वाने और हैन्सी रोबिन द्वारा उसे तलाक दिलवाने के प्रश्न पर लैनी के मन में सदा नीति अनीति का संघर्ष उठ खड़ा होता था। किन्तु आज उसके मन में उस संघर्ष की कोई छाया न रह गयी। वह मन ही मन अपने मानसचक्षुओं द्वारा उस महान राजनीतिज्ञ तथा मानवतावादी नेता के शव को देखने लगा जो जान बूझ कर अपने प्राणों की आहुति देने के लिये स्वदेश चले गये थे। उनका त्याग कम्युनिस्ट तानाशाही के विरुद्ध एक प्रतिवाद था और साथ ही स्वतंत्र संसार के प्रति एक अपील। लैनी के मस्तिष्क में बायरन की ये पंक्तियां घूम गयीं जो उन्होंने चिल्लन के बन्दी को सम्बोधित करते हुए लिखी थीं :

है पवित्र बलिवेदी सा यह
चिल्लन, तेरा कारागार !

चिन्ह रहें युग युग तक अंकित
भूले मत इनको संसार !
बोन्निवार्ड के चरण चिन्ह अब
कहते हैं यह बारम्बार !
जागो जगत पिता तुम जागो—
बढ़ा धरणि में अत्याचार !

(७)

कुछ दिन बाद फिर मान्क का पत्र आया। उसने पिछले पत्र में लैनी को आश्वासन दिया था कि वह भविष्य के घटनाक्रम के सम्बन्ध में लैनी को सूचित करता रहेगा। इस बार उसने लिखा था : "फर्डीनेण्ड का पिता पहले की भांति ही क्रियाशील है। मैं एक नमूना भेज रहा हूँ। इससे तुम समझ जाओगे कि पुरानी आग अभी तक बुझी नहीं है। ... इस समय मैं स्टीवेन्सन का 'ट्रेजर आइलैंड' पढ़ रहा हूं। बड़ी रोचक कहानी है। तुम्हे इसे अवश्य पढ़ना चाहिए।"

लैनी इस अंतिम वाक्य पर सोचने लगा। वह समझ गया था कि इस वाक्य में कोई गुप्त संकेत है। वह जानता था कि मान्क के पास इस प्रकार के उपन्यास जो साधारणतया बच्चों की पाठ्य सामग्री हैं—पढ़ने का अवकाश नहीं है। मान्क एक सतर्क व्यक्ति था। वह कोई भी बात स्पष्ट रूप में न लिखता था क्योंकि उसे सदा डाक की गड़बड़ी का भय रहता था। वह जहां पर काम कर रहा था वहां अनेकों विरोधी जासूस लगे हुए थे जिनके लिए एक पत्र खोल कर पढ़ लेना कोई बड़ी बात न थी। 'ट्रेजर' शब्द महत्वपूर्ण था। अवश्य ही मान्क का संकेत इस ओर था कि नाजियों के किसी गुप्त खजाने का सूराग उसे प्राप्त हो गया है। लैनी को इस बात का पता न था कि टेगर्नसी अंचल में कोई द्वीप है या नहीं किन्तु वह यह जानता था कि उन पहाड़ों पर कई झीलें हैं। सम्भव है 'वोल्कि-इचरबण्ड' को यहीं पर किसी गुप्त खजाने का पता हो !

लिफाफे में एक कागज अलग से रखा हुआ था। वह टाइप किया हुआ था ; भाषा जर्मन थी। वह इस प्रकार था :

"हमें मुक्ति का जन्मगत अधिकार है ; हमें इस अधिकार पर पूर्ण विश्वास है। किन्तु हमें अपनी मुक्ति के लिए स्वयं प्रयत्न करना पड़ेगा। हमें अपना सिर ऊंचा रखना होगा। हमने अतीत में जो कुछ किया वह उचित और न्यायसंगत ही था और उसके लिए हम लज्जा का कोई कारण नहीं समझते। हम किसी व्यक्ति से यह नहीं कहते कि तुम हमारा गौरव हमें वापस दे दो। वह गौरव तो हमारा है ही! हमने शत्रु के साथ कोई समझौता नहीं किया है—हमारा व्यक्तित्व पूर्णतया अक्षुण्ण है!"

यह उस कट्टर नाजी का स्वर था जिसने पराभूत होने से इनकार कर दिया था। जजमान ने लैनी को कर्ट के 'शब्द' की बात बतायी थी। उसने कहा था कि कर्ट का यह 'पवित्र' शब्द एक वाक्य में ही सीमित रहता है। किन्तु इस कागज में तो कई वाक्य थे। क्या कर्ट के 'शब्दों' का विस्तार पूर्वापेक्षा बढ़ गया है? या मान्क ने कई 'शब्दों' को एकत्रित करके भेज दिया है?

जो भी हो, यह स्पष्ट था कि कर्ट ने लैनी को जो यह आश्वासन दिया था कि वह भविष्य में किसी प्रकार की राजनीतिक क्रियाशीलता में भाग न लेगा वह एक चकमा मात्र था। कर्ट ने नाजियों की शासन-लिप्सा को पूर्णतया हृदयंगम करके उसे एक रहस्यमय दर्शन के रूप में परिवर्त्तित कर लिया था—एक ऐसे दर्शन के रूप में जो मानव-निर्मित नियमों और सिद्धान्तों के परे है। इस विचार धारा की भित्ति वह पुरानी बात ही थी कि लक्ष्य की उपलब्धि के लिए हर उपाय क्षम्य है। जर्मन भाषा में यह सिद्धान्त और भी उग्र प्रतीत होता है। जर्मन जाति द्वारा सारे संसार पर विजय प्राप्त करने की भावना एक धार्मिक आग्रह के रूप में परिवर्त्तित हो जाती है। किन्तु इस "दैवी आग्रह" द्वारा प्रसूत विचार धारा को कार्यरूप में परिणत करने के लिये जर्मनों ने सत्तर वर्ष की अवधि में तीन प्रयास किये थे। और अब कर्ट कह रहा था कि निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं ; जर्मनों को उत्साहपूर्वक एक चौथे प्रयास के लिए तयार होना चाहिए!

किन्तु यहां एक बाधा उपस्थित हो गई थी। जर्मनों के आराध्य देव को अलग हटाकर स्टालिन पन्थी कम्युनिस्टों ने एक नये युग-देवता की स्थापना कर

दी थी। आश्चर्य की बात यह हुई कि यह नया देवता जन्म से यहूदी था। यह था 'मार्क्सवादी तर्क सिद्धान्त'! इस नये देवता के अनुसार संसार में सब कुछ 'स्वतः चालित और अनिवार्य' है, यह भौतिकतावादी अपरिहार्यवाद है। मार्क्स के अनुयायियों का कहना है कि संसार पर उनका अधिकार होना पूर्णतया सुनिश्चित है और इस दिशा में हमारी इच्छा अथवा अनिच्छा कोई अन्तर नहीं ला सकती। कदाचित यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि संसार पर अधिकार करने की इच्छा ही अधिक सुनिश्चित तत्व है। भाग्य की ओर से यह पूर्वनिश्चित था कि कम्युनिस्ट लोग पूंजीवाद से घृणा करेंगे—ऐसी तीव्र घृणा करेंगे कि उसे उलट कर उसके स्थान पर श्रमजीवी समाज की तानाशाही की स्थापना करेंगे। और कदाचित भाग्य की ओर से यह भी पूर्वनिश्चित था कि जो लोग इस नयी व्यवस्था के अन्तर्गत सत्तारूढ़ होंगे वे इस बात पर विश्वास करने लगेंगे कि शासन करने का अधिकार एकमात्र उन्हीं को है! मुख्य बात यही थी कि वे सत्तारूढ़ हों और इस उद्देश्य की पूर्त्ति के लिये कोई भी उपाय वैध था!!

इस प्रकार पराभूत नाजियों के सम्मुख उनके नये शत्रुओं, कम्युनिस्टों, का उदय हो गया था। दोनों पक्षों के हृदयों में एक दूसरे के प्रति घृणा की तीव्र ज्वाला धधक रही थी। इन दोनों सीमान्तों के बीच में मनुष्यों का एक अन्य समुदाय भी खड़ा हुआ था। इस समुदाय के व्यक्तियों का जीवन दर्शन एकदम भिन्न था। ये व्यक्ति ६ हजार मील की दूरी से आए थे और ६ हजार मील का यह अन्तर किसी नगर के बीच से एक काल्पनिक रेखा खींच देने की भांति न था; यह ठोस और वास्तविक था। किन्तु किसी निर्मम पाषाण-हृदय देवता अथवा दार्शनिक तर्क पद्धति के फेर में आकर अमरीकी लोग इस प्रकार की विचित्र स्थिति में कैसे पहुंच गये थे?

यह स्पष्ट था कि इसके मूल में और जो भी तत्व रहे हों, कम से कम यह नहीं कहा जा सकता कि अमरीकी लोग स्वयं इस प्रकार की स्थिति में पड़ने के इच्छुक थे। योरोप में लैनी हजारों अमरीकियों से मिला था—साधारण क्षुद्र व्यक्तियों से लेकर बड़े बड़े जेनरलों तक। और उसे एक भी ऐसा व्यक्ति न दिखाई दिया था जो वापस अमेरिका लौट जाने के लिए आतुर न हो। किन्तु परिस्थितियों के

कारण ये अमरीकी योरोप में पड़े हुए थे। कर्त्तव्यबोध ने, आदर्श ने, अपने पूर्वजों से उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त होने वाली परम्पराओं ने उन्हें एक सूत्र में आबद्ध कर रखा था। यह आदर्श क्या था? यही कि किसी राष्ट्र को यह अधिकार न दिया जाय कि वह दूसरे राष्ट्रों को जीत कर अपने क्रीत दासों के रूप में परिवर्त्तित कर ले। वे यह न जानते थे कि इस आदर्श को लच्छेदार दार्शनिक भाषा में किस प्रकार सजाया जा सकता है। वे साधारण बोलचाल की स्पष्ट और एकार्थिक भाषा में केवल इतना ही कहना जानते थे कि वे स्वतंत्र संसार पर विश्वास करते हैं और उसकी रक्षा के लिए कृतसंकल्प हैं। और लैनी अपने मित्र गान्क का पत्र पढ़ते हुए सोच रहा था कि यदि इतिहास के तारतम्य में इससे अधिक भयानक, इससे अधिक विस्फोटक परिस्थित कभी पैदा हुई थी तो उसका विवरण किसी ऐसी पुस्तक में होगा जो उसकी दृष्टि से नहीं गुजरी है।

(८)

जान मसारिक की मृत्यु के कुछ दिन बाद लैनी लेक सक्सेस में राष्ट्र संघ का एक अधिवेशन देखने के लिये चला गया। वहाँ एक प्रस्ताव पेश हुआ कि राष्ट्र संघ की ओर से जेकोस्लोवाकिया की परिस्थितियों की जांच की जाय। लैनी ने सोवियत प्रतिनिधि द्वारा इस प्रस्ताव की तीव्र निन्दा होते हुए सुना। सोवियत प्रतिनिधि ने कहा कि इस प्रकार का विचार 'जेकोस्लोवाकिया की गणतांत्रिक सरकार को अपमान' है। सोवियत प्रतिनिधि का नाम था ग्रोमीको। वे अभी युवक थे और सोवियत रूस में जिस प्रकार की शासन व्यवस्था है उसके अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार की व्यवस्था का उन्हें कोई अनुभव न था। वे उन असंख्य पुतलों में से एक थे जो विशालकाय सोवियत शासनतन्त्र अनवरत रूप में तयार कर रहा था। उनके चेहरे पर कभी किसी प्रकार का भाव न देखा जाता था और उनका स्वर भी रिक्त और संवेदनशून्य रहता था। प्रतिदिन संध्या के समय वे मास्को को टेलीफोन करके वस्तुस्थिति का विवरण दे देते थे और अपने आदेश प्राप्त कर लेते थे। दूसरे दिन राष्ट्र संघ के अधिवेशन में वे वही बातें दोहरा देते थे जो कि उनसे कहने के लिए कही जाती थीं। वे इस बात को जानते थे कि उनके श्रोताओं में दो चार ही उनके भाषण को समझ पाते थे। शेष व्यक्तियों के लिये

अनुवाद आवश्यक होता था। उन्होंने जेकोस्लोवाकिया से सम्बन्धित प्रस्ताव के विरुद्ध अपना वोट दिया किन्तु इसके बावजूद वह बहुमत से स्वीकृत हो गया। फलस्वरूप वे अपना प्रतिवाद व्यक्त करने के लिये सभास्थल से उठकर चले गए। कम्युनिस्ट दर्शनधारा की भांति उनका यह कार्य भी "स्वतः चालित' था!

लैनी घर लौट आया। कुछ दिन बाद रेडियो पर अमेरिका के सेक्रेटरी आफ स्टेट जेनरल मार्शल का भाषण सुना। उन्होंने स्पष्ट रूप में यह घोषणा की कि हर प्रकार की विघ्न बाधाओं के बावजूद अमरीकी लोग बर्लिन में डटे रहने के लिये कृतसंकल्प हैं। लैनी ने रेडियो पर आणविक शक्ति के अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण के सम्बन्ध में राष्ट्रसंघ का यह वक्तव्य भी सुना कि इस दिशा में एक दुर्लंघ्य गतिरोध उपस्थित हो गया है। सोवियत सरकार ने आणविक समिति को अपने देश के कारखानों के निरीक्षण का अधिकार देने से इनकार कर दिया था और यह दावा किया था कि पहले अमेरिका अपने आणविक अस्त्र शस्त्रों को नष्ट करे। किन्तु सभी की दृष्टि में यह बात स्पष्ट थी कि यदि सोवियत रूस अभी तक पश्चिमी योरोप को अपने साम्राज्य में अन्तर्भुक्त नहीं कर सका तो इसका एकमात्र कारण यह था कि अमेरिका क्रेमलिन पर अपना अणुबम लटकाए हुए था।

(९)

अमेरिका के स्टेट डिपार्टमेंट की ओर से न्यूयार्क में एक रेडियो स्टेशन की स्थापना हुई थी। इसका नाम था 'वायस आफ अमेरिका'। इस रेडियो का उद्देश्य यह था कि वह शेष संसार को अमेरिका की विचारधारा से अवगत कराने का प्रयत्न करे। किन्तु उस समय अमेरिका की कांग्रेस में तटस्थतावादी सदस्यों का बाहुल्य था और इसलिये इस रेडियो संगठन को अधिक पैसा स्वीकृत न हो पाता था। बड़े बड़े समाचार प्रतिष्ठान अपनी खबरें इसे न बेचते थे। लैनी के लिये यह इस बात का उदाहरण था कि सरकारी प्रतियोगिता से बचने के लिये व्यक्तिगत उद्योग कितनी ही दूरी तक जा सकता है। किन्तु कोई उपाय न था। 'वायस आफ अमेरिका' ने इस प्रश्न को लेकर न्यायालय में उपस्थित होने की कोई आवश्यकता न समझी। कोई भी समाचार एक बार प्रकाशित हो जाने पर वह उसका उपयोग करने के लिये स्वतन्त्र रहता था। और सुदूर श्याम, तस्मा-

निया अथवा चिली में रहनेवाले लोगों के लिये दो चार घन्टे का विलम्ब कोई महत्व न रखता था।

'वायस आफ अमेरिका' को अमेरिका के अन्दर ब्राडकास्ट करने की अनुमति न थी। इसीलिये वह केवल शार्ट-वेव का उपयोग करता था। यह आशा थी कि भविष्य में जब उसे अधिक पैसा मिलने लगेगा वह कम्युनिस्ट साम्राज्य के चारों ओर महत्वपूर्ण केन्द्रों पर अपने शार्ट-वेव स्टेशन स्थापित कर लेगा। लाल साम्राज्य के भाग्य विधाताओं को यह बात अच्छी न लगेगी। कारण यह है कि 'वायस आफ अमेरिका' सत्य का प्रचार करता था और कम्युनिस्ट लोग सत्य-प्रसार से ही अधिक भयभीत रहते हैं। यह आशंका थी कि वे लोग अपने रेडियो द्वारा घरघराहट की आवाज पैदा करके 'वायस आफ अमेरिका' की आवाज दबा देने का प्रयत्न करेंगे।

यह 'शीत-युद्ध' का एक नया रूप था और यह बात स्पष्ट थी कि ज्यों ज्यों दिन बीतते जाएंगे इसकी शीतलता घटती जायगी और उसके स्थान पर उष्णता आती जायगी। टामस जेफर्सन ने लिखा था कि मनुष्य को असत्य से डरने की कोई आवश्यकता नहीं है बशर्ते कि उसकी प्रज्ञाशक्ति असत्य के साथ लड़ने के लिये स्वतन्त्र रहे। किन्तु कम्युनिस्ट साम्राज्य में प्रज्ञा शक्ति स्वतन्त्र नहीं रह पाती। फल स्वरूप सत्य की रक्षा का एकमात्र उपाय यह था कि दैनन्दिन समाचारों का चालीस पचास विभिन्न भाषाओं में अनुवाद कराकर भिन्न भिन्न देशों में प्रसार किया जाय इन देशों के अधिकांश निवासी निर्धन थे और उनके पास शार्ट-वेव रेडियो न थे। किन्तु यह आशा थी कि जिनके पास ये रेडियो होंगे वे तो सुनेंगे ही, इसके अतिरिक्त वे जोखिम उठाकर अन्य व्यक्तियों तक भी सत्य के संदेश को पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे। इतिहास में यह सदा से होता आया है और इसीलिये यह आशा थी कि भविष्य में भी यह क्रम इसी प्रकार चालू रहेगा। टामर्स जेफर्सन से सैकड़ों वर्ष पूर्व एक मसीहा ने भविष्यवाणी की थी कि 'सत्य सबसे अधिक शक्तिशाली होता है और अन्त में उसी की विजय होती है।"

'वायस आफ अमेरिका' के पास इतना पैसा न था कि वह व्यक्तिगत उद्योग से अच्छे अच्छे प्रतिभाशाली व्यक्तियों को खींच कर अपनी ओर ला सके। फल-

स्वरूप वह इस प्रकार के व्यक्ति खोज रहा था जो अपने आदर्शों और विश्वासों की अभिव्यक्ति के लिये कम वेतन पर काम करने के लिये तयार हों। इस प्रकार के व्यक्तियों की कमी न थी। किन्तु इनमें कुछ योग्य थे तो कुछ अयोग्य भी थे। एक कठिनाई यह भी थी कि इन बेचारों को दोनों ओर से विरोध का सामना करना पड़ना था। समाचार पत्र पत्रिकाओं और रेडियो आदि में बहुत से कम्युनिस्ट प्रविष्ट हो गए थे। वे 'वायस आफ अमेरिका' की ओर से प्रसारित होनेवाले वक्तव्यों की नुक्ताचीनी करने के लिये सदा तयार रहते थे। दूसरी ओर अमेरिका में ऐसे प्रतिक्रियावादी व्यक्तियों की भी कमी न थी जो अमेरिका की 'तटस्थता' के नाम पर सदा यह दलील देते रहते थे कि दूसरे देशों के मामलों में हमें हस्तक्षेप न करना चाहिए और इन्हें माल बेचते रहने के अतिरिक्त और किसी प्रकार का सम्पर्क न रखना चाहिए। 'वायस आप अमेरिका' को अनुवादकों का एक अच्छा खासा दल रखना पड़ता था। अनुवाद कभी कभी बड़ी विचित्र भाषाओं में होता था और इस बात की जांच करना कठिन हो जाता था कि वह ठीक हुआ है या गलत। इसके अतिरिक्त मोटी मोटी बातों को भी विस्तारपूर्वक समझना पड़ता था। और कभी कभी यह देखा जाता था कि अमरीकी विनोद सिंगली अथवा मिस्त्री विनोद से भिन्न है।

इस प्रकार के दुरूह कार्याधिक्य से थके हुए व्यक्तियों को जब किसी संस्था का स्वेच्छित सहयोग प्राप्त हो जाता था तो वे बड़े प्रसन्न होते थे। शान्ति परिवार की ओर से प्रसारित होनेवाले प्रोग्रामों में उन्हें बहुत सी बातें मिल जाती थीं जिनका वे उपयोग कर लेते थे। इससे एक लाभ यह होता था कि शान्ति-रेडियो, "रिआस" तथा "वायस आफ अमेरिका" से एक साथ प्रसारित होने पर इन प्रोग्रामों की शक्ति तथा प्रभावोत्पादकता कई गुना बढ़ जाती थी। प्रतिक्रिया के रूप में सारे संसार से पत्रों की एक बाढ़ सी आ जाती थी। इससे यह बात प्रमाणित होती थी कि संसार के भिन्न भिन्न भागों में लाखों व्यक्ति इन प्रोग्रामों को ध्यान पूर्वक सुनते थे और अपने अपने ढंग से सत्य का प्रचार करने के लिये तत्पर रहते थे। फिर भी इन प्रयासों की सफलता अथवा असफलता नियति के गर्भ में छिपी हुई थी!

*

अध्याय १८

● प्रेम का स्वर्णिम वितान ●

(१)

लैनी अपनी पत्नी के सम्बन्ध में चिन्तित था। वह जानता था कि उसकी पत्नी पर अत्यधिक कार्यभार है। लारेल का कर्त्तव्यबोध इतना प्रबल था कि वह प्रत्येक आगंतुक से मिलना तथा प्रत्येक पत्र का उत्तर देना अपना कर्तव्य समझती थी। वह सदा दो सेक्रेटरियों को कार्यव्यस्त रखती थी। बिस्तर पर लेटे लेटे भी वह अपनी दैनन्दिन डाक पढ़ती रहती थी और हाशिये पर उत्तरों के सम्बन्ध में आदेश देती रहती थी। बहुत दिनों से उसे छुट्टी न मिली थी। अब लैनी ने मन ही मन यह निश्चय किया कि लारेल को वह जैसे भी हो जलवायु परिवर्तन के लिये कहीं बाहर ले जायगा। उसकी अनुपस्थिति में सुदक्ष कर्मचारी गण काम सम्हाल लेंगे। रिक और नीना निरीक्षण करते रहेंगे। इसके बाद लारेल और लैनी के लौटने पर ये भी कुछ दिनों की छुट्टी मनाने के लिये बाहर चले जाएंगे।

हैन्सी अपने उस विशाल मकान में अकेला रह गया था। ईस्टर की छुट्टियों के बाद उसके दोनों लड़के वापस स्कूल चले गए थे। बेस अपने दौरे पर चली गयी थी। किन्तु दौरे पर जाने के पूर्व उसने हैन्सी के साथ झगड़ा कर लिया था। उसने हैन्सी को कायर और दब्बू बताया था क्यों कि उसने अपनी कम्युनिस्ट क्रियाशीलता त्याग देने का निश्चय कर लिया था। बेस ने कहा कि यदि कोई अपने वांछित आदर्श के लिये लड़ नहीं सकता तो उसका यह कहना व्यर्थ है कि वह उस पर विश्वास रखता है। और हैन्सी के संगीत के सम्बन्ध में बेस का निश्चित मत था कि सर्वहारा समाज के उद्धार की तुलना में उसकी कला एक नगण्य वस्तु है।

मुकदमे की सुनवाई शुरू होने में प्रायः दो मास की देरी थी। लैनी ने लारेल से कहा कि हैन्सी को उड़ा लिया जाय और कुछ दिनों तक मौज की

जाय। उसने एफ० बी० आई के मिस्टर विल्वर पोस्ट से सलाह ली। बेस की अनुपस्थिति में इस बात की सम्भावना बहुत ही कम थी कि हैन्सी को कम्युनिस्टों का कोई नया भेद प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त मुकदमा शुरू होने पर हैन्सी का भेद खुल ही जायगा। उस समय उसके मित्र उसके सम्बन्ध में क्या सोचेंगे? इसलिये यह आवश्यक है कि हैन्सी को कहीं बाहर ले जाकर उसका मन बहलाने का प्रयत्न किया जाय। पोस्ट राजी हो गए।

लैनी ने हैन्सी से मुलाकात की और उसके सम्मुख अपना प्रस्ताव रखा। उसने उसे आश्वासन दिया कि बेस को इसका पता न चलने पाएगा। लैनी ने सुझाव दिया कि हैन्सी बेस को एक छोटा सा पत्र लिख दे कि वह अपना मन बहलाने के लिये बाहर जा रहा है। यदि उसे इस बात का संदेह भी हो जायगा कि इसमें लैनी और लारेल का कोई हाथ है तो भी कोई विशेष हानि न होगी। लैनी ने हैन्सी को बढ़ावा देते हुए कहा कि यात्रा सचमुच बड़ी आनन्दप्रद रहेगी। हैन्सी अपनी वायलिन ले जा सकेगा और नयी नयी स्वर-लिपियों का सृजन करने की उसे पूरी छूट रहेगी। गाड़ी में वह पिछली सीट पर बैठकर विचारमग्न हो जाने के लिये भी स्वतन्त्र रहेगा— बशर्ते कि वे विचार आनन्दपूर्ण हों!

हैन्सी को यह प्रस्ताव जंच गया और वह राजी हो गया। दोनों मित्रों ने चुपचाप भाग निकलने की योजना बना ली। हैन्सी ने अपने नौकरों को सामान बांधने का आदेश दे दिया और बेस को एक पत्र लिख दिया। दूसरे दिन सबेरे वह एक टैक्सी में अपना सामान लादकर पास के एक छोटे से नगर में पहुंचा। वहां पर पोस्ट आफिस के सामने अपना सामान उतार कर उसने टैक्सी को बिदा कर दिया। थोड़ी ही देर बाद लैनीकी गाड़ी आती हुई दिखाई दी। लैनी ने हैन्सी को अपनी गाड़ी में बैठा लिया। किसी को कानोकान पता नहीं चलने पाया और दोनों मित्र न्यूजर्सी की ओर रवाना हो गए।

(२)

मध्यान्ह के समय वे वाशिन्गटन पहुंचे। एक सुन्दर सराय में उन्होंने दो कमरे किराए पर ले लिए। कमरों के साथ उन्हें अपनी मोटर रखने के लिये स्थान भी प्राप्त हो गया था। कमरों में अपना सामान रखकर वे लोग एक होटल

में भोजन करने के लिये गए। वहां से लौट कर वे वापस सराय में आ गए। गाड़ी में उनके पास एक रेडियो था। इस रेडियो के अतिरिक्त वे अपने साथ एक और रेडियो भी लाए थे ताकि इसे सराय में लगाकर वे संसार के समाचार प्राप्त कर सकें और मानव जाति की सारी समस्याओं पर विचार विनिमय करते हुए समाधान के मार्ग प्रस्तुत कर सकें। तीनों मित्र एक दूसरे से घनिष्ट थे और एक दूसरे के हृदय को समझते थे। उनमें कभी मतभेद भी होता था तो भी कटुता का सन्निवेश न हो पाता था। एक दूसरे के समीप रहना स्वयं एक आनन्दप्रद बात थी।

दूसरे दिन प्रातःकाल वे लोग नगर घूमने के लिये निकले। वे भी अन्य यात्रियों की भीड़ में घुल मिल कर एकाकार हो गए। चारों ओर नयी इमारतें बन रही थीं। नगरों का विकास कितने आश्चर्य ढंग से होता रहता है! इस बार लैनी ट्रेजरी बिल्डिन्ग अथवा स्टेट डिपार्टमेंट अथवा 'पेण्टागन' में नहीं गया क्योंकि यह यात्रा पूर्णतया आमोद प्रमोद के लिये थी। सब लोग राष्ट्रीय चित्रशाला में गए और दिन भर महान कला-कृतियों का अवलोकन करते रहे। इस चित्र संकलन का मुख्य श्रेय प्रसिद्ध उद्योगपति एण्ड्रू कार्नेगी को था। लैनी एक समय उग्र क्रान्तिकारी विचार रखता था और इस पूंजीपति से मन ही मन तीव्र घृणा करता था। उस समय वह सोचा करता था कि राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था पर एकाधिपत्य स्थापित करके इस स्वार्थी पूंजीपति ने ही सन १९२९ की भयानक आर्थिक मन्दी की सृष्टि की थी। किन्तु आज उस बात को उन्नीस वर्ष हुए और इन उन्नीस वर्षों में इतिहास के अन्दर कैसी उथल पुथल हो गयी है! संसार कितना बदल गया है!! हिटलर ने संसार का मानचित्र बदलने का पूर्ण प्रयास कर लिया था। अब रूजवेल्ट और स्टालिन की बारी थी।

इस चित्र-संकलन का कार्य मुख्यतः अंगरेज कला-चित्र विक्रेता डूबीन के हाथ में रहा था। यह व्यक्ति करोड़पतियों और अरबपतियों को कला-चित्र बेचा करता था और उन्हें इस बात का आश्वासन देता रहता था कि वह प्राचीन कलाकारों के चित्रों का एकमात्र मर्मज्ञ है। वह रुपयेवालों को सम्मोहित कर लेने की कला में पटु था और प्राचीन चित्रों को फिर से रंग चुनकर अधिक तड़क भड़कदार

बना लेने में भी उसे किसी प्रकार की द्विधा का अनुभव न होता था। वह इस बात से भलीभांति अवगत था कि कला-चित्रों को अधिक आकर्षक बनाने का एक-मात्र उपाय यह है कि उनका मूल्य अत्यधिक ऊंचा रखा जाय। उसने एक एक चित्र के मूल्य के रूप में लाखों रुपये वसूले किये थे। इस व्यापार से उसने इतना रुपया कमा लिया था कि उसे लार्ड की पदवी मिल गयी थी। हैन्सी ने लैनी से कहा, "शायद तुम भी किसी दिन लार्ड बन जाओगे!" इस मजाक पर तीनों मित्र जी खोलकर हंसे!

चित्रशाला में भांति भांति के चित्र थे और उनमें से कुछ सचमुच बड़े भव्य थे। उन्हें देखते हुए दर्शक ऐतिहासिक अतीत के स्वर्णम पथों से गुजरने लगता था। मानव समाज और सभ्यता की रहस्यमयी प्रगति उसकी आंखों के सामने साकार हो उठती थी। कल्पना और संवेदनशीलता के मानों पंख लग जाते थे। अपने व्यक्तित्व के संकुचित दायरे से निकल कर वह प्राचीन युगों की सैर करने लगता था और अस्तित्व के रहस्य पर विचार करता हुआ विस्मयविमुग्ध हो जाता था।

लैनी पिछले पचीस वर्षों से एक कला-मर्मज्ञ के रूप में जीविकोपार्जन कर रहा था। वह इन महान चित्रकारों की कला तथा जीवन गाथा से भलीभांति अवगत था। वह उनके वस्त्रों, घरों, दैनन्दिन जीवन यात्रा आदि प्रत्येक बात से परिचित था। वह उनके संरक्षकों तथा अभिभावकों को भी जानता था। कला के सम्बन्ध में भी लैनी की अभिज्ञता कम न थी। वह रेखाओं के संतुलन तथा रंग के चमत्कार के मर्म को समझता था और उसकी दृष्टि से यह बात भी न छिपी रहती थी कि आधुनिक तूलिका ने किन किन स्थानों पर मरम्मत का काम किया है। यह सब इतना आश्चर्यजनक प्रतीत होता था कि तीनों ने यह सलाह की एक दिन वाशिंग्टन में और रहा जाय और चित्रशाला को भलीभांति देखा जाय।

(३)

इसके बाद पोटोमाक नदी के विशाल पुल को पार करके वे लोग वर्जीनिया के मार्ग से दक्षिण की ओर बढ़े। अमेरिका के गृह-युद्ध के कुछ चिन्ह अभी तक

इस अंचल में शेष रह गये थे। अभी तक यह प्रदेश वीरान सा पड़ा हुआ था। खेत ऊसर से प्रतीत होते थे और घर भी बिना पुते हुए दिखाई देते थे। किन्तु लैनी की गाड़ी शीघ्र ही इस स्थान को पार करके आगे बढ़ गयी। चारों ओर फैली हुई सुनहली धूप बड़ी सुन्दर प्रतीत हो रही थी।

जिस सड़क पर लैनी की गाड़ी जा रही थी उसका नाम था 'यू० एस १'। वह आस पास के प्रदेश की भांति उदास न थी। लैनी एक कुशल मोटर चालक था और वह इस सुन्दर प्रशस्त पथ पर मोटर चलाते हुए बड़े आनन्द का अनुभव कर रहा था। वह गाड़ी चलाते समय सदा सतर्क रहता था। सामने की मोटरों पर तो वह कड़ी दृष्टि रखता ही था पीछे से आनेवाली मोटरों की परछाईं भी उसकी गाड़ी में लगे हुए छोटे से शीशे में परिलक्षित होती रहती थी। यदि पीछे से आनेवाली कोई गाड़ी लैनी से आगे निकल जाने की धुन में बेतहाशा भागती हुई आती तो लैनी तुरन्त अपनी गाड़ी को एक किनारे करके उसे आगे निकल जाने देता। कारण यह है कि उसकी गाड़ी में बहुमूल्य सामग्री थी जिसमें हैन्सी की वायलिन भी सम्मिलित थी।

उन्हों ने रात सवान्ना नामक स्थान में काटी और फिर दूसरे दिन प्रातःकाल आस पास की आकर्षक दृश्यावली का आनन्द लेते हुए आगे बढ़े। फ्लोरीडा पहुंच कर उन्होंने सेण्ट अगस्टाइन नामक नगर में प्रवेश किया। यह सबसे अधिक प्राचीन अमरीकी नगर समझा जाता है। आज भी यहां ऐसी घोड़ा गाड़ियां चलती हैं जो उस जमाने की प्रतीत होती हैं जब नीग्रो दास सहजप्राप्य थे।

यहां फ्लोरीडा में अमरीकी करोड़पति अपने धन का आनन्द लेने के लिये आया करते थे। किसी सूझ बूझ वाले व्यक्ति ने सारे पूर्वी तट के किनारे किनारे रेलवे लाइन बिछा दी थी और जहां तहां शानदार होटलों की स्थापना कर दी थी। इस रेलवे लाइन से छिटक कर एक रास्ता 'की वेस्ट' नामक स्थान की ओर गया था जहां छोटे छोटे द्वीपों का बड़ा आकर्षक समूह था। लैनी की सड़क रेलवे लाइन तथा रेतीले समुद्र तट के समानान्तर चल रही थी। यहीं पर एक सुन्दर चिड़ियाघर तथा घण्टाघर भी था। शीतोष्ण जलवायु में पाए जाने वाले पक्षियों का यहां बड़ा सुन्दर संग्रह किया गया था। कांच के घरों में बन्द समुद्री

मछलियां तथा अन्य जीव जन्तु भी बड़े आकर्षक प्रतीत होते थे। ऊपर से देखने पर नीचे का सारा दृश्य साफ साफ दिखाई देता था। जल इतना निर्मल प्रतीत होता था कि देखनेवाले के मन में स्वयं तैरने की इच्छा जाग उठती थी।

लैनी अपनी पत्नी तथा हैन्सी के साथ मिआमी नामक नगर की ओर चला। यहां बड़े बड़े जुआड़खाने थे किन्तु लैनी इन्हें देखने के लिये न गया। वह पश्चिम की ओर जानेवाली एक सड़क के सहारे सहारे वेस्ट कोस्ट नामक स्थान पर पहुँचा। यहां बड़ी सुन्दर मछलियां मिलती हैं। इसके अतिरिक्त यह स्थान सारे अमेरिका का आमोद उद्यान हो गया है। शीत ऋतु में यहां चारों ओर हरीतिमा फैली रहती है। भीतरी प्रदेश में बहुत बड़ी तादाद में पशुपालन होता है। किन्तु पर्यटकों को इसकी कोई जानकारी नहीं मिल पाती। किन्तु चांदनी रात के समय यदि आप यहां वे जंगलों से गुजरेंगे तो आपको हिरन इधर से उधर दौड़ते हुए दिखाई देंगे।

सड़क उस समय काफी गर्म हो गयी थी और मोटर के चलने के कारण जो हवा लगती थी वह बड़ी सुहावनी प्रतीत होती थी। यहां लैनी के साथ किसी का परिचय न था। यदि लैनी कभी किसी व्यक्ति को पारिश्रमिक देकर कोई काम कराना चाहता था तो वह कर देता था और अपना आभार प्रकट कर देता था। इसके अतिरिक्त किसी को इन आगन्तुकों के सम्बन्ध में कोई कौतूहल न था। हैन्सी के लिये यह अनुभव बड़ा ही आनन्दपूर्ण था। वह इसके पूर्व यहां कभी न आया था। यहाँ के शान्त वातावरण में वह अपने मित्रों के साथ विभिन्न वार्त्ता करते हुए अपने व्यक्तिगत जीवन के सारे अवसाद-क्लेश को भूल सा गया था। हैन्सी यहां एक छद्म नाम के साथ यात्रा कर रहा था। होटल के रजिस्टरों में यात्रियों के नाम लिखने की प्रथा है। इसीलिये हैन्सी का एक नया नाम खोजना आवश्यक हो गया। नाम यहूदी ढङ्ग का होना आवश्यक था। सबने काफी सोच विचार कर उसका नाम रख दिया मोइशे जिनसेनहाइमर।

संध्या के समय हैन्सी अपने कमरे में चला जाता और दरवाजे बन्द करके वायलिन पर अभ्यास करने लगता। यह नितान्त रूप में आवश्यक था कि उसकी उंगलियों की चपलता नष्ट न होने पावे। ज्यों ही हैन्सी अपना वायलिन-वादन

शुरू करता पास पड़ोस में विद्युत की एक लहर सी फैल जाती। अमरीकी लोग रेडियो पर इस प्रकार का संगीत बहुधा सुना करते हैं किन्तु 'प्रत्यक्ष' जीवन्त रूप में इसे सुनने का सौभाग्य कम लोगों को ही प्राप्त होता है। उन्हें इस बात पर विश्वास करना कठिन हो जाता था कि मानवीय उंगलियां अपने अन्दर ऐसी स्फूर्ति पैदा कर सकती हैं। वे अपने कमरों से निकल कर हैन्सी के कमरे के आस पास खड़े हो जाते थे। कभी कभी वे स्तब्ध भाव से खड़े खड़े सारा संगीत सुन लेते और जब वह समाप्त हो जाता तब भी दबे हुए स्वर में ही बातें करते।

ये पड़ोसी अमेरिका के भिन्न भिन्न भागों से आये थे। वे विनयपूर्ण तथा सहानुभूतिशील प्रतीत होते थे। वे लैनी और लारेल से इस अनुपम संगीतज्ञ के सम्बन्ध में अपनी जिज्ञासा प्रकट करते रहते थे। लैनी बराबर यह कहा करता था कि मोइशे जिनसेनहायमर रूमानिया के अधिवासी हैं और वहां नाजियों के आतंक से घबरा कर अमेरिका चले आए थे। पड़ोसी लोग प्रश्न करते, "क्या वे प्रसिद्ध व्यक्ति हैं?" लैनी उत्तर देता कि योरोप में उनकी बड़ी ख्याति है। ये बातें असत्य थीं किन्तु इस असत्य से किसी का कोई अहित न होता था। इसके अतिरिक्त यह कहने में कोई लाभ न था कि यह अनुपम संगीतज्ञ वही कुविख्यात कम्युनिस्ट है जिस पर राष्ट्रद्रोह मामला चल रहा है और अपराधी प्रमाणित होने पर जिसे दस से बीस वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड मिल सकता है!!

(४)

फ्लोरीडा में सेण्ट पीटर्सबर्ग नामक एक सुन्दर नगर है। इस नगर के सम्बन्ध में यह दावा किया जाता है कि यहां बारहों मास सुनहली धूप खिली रहती है। अमेरिका के वयोवृद्ध लोग जो अपने जीवनकाल में काफी धन राशि बटोर लेते हैं वे अपने जीवन के अन्तिम दिन यहीं पर बिताने के लिये आते हैं। लैनी, लारेल और हैन्सी ने भी इस स्थान को चुना। पहले वे मछली पकड़ने के लिये गए। हैन्सी ने अपने जीवन में कभी मछली न पकड़ी थी। वह अपने हाथों को यथासम्भव रूप में विश्राम देता रहता था ताकि उसकी कोमल उंगलियां वायलिन के

लिए उपयुक्त बनी रहें। किन्तु एक दिन बड़े आश्चर्य की बात हुई। एक वृद्धा महिला ने उसे वर्जीनिया-नृत्य का निमंत्रण दिया और हैन्सी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। वह बाल-सुलभ आनन्द के साथ अपने हाथ पैर नचाते हुए घूमने लगा।

हैन्सी के लिये यह नृत्य सचमुच बड़ा आनन्दपूर्ण रहा था। इसके पूर्व भी वह कई प्रकार के ग्रामीण नृत्य देख चुका था किन्तु यह अनुभव सर्वथा नवीन था। जब नृत्य समाप्त हो गया तब वह उस ग्रामीण वायलिन-वादक के पास गया जिसने नृत्य के साथ अपनी वायलिन बजायी थी। हैन्सी ने कहा, "क्या मैं क्षण भर के लिए आपकी वायलिन ले सकता हूँ?" वह व्यक्ति कुछ चकरा सा गया किन्तु उसने अपनी वायलिन हैन्सी को दे दी। हैन्सी ने वायलिन लेकर अचानक उस पर एक ऐसी मादक स्वर लहरी छेड़ दी जिसके लिये वह विख्यात था। लोग और भौचक्के से हो गए; किसी के मुंह से एक शब्द भी न निकला। उनकी आंखें विस्मय से फैल गयीं और होठ लटक गए। किन्तु जब संगीत समाप्त हुआ उन्होंने विराट करतल ध्वनि से हैन्सी की अभ्यर्थना की।

किन्तु श्रोताओं का दल विशुद्ध अमरीकी था। उसने 'शाबाश' कह कर अपनी प्रशंसा व्यक्त न की बल्कि 'एक बार फिर' का अनुरोध किया। किन्तु हैन्सी ने वायलिन वापस लौटा दी और अपने प्राण बचाने के लिए वहां से भाग निकला। उसे भय था कि कहीं उसका यह वायलिन वादन समाचार पत्रों तक न पहुंच जाय!

लैनी का दल यहाँ से उत्तर पश्चिम की ओर चला। कुछ ही समय बाद लोहे का एक विशाल पुल मिला। पुल पर एक साइनबोर्ड टंगा हुआ था—'स्वान रिवर'। उसने यहां पहुंच कर अपनी गाड़ी रोक दी। हैन्सी और लारेल भी उतर आए। तीनों उस पुल पर टहलने लगे। यह वह नदी थी जिसे एक कवि की कविता ने अमर बना दिया था। कवि ने इस नदी के नाम के उच्चारण में भूल कर दी थी। इसीलिए पाठकों को यह नाम शब्द कोषों में नहीं मिलता और वे समझ लेते हैं कि यह कोई कल्पित नाम है। किन्तु वस्तुतः कवि की यह नदी कल्पित नहीं बल्कि वास्तविक थी। कविता में कान्गो के घने जङ्गलों की एक हल्की

सी झलक मिलती है। कारण यह है कि कवि ने जिस समय ये पंक्तियां लिखी थीं उस समय भी इस नदी का जल काला था और इसके सँकरे पाट के दोनों ओर काले काले वृक्षों की एक घनी कतार थी। यह नदी ज्यार्जिया के दलदल से निकली थी और प्रायः दो सौ मील की यात्रा करके यहां पहुंची थी। एकबार तो सबकी इच्छा हुई कि नाव पर बैठ कर इस नदी की सैर की जाय किन्तु दूसरे ही क्षण उन्हे याद आ गया कि यह मलेरिया का मौसम है। फलस्वरूप वे वापस आकर अपनी गाड़ी में बैठ गये। लैनी गाड़ी चलाने लगा और हैन्सी तथा लारेल एक गीत गाने लगे।

नदी का तट पश्चिम की ओर मुड़ गया था। उसी के किनारे किनारे बढ़ते हुए वे पेन्साकोला नामक स्थान में पहुचे जहां वायुयानों का बहुत बड़ा अड्डा था। किन्तु वे इस अड्डे का निरीक्षण करने के लिये न गये क्यों कि उनके साथ एक कुविख्यात कम्युनिस्ट अभियुक्त था! वे मोकाइल नामक एक छोटे से दक्षिणी नगर में आये। यह एक अत्यन्त प्राचीन नगर था। जिसकी सड़कों के दोनों किनारों पर सफेद मकानों के छज्जों तथा स्तूपों की आकर्षक कतारें थीं। अधिकांश मकानों के साथ बगीचे थे जिनकी चाहारदीवारियों पर माधवी लता फैली हुई थी। इसके बाद मिसीसिपी साउण्ड नामक नगर मिला। बिलाक्सी नामक नगर में रुक कर उन्हो ने एक छोटे से भोजनालय में भोजन किया। यह भोजन भी विचित्र था। इसी प्रकार का भोजन लैनी ने एकबार मार्सेलीज में किया था। इसमें समुद्र के सभी खाद्य जीवों का विचित्र सम्मिश्रण था। उसके अतिरिक्त आलू टमाटर आदि का पुट भी दिया गया था। एक कटोरा खाने के बाद दिन भर के लिए निश्चिन्तता।

वे न्यू आर्लियन्स की ओर न गये बल्कि लुईसियाना की ओर बढ़ गये। एक समय यहां हुएलान्ग नामक व्यक्ति का राज्य रहा था। इस व्यक्ति ने अपनी प्रजा को यह आश्वासन दिया था कि वह प्रत्येक व्यक्ति को राजा बना देगा। किन्तु इन छोटे छोटे राजाओं पर उसने आपको एक सम्राट के रूप में अधिष्ठित कर लिया था। उसने जिस प्रकार की शासन व्यवस्था की स्थापना की थी वह हिटलर की शासन व्यवस्था से अधिक भिन्न न थी। किन्तु हिटलर की भांति उसने युद्ध न

किया था और अपनी कीर्त्ति की रक्षा के लिये अधिक सुन्दर उपायों का आश्रय लिया था। उसने बड़ी सुन्दर सुन्दर सड़कों का निर्माण कराया, लोहे के पुलों का निर्माण कराया और इन सब पर अपना नाम अंकित करा दिया। लैनी के दल ने रात यहीं काटी। दूसरे दिन एक जहाज द्वारा उन्होंने विशालकाय मिसी-सिपी नदी पार की। इसके बाद पुनः मोटर यात्रा शुरू हुई। लाल नदी के किनारे किनारे घने कोहरे के अन्दर से बढ़ते हुए वे टेक्सास पहुंचे।

इसके बाद लगभग पांच सौ मील का लम्बा और सीधा पथ चला गया था। पहले रास्ते के दोनों ओर खेत दिखाई पड़े, इसके बाद तैलकूप। तैलकूपों वाला अंचल धूल धक्कड़ से काला हो गया था और व्यापारिक यातायात के कारण सड़कें अवरुद्ध सी हो गई थीं। यह क्षेत्र पार करने के बाद विशाल चरागाह मिले - सैकड़ों मील फैले हुए घास के जंगल। यहां एक विशेष प्रकार के वृक्षों की ऐसी सुव्यवस्थित कतार दिखाई पड़ी कि ऐसा प्रतीत होता था कि यह प्रकृतिक नहीं बल्कि मानव हाथों द्वारा सजाया संवारा गया कोई उद्यान है।

एक ही प्रकार की दृश्यावली में मोटर चलाते रहना मन को उबा देने वाला कार्य होता है। किन्तु लैनी थका नहीं, वह उसी प्रकार सोत्साह गाड़ी चलाता रहा। हैन्सी पिछली सीट पर बैठा हुआ मन ही मन अपनी संगीत रचना करता रहा और लारेल वह डाक पढ़ने में लगी रही जो उसे डल्लास नगर में मिल गयी थी। वह प्रतिदिन घर को टेलीफोन करके इस बात का पता लगा लेती थी कि उसके बच्चे सकुशल हैं और शान्ति रेडियो का काम पूर्वकल्पित योजना के अनुसार चल रहा है"।

(६)

धीरे धीरे वे लोग 'अलपासो' नामक पहाड़ी दर्रे के पास पहुँचे। उनके मन में यह इच्छा उठी कि लगे हाथों मेक्सिको की एक झलक देख ली जाय। किन्तु एफ० बी० आई के विल्वर पोस्ट ने चलते समय उन्हे यह चेतावनी दे दी थी कि हैन्सी एक अभियुक्त है और इसलिये उसे अमेरिका की सीमाओं के बाहर न जाना चाहिये। फलस्वरूप वे रिओ ग्रान्डे नदी को पार करके फिर उत्तर की ओर चलने लगे। पहाड़ी दर्रे से होता हुआ यह पथ आश्चर्यजनक दृश्यावली के बीच से गया

था। दोनों ओर सफेद चट्टानें खड़ी थीं जो बर्फ की प्रतीत होती थीं। किन्तु वस्तुतः यह सफेद रंग का पत्थर ही था।

जिस समय वे कैलीफोर्निया के विशाल रेगिस्तान के पास पहुँचे रात हो गयी थी। चारों ओर दूर दूर तक खजूर के पेड़ों के बगीचे फैले हुए थे जिनमें पके हुए खजूर लटक रहे थे। दूसरी ओर खरबूजों के बड़े बड़े खेत फैले हुए थे। किन्तु रात्रि के अन्धकार में ये स्पष्ट रूप में दिखाई न देते थे। यह प्रसिद्ध 'कोचशेला' घाटी थी। सड़क लगभग चालीस मील तक एकदम सीधी चली गयी थी; इसके बाद तीन मील तक पहाड़ों के वक्ष को काटती हुई गयी थी। सड़क के एक ओर व्यापारिक ट्रकों का एक लम्बा कारवां चल रहा था। इसे खींचने के लिये दो तीन डीजेल एंजिन आगे लगे हुए थे और दो तीन उसे पीछे से ढकेलने के लिये। इन एंजिनों की बदौलत कारवां पहाड़ की खड़ी चढ़ाई पार कर रहा था। लैनी की गाड़ी कारवाँ को पार करके पहले उस स्थान पर पहुंची जहां मकोई के सुन्दर बगीचे दूर दूर तक फैले हुए थे। इसके बाद लगभग सौ मील तक नारंगी के बगीचे फैले हुए थे।

(७)

इस प्रकार घूमते फिरते वे उस स्वप्न-नगरी में पहुंचे जो हालीउड के नाम से प्रसिद्ध है। यहां उतनी ही तारिकाओं का निवास है जितनी कि आकाश-गङ्गा में दिखाई पड़ती हैं। लैनी और लारेल कुछ समय तक यहां रुक कर अपने कुछ पुराने मित्रों से मिलना चाहते थे। किन्तु हैन्सी का साथ रहना एक खतरनाक बात थी। हालीउड में उसके भी कई मित्र रहते थे और इस बात की आशंका थी कि कहीं उसे कोई परिचित व्यक्ति देख न ले और यह संवाद समाचार पत्रों तक न पहुंच जाय। इसीलिये हैन्सी ने यह प्रस्ताव किया कि वह अपने होटल में रह जायगा। उसने कहा कि उसके मस्तिष्क में कुछ नयी स्वर लहरियों का उदय हुआ है और वह इन्हें लिपिबद्ध करने में अपना समय आनन्दपूर्वक काट देगा। उसने बताया कि उसने इस यात्रा में ग्रामीण जीवन का जो रूप देखा है उससे वह अत्यधिक प्रभावित हुआ है और सम्भव है वह किसी दिन फ्लोरीडा के ग्रामीण संगीत के आधार पर किसी ऐसी भव्य स्वर-लहरी का आविष्कार कर ले

जो सारे संसार को चमत्कृत कर दे। इसके अतिरिक्त उसने कहा कि उसके पास समय काटने के लिये दो पुस्तकें तथा एक रेडियो सेट भी है और भूख लगने पर वह किसी अविख्यात दूकान में जाकर अपना पेट भर सकता है।

पिछली बार जब लारेल और लैनी यहां आये थे तब वे डे लायले अम्ब्रूस्टर नामक धनी और शौकीन परिवार के साथ ठहरे थे। इस परिवार ने आमोद-प्रमोद के सारे साधन इकट्ठे कर रखे थे और उनका घर स्वर्गलोक का मुख्य द्वार सा प्रतीत होता था। लैनी ने इस परिवार को टेलीफोन करके अपने आगमन की सूचना दी। उन लोगों ने लैनी तथा लारेल को आकर उनके साथ ठहरने का निमन्त्रण दिया। लैनी ने कहा कि वह मोटर पर भ्रमण के लिये निकला था और इसलिए अपने साथ अधिक कपड़े लत्ते न ला सका था। किन्तु डे लायले महोदय ने बात काटते हुए कहा कि उसे लौकिक शिष्टाचार के सम्बन्ध में परेशान होने की कोई आवश्यकता नहीं है। इसके अतिरिक्त आजकल साधारण कपड़े लत्ते अधिक रुचिकर समझे जाते हैं। कैलीफोर्निया में तो "अल्प वस्त्र" फैशन प्रचलित हो गयी है। पुरुष फ्लैनेल के पायजामें तथा हल्के ब्लाउज पहनने लगे हैं जिन पर बड़े बड़े फूल कढ़े रहते हैं। हैटों का तो अब कोई रिवाज ही नहीं रह गया। फलस्वरूप लैनी और लारेल ने शीघ्रतापूर्वक अपने कपड़े लत्ते एक संदूक में रख लिये और डे लायले परिवार की ओर जाने के लिये तयार होने लगे।

थोड़ी ही देर में मार्ग का अतिक्रम करके वे एक आलीशान मकान के सामने पहुंचे। यह मकान प्राचीन इटालियन शिल्पकला के अनुसार एक पहाड़ के किनारे पर बनाया गया था। इसमें बड़े बड़े बीस कमरे थे। लैनी का डे लायले एम्ब्रूस्टर के साथ प्रथम परिचय नीस के पास कैलीफोर्नी नामक स्थान में इसी प्रकार के आलीशान मकान में हुआ था। उस समय डे लायले महोदय अनाप शनाप रूप में अपना धन बहा कर संस्कृति और सुरुचि नामक वस्तु का संग्रह कर रहे थे। वे बड़े बड़े कलाकारों और प्रतिभाशाली व्यक्तियों को अपने आलीशान भोजों में आमंत्रित करते रहते थे। अन्त में एक दिन उन्हे इस बात का अनुभव हुआ कि वास्तविक प्रतिभाशाली व्यक्ति तो हालीउड में रहते हैं। बस, उसी दिन वे अपनी विशाल धनराशि लेकर हालीउड चले आये।

गृहस्वामिनी का नाम था यूजेनिया किन्तु संक्षेप में उन्हे जेनी के नाम से पुकारा जाता था। वे लैनी और लारेल की अभ्यर्थना के लिए अपने दोनों हाथ बढ़ाये हुए आयीं। "अरे, तुम लोग कहां से टपक पड़े?" उन्होंने प्रसन्नता के स्वर में कहा। इसके बाद उन्होंने प्रेम से लारेल के दोनों गालों को चूमा। उन्हों ने लैनी को भी झकझोर कर अपना वात्सत्य प्रकट किया। वे लारेल और लैनी को उस समय से जानती थीं जब वे दोनों बच्चे थे।

वे उत्साह के अतिरेक में कुछ देर तक इधर से उधर दौड़ती रहीं। इसके बाद उन्होंने लैनी और लारेल से प्रश्न किया, "क्या तुम लोगों ने 'रैबिट रेस' पढ़ा है?" लैनी और लारेल ने इसका कभी नाम तक न सुना था। गृहस्वामिनी ने अपना आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, "हे भगवान! तुमने इसका नाम भी नहीं सुना? कहां पड़े हुए थे तुम लोग?" इसके बाद उन्हों ने बताया कि 'रैबिट रेस' उस समय का सबसे अधिक लोकप्रिय उपन्यास है। 'बुक-गिल्ड' ने इसे खरीद लिया है और अभी तक इसकी प्रायः ढाई लाख प्रतियां बिक चुकी हैं। हालीउड ने इस उपन्यास से फिल्म बनाने का अधिकार डेढ़ लाख डालर देकर प्राप्त किया है और वे लोग इसके आधार पर एक विलक्षण फिल्म बनाने जा रहे हैं।

जेनी ने लैनी और लारेल को इस रहस्य से भी अवगत करा दिया कि यह विलक्षण उपन्यास रोज़ पिपिन नामक एक महिला ने लिखा है। यह महिला सान डियागो के पास ला मेसा नामक स्थान में रहती थी और उसके परिवार ने जीविकोपार्जन के लिये खरगोश पालने का पेशा अपना रखा था। रोज पिपिन ने इस व्यापार के विनोदपूर्ण पहलू को दृष्टिगत करते हुए उपरोक्त उपन्यास लिखा है और उसमें व्यंग का ऐसा प्रखर स्रोत है कि पढ़ने वाला हंसते हंसते लोट पोट हो जाता है।

(८)

लैनी और लारेल जेनी के भव्य बैठकखाने में पहुँचे। लैनी जब प्रथम बार यहां आया था तब उसे यहां पर हालीउड के प्रायः पचास विख्यात व्यक्तियों के दर्शन हुए थे। किन्तु इस समय यहां पर जेनी के अतिरिक्त केवल दो व्यक्ति ही उपस्थित थे। एक तो स्वयं डे लायले महोदय थे। दूसरी थी लगभग तीस वर्ष

की आयु की एक लम्बी, हृष्ट पुष्ट महिला जिसे देखते ही यह प्रतीत होता था कि वह घर के बाहर खुले मैदान में घूमने फिरने वाली स्त्री है। धूप और वायु के कारण उसके शरीर का रंग ताम्बे का सा हो गया था। उसके हाथ देखने पर भी मन में यह भाव उठता था कि ये पसीने की कमाई करने वाले हाथ हैं। उसकी आंखों में सदा विनोद का भाव छलका करता था। और जिस समय वह अपने किसी मजाक पर प्रसन्न होकर स्वयं हंसने लगती थी उसका अंग प्रत्यंग हिलता हुआ प्रतीत होता था।

'ला मेसा' के ग्रामीण अंचल में ही उसका सारा जीवन बीता था। खरगोश पाल कर किसी प्रकार जीवन यात्रा चलाते रहना ही उसका उद्देश्य था। उसे खरगोशों की आदतों तथा प्रवृत्तियों की विलक्षण जानकारी हो गई थी। उसकी पुस्तक के एक अध्याय का शीर्षक ही था "खरगोशों की आदतें"। इसमें लेखिका ने खरगोशों की तीन आदतें बतायी थीं—प्रथम, वे अपना दाना चुग लेते हैं, द्वितीय, वे सहवास द्वारा संतानें पैदा करते हैं और तृतीय, वे गंदगी फैलाते हैं!

लारेल को संबोधित करते हुए उसने कहा, "जेनी ने मुझे आप लोगों के आश्चर्यजनक जीवन के सम्बन्ध में सब कुछ बता दिया है। मुझे मालूम है कि आप कैसा आश्चर्यजनक जीवन बिता रही हैं। किन्तु मैं दक्षिणी कैलीफोर्निया के बाहर कभी नहीं गयी। वाह्य संसार के प्रति मेरी अभिज्ञता अत्यन्त सीमित है। मैंने आपके शान्ति रेडियो का नाम तक न सुना था।"

"और मैंने आपकी पुस्तक का नाम न सुना था। इस प्रकार हम दोनों बराबर हैं।" लारेल ने उत्तर दिया।

"आपकी स्पष्टवादिता मुझे बड़ी अच्छी लगी। बहुधा लोग मेरी पुस्तक को पढ़ते नहीं किन्तु मुझसे कह देते हैं कि उसे उन्होंने पढ़ लिया है। जो लोग उसे पढ़ लेते हैं वे भी वही घिसी घिसायी बातें दोहरा देते हैं जिन्हें सुनते सुनते मैं ऊब चुकी हूँ।"

"इन्हे हालीउड पसन्द नहीं है।" डे लायले ने बीच में बात काटते हुए कह दिया। डे लायले के लिए हालीउड एक आदर्श स्थान था। लैनी और लारेल ने उन्हे जब पिछली बार देखा था तब की तुलना में उनकी कमर का आयतन लग

भग दो इञ्च बढ़ गया था और गाल भी पहले की अपेक्षा अधिक सुर्ख हो गये थे। वे मन ही मन अपने इस जीवन से बड़े संतुष्ट थे। हालीउड के प्रत्येक महत्वपूर्ण व्यक्ति का टेलीफोन नम्बर उनकी डायरी में था और जब वे इन महत्वपूर्ण व्यक्तियों को भोज पर आमंत्रित करते थे तो वे साभार आ जाते थे। प्रत्येक महत्वपूर्ण व्यक्ति यह आशा लेकर आता था कि भोज में अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों के साथ उसका परिचय हो जायगा।

"आपको हालीउड क्यों पसन्द नहीं है, मिस पिपिन?" लारेल ने प्रश्न किया।

"अपने गांव में रहते हुए मेरे मन में एक पुस्तक लिखने की इच्छा उत्पन्न हुई तो मैंने एक पुरानी पेन्सिल लेकर रद्दी कागज के टुकड़ों पर लिखना शुरू कर दिया था। मैंने पुस्तक एक मजाक के ही रूप में लिखी थी। बाद में मुझे इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ कि जिन लोगों ने इसे देखा उन्होने भी इसे एक बहुत बड़ा मजाक समझा। अब उन लोगों ने हालीउड के लिए मेरी इस पुस्तक को खरीद लिया है और मुझे यहां घसीट लाए हैं। वे मुझे पाँच हजार डालर प्रति सप्ताह दे रहे हैं और यह चाहते हैं कि मैं एक सिनेमा-लेखिका होने का स्वांग रचूं। मेरे अतिरिक्त तीन अन्य लेखक भी हैं और ये बेचारे भी किसी प्रकार अपनी रचनाओं को फिल्मों में घुसा देने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं ताकि वे अपने वेतनों को सार्थक प्रमाणित कर सकें। इसके अतिरिक्त डायरेक्टर, प्रोड्यूसर, सुपरवाइजर और भी न जाने कितने लोग हैं। ये लोग फिल्म के प्रत्येक दृश्य के सम्बन्ध में भांति भांति से विचार विनिमय करते रहते हैं। किन्तु इनकी परख की कसौटी बड़ी विचित्र है। ये सदा इस दृष्टिकोण से विचार करते हैं कि अतीत काल में कोई फिल्म सफल हो गयी तो उसी के आधार पर एक नयी फिल्म बना डाली जाय। वे केवल इस बात का ध्यान रखते हैं कि उस पुरानी फिल्म और नयी फिल्म के बीच समय का इतना अन्तर अवश्य आ जाना चाहिये कि लोग पुरानी फिल्म की बात एकदम भूल जायं। मेरी पुस्तक में केवल एक ही गुण है। वह यह कि वह अन्य पुस्तकों से भिन्न है और इस पुरतक के आधार पर जो फिल्म बनेगी उसका भी एक ही गुण होगा—वह यह कि वह अन्य फिल्मों की तुलना में भिन्न होगी।"

"क्या आप हालीउड के समाज का आनन्द ले रही हैं?" लारेल ने फिर प्रश्न किया।

"आनन्द? आप भी कैसी बात करती हैं, श्रीमती बड? आनन्द तो उन लोगों को मिलता है जो फिल्में देखने के लिये सिनेमा-गृहों में जाते हैं। फिल्म बनानेवालों के लिये आनन्द कहां है? उन्हे तो केवल परेशानी ही उठानी पड़ती है। अब मैंने विचार किया है कि घर लौट कर मैं एक दूसरी पुस्तक लिखूंगी। यह पुस्तक खरगोशों की आदतों के सम्बन्ध में नहीं बल्कि हालीउड वालों की आदतों के सम्बन्ध में होगी। हालीउड एक ऐसा स्थान है जहां के लोगों को देख कर ऐसा प्रतीत होता है मानों वे किसी डूबे हुए जहाज के यात्री हों और लकड़ी के किसी टुकड़े के साथ चिपके हुए अपने प्राणों के लिये लड़ रहे हों। प्रत्येक व्यक्ति को यह भय रहता है कि कहीं कोई दूसरा व्यक्ति उसे ढकेल कर उसके स्थान पर अपना अधिकार न जमा ले। सब लोग अपनी मान मर्यादा की चिन्ता में पागल रहते हैं और मान मर्यादा का एकमात्र मापदण्ड पैसा होता है। मैं आपको हालीउड की अनेकों मनोरञ्जक कहानियां सुना सकती हूं। किन्तु आप स्वयं एक लेखिका हैं और मुझे अपनी पुस्तक के लिये यह सामग्री बचाकर रखनी है।"

"श्रीमती पिपिन, आप को इस पुस्तक के लिये जो रुपया मिला है उसका आप क्या करेंगी?"

"उसे मैं यत्न पूर्वक सम्हाल कर रखे हुए हूँ। घर लौट कर मैं एक अच्छा सा खेत खरीदूंगी जिसमें ट्रैक्टर चल सके। एक घोड़ा खरीदने का विचार भी है। इसके अतिरिक्त मैं यह भी सोच रही हूँ कि मैं खेत में काम करने के लिये दो नौकर भी रख लूं।"

"और विवाह करके एक पति ले आने की बात आपको नहीं सूझी?"

"नहीं, खरगोश पालते पालते मैं इस ओर से काफी सतर्क हो गयी हूँ।"

(९)

इसके बाद हालीउड के लब्धप्रतिष्ठ व्यक्तियों, उनके वेतनों, उनके चित्रों आदि के सम्बन्ध में बातें होती रहीं। रोज़ ने बड़ी विचित्र विचित्र कहानियां सुनायीं। पहले उसने ये कहानियां सुनाने से इनकार कर दिया था किन्तु बाद में

वह इन्हे सुनाने का लोभ संवरण न कर पायी। लारेल को रोज़ का व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक प्रतीत हुआ। कुछ सोच कर उसने प्रश्न किया, "क्या आप संगीत में भी रुचि रखती हैं, श्रीमती पिपिन ?"

श्रीमती रोज़ पिपिन ने उत्तर दिया, "हमारे घर में एक रेडियो था किन्तु छोटे बच्चे रेडियो को लेकर घर में बड़ा उधम मचाते रहते थे। (ऐसा प्रतीत होता है कि खरगोशों की भांति श्रीमती पिपिन के घर में मानव वंश परम्परा में भी द्रुतगति से अभिवृद्धि हुई थी) इसीलिये जब मैंने अपनी एक कहानी एक पत्रिका को बेचकर कुछ पैसा प्राप्त कर लिया तो सबसे पहले मैंने नगर में जाकर कुछ अच्छे संगीत सुने। संगीत के सम्बन्ध में यही मेरा प्रथम वास्तविक अनुभव था।"

लारेल ने कहा, "बात यह है कि हम लोगों के साथ एक मित्र हैं जो बहुत ही सुन्दर वायलिन बजाते हैं। वे रूमानिया से भाग कर आनेवाले एक शरणार्थी हैं। आपने शायद उनका नाम न सुना होगा। उनका नाम है मोइशे जिनसेनहायमर।"

रोज़ ने यह नाम कभी न सुना था। किन्तु जब लारेल ने उससे यह प्रस्ताव किया कि वह इस प्रतिभाशाली व्यक्ति के साथ मिलना चाहे तो मिल सकती है तब उसने प्रसन्नता प्रकट करते हुए स्वीकृति दी। लारेल ने कहा, "उनका संगीत सुनना एक आश्चर्यजनक अनुभव होता है।" रोज़ ने उत्तर दिया, "श्रीमती बड, मुझे इस सौभाग्य से वंचित मत करिये।" उसने लारेल को अपने टेलीफोन का नम्बर दे दिया यद्यपि हालीउड के लब्धप्रतिष्ठ व्यक्ति किसी को जल्दी अपना टेलीफोन नम्बर नहीं बताते।

घर लौटते समय लैनी ने लारेल से प्रश्न किया, "उस स्त्री के सम्बन्ध में तुम्हारी क्या राय है ?"

"मैं समझती हूँ कि वह एक समझदार स्त्री है और उसके साथ समय कट सकता है। किन्तु मुझे संदेह है कि वह हैन्सी को आकर्षित कर सकेगी ?"

"क्यों ?"

"उसमें स्त्रीसुलभ कोमलता नहीं है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक प्रश्न पर उसके निश्चित विचार हैं।"

"बेस भी प्रत्येक प्रश्न पर निश्चित विचार रखती थी।"

"इसीलिये तो वह सम्बन्ध छिन्न भिन्न हो रहा है।"

"हैन्सी भावुक व्यक्ति है। उसकी दृष्टि सदा आकाश की ओर रहती है। इसीलिये उसे एक ऐसी स्त्री की आवश्यकता है जिसके पैर धरती पर जमे रहें।"

"इस मामले में तो यह स्त्री उपयुक्त है। क्या तुमने उसके पैरों की चौड़ाई को नहीं लक्ष्य किया?"

"देखा था। किन्तु वे बहुत असाधारण न थे। जो भी हो, उसके जूते ढङ्ग के थे। तुम्हें इन बातों को लेकर अपना दृष्टिकोण संकुचित न बना लेना चाहिये। इसके अतिरिक्त पति और पत्नी में कुछ विभिन्नता रहनी चाहिये अन्यथा विवाह से किसी के व्यक्तित्व में कोई अभिवृद्धि नहीं हो पाती।"

"भिन्नता ठीक है किन्तु आवश्यकता से अधिक मात्रा में नहीं। किन्तु वे तो बाद की बातें हैं। पहले दोनों को एक दूसरे से मिला तो दिया जाय।"

"लैनी और लारेल अपने साथ "रैबिट रेस" की एक प्रति भी ले गए थे। यह प्रति डे लायले ने उपहार के रूप में भेंट की थी और लेखिका ने उस पर अपना हस्ताक्षर किया था। संध्या के समय उन्होंने पुस्तक का कुछ भाग पढ़ा। हर जिनसेनहायमर महोदय जो एक दूसरी होटल में ठहरे हुए थे भी आ गए और उन्होंने इसे सुना। तीनों जन हंसते हंसते लोट पोट हो गए क्यों कि पुस्तक सचमुच बड़ी मनोरञ्जक थी। खरगोशों का तो बहाना मात्र था; वस्तुतः यह पुस्तक मानव समाज पर एक व्यंग के रूप में लिखी गयी थी। खरगोशों में अपनी वंश परम्परा को अन्तहीन रूपमें बढ़ाते रहने की जो प्रवृत्ति है वह मनुष्यों में भी पायी जाती है और दोनों ही क्षेत्रों में वह प्रायः समान रूप में खतरनाक है। यदि इस प्रवृत्ति को रोकने का प्रयत्न न किया जाय तो कदाचित पृथ्वी पर खड़े होनेके लिये भी स्थान न रह जाय। इसके अतिरिक्त खरगोशों की भांति मनुष्य भी दिन भर खाते रहते हैं और इसका भयानक परिणाम होता है। पुस्तकमें

एक किसान परिवार को कथानक का केन्द्र बना कर उसके पड़ोसियों की रीति नीति, आचार विचार, आशाओं इच्छाओं तथा अभाव अभियोगों का सजीव वर्णन किया गया था। व्यंग का एक गहरा पुट था किन्तु वह व्यंग ठोस था, काल्पनिक नहीं। इसीलिये वह हालीउड वालों को इतना अच्छा लगा था।

"श्रीमती पिपिन आएंगी तो मैं उनके लिये वायलिन अवश्य बजाऊंगा।" हैन्सी ने कहा। "किन्तु यह नाम कितना विचित्र है!"

"उसके साथ विवाह कर लोगे तो यह नाम और भी विचित्र हो जाएगा। श्रीमती रोज पिपिन रोबिन!!—तुम्हे जाकर एक बगीचे में जीवन बिताना पड़ेगा।" लैनी ने विनोद के स्वर में कहा।

"हे भगवान! पहले मुझे अपनी पुरानी पत्नी से पिण्ड छुड़ा लेने दो। इसके बाद नयी की चर्चा करना। बेस के सम्बन्ध में अब भी मेरा हृदय कभी कभी कराह सा उठता है।"

लारेल और लैनी ने श्रीमती पिपिन को टेलीफोन किया और कहा कि हालीउड में वे लोग कब तक ठहरेंगे इसका कोई ठीक नहीं है। इसलिये वे मोइशे जिनसेनहायमर से मिलने के लिए कल सबेरे ही क्यों नहीं आ जातीं? पिपिन ने कहा कि कल सबेरे स्टूडियो में उसे बुलाया गया है किन्तु वस्तुतः वहां उसकी उपस्थिति आवश्यक नहीं है। इसके अतिरिक्त स्टूडियो का काम ग्यारह बजे के पहले शुरू भी नहीं होता। उसने आश्वासन दिया कि वह प्रातःकाल नौ बजे आ जायगी।

(१०)

रोज़ पिपिन का आगमन उसकी पुस्तक की किसी भी घटना से कम बेतुका न था। हैन्सी अपनी वायलिन ले आया था और लैनी तथा लारेल को एक नयी तान सुना रहा था। इसी समय दरवाजे को किसी ने खटखटाया। दरवाजा खोलकर लैनी ने देखा कि श्रीमती पिपिन अपने सुदीर्घ पैरों को सीढ़ियों पर दृढ़तापूर्वक जमाए हुए खड़ी हैं। लैनी ने उन्हें भीतर लाकर हैन्सी के साथ परिचय कराते हुए कहा, "ये हैं हमारे मित्र मोइशे जिनसेनहायमर।"

रोज़ क्षण भर तक विस्मय-विस्फारित नेत्रों से हैन्सी को देखती रही, इसके बाद बोली, "किन्तु—आपका संगीत तो मैं सानडायगो में सुन चुकी हूं।'

हैन्सी इसका क्या उत्तर देता ? वह कोई निश्चय न कर पाने के कारण चुप चाप खड़ा रहा।

"और आप—आप तो हैन्सी रोबिन हैं!" रोज़ ने दृढ़ और स्पष्ट स्वर में कहा।

एक विचित्र परिस्थिति की सृष्टि हो गयी थी। किन्तु लैनी किंकर्त्तव्यविमूढ़ न हुआ। वह अपने जीवन में इस प्रकार की कितनी ही परिस्थितियों का सामना कर चुका था। अपनी प्रत्युत्पन्न मति का सहारा लेते हुए उसने कहा, "हैन्सी रोबिन इनका पेशेवर नाम है।"

"अब समझी।—किन्तु मैंने समाचार पत्रों में पढ़ा था कि—।"

"हां, ये जमानत पर छूट गए हैं।" लैनी ने स्थिति को सम्हालते हुए कहा। "हम लोग इन्हें उस जंजाल से छुड़ाने की चेष्टा कर रहे हैं।"

"किन्तु—"रोज़ पिपिन कुछ देर तक विचारों में उलझी हुई सी खड़ी रही। इसके बाद बोली, "किन्तु आपने मुझे यह सब पहले ही क्यों न बता दिया था, मिस्टर बड ?"

"मैं न जानता था कि आपको इन बातों में कोई दिलचस्पी हो सकती है।"

"कम्युनिस्ट जासूसों के सम्बन्ध में मेरे कुछ निश्चित विचार हैं, मिस्टर बड। मैं जानती हूं कि वे लोग हमारे देश का सर्वनाश करने पर तुले हुए हैं। मैं उनके अस्तित्व को सहन नहीं कर पाती।"

"शायद आप इस बात को जानती होंगी, मिस पिपिन, कि हमारे देश में यह परम्परा है कि जब तक कोई व्यक्ति न्यायालय की दृष्टि में अपराधी न प्रमाणित हो जाय तब तक उसे निर्दोष ही समझा जाता है।"

"आप क्या यह कहना चाहते हैं कि एफ० बी० आई ने बिना किसी आधार के इन्हें गिरफ्तार कर लिया है ?"

"मैं मामले के सम्बन्ध में कोई पूर्व-निर्णय नहीं करना चाहता किन्तु मैं

आपको विश्वास दिलाता हूँ कि हर जिनसेनहायमर एक आदर्शवादी व्यक्ति हैं और उनका जीवन दर्शन बहुत ऊंचा है।"

"मैं इन सारे सुन्दर शब्दों की छलना को समझती हूं, मिस्टर बड। मैं इन्हे सुनते सुनते ऊब चुकी हूँ। इस समय हमारे देश में कम्युनिस्टों तथा उनके एजेण्टों की एक बाढ़ सी आ गयी है। किन्तु यदि कोई व्यक्ति इनके विरुद्ध कुछ कहने का साहस करता है तो उसे तुरन्त लाल-विरोधी घोषित कर दिया जाता है। किन्तु मैंने यह निश्चय कर लिया है कि प्रत्येक अवसर पर मैं कम्युनिस्टों के विरुद्ध एकदम स्पष्ट भाषण करूंगी। मैं प्रतिक्रियावादिनी नहीं हूँ। मैं दरिद्रता के वातावरण में पली हूँ और अभाव की कटुता से भलीभांति अवगत हूं। मैं जानती हूँ कि हमारी समाज व्यवस्था में बहुत से संशोधनों की आवश्यकता है। मैं इन संशोधनों के लिये स्वयं प्रयत्न करने के लिये तयार हूं। किन्तु मैं चाहती हूं कि ये संशोधन देश की परम्पराओं के अनुसार ही हों। जनता में शिक्षा का प्रसार करके तथा राजनैतिक उपायों का अवलम्बन करके ही यह कार्य किया जा सकना है। मैं सारे संसार के सामने यह घोषणा करने के लिये तयार हूं और आप तथा मिस्टर जिनसेनहायमर के सामने भी मुझे अपने विचार प्रकट करने में किसी प्रकार का संकोच नहीं होता।"

मिस पिपिन के शब्दों में विश्वास का पुट था और श्रोताओंपर उसका प्रभाव पड़ना अनिवार्य था। लैनी बड़ी विचित्र स्थिति में पड़ गया था। मन ही मन उसे हंसी आ रही थी। किन्तु गम्भीर स्वर में ही उसने कहा :

"मिस पिपिन, कृपया बैठ जाइये और मेरी एक छोटी सी कहानी सुन लीजिए। कल संन्ध्या के समय हम लोग आपकी पुस्तक पढ़ रहे थे; बड़ा आनन्द आया था। उस पुस्तक से हमें आपके जीवनके सम्बन्ध में बहुत सी बातें ज्ञात हो गयी हैं। अब मैं आपको अपने जीवन की केवल एक बात सुनाना चाहता हूं। कृपया इसे सुन लीजिये।"

मिस पिपिन ने यह अनुरोध स्वीकार कर लिया और एक कुर्सी पर बैठ गयी। किन्तु उसके बैठने के ढंग से ऐसा प्रतीत होता था कि वह अनिच्छापूर्वक ही बैठी हुई है और किसी भी समय उठकर चली जा सकती है।

लैनी ने कहना शुरू किया, "युवावस्था में मुझे यह बात भी बड़ी आपत्ति जनक प्रतीत होती थी कि संसार के अधिकांश व्यक्ति दरिद्रता और अभाव में रहें। दरिद्र जनता का पक्ष लेकर मैं यदाकदा जो भाषण देता था उनसे मेरे पिता के रईस मित्र लोग चौंक उठते थे। इसके बाद मैंने देखा कि एडोल्फ हिटलर सारे योरोप को हड़पने के प्रयत्न में लगा हुआ है और उसका यह प्रयत्न किसी भी क्षण सफल हो सकता है। एक जर्मन मित्र की सहायता से मैंने हिटलर के साथ व्यक्तिगत परिचय प्राप्त कर लिया था। मैंने यह निश्चय किया कि मैं इस परिचय को अधिकाधिक रूप में घनिष्ट करूंगा और नाजी आन्दोलन की भीतरी बातें जानने का प्रयत्न करूंगा। मैंने यही किया भी। वर्षों तक मैं हिटलर के जासूस के रूप में काम करता रहा। मैंने गोएरिन्ग, गोबेल्स, हेस आदि अन्य उच्चपदस्थ नाजी नेताओं पर भी अपनी नजर रखी। किन्तु इस नाजुक कार्य में हाथ डालने के पहले मुझे संसार के सामने यह स्वांग रचना पड़ा कि मैं नाजी आन्दोलन का समर्थक हो गया हूं। मैंने अपने माता पिता तक को वास्तविक बात नहीं बतायी। एक दिन एक धनाढ्य महिला के घर पर मैं हिटलर के सम्बन्ध में अपने कृत्रिम मनोभाव व्यक्त कर रहा था। मैं यह कह रहा था कि योरोप का भविष्य हिटलर के हाथों में है और वही संसार में सुख-शान्ति का साम्राज्य स्थापित कर सकता है। उस महफिल में एक लेखिका भी बैठी हुई थी। वह कहानी लिखने का कार्य करती थी। ऊपर से देखने पर वह विशेष महत्वपूर्ण न प्रतीत होती थी किन्तु उसके हृदय में प्रचण्ड अग्नि सुलग रही थी। वह मेरी बातें सुनकर भड़क उठी और मुझे खरी खोटी सुनाने लगी। मन ही मन मुझे बड़ी हंसी आई किन्तु उस समय कोई उपाय न था। बाद में जब इस महिला को मेरे सम्बन्ध में वास्तविकता का पता चला तो उसके विचार बदलने में देरी न लगी। हम दोनों ने तुरन्त विवाह कर लिया। वह महिला इस समय आपके सामने बैठी हुई है। इस कहानी पर आपका क्या मत है, मिस पिपिन ?"

रोज़ पिपिन एकटक दृष्टि से लैनी की ओर देख रही थी। कुछ देर बाद उसने कहा, "मिस्टर बड, यदि मैं आपको गलत नहीं समझी, तो आप का संकेत

इस ओर है कि मिस्टर रोबिन—मिस्टर जिनसेनहायमर गुप्त रूप में हमारी सरकार की सहायता कर रहे हैं।"

लैनी ने गम्भीरता पूर्वक कहा, "मिस पिपिन, यदि इस प्रकार की कोई सम्भावना हो भी तो भी मैं उसकी ओर संकेत नहीं कर सकता क्योंकि यह एक भीषण बात होगी। यदि आपको इस प्रकार की कोई जानकारी कभी प्राप्त हो तो आप भूल से भी किसी अन्य व्यक्ति के सामने इसकी चर्चा मत करियेगा क्योंकि इससे सरकार का बहुत बड़ा अहित हो सकता है।"

"हां, मिस्टर बड किन्तु--"

"इसके अतिरिक्त आप को यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि कम्युनिस्टों के विरुद्ध किसी प्रकार की जानकारी रखनेवाले व्यक्ति को न्यायालय में उपस्थित होकर अपनी गवाही देने के लिए सदा तयार रहना पड़ता है और इस काम में जान की जोखिम रहती है। मैं आपको ऐसे बहुत से व्यक्तियों के नाम बता सकता हूं जो कम्युनिस्टों के विरुद्ध काम कर रहे थे और जिनकी हत्या कर दी गयी। ये हत्याएं किसी असभ्य बर्बर देश में न हुई थीं। ये यहीं इस सभ्य और सुसंस्कृत देश अमेरिका के अन्दर हुई थीं। किसी की हत्या गोली मार कर की गयी, किसी को पीट पीटकर मार डाला गया, किसी को खिड़की से फेंककर चकनाचूर कर दिया गया और कुछ रहस्यमय रूप में लापता हो गए। ऐसी अवस्था में आप स्वयं सोच सकती हैं कि यदि किसी व्यक्ति को कम्युनिस्टों के विरुद्ध महत्वपूर्ण गवाही देनी हो तो उसके लिये यही बात सबसे अधिक निरापद होगी कि वह तब तक के लिये अन्तर्धान हो जाय जब तक कि मामले की पैरवी शुरू नहीं होती। मुझे पूर्ण विश्वास है कि एक उत्तरदायित्वपूर्ण नागरिक के रूप में आपको अपने कर्तव्य का ज्ञान होगा और यदि इस प्रकार के किसी व्यक्ति के साथ आपकी आकस्मिक भेंट हो गयी तो आप चारों ओर इसकी चर्चा करती न घूमेंगी। और हालीउड जैसे स्थान में जहां खबरों का शिकार करनेवाले शिकारियों के दल के दल मड़राते रहते हैं वहां तो और भी सतर्कता की आवश्यकता है। आपका क्या विचार है मिस पिपिन?"

"मैं यह कहूंगी, मिस्टर बड, कि इस प्रकार के व्यक्ति को हालीउड में आना ही न चाहिए।"

"सम्भव है वह व्यक्ति अन्य किसी स्थान में छिपा हो और एक युवती लेखिका की पुस्तक पढ़कर उससे मिलने का लोभ न दबा पाने के कारण ही हालीउड में आया हो। यह भी सम्भव है कि इस व्यक्ति के हालीउड आने का कारण यह हो कि उक्त युवती महिला ने उसकी वायलिन सुनने की इच्छा प्रकट की हो।"

"मिस्टर बड, आपके साथ मेरा परिचय अधिक घनिष्ट नहीं है किन्तु—"

"यदि आप मेरे सम्बन्ध में अधिक जानना चाहती हैं तो मैं यह कहूँगा कि आप किसी भी शार्ट वेव रेडियो के पास जाकर बैठ जाइये और संन्ध्या के समय शान्ति प्रोग्राम सुन लीजिए। यह रेडियो प्रोग्राम मैंने तथा मेरी पत्नी ने शुरू किया था और इसका सारा भार हम दोनों पर ही रहा है। शान्ति प्रोग्राम सुनकर आप यह समझ जाएंगी कि हम लोग कम्युनिस्टों के चकमे में नहीं आए हैं और हमारी शान्ति उनकी तथाकथित शान्ति की कल्पना से भिन्न है। हम उनके आन्दोलन को भली भांति समझते हैं। हम लोग जिस विश्वशान्ति की कल्पना कर रहे हैं वह कम्युनिस्टों की विश्वशान्ति की कल्पना से भिन्न है। कम्युनिस्टों की शान्ति का अर्थ यह है कि हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें और एक विशालकाय दैत्य के मुंह का निवाला बन जायं। हमारी विश्वशान्ति का अर्थ एक अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय की स्थापना है जिसमें प्रत्येक राष्ट्र को स्थान प्राप्त होगा। यह सभी शान्ति प्रेमी राष्ट्रों का परिवार होगा। और जो राष्ट्र अन्य राष्ट्रों के मामलों में हस्तक्षेप करने का प्रयत्न करेगा उसे ईंट का जवाब पत्थर से मिलेगा। आपकी बातें सुनकर मेरी यह धारणा हो गयी है कि आप इन विचारों से अवश्य सहमत होंगी।"

"हां, मिस्टर बड। किन्तु मैं मिस्टर रोबिन के साथ अभी तक परिचय नहीं प्राप्त कर सकी हूं।"

"मिस्टर रोबिन के साथ परिचय प्राप्त करने का सबसे सुन्दर तरीका यह है कि उनका संगीत सुन लो। पांच वर्ष की आयु से ही वे अपने विचारों और व्यक्तित्व

को वायलिन द्वारा व्यक्त करने का अभ्यास करने लगे थे। लाखों व्यक्तियों ने इसी रूप में उनके साथ परिचय प्राप्त किया है। रूस, आस्ट्रेलिया,, अर्जेण्टाइन आदि विभिन्न देशों में उनके परिचित फैले हुए हैं। इस समय वे हम तीनों के लिए अपनी वायलिन बजाने के लिये प्रस्तुत हैं। उनका संगीत सुनना एक आनन्दपूर्ण अनुभव होता है। आपका क्या विचार है?"

(११)

इस प्रकार हैन्सी का वायलिन-वादन शुरू हुआ। उसने मन ही मन यह अनुमान लगा लिया था कि इस ग्रामीण लड़की को सरल और क्लिष्टताशून्य स्वर लहरी ही पसंद आएगी। फलस्वरूप उसने "कवाहीना" नामक सुन्दर और मधुर रागिनी छेड़ी। यह रागिनी उसे भी बड़ी प्रिय थी और इसे बजाते समय वह अपना सारा हृदय उड़ेल कर रख देता था। इस रागिनी की यह विशेषता थी कि इसे आप एक प्रेम-संगीत के रूप में भी ले सकते थे और एक पवित्र प्रार्थना के रूप में भी। शनैः शनैः स्वर लहरी बढ़ती हुई ऐसे भव्य चरमोत्कर्ष पर पहुँचती थी कि ऐसा प्रतीत होने लगता था मानो स्वर्ग के द्वार खुल गए हों!

हे वनदेव! सगति स्वच्छन्द
बरस पड़ता मधुमय आनन्द?
नदी के तट पर मादक तान
सुना रवि ने, भूला अवसान!
नये सपने ले लौटे संग!

हैन्सी रोबिन वायलिन बजाते समय किसी प्रकार का अभिनय न करता था। वह अपने हाथ और पैर न हिलाता था और अन्य अवयवों को भी पूर्णतया संयत रखता था। वह अपनी आखें बन्द करके सीधा खड़ा हो जाता था और इस बात की आशा करता था कि उसके श्रोतागण भी उसी प्रकार आंखें बन्द करके अपना सारा ध्यान संगीत पर केन्द्रित कर देंगे।

संगीत समाप्त होने पर किसी के मुंह से एक शब्द भी न निकला। कुछ देर रुक कर उसने एक नयी स्वर लहरी छेड़ी। यह स्वर लहरी भी ग्रामीण मनोभावों से स्पन्दित थी। हैन्सी जानता था कि वह अपना संगीत एक ग्रामीण महिला को

सुना रहा है। इसीलिए उसने जान बूझकर इस स्वर लहरी को चुना था। यह गीत समाप्त होनेपर लैनी ने कहा, "अब तुम अपनी कोई नयी करामात दिखाओ"। हैन्सी ने 'विमेक्सटेम्स' नामक रागिनी छेड़ी और श्रोताओं को चमत्कृत कर दिया। यह गीत एक ऐसे संगीत-विशारद का रचा हुआ था जो कि वायलिन के तारों की सारी शक्ति खींच कर भी पूर्ण रूप में अभिव्यक्त न हो पाता था। शनैः शनैः संगीत की गति बढ़ती जाती थी, स्वर और लय का चरमोत्कर्ष जटिल से जटिलतर होता जाता था। ऐसा प्रतीत होता था कि संगीत की आंधी सी आ गई हो।

हैन्सी ने वायलिन बजाना बन्द किया। श्रोतागण विस्मयविमुग्ध हो गये थे। उनका श्वास-प्रश्वास रुक गया था। किन्तु हैन्सी के चेहरे पर कोई विशेष उत्तेजना का भाव न था। उसे बचपन से ही अपने आपको संयत रखने का अभ्यास करना पड़ा था और अब यह बात उसके चरित्र में शुमार हो गयी थी। उसके मस्तिष्क में लाखों राग-रागिनी भरी हुई थीं किन्तु यह नानात्व उसे कभी क्षण भर के लिए भी असंयत न कर पाता था। वह जब जो रागिनी बजाना चाहता प्रायः निष्प्रयास रूप में ही बजाने लगता और उसकी सधी हुई उंगलियां पल भर के लिये भी धोखा न खातीं।

"वाह! बहुत ही आश्चर्यजनक है आप का संगीत!" मिस रोज पिपिन ने उत्साह के साथ कहा।

"आप के खरगोश की आंखें इससे भी अधिक सुन्दर हैं।" हैन्सी ने कौतुक के स्वर में उत्तर दिया।

रोज़ को लौटने की जल्दी न थी। उसने कहा स्टूडियोवाले उसकी विशेष चिन्ता नहीं करते। वे तो यही चाहते हैं कि मैं उनके काम के समय उपस्थित न रहूं तो अच्छा है। वे समझते हैं कि मैं अपने सुझाव देकर उन्हे व्यर्थ में परेशान करती रहती हूं। स्टूडियो में बैठ कर मक्खियाँ मारने की अपेक्षा नये मित्रों से परिचय प्राप्त करना कहीं अधिक महत्वपूर्ण कार्य है। इससे नये नये अनुभव प्राप्त होते हैं, नयी नयी बातों की अभिज्ञता होती है। हैन्सी रोबिन की ओर वह जिस दृष्टि से ताक रही थी उससे यह बात भलीभांति स्पष्ट हो जाती थी कि हैन्सी

ने उसे काफी आकर्षित किया है। उसकी दृष्टि में हैन्सी सम्पूर्ण गौरवशाली अतीत का प्रत्यक्ष प्रतीक था। अतीत की गौरवपूर्ण संस्कृति, गरिमा तथा आदर्श-प्रवणता—सब कुछ हैन्सी में एकाकार हो गया था। हैन्सी केवल पेरिस, बर्लिन और न्यूयार्क का व्यक्ति न था, वह प्राचीन पैलेस्टाइन तथा प्राचीन बाइबिल का प्राणी भी था। इसके अतिरिक्त वह ख्याति और प्रसिद्धि का जीता जागता स्वरूप था। वह हैन्सी से अनवरत रूप में भाँति भाँति के प्रश्न करने लगी। लैनी मन ही मन सोचने लगा कि क्या प्रेम की रहस्यमयी उंगलियां अभी से अपना ताना बाना बिनने लगीं ? या मिस रोज हैन्सी को अपने किसी नये उपन्यास का नायक मात्र बनाना चाहती है !

लैनी को इस बात पर आश्चर्य हो रहा था कि रोज़ स्पष्ट रूप में अपना मनोभाव क्यों नहीं व्यक्त कर रही क्योंकि वस्तुतः वह स्पष्टवादिनी तथा निर्भीक महिला थी और अपने व्यवहार में किसी प्रकार का छल कपट न रखती थी।

अन्त में रोज़ ने कहा, "मैं सच कहती हूं, आप लोगों ने मुझे बहुत ही प्रभावित किया है। मैं हालीउड में बहुत से व्यक्तियों से मिली हूं किन्तु वे सब वाह्य तड़क भड़क के पीछे पागल रहने वाले व्यक्ति हैं। वस्तुतः वे सुसंस्कृत नहीं हैं, वे केवल संस्कृति का अभिनय करते रहते हैं। मन ही मन वे एक दूसरे का गला काटने के लिए व्याकुल रहते हैं। किन्तु क्या आप लोग सचमुच मेरी जैसी ग्रामीण स्त्री के साथ अपना समय बिताने के लिए तयार हैं ?"

"अवश्य, अवश्य।" लारेल ने निस्संकोच उत्तर दिया।

"मैं जानती हूं कि मैं एक दृष्टिकोण से असाधारण हूं। कोई मुझे नायिका के रूप में चित्रित करते हुए एक उपन्यास लिखे तो वह सचमुच बड़ा रोचक हो। मैं ला मेसा और सान डियागो के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं भी नहीं गई और मैं किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति से परिचित नहीं हूँ। जब आप जैसे किसी व्यक्ति के साथ मिलने का सौभाग्य प्राप्त होता है तो मुझे ऐसा लगता है मानो महान संगीत-कार बिथोवेन से मिल रही होऊं।"

"आपकी यह हिचक शीघ्र ही दूर हो जायगी, मिस रोज़" लारेल ने

आश्वासन देते हुए कहा । "दो प्रेमपूर्ण हृदय संसार के सारे राजमुकुटों और हालीउड की सारी तारिकाओं से अधिक महत्वपूर्ण प्रमाणित होंगे ।"

"क्या हम लोग कहीं चल कर भोजन नहीं कर सकते ? मेरा अभिप्राय यह है कि आप लोग मेरे अतिथियों के रूप में चलिये । हम लोग किसी ऐसे स्थान में चलेंगे जहां मिस्टर रोबिन के पहचाने जाने का कोई भय न रहेगा ।"

'आप मिस्टर रोबिन को जिनसेनहायमर के नाम से ही पुकारा करिये ।" लारेल ने हंसते हुए कहा । "हम लोग भोजन करने के लिये जिस स्थान पर चलें वह बहुत ही साधारण होना चाहिए । जिनसेनहायमर के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है ।"

"मैं तो कूड़ाखाने में बैठ कर भी खा सकती हूं ।" मिस रोज़ ने उत्तर दिया । "कभी कभी सैण्डविच और दूध पर गुजर कर लेने का भी मुझे अभ्यास है ।"

(१२)

मिस रोज़ के निमन्त्रण को अस्वीकार करना कोई साधारण बात न थी । सब को राजी होना ही पड़ा । फलस्वरूप रोज़ सबको अपनी गाड़ी में बैठा कर सच-मुच एक ऐसे 'कूड़ाखाने' में ले गयी जहां हालीउड की तारिकाओं के आने की किञ्चित मात्र सम्भावना न थी । पीछे की दीवार के सहारे चार व्यक्तियों के लिए एक मेज पड़ा हुआ था । हैन्सी को इस प्रकार बैठाया गया कि उसका मुंह दीवार की ओर हो गया और शेष संसार के प्रति उसकी पीठ । भोजन अत्यन्त साधारण था । बातें करते हुए सब लोग खाने लगे किन्तु सब ने इस बात की पूर्ण सतर्कता रखी कि कोई एक दूसरे के नाम का उच्चारण न करे । संसार की विभिन्न समस्याओं की चर्चा करते हुए भी उन्होने इस बात का कोइ संकेत प्रकट न किया कि उन्हे अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक जानकारी प्राप्त है । वार्त्तालाप के तारतम्य में रोज़ की आंखे बराबर हैन्सी की ओर ही लगी रहीं उसने इस बात को छिपाने का कोई प्रयत्न भी न किया ।

इसके बाद सब लोग घर लौटे । अगली सीट पर हैन्सी और रोज़ बैठे । लैनी और लारेल पिछली सीट पर बैठे । मन ही मन लारेल और लैनी बड़े प्रसन्न थे किन्तु उन्होंने अपने कौतूहल को व्यक्त न होने दिया । हैन्सी स्वभाव से

वाचाल न था किन्तु इस समय उसे मुंह बन्द रखना असम्भव प्रतीत हो रहा था। रोज़ उससे प्रश्न पर प्रश्न करती जा रही थी और उसके जीवन की प्रत्येक घटना को जानने के लिए कृतसंकल्प प्रतीत हो रही थी। वह रोटर्डम के सम्बन्ध में कुछ जानना चाहती थी जहां हैन्सी का जन्म तथा लालन पालन हुआ था। वह हैन्सी के संगीत शिक्षकों के सम्बंध में भी कुछ सुनना चाहती थी। वह उसके माता पिता और मृत भाई फ्रेडी के सम्बंध में भी जानकारी प्राप्त करना चाहती थी। उसकी जिज्ञासा का अंत यहां भी न हुआ। वह बर्लिन नगर, भूमध्य सागर की जल यात्रा, नाजियों के अत्याचार, जोहानीस की विपत्ति—आदि अनेकों बातें जानने के लिये उत्सुक थी। रोज़ पेरिस, फ्रेन्च रिवेयरा, लन्दन, मास्को, मिस्र, ब्यूनस आयर्स तथा उन सारे नगरों की बातें जानना चाहती थी जहां हैन्सी अपने संगीत के प्रदर्शन के प्रसंग में गया था। एक आश्चर्यजनक बात यह देखी गयी कि वार्त्तालाप के तारतम्य में एक बार भी रोज़ ने बेस के सम्बन्ध में कोई जिज्ञासा न प्रकट की और हैन्सी ने भी उसकी कोई चर्चा न की। रोज को बेस के सम्बन्ध में जानकारी अवश्य थी क्योंकि समाचार पत्रों में उसकी तथा हैन्सी की गिरफ्तारी का पूरा पूरा विवरण प्रकाशित हुआ था।

प्रत्येक यात्रा कभी न कभी समाप्त होती है। यह यात्रा भी आखिर समाप्त हुई। होटल के पास पहुँच कर रोज़ ने कहा, "मैं आप लोगों की शान्ति नहीं भंग करना चाहती किन्तु मैं यह आशा करती हूं कि हम लोग एक दूसरे से मिलते रहेंगे।"

लारेल ने तुरन्त अपनी स्वीकृति जनायी। फिर बड़े कौशल के साथ उसने प्रश्न किया, "क्या मैं आपके व्यक्तिगत टेलीफोन का नम्बर हैन्सी को दे दूं?"

"हां, हां अवश्य दे दीजिए।" रोज़ ने उत्तर दिया। "यदि मिस्टर जिनसेन-हायमर मुझे टेलीफोन करके कहीं घूमने फिरने की इच्छा प्रकट करेंगे तो मैं बड़ी प्रसन्नता के साथ उन्हें अपनी मोटर में घुमा लाऊंगी। मैं उन्हे ऐसे स्थान में ही ले जाऊंगी जहां उन्हे पहचाने जाने का भय न रहेगा। और आप इस बात पर पूर्ण विश्वास रखिये कि आप लोगों के साथ इस मुलाकात की चर्चा मैं किसी अन्य व्यक्ति से न करूंगी।"

"मैं आप को परेशान नहीं करना चाहता—" हैन्सी ने कहा।

"नहीं, नहीं। इस प्रकार की बातें मत कीजिए" रोज ने बीच ही में बात काटते हुए कहा। "मैं फिल्म उद्योग से इतनी ऊब गई हूं कि मुझे समझ में नहीं आता कि क्या करूं। मन ही मन मैंने यह सोच लिया था कि मैं न्यूयार्क जाकर देखूंगी कि पुस्तक व्यापार इससे अधिक अच्छा है या नहीं।"

दोनों पक्ष एक दूसरे से बिदा हुए। रोज़ ने हैन्सी को उसके होटल तक पहुँचा दिया और लारेल तथा लैनी को उनके होटल तक। चलते चलते लैनी और लारेल ने रोज़ को एक बार फिर आश्वासन दिया कि वे उससे मिल कर बड़े प्रसन्न हैं।

एकान्त में पहुंच कर लैनी ने लारेल से कहा, "लो, हैन्सी का भविष्य तो निश्चित हो गया—बशर्ते कि वह इसे स्वीकार कर ले।"

"तुम जब रोज़ को हैन्सी का भेद बताने लगे थे तो मैं घबराहट के कारण बेहोश सी होने लगी थी।"

"वैसी परिस्थिति में मैं कर भी क्या सकता था? उसने हैन्सी को पहचान लिया था और यदि मैं उसे सारी बात न बता देता तो वह जाकर तुरन्त जेनी से कह देती और देखते ही देखते यह कहानी सारे नगर में फैल जाती। रिपोर्टर लोग आ पहुंचते और लोगों का इस बात का संदेह हो जाता कि हैन्सी न्यायालय से भागा हुआ एक अपराधी है। एक हलचल सी मच जाती। शायद लोग एफ० बी० आई० को सूचित करने की सोचने लगते।"

"मैं समझती हूं कि रोज़ एक ईमानदार लड़की है।" लारेलने अपनी सम्मति प्रकट की।

"देखो क्या होता है।" लैनी ने कहा। और दूसरे दिन प्रातः काल उन्हों ने क्या देखा? वे दोनों हैन्सी की होटल में गये तो उसका कोई पता न था। होटल के क्लर्क ने कहा कि मिस्टर जिनसेनहायमर बड़े सबेरे मोटर में हवा खाने के लिए निकल गये हैं किन्तु वे एक संदेश छोड़ गये हैं। फलस्वरूप लैनी और लारेल वहां से लौट आये और अपने अन्य इष्ट मित्रों से मिलने जुलने के लिए चले गए। संध्या के समय एम्ब्रस्टर परिवार में एक प्रीतिभोज था। उस प्रीति-

भोज में शरीक होने के लिए जाते समय लैनी और लारेल ने रास्ते में रुक कर एक बार फिर हैन्सी की खबर ली। किन्तु हैन्सी अभी तक न लौटा था या लौटकर फिर चला गया था।

"वह रोज़ को अपनी जीवन कहानी सुना रहा होगा और उसकी कहानी है भी बहुत लम्बी।" लैनी ने कहा।

"किन्तु कहीं वह अन्य व्यक्तियों से इसकी चर्चा न कर बैठे।" लारेल ने शंका प्रकट की।

"हां, है तो वह बातूनी।"

"इसका कारण यह है कि वह कुछ असंतुलित सी हो गयी है। इस समय हैन्सी उसे संसार के सबसे अधिक आश्चर्यजनक व्यक्ति के रूप में प्रतीत होता है। वह अपनी ओर से हैन्सी को प्रभावित करने का भरसक प्रयत्न कर रही होगी। यदि मामला पट गया तो शायद वह हैन्सी को नायक बना कर एक नया उपन्यास लिखना शुरू करदे।"

(१३)

लैनी और लारेल दोनों प्रीतिभोज में सम्मिलित हुए और वहां हालीउड के बहुत से प्रसिद्ध व्यक्तियों के साथ उनका परिचय हुआ। चलचित्रों में इन व्यक्तियों को देखते समय मन में एक विचित्र प्रकार का भाव उठता है; उनका व्यक्तित्व दैत्याकार हो उठता है। किन्तु घर के अन्दर आनन्दपूर्वक इनके साथ बातें करना एक सर्वथा नवीन अनुभव होता है। रोज़ के शब्दों में यह "बीथोवेन के साथ मिलने" की भांति होता है। भोज से लौटते समय उन्होंने फिर हैन्सी की खबर ली किन्तु उसके होटल में पहुंच कर उन्हों ने देखा कि उसके कमरे में अंधेरा है।

इस बात का निश्चय न हो सका है कि भीतर वह है या नहीं। उन्होने दरवाजा खटखटाना उचित न समझा।

दूसरे दिन प्रातःकाल उन्होंने फिर हैन्सी को टेलीफोन किया और फिर उन्हें क्लर्क की ओर से यही उत्तर मिला कि मिस्टर जिनसेनहायमर सैर के लिए निकल गये हैं। दोनों अपने अन्य कामों की ओर मुड़ने ही वाले थे कि इतने में ही रोज़ की गाड़ी उनके होटल के सामने आकर खड़ी हो गई। सब ने एक

दूसरे का अभिवादन किया इसके बाद हैन्सी ने गम्भीर स्वर में घोषणा की : "मैंने मिस रोज़ से विवाह का प्रस्ताव किया है।" किन्तु रोज़ ने तुरन्त बात काट कर कहा, "नहीं, यह गलत है। प्रस्ताव मेरी ओर से उपस्थित हुआ था।"

"जो भी हो—" हैन्सी ने लजाते हुए कहा, "मुख्य बात यह है कि हमलोग तुरन्त विवाह कर लेना चाहते हैं।"

"वाह! यह तो बड़ी अच्छी बात है।" लैनी ने सहमति जनायी।

"बधाई!" लारेल ने प्रसन्न स्वर में कहा। किन्तु किसी भी वस्तुस्थित का काला कोना उसकी दृष्टि से छिपा न रहता था। इस सम्बंध में वह पूर्ण व्यवहारिक मनोवृत्ति रखती थी। बधाई देने के बाद उसने कहा, "किन्तु हैन्सी, बेस को तलाक दिये बिना तुम यह विवाह नहीं कर सकते।"

"मैं जानता हूं।" हैन्सी ने उत्तर दिया। "हम लोग अभी तो रेनो जा रहे हैं। वहां गृहस्थी जमाकर हम लोग छै सप्ताह तक प्रतीक्षा करेंगे।"

"हम लोगों ने इस प्रसंग में एक वकील से भी परामर्श किया था।" रोज़ ने कहा।

"बैठ जाओ।" लैनी ने कहा। अभी तक सब लोग खड़े थे और उत्साह के अतिरेक में किसी का ध्यान इस ओर न गया था। कमरे में दो कुर्सियां और एक सोफा पड़ा हुआ था। हैन्सी और रोज़ कुर्सियों पर बैठ गये और लैनी तथा लारेल सोफे पर। सब एक दूसरे से घनिष्ट थे; शिष्टाचार की कोई आवश्यकता न थी।

"अब सुनो मेरे बच्चों!" लैनी ने कहा। "तुम लोग कहते हो कि तुमने इस मामले में एक वकील का परामर्श लिया है। क्या उस वकील ने तुम्हें 'मान कानून' की बात बतायी थी?"

"नहीं। वह कौन सा कानून है?" रोज़ ने उत्सुक स्वर में प्रश्न किया।

"उस कानून के सम्बन्ध में प्रत्येक भगोड़े प्रेमी-प्रेमिका को जानकारी होनी चाहिए। इसके लिये मुझे दोष मत देना। यह कानून मैंने नहीं बनाया है—मेरा विश्वास है कि यह मेरा जन्म होने के पहले ही बन चुका था। जो भी हो, इस कानून के अनुसार कोई भी व्यक्ति यदि किसी स्त्री को एक राज्य की सीमा

"बात तो ठीक लगती है। किन्तु मेरे विचार से यात्रा शुरू करने के पूर्व आपको अपने वकील के साथ परामर्श कर लेना चाहिये।"

हैन्सी ने विनयपूर्वक लारेल की ओर देखते हुए कहा, "मैं तुम्हारा साथ छोड़ रहा हूं, इससे तुम नाराज तो नहीं हो?"

"नहीं, नहीं, हैन्सी। मुझे तुम दोनों को देख कर बड़ी प्रसन्नता हो रही है।" इसके बाद रोज़ की ओर मुड़कर इसने कहा, "प्रत्येक महान व्यक्ति एक अच्छा व्यक्ति नहीं होता। किन्तु तुम्हें दोनों गुण एक साथ प्राप्त हो गए हैं।"

लारेल और रोज़ को एक दूसरे से घनिष्ट होने में देर न लगी।

(१४)

हैन्सी के हटते ही लैनी और लारेल के लिये यात्रा का आनन्द जाता रहा। वे लोग न जाने कहां कहां की सैर करने की सोच रहे थे किन्तु अब वह उत्साह न रह गया था। अचानक लारेल को अपने डाक के बण्डल की याद आने लगी, उसका ध्यान फिर से उन पुरानी समस्याओं की ओर आकर्षित होने लगा। वह लैनी से बोली कि गर्मी के दिनों में रेडियो पर अच्छे अच्छे वक्ताओं को बुलाना सम्भव नहीं रहता क्योंकि वे लोग छुट्टियों में बाहर चले जाते हैं और रेडियो के साथ कन्ट्राक्ट करके परेशान नहीं होना चाहते। और उसे अपने बच्चों की याद भी सता रही थी। इतनी दूरी पर उसे उनका ध्यान आता था तो वे और भी सुन्दर, और भी आकर्षक प्रतीत होते थे।

अचानक उसने लैनी से कहा, "चलो हम लोग भी रेनो चलें।"

लैनी क्षण भर में राजी हो गया। तुरन्त यात्रा का प्रबन्ध होने लगा। रोज़ और हैन्सी ने अपना सामान बांधकर मोटर में रख ही लिया था और वे यात्रा के लिये एक पैर से तयार खड़े हुए थे। हैन्सी के लिए केवल इतना काम बाकी था कि वह जाकर किसी वकील के साथ परामर्श कर ले कि वह माल के बोरे की भांति एक राज्य से दूसरे राज्य में जा सकता है. या नहीं। लारेल के लिये केवल यह काम बाकी रह गया था कि वह जेनी को टेलीफोन करके अपना प्रणाम कह दे। लैनी सामान बांधने में व्यस्त था।

रास्ते का निश्चय कठिन था। रेगिस्तान से होकर जो रास्ता गया था वह अत्यधिक गर्म थो। दूसरा रास्ता समुद्र तट के किनारे किनारे गया था। वह कुछ लम्बा अवश्य था किन्तु उसकी दृश्यावली बड़ी आकर्षक थी।

उन्होंने हालीउड की तड़क भड़क और शान शौकत को अन्तिम प्रणाम किया और रेनो की ओर चल पड़े। मार्ग की दृश्यावली लैनी को अपने बचपन के दिनों की याद दिला रही थी। आगे आगे लैनी की गाड़ी चल रही थी और पीछे पीछे रोज़ की। वे जल्दी में न थे और समय बचाने के लिये अंधाधुन्ध गति से गाड़ी चलाने के विरुद्ध थे। प्रायः सौ मील तक प्रशान्त महासागर की विस्तृत बालुका राशि से गुजरने के बाद चट्टानें मिलीं। शीतल मन्द वायु चल रही थी। किन्तु वे ज्यों ज्यों आगे बढ़ते जाते थे ताप में भी वृद्धि होती जाती थी।

वे सीधे सैन फ्रैन्सिस्को की ओर न गए बल्कि पूर्व की ओर मुड़कर ओकलैण्ड की ओर चले गए। इसके बाद वे सक्रामेण्टो नदी के किनारे किनारे उस स्वर्ण प्रदेश की ओर अग्रसर हुए जो ब्रेट हार्ट और मार्क ट्वेन की लेखनी द्वारा अमर हो चुका है।

रास्ता पाइन वृक्षों के सघन जंगलों से होकर गया था। यहीं पर एक छोटी सी पहाड़ी झील थी जो कि एक शताब्दी पूर्व बड़ी भयानक दुर्घटना करा चुकी थी। विदेशों की ओर प्रस्थान करनेवाले यात्रियों की एक ट्रेन यहां आकर फंस गयी थी। झील का जल समय के पूर्व ही जम गया था और इसके फलस्वरूप आगे जाने का मार्ग रुक गया था। आधे आदमी भूख से तड़प तड़प कर मर गए थे। जो जीवित रह गए थे उन्होंने मरे हुए साथियों के शवों को खा खा कर अपनी प्राण रक्षा की थी। किन्तु अब यह भयानक दुर्घटना एक दन्तकथा के रूप में ही रह गयी थी। अब उस अंचल से एक स्वच्छ सुन्दर सड़क चली गई थी और इस पर सफर करते हुए यात्री विनोद के स्वर में उस दुर्घटना की चर्चा कर लिया करते थे।

धीरे धीरे सब लोग नेवादा राज्य की सीमा के पास पहुंचे। किन्तु न तो उन्हें किसी ने रोका ही न यह प्रश्न ही किया कि कोई व्यक्ति अनैतिक उद्देश्य से

तो सीमा पार नहीं कर रहा। नेवादा राज्य एक पर्वतीय प्रदेश था और उसका अधिकांश भाग घने जंगलों से आच्छादित था। कहीं कहीं पर रेगिस्तान भी थे। थोड़े से भूभाग को ही सिंचाई की सुविधा प्राप्त हो सकी थी। थोड़ी ही देर में सब लोग उस छोटे से नगर में पहुँचे जिसे अमेरिका का सबसे अनैतिक नगर होने की कुख्याति प्राप्त थी। किन्तु लैनी ने उस नगर में जाने का कोई कौतूहल प्रकट न किया। उसके विशालकाय जुआड़खानों में उसे कोई दिलचस्पी न थी। फलस्वरूप सब लोग रात काटने के लिए नगर के बाहर अपनी मोटरों में ही सो गए।

दूसरे दिन प्रातःकाल दोनों पक्षों ने एक दूसरे से विदा ली। लारेल ने हैन्सी का बटुआ उसे वापस दे दिया ताकि वह अपने पैसे से समाचार पत्र खरीद सके। उसे एक ऐसे वकील का पता लग गया था जो एक अच्छी खासी रकम फीस के रूप में लेकर उसे बेस से तलाक दिला सकता था! इसके बाद उसकी योजना यह थी कि कहीं पर एक सजा सजाया मकान किराये पर ले ले—अब उसे इस बात का निश्चय हो गया था कि उसके उद्देश्य की नैतिकता अथवा अनैतिकता के सम्बन्ध में कोई प्रश्न न उठाया जायगा। इस स्वप्न देश में जितने यात्री आते थे उनमें से आधे प्रेमी-प्रेमिकाओं के रूप में आते थे। वे दाम्पत्य जीवन में बंधने के पूर्व यहां छै सप्ताह रहकर आमोद प्रमोद मना लेने की अभिलाषा लेकर आते थे। यह बात वकीलों, जमींदारों, होटलों के मालिकों और जुआड़खानों के लिये बड़ी लाभप्रद होती थी। रुपया होना भी कितनी सुन्दर बात है—सच, रुपया होना कितनी सुन्दर बात है!!



अध्याय १६

● अनेक अनर्थों की एक जड़ ●

(१)

लैनी और लारेल सुन्दर प्रशस्त कांक्रीट की सड़क पर पूर्व की ओर बढ़ते रहे। सड़क लाल और पीले रंग के चित्र विचित्र पर्वतों के बीच से गयो थी। घाटियों में स्थान स्थान पर प्रशान्त जल की झीलें थीं। इस अंचल में गर्मी बहुत अधिक पड़ती है किन्तु यह गर्मी दम नहीं घुटाती क्योंकि वातावरण सदा शुष्क रहता है। सूर्य प्रचण्ड रूप में चमक रहा था। लैनी और लारेल ने अपनी आंखों में धूप के काले चश्मे लगा लिये थे। सड़क पर मोड़ खतरनाक ढङ्ग के न थे और इसलिये तेज़ गति से मोटर चलाने में कोई असुविधा न होती थी। शीघ्र ही वे वियोमिन्ग नामक स्थान में पहुँच गए। यहां एक विशाल चारागाह था जहां मवेशी स्वच्छन्द गति से विचरण करते हुए घूम रहे थे! यह स्थान इतना समतल था कि सड़क से बीस मील आगे का दृश्य दिखाई पड़ता था। यह चरागाह इतना विशाल था कि एक समय यहां भैंसों के पचास पचास मील लम्बे झुण्ड चरते हुए दिखाई देते थे। वे भैंसें बड़ी भयानक होती थीं, एक एक का वजन एक एक टन के लगभग होता था। शक्ति इतनी होती थी कि वे अपने सींग से एक घोड़े को उठा कर सौ गज तक ले जा सकती थीं। अब वे भैंसें समाप्त हो चुकी हैं। उनकी हड्डियां तक बाजारों में बेची जा चुकी हैं।

इसके बाद ढालू जमीन आयी। यहां कृषि में लगे हुए खेतों का एक विशाल अन्तहीन विस्तार फैला हुआ था। ये खेत प्रायः एक हजार मील तक चले गये थे और सड़क एकदम सीधी गयी थी। घुमाव बहुत थोड़े से थे। सारे खेत एक से प्रतीत हो रहे थे किन्तु ज्यों ज्यों पूर्व की ओर बढ़ते जाते थे त्यों त्यों उनका आकार प्रकार कुछ घटता जाता था। चारों ओर फसलें लहलहा रही थीं। इस समय फसल तीन फीट ऊंची हो चुकी थी और गर्मी के दिनों में केवल एक रात में एक फुट बढ़ जाना भी कोई आश्चर्यजनक बात न थी। छोटे छोटे ग्रामों

और कस्बों का दृश्य भी बड़ा सुहावना लगता था। इनके सफेद रंग के मकान और वृक्षों से ढकी हुई सड़कें बड़ी आकर्षक प्रतीत होती थीं। कई कस्बों में सड़कों के किनारे यह सूचना टंगी रहती थी कि यात्रियों के लिये निवास स्थान प्राप्य है। दो तीन डालर देकर रात्रि के समय इस प्रकार के होटलों में आराम के साथ ठहरा जा सकता है। प्रातःकाल इच्छा हुई तो नाश्ता भी यहीं प्राप्त हो जाता है अन्यथा बिना कुछ कहे सुने आप अपना बोरिया बिस्तर बांध कर आगे बढ़ जा सकते हैं।

इस अंचल का नाम है 'मिडिल वेस्ट'—संसार के सर्व प्रसिद्ध खाद्य भंडारों में से एक। इसकी सुन्दर प्रशस्त सड़कें स्वयं एक आकर्षण हैं और नदियों पर लोहे के पुल फैले हुए हैं। किसान लोगों को यह सुविधा थी कि उनकी फसलों का मूल्य सरकार पहले से ही निश्चित कर देती थी ताकि भाव गिरने के कारण उन्हे आर्थिक कठिनाई में न पड़ना पड़े। उन्हे यह व्यवस्था पसंद भी थी और इसीलिये वे डेमाक्रेटिक पार्टी को ही अपना वोट देते थे। रिपब्लिकन पार्टी को इससे बड़ा आश्चर्य होता था। किन्तु वह कुछ कर न पाती थी। किसानों ने युद्ध के समय संसार को अपने अन्न से जीवित रखा था और अब शान्ति के समय भी विजयी तथा पराभूत दोनों ही प्रकार के राष्ट्रों का उदर पोषण कर रहे थे। सभ्यता के तारतम्य में इस प्रकार की स्थिति पहली बार ही पैदा हुई थी कि एक देश पर दूसरे देश के उदर पोषण का उत्तरदायित्व आ जाय। आज यह अवस्था थी कि अमेरिका को वाध्य होकर इन देशों को अन्न देना पड़ता था अन्यथा इनके कम्युनिस्ट होने का भय था। योरोप और एशिया दोनों ही स्थानों में कम्युनिस्ट लोग सत्तारूढ़ होने का प्रयत्न कर रहे थे और स्वतन्त्र संसार बड़ी परेशानी में पड़ गया था।

यह अंचल यों तो आनन्दप्रद था किन्तु वह वैचित्र्यविहीन था। लैनी और लारेल इसे शीघ्रतापूर्वक पार करके आगे बढ़ जाना चाहते थे किन्तु चौराहे के पास आकर उन्हें अपनी गति धीमी करनी ही पड़ती थी। इसके अतिरिक्त वे ज्यों ज्यों आगे बढ़ते जाते थे त्यों त्यों नगरों का आकार प्रकार बढ़ता जाता था। इन विशाल नगरों में यातायात की समस्या दिन दिन जटिल होती जाती थी।

कारखानों से प्रति वर्ष लाखों मोटरें निकलती थीं। शहरों में इन्हें खड़ी करने के लिये स्थान प्राप्त करना दिन दिन कठिन होता जाता था। शहरों के बाहर छोटे छोटे उपनगर बनाए जा रहे थे ताकि शहरों की भीड़ कम हो। किन्तु इससे शहरों की भीड़ कम होने के स्थान पर उल्टे बढ़ती जाती थी। लैनी और लारेल घर पहुंचने के लिए उत्सुक थे किन्तु वे वहां जीवित ही पहुंचना चाहते थे। इसलिये 'मिल्डिल वेस्ट' अंचल को सावधानी के साथ पार करने में उन्हें दो दिन का समय लग गया। वे जिस समय न्यूजर्सी पहुँचे उस समय संध्या हो गयी थी। और एडगरमीयर में अपने घर के पास पहुंचते पहुंचते तो एकदम रात हो गयी। नौकर तथा बच्चे सो गये थे।

किन्तु प्रातःकाल कैसा आनन्द आया! बच्चे सोकर उठे तो उन्होंने लारेल और लैनी को देखा। लारेल प्रेम के साथ अपने बच्चों का निरीक्षण करने लगी। उसे इस बात पर आश्चर्य हो रहा था कि बच्चे इतनी जल्दी बढ़ कैसे जाते हैं। लैनी का बेटा यात्रा के वृत्तान्त को सुनने के लिये मचलने लगा। उसे इस बात का दुःख था कि उसे साथ नहीं ले जाया गया। लारेल ने उसे सांत्वना दी कि अगली बार वह उसे अपने साथ अवश्य ले जायगी। पिछले कई दिनों की डाक जमा हो गयी थी; कई महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर देने थे। इसके अतिरिक्त कार्यालय के कर्मचारियों से मिलना भी आवश्यक था। एक सम्मेलन का आयोजन करके शान्ति-रेडियो के सम्बन्ध में नयी नयी योजनाओं पर विचार करना था। यात्रा पर निकलते समय उन्होंने किसी से इस बात की चर्चा न की थी कि वे हैन्सी को अपने साथ ले जा रहे हैं। इसीलिये अब इस स्पष्टीकरण की कोई आवश्यकता न थी कि वे उसे पीछे क्यों छोड़ आए। और वे यह सब कहें भी क्यों? जब समाचार पत्रों को पता चलेगा वे अपने आप छानबीन करेंगे!

(२)

एक पत्र "रिआस' रेडियो की ओर से भी आया था। लैनी ने उसे कुछ पाण्डु-लिपियां भेज दी थीं। पत्र में इनके लिये कृतज्ञता प्रकट की गयी थी। इसके अतिरिक्त जर्मनी की नयी परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हुए लैनी से यह अनुरोध किया गया था कि वह एक बार फिर आकर 'रिआस' की प्रगति को

देखे। किन्तु लैनी फिर से जर्मनी की यात्रा करने के लिये तयार था। उसे अभी बहुत सा महत्वपूर्ण काम करना था और इसलिये विदेश यात्रा का प्रश्न ही न उठता था।

इसके बाद एक दिन बर्लिन से बर्नहाड्ट मान्क का टेलीफोन आया। मान्क एक मितव्ययी व्यक्ति था और उससे यह आशा न की जा सकती थी कि वह अनावश्यक रूप में टेलीफोन करके अपना पैसा व्यर्थ में नष्ट करेगा। टेलीफोन पर उसकी आवाज इतनी स्पष्ट थी मानो वह लैनी के कमरे में बैठा हुआ बोल रहा हो। उसने स्पष्ट निष्कम्प स्वर में कहा, "बूढ़े फर्डीनेण्ड के सम्बन्ध में बड़ी जटिल परिस्थिति आ उपस्थित हुई है। इसे तुम्ही सम्हाल सकते हो। क्या तुम बर्लिन आ सकते हो?"

लैनी ने जीवन में कभी मान्क का कोई अनुरोध न टाला था। जीवन की कई जटिल परिस्थितियों से दोनों साथ साथ गुजरे थे। लैनी मान्क का पूर्ण विश्वास करता था। उसने कहा, 'यदि सचमुच तुम्हें मेरी आवश्यकता है तो मैं आ जाऊंगा।"

"आवश्यकता न होती तो मैं तुम्हे न बुलाता। मैं तुम्हारे आने के लिये सेना विभाग की ओर से तुरन्त प्रबन्ध करा दूंगा।"

"कब तक?"

"जितनी जल्दी हो सका। शायद कल सबेरे तक मै इसकी व्यवस्था करा दूंगा।"

लैनी ने लारेल को यह संवाद दिया तो वह सिर पकड़कर बैठ गयी। "ओह लैनी! अब फिर तुम विदेश यात्रा की बात सोचने लगे? मैं तो समझ रही थी कि यह मुसीबत सदा के लिये समाप्त हो गयी है।"

"लारेल, तुम्हे यह न भूलना चाहिये कि हम लोगों के सामने एक नये विश्व-युद्ध का खतरा उपस्थित है और हम लोग यदि स्वयं इस खतरे का सामना न करेंगे तो दूसरों को किस मुंह से उपदेश देंगे? मैं तुम्हे आश्वासन देता हूँ कि मैं अपनी देख भाल यत्नपूर्वक करूंगा। इसके अतिरिक्त मैं इस यात्रा में किसी प्रकार की जोखिम भी नहीं देखता।"

"जोखिम ? लैनी, तुम वायुयान में उड़ते हो तो मेरा प्रत्येक पल आशंका और भय से विषाक्त हो जाता है।"

लैनी ने मुस्करा कर अपनी पत्नी का चुम्बन लिया। "मुझे तुमको तुम्हारा कर्त्तव्य बताने की आवश्यकता नहीं है। तुम इससे स्वयं अवगत हो। तुम्हें उस रोमन वीरांगना की याद नहीं आती जिसने अपने पुत्र से कहा था कि वह छाती पर घाव लेकर भले ही लौटे, पीठ पर घाव लेकर नहीं ?"

मान्क ने 'बूढ़ा फर्डीनेण्ड' कहा था। उसका संकेत कर्ट मेसनर की ओर था। लैनी ने टेलीफोन पर यह न पूछा था कि कौन सी नयी मुसीबत खड़ी हो गयी है। वह जानता था कि इस प्रकार की बातें टेलीफोन पर नहीं की जा सकतीं। फलस्वरूप लैनी मन ही मन कल्पना करने लगा। उसका ध्यान कभी 'वोल्किश्चर-बण्ड' की ओर जाता कभी 'ट्रेजर आइलैण्ड' की ओर। कभी वह फ्रित्ज मेसनर की बात सोचता कभी पूर्वी जर्मनी की। अचानक उसके ध्यान में एक नयी बात आयी। क्या मान्क का संकेत जाली मुद्रा बनानेवाले उस सरंजाम से है जो हंगरी में छिपा कर रखा गया था ? किन्तु इस बात की सम्भावना कम ही थी कि लैनी को हंगरी जाने के लिये कहा जायगा। लैनी ने मन ही मन आशा की कि शायद इस ग्रीष्मकाल में उसे टेगर्नसी के पार्वत्य प्रदेश की सैर का अवसर प्राप्त हो।

(३)

लैनी ने फिर एक बार अपना बोरिया बिस्तर बांधा। उसने अपनी नयी यात्रा पर निकलने के पूर्व पुरानी डाक के उत्तर लिखा दिये और अपने सेक्रेटरियों को आवश्यक आदेश दे दिये। लारेल ने उसको मुस्कराते हुए विदा किया। उसकी आंखों में आंसू उमड़ रहे थे किन्तु उसने इन्हें बलात रोक लिया। स्टेट विभाग से टेलीफोन आ गया था : "मिस्टर बड, आप कल सबेरे नौ बजे आइडिल-वाइल्ड हवाई अड्डे पर आ जाइये। आपकी टिकट तथा पासपोर्ट वहीं पर तयार मिलेंगे।"

लैनी के पास काफी समय था। वह हवाई अड्डे पर पहुँचने के लिये किसी प्रकार की उतावली में न था। उसकी गाड़ी फ्रेडी रोबिन चला रहा था। रास्ते

में लैनी ने फ्रेडी से उसके चाचा हैन्सी रोबिन की चर्चा छेड़ दी। कैसे आश्चर्य की बात है कि हैन्सी कम्युनिस्ट हो गया? आखिर उसे हुआ क्या है? लैनी फ्रेडी को यह संकेत न देना चाहता था कि उसे इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की गुप्त जानकारी है। फ्रेडी ने कहा कि चाचा हैन्सी का कम्युनिज्म अधिक दिनों तक न ठहरेगा। वस्तुतः बेस के कारण ही वे इस चक्कर में फंसे हैं। फ्रेडी ने यह मत प्रदर्शित किया कि बहुत से भले आदमी भी कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो जाते हैं किन्तु साल दो साल बाद निराश होकर वापस लौट आते हैं। उसने कहा कि हैन्सी और बेस का मामला बहुत दिनों तक चलेगा और यदि वे लोग दण्डित हो गए तो भी वे अपील करके कानूनी हथकण्डों का अन्त तक आश्रय लेंगे। यदि उन्हे जेल जाना ही पड़ा तो वहां उनके साथ—विशेषकर हैन्सी के साथ अच्छा व्यवहार होगा क्योंकि आजकल जेलों में कैदियों के साथ पहले जैसा दुर्व्यवहार नही होता। शायद हैन्सी को वहां वायलिन बजाने की सुविधा भी मिल जाय।

हवाई अड्डे पर पहुँचकर लैनी ने फ्रेडी को विदा कर दिया और बैठकर अपना प्रातःकालीन समाचार पत्र पढ़ने लगा। वह सैकड़ों बार हवाई अड्डों को देख चुका था और अब इन दृश्यों में उसके लिये कोई आकर्षण न रह गया था। इस समय उसका ध्यान बर्लिन की चिन्ताजनक परिस्थितियों का समाचार पढ़ने में लगा हुआ था। रूसियों की नीति यह प्रतीत होती थी कि मित्र राष्ट्रों को इस प्रकार परेशान किया जाय कि वे स्वयं बर्लिन छोड़कर भाग जायं। किन्तु उनकी यह नीति निराधार ही थी क्योंकि मित्र राष्ट्रों ने यह निश्चय कर लिया था कि युद्ध के बिना वे बर्लिन से एक इञ्च भी न हटेंगे। बर्लिन छोड़ने से उनकी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति पर घातक प्रभाव पड़ने की आशंका थी।

लैनी भी मन ही मन इसी प्रकार की बातें सोच रहा था। उसे बर्लिन छोड़ने की कल्पना भी असह्य प्रतीत होती थी। किन्तु वह सोच रहा था कि क्या स्टेट विभाग और तथाकथित तटस्थतावादी सीनेट भी इस प्रश्न पर इसी प्रकार की मनोवृत्ति रखती है? लैनी के मस्तिष्क में उन किसानों के चेहरे घूम गये जिन्हें हाल ही में उसने अपनी दक्षिण यात्रा के अवसर पर देखा था। इन किसानों

की दृष्टि में बर्लिन में अमरीकी अधिकार कायम रखने का क्या महत्व था? वे तो केवल इतना ही चाहते थे कि उनके बेटे वहां से लौट कर वापस खेतों में आ जायं। प्रत्येक गृहस्थ अपने प्रवासी बेटों को वापस बुला लेने के लिये उत्सुक था।

यह यात्रा भी उसी पुराने मार्ग से होनी थी जिसे लैनी कई बार देख चुका था--वही पुराना गैण्डर झील तथा प्रेस्टविक वाला मार्ग! जून का मध्य भाग था और इसलिए मौसम सुहावना था। किन्तु अधिकांश मार्ग में केवल जल ही जल पड़ता था। वायुयान में केवल सैनिक अधिकारी सफर कर रहे थे। स्काटलैंड में पेट्रोल लेने के लिए वायुयान क्षण भर के लिए उतरा और फिर बर्लिन की ओर रवाना हो गया। युद्ध के समय में लैनी एक अवैतनिक कर्नल रह चुका था। इसके बाद वह कला-विशेषज्ञ का व्यापार करने के लिए स्वाधीन हो गया था। किन्तु एक समय उसे आणविक वैज्ञानिकों में दिलचस्पी लेनी पड़ी थी। फल-स्वरूप सैनिक प्रश्नों पर अब भी उसके मन में काफी कौतूहल था। उसके साथ यात्रा करने वाले सैनिक अधिकारी पश्चिमीजर्मनी, ग्रीस, तुर्की और ईरान में रह चुके थे और इन देशों की वस्तुस्थिति की काफी जानकारी रखते थे। लैनी इनके साथ बातें करने लगा और शीघ्र ही उसने देखा कि इन व्यक्तियों का दृष्टिकोण अमेरिका के किसानों के दृष्टिकोण से एकदम भिन्न है।

(४)

इस बार लैनी को बर्लिन के एक ऐसे होटल में ठहराया गया जिस पर सेना विभाग ने अधिकार कर लिया था। यहां गुप्तचरों और डिक्टाफोनों का भय न था। मान्क यहीं पर लैनी से मिलने के लिए आया। इस बार दोनों मित्रों को बातें करने के लिए होटल के बाहर नहीं जाना पड़ा।

मान्क ने कहा "न तो फ्रित्ज से ही किसी प्रकार का समाचार प्राप्त हुआ है न अन्ना से। किन्तु मैंने तुम्हें जिस कार्य के लिए बुलाया है उसका सम्बंध कर्ट मेसनर से है। उसने तुम्हें आश्वासन दिया था कि वह भविष्य में अमेरिका के विरुद्ध किसी प्रकार की क्रियाशीलता में भाग न लेगा। किन्तु उसने अपने वचन

का पालन नहीं किया। उसने अपने विरुद्ध कई प्रमाण दिये हैं और हम लोग उसके साथ सख्ती से पेश आना चाहते हैं।"

"किन्तु क्या तुम्हे सचमुच विश्वसनीय प्रमाण प्राप्त हो गये हैं?"

"हमें निश्चित रूप से सारी जानकारी मिल गयी है। कर्ट के साथ बोल्किश्चरबण्ड का गहरा सम्बंध है। किन्तु अभी तुम इस बात की चर्चा किसी अन्य व्यक्ति के साथ मत करना। वे लोग भयानक व्यक्ति हैं और उनके लिए कोई भी काम असम्भव नहीं है। वे लोग एक षड़यन्त्र में लगे हुए हैं और हम इस षड़यन्त्र को आगे नहीं बढ़ने देना चाहते।"

"जाली मुद्रा का काम अभी तक चल रहा है?"

"उनका साज-सरंजाम हंगरी पहुँचा दिया गया है। अभी हमें इस बात का निश्चय नहीं हो सका है कि इसके साथ कर्ट का कितना सम्बंध है। किन्तु वह आजकल एक दूसरी क्रियाशीलता में लगा हुआ है। वह गुप्तधन की तलाश में है।"

"यह तो मैंने तुम्हारे पत्र को देख कर ही समझ लिया था। मैंने बचपन में "ट्रेजर आइलैंड" पढ़ा था।"

मैंने अनुमान लगा लिया था कि तुमने यह पुस्तक अवश्य पढ़ी होगी। जो भी हो, इस समय बड़ी जटिल परिस्थिति उत्पन्न हो गई है। इस समय यहां जो काण्ड चल रहा है वह बहुत दिनों तक जासूसी उपन्यास लिखने वालों को मसाला प्रदान करेगा। तुम जानते हो कि नाजी लोग धन एकत्रित करने की कला में बड़े पटु थे। उन्होने यहूदियों तथा अपने राजनैतिक विरोधियों की पाई पाई जब्त कर ली थी। इसके बाद जब मित्र राष्ट्रों की सेनाएं आई थीं इन्होंने इस अपार धन राशि को दक्षिण-पूर्व के पहाड़ों की कंदराओं और नमक की खदानों में छिपा दिया था। तुम एक बार आल्टआउसी में नमक की खदान देख आए हो न?"

"उस समय कला-चित्रों में मुझे अधिक दिलचस्पी थी। किन्तु मैंने वहां खदान में कुछ पेटियां अवश्य देखी थीं जिनमें सोना तथा जवाहरात भरे हुए थे— इस प्रकार के दृश्य कोई जल्दी नहीं भूल पाता।"

"यह सोना नाजियों ने लाखों यहूदियों से छीना था। लाशों को फेंकने के पूर्व वे लोग उनकी अंगूठियां तथा बालियां आदि निकाल लेते थे। इस सोने को उन्होने आल्पाइन के पहाड़ों में छिपा दिया था। इसके बाद जब उन्होने देखा कि यहां भी मित्र राष्ट्रों की सेनाओं से बचने की कोई सम्भावना नहीं है तो उन्हो ने यह धनराशि झीलों में डुबा दी थी। गिर्जाघरों, जङ्गलों, सार्वजनिक स्थानों जहां कहीं भी सुविधा मिली सोने की पेटियां छिपा दी गयी थीं। इस धन राशि के सम्बंध में कोई अनुमान लगाना कठिन है। किन्तु मैं समझता हूँ कि यह पांच करोड़ डालर से कम न निकलेगी। और यह सारा रुपया मुख्यतः बवेरिया तथा आस्ट्रिया के पर्वतों में छिपा हुआ है।"

"धन राशि इससे कहीं अधिक होगी। पांच करोड़ डालर तो अकेले गोय-रिङ्ग ने छिपाया था। वह पूरी ट्रेन की ट्रेन माल ले गया था। बाद में हमलोगों ने यह सारा माल बर्थटेसगाडेन के पास प्राप्त किया था।"

"जो भी हो, इस समय बहुत से पुराने नाजी नेताओं को इस गुप्त धन का पता है और वे इसके बल पर आराम से रह रहे हैं। कर्ट भी इनमें से एक है।"

"मेरी तो यह धारणा थी कि कर्ट इस रुपये को अपने व्यक्तिगत उपयोग में लाने की कल्पना भी न करेगा।"

"यहां तुम गलती कर रहे हो। बात यह है कि ये लोग समस्या पर एक दूसरे दृष्टिकोण से विचार करते हैं। वे सोचते हैं कि अपने आदर्श के लिये उन्हें जीवित रहना आवश्यक है और इसलिए इस रुपये का व्यक्तिगत उपयोग कोई आपत्तिजनक बात नहीं है। ये इसे थोड़ा थोड़ा निकालते हैं। इसके बाद ट्रकों में छिपा कर ये लोग इस रुपये को बंदरगाहों तक ले जाते हैं। वहां से ये रुपया स्पेन अथवा अर्जेन्टाइन पहुंच जाता है और बड़े बड़े उद्योग धंधों में लगा दिया जाता है। इस सम्बंध में कई महत्वपूर्ण व्यक्तियों की कलङ्क-कहानियां भी प्रचलित हैं। आपस में फूट भी पड़ गयी है। एक दूसरे को दोषी ठहराने का प्रयत्न किया जाता है। किन्तु एक प्रश्न पर सभी एकमत हैं—वह यह कि इस रुपये को बेकार पड़ा रखने से कोई लाभ नहीं है। इसे किसी उद्योग धंधे में लगा कर अपने आदर्श के लिए आवश्यक पूंजी क्यों न प्राप्त की जाय? इस

रुपये का एक भाग प्रचार कार्य पर खर्च होता है—कर्ट का वह तथाकथित पुनीत 'शब्द' इस रुपये के बल पर ही प्रचारित होता है।"

"मैंने सुना है कि हम लोगों की सरकार को भी कई गुप्त खजाने मिले हैं। क्या यह ठीक है?"

"हम लोगों को कभी कभी सुराग मिल जाता है। तब हम अपने सैनिकों का एक दल संदिग्ध स्थान की ओर भेज देते हैं। कभी कभी हम सफल हो जाते हैं किन्तु कभी कभी हम विलम्ब से पहुंच पाते हैं। कभी कभी गोलियां चल जाती हैं। सबेरे उस स्थान पर हम लोग बहुत सा खून पड़ा हुआ देखते हैं और साथ ही जमीन खोदने के औजार भी। वे लोग घायलों और मृतों को उठा ले जाते हैं किन्तु अपने औजार वहीं छोड़ जाते हैं। कारण यह है कि इन औजारों के साथ पकड़े जाने पर उनकी रक्षा असम्भव है। मैं समझता हूँ वे मृत व्यक्तियों के साथ कुछ वजन बांध कर उन्हें झील में डुबा देते हैं।"

"मेरे लिए तुमने यह अच्छा कार्य खोज निकाला है।" लैनी ने मुस्कराते हुए कहा। "यह रुपया बरामद हुआ तो सरकार अवश्य इसका उपयोग कर लेगी। किन्तु मुझसे तो केवल कर वसूले जाएंगे।"

"बात केवल रुपये की नहीं है। प्रश्न यह है कि नाजी लोग इसका बड़ा खतरनाक उपयोग कर रहे हैं। आखिर एक दिन हम लोगों को जर्मनी छोड़ कर जाना ही होगा और जर्मन जनता स्वयं अपने भाग्य का निर्णय करेगी। किन्तु इन नाजियों की योजना यह है कि वे फिर से सत्तारूढ़ हों। इसके लिए जनता को फुसलाने की कई योजनाएं इन्होंने बना ली हैं। और क्या तुम भूल गए? जर्मनी वाले अभी से कह रहे हैं कि हिटलर के राज्य में हम मजे में थे।"

"हां, यह ठीक है। एक दृष्टिकोण से हिटलर का राज्य अच्छा भी था—यदि वह युद्ध छेड़ने की गलती न करता।"

"पुराने नाजियों के परिवारों की गुजर बसर इस पैसे से ही हो रही है। जिन नाजियों को हमने फांसी पर लटका दिया और जिन्हे जेल में बंद कर दिया उनके परिवार भी इसी पर पल रहे हैं। बाल्डर वान शिराच और 'पोलेण्ड का कसाई' हैन्स फ्रांक, फील्ड मार्शल कीटेल—इन सब के परिवार बवेरिया के गुप्त

धन पर गुलछर्रे उड़ा रहे हैं। इन्कम टैक्स वसूलने वाले अधिकारी जब इनके पास जाते हैं तो ये अपनी आयका कोई स्रोत नहीं बता पाते। बस मुस्करा कर रह जाते हैं। शायद इन्कमटैक्स वालों को थोड़ी सी घूस दे देते हैं। आइखमान परिवार—तुमने उस हत्यारे का नाम तो सुना ही होगा —इस समय आस्ट्रिया में बिजली का एक विशाल व्यापार चला रहा है। जब हम इन अपराधियों को गिरफ्तार करने के लिए जाते हैं तो हमें पता चलता है कि वे लापता हो चुके हैं। कोई मिस्र भाग जाता है तो कोई ब्रेजील अथवा मोरक्को। और हम लोग निश्चित रूप में जानते हैं कि उनकी यात्रा का खर्च चोर बाजार में सोने की वे रहस्यमयी ईंटें बेच कर ही प्राप्त हुआ था। इस चोर बाजार में अनेकों व्यक्तियों का एक अच्छा खासा दल लगा हुआ है। इस दल के लोग नियमित रूप में साल्जबर्ग और ब्रेगेन्ज की यात्रा करते रहते हैं। नाजियों से गुप्त रूप में सोना खरीद कर वे इसे इटली के रास्ते पार कर देते हैं। कभी कभी हम इस दल के किसी व्यक्ति को पकड़ लेते हैं तो उसके पास से सोने के वे बर्तन तथा आभूषण बरामद होते हैं जो नाजियों ने रोथ्सचाइल्ड परिवार से छीन लिए थे। यह परिवार आज कल पेरिस में रहता है और इसने हमें अपने आभूषणों के फोटो दे रखे हैं जिनसे हम बरामद होने वाले माल की शनाख्त कर लेते हैं।"

(५)

"मुझे कर्ट के सम्बंध में बताओ" लैनी ने कहा। मान्क ने तुरन्त उस रोमांचकारी घटना का वर्णन विस्तारपूर्वक करना शुरू कर दिया जो कि कई मास पूर्व आल्ट आउसी के पास ग्रन्डल झील में घटित हुई थी। वहां कई लारियां आई थीं। किराए की नावें भी तयार थीं। लारी वाले अपने साथ जमीन खोदने का सरो-संजाम भी लाए थे। किन्तु इस बार जमीन खोदने की आवश्यकता न थी। वे उस खजाने की खोज में आए थे जो झील की तह में पड़ा हुआ था। गोताखोरों ने जल के अन्दर डुबकी लगायी और थोड़ी देर बाद वह स्थान खोज निकाला जहां खजाना था। नावों से रस्सियां लटका दी गयीं और सोने से भरी हुई बड़ी बड़ी पेटियां ऊपर उठाई जाने लगीं। जब स्थानीय पुलिस ने यहां आकर पूछ ताँछ की तो उसे कह दिया गया कि यह इन्सब्रक से आया हुआ

फ्रांसीसी इंजीनियरों का दल है। पराभूत आस्ट्रिया की पुलिस अपने विजेता फ्रांसीसियों के विरुद्ध कुछ करने का साहस कैसे कर सकती थी? वे लोग झील से बारह पेटियां निकाल कर अपनी लारियों में रख कर चलते बने।

"किन्तु बाद में जांच पड़ताल की गयी तो पता चला कि फ्रांसीसी इञ्जीनियरों की बात एक चकमा मात्र थी। यह उन नये षड़यन्त्रकारी नाजियों का दल ही था। हम लोगों ने टेगर्नसी तक उनका पीछा किया था। हमारे पास उस व्यक्ति की हुलिया भी है जो इस दल का मुखिया था। हमारा विश्वास है कि वह व्यक्ति हायनरिख ब्रिन्कमान ही था—कर्ट मेसनर का सर्वोच्च नेता। हमें यह संदेह होता है कि यह व्यक्ति और कोई नहीं हिटलर की तूफ़ानी फौज का सेनापति जेनरल डोलमान ही है। हमें इस बात का पूर्ण विश्वास है कि इस योजना में कर्ट मेसनर का भी हाथ था क्यों कि गुप्त खजानों का पता सबसे अधिक उसी को है। यह स्पष्ट है कि इस रुपये से कर्ट मेसनर का प्रचार कार्य आगे बढ़ाने का प्रयत्न किया जायगा। किन्तु हम शक्ति भर इसे रोकने का प्रयत्न करेंगे।"

"क्या तुम यह चाहते हो कि मैं कर्ट का रहस्य खोज निकालने का प्रयत्न करूं?"

"तुम जानते हो कि जिस समय उसे पश्चिमी जर्मनी में आने की अनुमति दी गयी थी यह शर्त आरोपित कर दी गयी थी कि वह भविष्य में अपने वचन का पालन करेगा। किन्तु उसने अपने वचन का पालन नहीं किया। वह स्वयं जानता है कि उसने अपना वचन भंग किया है। हमें उसे यह बताने की कोई आवश्यकता नहीं है कि हमें यह बात कैसे ज्ञात हो गयी। सफाई तो उसकी ओर से आनी चाहिये। हम यह जानना चाहते हैं कि उसने अपने लिये जो नया मकान बनवाया है उसके लिये उसे पैसा कहां से मिला?"

"अच्छा? उसने अपने लिये मकान बनाया है?"

"हां, छः कमरों का एक अच्छा खासा मकान। इसके अतिरिक्त उसने अपने लिये एक स्टूडियो भी बनवाया है जो प्रायः समाप्त हो चुका है। स्पष्ट है कि यह रुपया या तो साचसेनहासेन में बननेवाले जाली नोटों से प्राप्त हुआ है या

नाजियों के गुप्त खजानों से। अब या तो कर्ट हमें सारा भेद बता दे या फिर से पूर्वी जर्मनी जाने के लिये तयार हो जाय।"

"किन्तु अब क्या सोवियत अधिकारी उसे वापस लेंगे?"

"अवश्य। वे जानते हैं कि आस्ट्रिया में साल्जबर्ग के पास नाजियों का बहुत सा गुप्त धन गड़ा हुआ है और वे इसे हथियाने के लिये उत्सुक हैं। और वे लोगों से भेद निकालने के कुछ उपाय जानते हैं—ऐसे उपाय जिनका प्रयोग हम लोग नहीं कर सकते। तुम कर्ट को यह संकेत दे सकते हो कि हम लोगों ने उसे सपरिवार वापस पूर्वी जर्मनी में भेज देने का निश्चय कर लिया है। सोवियत अधिकारी उसके बच्चों को छीन कर अपने स्कूलों में रख देंगे और वे कट्टर कम्युनिस्टों के रूप में निकलेंगे! मैं नाजियों और कम्युनिस्टों के बीच कोई विशेष अन्तर नहीं देखता किन्तु कर्ट के लिये यह अन्तर महत्वपूर्ण है। इसलिये उसके साथ बातें करते हुए तुम इस तर्क का प्रयोग भी कर सकते हो।"

"यह काम कुछ कड़ा सा है, मान्क।"

"तुम्हें उसके साथ कठोर होने की कोई आवश्यकता नहीं है—कठोरता तुम्हारे स्वभाव में ही नहीं है। किन्तु मैं तुमसे इसीलिये अनुरोध कर रहा हूं क्योंकि कर्ट के मामले के साथ तुम्हारा प्रत्यक्ष सम्बन्ध रहा है।"

"मैं नहीं समझता कि मेरे प्रति कर्ट के मन में किसी प्रकार की सद्भावना होगी।"

"यहां तुम गलती कर रहे हो, लैनी। कर्ट तुमसे कितना ही नाराज़ क्यों न हो, मन ही मन वह तुम्हारा आदर करता होगा। वह जानता है कि तुम्हारे सामने एक आदर्श है और तुम उस आदर्श को कार्यान्वित करने के लिये प्राणपण से चेष्टा कर रहे हो। तुम सामाजिक न्याय पर विश्वास करते हो, वह भी युवावस्था में इस पर विश्वास करता था। बचपन में पड़े हुए संस्कार मनुष्य के मन में बड़े गहरे बैठते हैं, वे कभी पूर्णरूप में नष्ट नहीं होते। तुम्हें उसको केवल यह विश्वास दिला देना है कि वह हम लोगों को धोखे में नहीं रख सकता। उसे नाजियों से अपना सम्बन्ध तोड़ कर हमारे साथ खुलकर मिलना होगा अन्यथा वापस पूर्वी जर्मनी चले जाने के लिये तयार होना पड़ेगा।"

"मुझे विश्वास है कि वह शहीद होना ही अधिक पसंद करेगा।"

"हो सकता है। किन्तु उसके बच्चों का प्रश्न भी है और कदाचित वह इस प्रश्न की अवहेलना न कर सकेगा। तुम अपनी वाग्पटुता का प्रयोग करके उसे समझाने का भरसक प्रयत्न करना। तुम उससे यह कह सकते हो मेरी मित्रता के कारण ही अधिकारीगण तुम्हारे साथ रियायत कर रहे हैं, अन्यथा अब तक तुम्हें पूर्वी जर्मनी वापस भेज दिया गया होता।"

"मैं उससे यह बताऊँ कि नहीं कि हम लोगों को उसके तथा बोल्किश्चर बण्ड के सम्बन्ध में बहुत सी जानकारी प्राप्त हो गई है?"

"तुम उसे सब कुछ बता सकते हो। केवल फ्रित्ज की बात मत बताना। तुम उससे एकदम स्पष्ट रूप में कह देना कि उसने अपना वचन भंग किया है और इसलिये नैतिक दृष्टिकोण से उसका पक्ष एकदम निराधार हो गया है। इस झटके से तुम उसे चित कर दोगे तो बाजी तुम्हारे हाथ रहेगी।"

"वह यों ही लूला है। उसका एक हाथ ही काम का रह गया है।" लैनी ने मुस्कराते हुए कहा। किन्तु वह जानता था कि कर्ट के साथ जो मल्ल युद्ध होगा वह शारीरिक नहीं बल्कि नैतिक और बौद्धिक होगा—और यह युद्ध शारीरिक युद्ध की अपेक्षा कहीं अधिक भयंकर होता है।

(६)

लैनी सेना विभाग के एक वायुयान द्वारा म्यूनिच पहुँचा। पिछली बार जब वह म्यूनिच गया था अधिकांश नगर नष्ट-भ्रष्ट दिखाई दिया था। युद्ध-ध्वंस्त मकानों का मलवा सड़कों पर पड़ा हुआ था जिसके कारण यातायात अवरुद्ध हो गया था। किन्तु अब सड़कें साफ सुथरी दिखाई देती थीं। जर्मन लोग पुनर्निर्माण के कार्य में सोत्साह लगे हुए थे। ए० एम० जी में लैनी का जिन जर्मनों से परिचय हुआ था वे सब के सब नये व्यक्ति थे। जो जर्मन योद्धा युद्ध में लड़े थे वे अपने अपने घरों की ओर लौट गए थे। अब फिर से शान्ति और सहयोग की चर्चा जोर शोर पर थी। "बीती ताहि बिसारि दे" के अनुसार जर्मनों और अमरीकियों दोनों की ओर से पारस्परिक प्रीति तथा सद्भावना का प्रदर्शन होने

लगा था। दक्षिणी जर्मनी के लोग फिर से अपनी बीयर बनाने लगे थे और अमरीकी लोग इसे खरीदने लगे थे।

लैनी की इच्छा थी कि वह यहां कुछ दिनों के लिए ठहर कर अपने पुराने मित्रों से मिलने का प्रयत्न करे। इन मित्रों के बहुत से मकान अभी तक ज्यों के त्यों खड़े हुए थे और उन्हें अपने वे चित्र भी वापस प्राप्त हो गए जो गोयरिङ्ग ने उनसे छीन लिये थे। जर्मनी में जिस समय नाजियों का प्रभाव था उस समय हरमान गोयरिन्ग को भांति भांति के उपहार देकर प्रसन्न रखना आवश्यक था। रईसों ने अपने बहुमूल्य चित्र इसी प्रकार भय से अनुप्रेरित होकर गोयरिन्ग को सौंप दिये थे। बवेरिया के नाजी नेता एडोल्फ वागनर ने भी जनता से इसी प्रकार बहुत सी बहुमूल्य सामग्री छीन ली थी।

सेना विभाग की ओर से लैनी को मोटर तथा कुछ पेट्रोल मिल गया। अपनी इस नयी गाड़ी में वह फर-वृक्षों से आच्छादित इस सुन्दर प्रदेश में चालीस मील की यात्रा के लिए निकल पड़ा। यह रास्ता टेगरनसी की ओर गया था। यहां पर प्रायः चार मील लम्बी वह सुन्दर झील थी जो दूर दूर से यात्रियों को अपनी ओर आकर्षित करती रहती थी। यात्रियों की सुविधा के लिए इस गांव में कई होटल थे। यों तो यह स्थान ग्रीष्मकालीन प्रवास के लिए ही उपयुक्त था तथापि जर्मनी में मकानों के अभाव के कारण बहुत से लोग बारहों मास यहीं पर पड़े रहते थे।

लैनी पहले जेनरल ग्राफ स्टूबेनडर्फ के छोटे से मकान की ओर गया। वह जानता था कि कर्ट जेनरल स्टूबेनडफ के प्रति बड़ी श्रद्धा रखता है। इसीलिए कर्ट के पास जाने के पहले लैनी ने जेनरल स्टूबेन्डर्फ से मिलना उचित समझा। जिस समय लैनी वहां पहुँचा वृद्ध जेनरल चमड़े की जैकेट पहने हुए अपने बगीचे में टहल रहे थे और नयी शाक सब्जियों का निरीक्षण कर रहे थे। उन्होने लैनी का स्वागत किया और उसे अपने उस नये कमरे में बैठाया जो ग्रीष्मकालीन निवास के लिए हाल ही में बनाया गया था। लैनी ने जेनरल स्टूबेनडर्फ को अपनी सारी कहानी सुनायी। उसने कहा कर्ट ने युद्ध में अपनी हार को न स्वीकार करके उसे बड़ी विपत्ति में डाल दिया है।

"आप ने अपनी हार स्वीकार कर ली है और मेरा विश्वास है कि आपकी सलाह कट को भी उचित रास्ते पर ला सकती है।"

किन्तु जेनरल ने अपना सिर हिलाते हुए कहा, "नहीं मिस्टर बड। मैंने यह निश्चय कर लिया है कि भविष्य का निर्णय युवक लोग अपने आप करेंगे। वृद्धों को उसमें पड़ने की कोई आवश्यकता नहीं है। कर्ट मेसनर की आयु पचास के आस पास होगी। इस आयु में मनुष्य के विचारों में प्रौढ़ता आ जाती है और उसे किसी के परामर्श की आवश्यकता नहीं रहती।"

लैनी ने कहा, "इस समय स्थिति यह है कि कर्ट के सामने जीवन मरण का प्रश्न उपस्थित हो गया है। या तो उसे गणतांत्रिक जर्मनी के पक्ष में अपना निर्णय करना पड़ेगा या फिर पूर्वी जर्मनी में लाल तानाशाही की ओर लौट जाने के लिए तयार होना पड़ेगा। उसे इन दोनों में से एक को चुनना है।"

जेनरल ने उत्तर दिया, "मैं नहीं समझता कि इन दो के अतिरिक्त आप लोगों ने अन्य उपायों पर भी विचार किया होगा। मैं जानता हूँ कि आप लोगों को अपनी गणतांत्रिक शासन व्यवस्था के प्रति गहरी श्रद्धा है किन्तु आप लोग अपने सिद्धांतों को बलात जर्मनी पर लादने का जो प्रयत्न कर रहे हैं उससे मैं सहमत नहीं हो सकता। आप लोगों की भांति हमें अपनी सुरक्षा के लिये दो महासागरों का भरोसा नहीं है। हम लोग स्विस लोगों की भांति एक प्राकृतिक किले में भी निवास नहीं करते। हम लोग उस समतल भूमि पर निवास करते हैं जिस पर शताब्दियों से बर्बर घुड़सवारों का आक्रमण होता रहा है। अब घुड़सवारों के स्थान पर लोहे के टैन्कों के आक्रमण होने लगे हैं—केवल इतना ही अन्तर आया है। हमारी सुरक्षा का एक मात्र उपाय हमारा बुद्धि-कौशल, परिश्रम और अनुशासन ही है। दो बार आप लोगों ने अपने ब्रिटिश और फ्रांसीसी मित्रों की सहायता के लिये हमें रौंद डाला है। अब हम लोग आपके अधिकार में हैं और पूर्वी अंचल की बर्बर सेनाओं से हमारी रक्षा करने का उत्तरदायित्व भी आप पर ही है। किन्तु मुझे पूर्ण विश्वास है कि जर्मनी से जाने के पहले आप अमरीकियों को इस बात का विश्वास हो जायगा कि जर्मनी को दृढ़ता तथा अनुशासन की कठोर आवश्यकता है। शायद आप लोग यह समझते हों कि हम

लोग कच्ची मिट्टी मात्र हैं जिसे आप इच्छानुसार सांचे में ढाल सकते हैं किन्तु ऐसी बात नहीं है। आपको अपनी शासन व्यवस्था के प्रति जो श्रद्धा है वह स्वाभाविक ही है और उसका मैं आदर करता हूँ। किन्तु मैं यह नहीं मान सकता कि जर्मन लोग भी उसी सांचे में ढाले जायं।"

"जेनरल ग्राफ, आपने अमेरिका को गणतंत्र के आविष्कारकर्ता के रूप में स्वीकार करके उसे बहुत बड़ा आदर दिया है। किन्तु मैं समझता हूं कि गणतांत्रिक आंदोलन का श्रेय केवल अमेरिकाको नहीं दिया जा सकता। यह एक अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन है और इसका मुख्य श्रेय जनता में शिक्षा के प्रचार तथा प्रसार को है।"

"मैं जानता हूं। बहुत से लोगों का ऐसा ही विश्वास है। जर्मनी में भी शिक्षा का प्रसार हुआ और जनता को मतदान का अधिकार प्राप्त हो गया। फल स्वरूप जनता ने अपने अधिकारों का उपयोग करना चाहा। आपको यह तो मालूम ही होगा कि हिटलर का आन्दोलन एक गणतांत्रिक आन्दोलन ही था; उसका जन्म समाज के निम्नतर वर्ग में हुआ था। जर्मनीका राष्ट्रीय समाजवादी दल चुनाव में विजयी हुआ था। किन्तु न जाने क्यों आपको यह बात पसंद न आयी थी।"

"गणतंत्र के सम्बन्ध में हमारी धारणा दूसरे प्रकार की है। गणतंत्र का यह अर्थ नहीं कि कोई व्यक्ति जनमत की सीढ़ी के सहारे सत्तारूढ़ हो और इसके बाद उस सीढ़ी को ठोकर मार कर गिरा दे। हम लोगों को आशा है कि तृतीय जर्मन साम्राज्यके इस पतन से संसार एक नसीहत लेगा और स्वयं जर्मनी के लोग भी अपने यहां जनमत के आधार पर एक सच्ची गणतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना करेंगे।

"जितने दिन मुझे यहाँ रहने की अनुमति है मैं आपके प्रयोग को बड़ी दिलचस्पी के साथ देखता रहूंगा। किन्तु आप मुझसे यह आशा मत कीजिए कि मैं स्वयं इसमें किसी प्रकार का भाग लूँगा। मैं आपके कामों में हस्तक्षेप भी न करूंगा। मैं समझता हूं यह काफी होगा।"

इस प्रश्न पर अधिक कुछ कहना सम्भव न था। फलस्वरूप लैनी कुछ इधर

उधर की बातें करता रहा। बातों के तारतम्य में पुराने मित्रों की चर्चा हुई। कलाकृतियों का प्रसंग आया तथा इधर उधर की बातें हुईं। जेनरल ग्राफ ने लैनी को कर्ट के घर का रास्ता बता दिया। जेनरल को यह बात मालूम थी कि कर्ट ने अपने लिए एक मकान बनवाया है तथा एक स्टूडियो भी बनवा रहा है।

"यदि आप लोग उसका वह नया मकान उससे छीन लेंगे तो यह निश्चय ही एक दुःखद बात होगी।" जेनरल ग्राफ ने धीमे स्वर में कहा। उनके स्वर से यह ध्वनि निकल रही थी कि मैं टस से मस होने वाला नहीं हूँ।

(७)

दोनों ने हाथ मिलाया और एक दूसरे से विदा ली। लैनी झील के उस ओर जाने के लिए तयार हुआ। रास्ते में एक छोटी सी घाटी पड़ती थी। घाटी के बाद कुछ ऊंचाई पर एक नवनिर्मित मकान खड़ा हुआ था। मकान का आकार प्रकार अधिक बड़ा न था। वृक्षों के एक झुरमुट के बीच कर्ट का नया स्टूडियो था। लैनी ने एक दृष्टि में ही देख लिया कि दोनों इमारतें पत्थर से बनी हैं। मकान के पीछे एक छोटा सा बगीचा था जिसमें कई बच्चे खेल रहे थे। कदाचित आज स्कूल की छुट्टी थी। वैसे जमनी में आमोद प्रमोद मनाते हुए कम व्यक्ति ही दिखाई पड़ते थे।

लैनी ने दरवाजा खटखटाया। गृहस्वामिनी ने दरवाजा खोलकर लैनी का स्वागत किया। इस बार लैनी के प्रति उसका रुख पहले की तुलना में कहीं अधिक सहानुभूतिपूर्ण था। कर्ट ने उसे बता दिया था कि यह लैनी की कृपा ही थी जिसके फलस्वरूप उन लोगों को पूर्वी जर्मनी से आकर यहां बसने की सुविधा प्राप्त हुई थी। फलस्वरूप इस बार कर्ट की पत्नी के मन में लैनी के प्रति कृतज्ञता का भाव था।

उसने लैनी को बताया कि कर्ट स्टूडियो में है। लैनी ने स्टूडियो में जाकर देखा कि कर्ट एक बढ़ई को कुछ काम बता रहा है और सुन्दर बालों वाले दो लड़के उसकी सहायता कर रहे हैं। लैनी ने इन लड़कों को पहचान लिया। ये कर्ट के पुत्र थे। पारस्परिक अभिवादन के बाद लैनी कर्ट को अपनी मोटर में ले गया ताकि एकान्त में बैठकर बातें की जा सकें।

यह कोई सामाजिक समारोह का अवसर न था ; शिष्टाचार की कोई आवश्यकता न थी।

"तुम्हारे लिये एक बुरी खबर है, कर्ट।" उसने गम्भीरता के साथ कहा। "अधिकारियों ने तुम्हे फिर से पूर्वी जर्मनी भेज देने का निश्चय कर लिया है।"

"हे भगवान ! इसका क्या अर्थ है ?"

"तुम इसका अर्थ स्वयं जानते हो, कर्ट। तुमने अपने वचन का पालन नहीं किया।"

"लैनी तुम्हें ऐसा न कहना चाहिये।"

"व्यर्थ की बातें करने में कोई लाभ नहीं है, कर्ट। सेना विभाग के अधिकारियों ने तुम पर कड़ी दृष्टि रखी थी। यह उनका कर्त्तव्य ही था। उन्हे तुम्हारे उन जाली नोटों का पूरा पूरा पता है जो तुम या तुम्हारे मित्र छिपे छिपे चोर बाजार में बेचते रहे हैं। उन्हें तुम्हारे मित्रों के नाम भी मालूम हैं। मैंने तुम्हारी कुछ रचनाएं भी पढ़ी हैं जिन्हें तुम 'शब्द" के नाम से प्रसारित करते रहे हो। अधिकारियों को तुम्हारे गुप्त धन का भेद भी मालूम है। वे जानते हैं कि तुम यह गुप्त धन छिपे छिपे बाहर भेजते रहे हो।"

"लैनी, मैं सौगंध खाकर कहता हूं कि—"

"झूठ बोलने से कोई लाभ नहीं। सम्भव है कि ईश्वर नाम की कोई वस्तु हो और यह असत्य भाषण उसे अच्छा न लगे। मैं जानता हूं कि तुम्हारा अपना एक आदर्श है और उस आदर्श की दृष्टि से तुम अपने कार्यों को सर्वथा उचित समझते हो। किन्तु इस प्रकार की बातों से तुम अपनी स्थिति और भी जटिल बना रहे हो। मेरे लिये तुम्हारी सहायता करना दिन दिन कठिन होता जा रहा है और अधिकारी लोग तुम्हें पूर्वी जर्मनी भेजने के लिये दिन दिन सुनिश्चित होते जा रहे हैं। तुम हिटलर की आख्यायिका को पुनर्जीवित करने के लिए तुले हुए हो और विदेशों में अपने प्रचार के अड्डे खोल रहे हो। तुम यह सब जानबूझ कर कर रहे हो। तुम्हें बराबर चेतावनी दी जा चुकी है। मैं तुम्हें बता देना चाहता हूँ कि अधिकारीगण मूर्ख नहीं हैं। हम लोगों ने हिटलर की माया को तोड़ने के लिए

एक लाख अमरीकी प्राणों की बलि दी है और अरबों रुपये खर्च किये हैं और अब हम तुम्हें फिर से उस माया की सृष्टि करने का अवसर नहीं दे सकते।"

"लैनी, मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि विदेशों में जो नाजी अड्डे हैं उनके साथ मेरा कोई लेन देन नहीं है।"

"इन बातों में कोई तत्व नहीं है, कर्ट। यद्यपि मैं यहां 'रिआस' रेडियो के निमंत्रण पर आया हूँ तथापि संयोगवश सरकार के गुप्तचर विभाग में मेरा एक मित्र है। उसने मुझे तुम्हारे सम्बन्ध में सब कुछ बता दिया है। मैंने उससे अनुरोध करके इतना समय प्राप्त कर लिया कि मैं आकर तुमसे मिल सकूं। यदि मेरी प्रार्थना अस्वीकृत हो जाती तो इस समय यहां मेरे स्थान पर सैनिक पुलिस के आदमी खड़े होते।"

"लैनी, यह एक भयानक बात है।"

"कर्ट, तुम जो कुछ करते रहे हो वह कुछ कम भयानक नहीं है। तुमने मुझे वचन दिया था कि तुम अमेरिका की सरकार के विरुद्ध कोई क्रियाशीलता न करोगे किन्तु तुमने अपने वचन का पालन न किया। मुझे तुम्हारी मित्रता पर भरोसा रखने का कोई अधिकार न था किन्तु मैंने यह समझा था कि एक सभ्य और सुसंस्कृत व्यक्ति के वचन का भरोसा किया जा सकता है।"

कर्ट के पास इसका कोई उत्तर न था। उसने केवल इतना ही कहा, "अब मुझे वापस नहीं भेजा जा सकता। रूसी लोग मुझे वापस लेने के लिये तयार न होंगे।"

"इसका अधिक भरोसा मत रखो। हम लोग रूसियों को केवल इतना ही संकेत कर देंगे कि तुम्हें नाजियों के गुप्त धन का पता है। बस, वे तुम्हें वापस लेने के लिये तयार हो जायेंगे। वे लोगों से भेद निकालने के लिये कुछ ऐसे उपाय जानते हैं जिनका प्रयोग हम लोग नहीं कर सकते।"

"उन्हें कुछ बताने के बदले मैं मर जाना अधिक पसंद करूंगा।"

"किन्तु वे तुम्हारा भेद प्राप्त किये बिना तुम्हें मरने न देंगे। उन्होंने हिट्लर के बहुत से हथकण्डे सीख लिये हैं। और फिर प्रश्न केवल तुम्हारा ही नहीं है। तुम्हारे बच्चों का क्या होगा?"

"आखिर तुम चाहते क्या हो, लैनी ?"

"मैं तुम्हारे पास केवल इसीलिये आया हूँ कि अब भी मेरे मन में तुम्हारी पिछली मित्रता के प्रति कुछ आदर का भाव है। मैं अब भी यह आशा नहीं छोड़ सका हूँ कि मैं तुम्हारे अन्तर्मन को स्पर्श करके तुम्हें फिर से पुराने जीवन की ओर लौटा सकूंगा।"

"यदि मैं बदल गया हूँ तो इसका कारण यही है कि मैं संसार के सत्य से अवगत हो गया हूं—मैं देख रहा हूं कि संसार में कितनी कालिमा है और इस कालिमा को नियन्त्रण में लाने के लिये कठोर उपायों की आवश्यकता है।"

"राष्ट्रीय समाजवादी आन्दोलन की चर्चा मत छेड़ना, कर्ट। इस सम्बन्ध में मैं तुम्हारे विचारों से भलीभांति अवगत हूं और मेरे विचार भी तुमसे छिपे हुए नहीं हैं। किन्तु यह एक स्पष्ट सत्य है कि वह आन्दोलन समाप्त हो गया है और तुम्हारे जीवन काल में उसकी पुनरावृत्ति नहीं हो सकती। अब तुम्हें कठोर स्टालिन मार्ग और सरल अमरीकी मार्ग, इन दोनों में से एक को चुनना है। तुम वापस कम्युनिस्टों के पास जाना चाहते हो या यहीं बने रहना चाहते हो ?"

(८)

प्रस्ताव स्पष्ट था। थोड़ी देर तक सन्नाटा छाया रहा। कर्ट विचारों में तल्लीन था। वह जानता था कि उसे यह अन्तिम अवसर मिल रहा है। अन्त में उसने कहा, "अच्छा, तुम मुझे साफ साफ बताओ कि तुम मुझसे क्या करवाना चाहते हो ?"

"पिछली बार जब हम मिले थे तब मैंने तुमसे यह प्रस्ताव किया था कि तुम पश्चिमी जर्मनी में बस जाओ और अपने आप को राजनैतिक क्रियाशीलता से अलग रखो। किन्तु इस बार की शर्तें पूर्वापेक्षा कड़ी हैं। अब तुम्हें ए० एम० जी के पास जाकर उसे जाली मुद्रा बनानेवाले दल के सम्बन्ध में सारी जानकारी दे देनी होगी।"

"यह तो मैं तुम्हें अभी बता सकता हूं, लैनी। वे सारी मशीनें हंगरी चली गयी हैं। यहां जर्मनी में उनका नाम निशान भी नहीं है।"

"और वे जाली ब्रिटिश पाउण्ड के नोट ? कागज का स्टाक ?"

"सब कुछ हंगरी चला गया है। यहां एक तिनका भी नहीं रह गया।"

"किन्तु वे नोट कहां से आते हैं जो यहां बजारों में घूम रहे हैं?"

"वे चौरानयन द्वारा हंगरी से आते होंगे। किन्तु इस सम्बन्ध में मैं कुछ भी नहीं जानता।"

"वह प्रेस कहां है जहां तुम्हारे 'शब्द' छपते हैं?"

"मेरे मित्रों ने मुझे उस प्रेस का कोई पता ठिकाना नहीं दिया है।"

"और यहां का काम कौन कौन चला रहे हैं?"

"तुम तो कहते थे कि तुम्हें उन लोगों के नाम मालूम हैं! तुमने तो यह कहा था कि तुम सब कुछ जानते हो!!'

"हम लोग केवल इतना ही जानते हैं कि तुम किस प्रकार की क्रियाशीलता में लगे हुए हो। मेरे कहने का तात्पर्य यह न था कि हमें उन सारे गुप्त खजानों का पता है जिन्हें तुम और तुम्हारे मित्र देश के बाहर भेजने में लगे हुए हैं।"

"क्या तुम उन खजानों का पता लगाने के लिये आए हो?

"हम लोग उन खजानों को खोज निकालने के लिये कृतसंकल्प हैं। उन खजानों में बहुत सी व्यक्तिगत सम्पत्ति भी दबी हुई है। हम लोगों को पता लगेगा तो यह सम्पत्ति जिनकी है उनको लौटा देंगे। दो लाख कलाकृतियां हम इसी प्रकार लौटा चुके हैं। इसके बाद जो धन रह जायगा उसे विजयी सरकारें आपस में बांट लेंगी। यदि तुम्हारी सरकार युद्ध में विजयी होती तो वह भी यही करती।"

"किन्तु यदि तुम युद्ध में हार जाते तो अपना धन छिपा कर रखने का प्रयत्न न करते?"

"अवश्य करते। किन्तु यदि तुम्हारी सहानुभूति नाजी सरकार के साथ है तो तुम्हें वहीं वापस चला जाना चाहिये जहां से तुम आए हो। तुम पूर्वी जर्मनी से आए हो और तुम्हे वहीं लौटना होगा। मेरा प्रस्ताव यह है कि तुम अमेरिका की सरकार की ओर आ जाओ और जो कुछ जानते हो वह बता दो। ग्रण्डल झील से तुम लोगों ने सोने की जो बारह पेटियां निकाली थीं उनका क्या हुआ?"

"मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं, उनके सम्बन्ध में मैं कुछ नहीं जानता।"

"झूठ बोलकर तुम अपनी स्थिति और भी बिगाड़ रहे हो। तुम जानते हो कि वे पेटियां टेगर्नसी आयी थीं और स्वयं हायनरिक ब्रिन्कमान ने इस दल का नेतृत्व किया था। यदि तुम सचमुच नहीं जानते कि ये पेटियाँ कहां पर हैं तो तुम्हें इसका पता लगा कर हमें बताना होगा। तुम्हें अपने अपराधों का यह मूल्य चुकाना ही होगा। तुम अन्य गुप्त खजानों की जानकारी भी हमें दे दो।"

"यदि मैं यह भेद बता दूंगा तो मेरा जीवन एक सप्ताह बीतने के पूर्व ही समाप्त हो जायगा।"

"यदि तुम्हे केवल यह शंका ही विचलित कर रही है तो इसका प्रबन्ध आसानी के साथ किया जा सकता है। हमारी सेना तुम्हारी रक्षा करेगी। हम तुम्हे अपने क़ैदी के रूप में घोषित कर देंगे और ऐसा स्वांग रचेंगे मानों हमने तुमसे यह भेद बलात प्राप्त किया है।"

(९)

फिर कुछ देर के लिये सन्नाटा छा गया। लैनी अपने मानस चक्षुओं से कर्ट के हृदय के अन्दर उठने वाले तीव्र द्वन्द्व को देखने लगा। एक ओर उसका गर्व था, दूसरी ओर परिवार की चिन्ता।

लैनी ने फिर कहना शुरू किया, "कर्ट, तुम मेरे विचारों से अवगत हो और मैं तुम्हारे विचारों को जानता हूँ। मैं समझता हूं कि पश्चिमी संसार की सभ्यता स्टालिन की सभ्यता से कहीं अधिक श्रेष्ठ है। हम लोग पश्चिमी जर्मनी की रक्षा करके उसे एक गणतांन्त्रिक देश के रूप में परिवर्त्तित करना चाहते हैं। अब तुम्हें यह निर्णय करना है कि तुम हमारी सहायता करोगे या स्टालिन की। यदि तुम स्टालिन की ओर जाना चाहो तो मजे में जा सकते हो। हम तुम पर किसी प्रकार का अत्याचार न करेंगे। किन्तु यह तुम्हारा अन्तिम अवसर है। इसके बाद तुम्हें दूसरा अवसर न मिलेगा।"

"तुम जानते हो कि स्टालिन के लिये मेरे मन में कोई सहानुभूति नहीं है।" कर्ट ने धीमे स्वरमें कहा। उसकी आवाज में कटुता का पुट था।

"तुम आयु में मुझसे बड़े हो और इसके अतिरिक्त एक शिक्षित तथा विचार-शील व्यक्ति हो। तुम्हें यह समझने में कोई कठिनाई न होना चाहिये कि आज

स्टालिन पश्चिमी जर्मनी को पराभूत नहीं कर पा रहा तो इसका एकमात्र कारण यहां पड़ी हुई अमरीकी सेना ही है। स्टालिन जानता है कि उसने पश्चिमी जर्मनी की ओर एक कदम उठाया कि उसके सिर पर अणुबम फूट पड़ेगा। इसके अतिरिक्त हम लोग सभ्य और सुसंस्कृत हैं। इस सभ्यता और संस्कृति के कारण ही तुम इस समय आराम के साथ मुझसे बातें कर रहे हो। अन्यथा तुम इस समय किसी कालकोठरी में अंगूठों के बल लटके होते। यही आज आधारभूत प्रश्न है, कर्ट। अब तुम बताओ कि तुम स्टालिन को पश्चिमी जर्मनी से दूर रखने के कार्य में हमारी सहायता करोगे या नहीं? तुम हमारी सद्भावना और सभ्य व्यवहार का उत्तर छल कपट से दोगे या उस कृतज्ञता से जिसकी आशा प्रत्येक सभ्य व्यक्ति से की जाती है?"

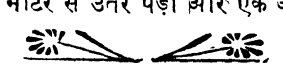
लैनी क्षण भर के लिये रुक कर प्रतीक्षा करने लगा। कुछ देर बाद उसने कहा, "मुझे जो कुछ कहना था मैंने कह दिया। अब मैं अपने एक मित्र से मिलने के लिये जा रहा हूं। कल किसी समय मैं तुम्हारा उत्तर लेने के लिये आऊँगा। और यह मत सोचना कि तुम इटली भाग कर अपनी जान बचा लोगे। हम लोग वहां भी तुम्हें जाली नोट चलाने के अभियोग में गिरफ्तार कर सकते हैं और यह भी समझ लो कि तुमने भागने का प्रयत्न किया तो तुम्हारे बच्चे तुरन्त पूर्वी जर्मनी भेज दिये जायंगे।"

"मैं कहीं भागकर न जाऊंगा।" कर्ट ने निस्तरंग स्वर में कहा।

लैनी भावुक होने लगा, उसका कर्त्तव्यबोध भावुकता के प्रवाह में शिथिल होने लगा। उसने सहृदयता के स्वर में कहा, "तुम और कुछ मत समझ लेना कर्ट। मैं मित्रता के नाम पर तुम से अनुरोध कर रहा हूँ। तुम पश्चिमी संसार के व्यक्ति हो; वहीं वापस आ जाओ।"

"भावुक मत बनो, लैनी।" कर्ट ने उत्तर दिया। "यह एक कठोर समस्या है और मुझे दृढ़ता के साथ इस पर अपना निर्णय करना है। कल मैं तुम्हें अपना उत्तर दूंगा।"

इतना कह कर वह मोटर से उतर पड़ा और एक ओर चल दिया।



चतुर्थ भाग

अध्याय २०

● नये सूत्र की खोज में ●

(१)

लैनी झील से निकलने वाली छोटी सी नदी मङ्गफाल के किनारे किनारे चला। कुछ दूर जाने के बाद वह पूर्व की ओर मुड़ गया। उसका विचार ओवर-साल्जबर्ग जाने का था। हिल्डे वान डोनर्सटाइन एक वाचाल स्त्री थी और उसके पास खबरों का एक अक्षय भंडार रहता था। शायद उसने गुप्त नाजी धन के सम्बंध में कुछ सुना हो! इसके अतिरिक्त पिछली भेंट के समय उसने लैनी को आश्वासन दिया था कि वह प्राचीन कला-कृतियों का पता लगाने का प्रयत्न करेगी। लैनी ने हिल्डे के लिये म्यूनिच में कुछ सुन्दर खाद्य पदार्थ खरीद लिए थे। वह जब कभी किसी जर्मन के यहां भोजन करने के लिए जाता था अपने साथ कुछ न कुछ उपहार ले जाना न भूलता था। कारण, जर्मन लोग इस समय अभावपीड़ित थे।

वह आनन्ददायिनी शीतल समीर की भांति हिल्डे के कमरे में घुसा। वह उन नगरों की यात्रा करके आया था जहां हिल्डे ने अपने जीवन का सबसे अधिक सुन्दर भाग व्यतीत किया था—बर्लिन, पेरिस, लन्दन, न्यूयार्क, यहां तक कि हालीउड! वह उसे उन मित्रों की बातें बता सकता था जो उसे भूल गये थे और जिन्होंने अब पत्र लिखना बंद कर दिया था। हिल्डे ने कहा कि आजकल वह पक्के किसान का जीवन बिता रही है और शीत ऋतु में तो एस्कीमो बन जाती है!

किन्तु इस समय ग्रीष्मकाल था, दोनों सुनहली धूप में बैठ कर बातें कर सकते थे। यहां से हिटलर के ध्वंस्त निवास-स्थान का दृश्य साफ साफ दिखाई देता था: केवल चार वर्ष पूर्व हिटलर ने इस मकान में अपने सेनापतियों की समिति के सम्मुख योरोप के सम्बंध में अपनी सहस्रवर्षीय योजना प्रस्तुत की

थी। किन्तु आज उसका नाम निशान न रह गया था। उसकी हड्डियां तक जल कर राख हो गयी थीं और एक अरुचिकर दुर्गन्ध के अतिरिक्त वह अपने पीछे और कुछ छोड़ कर न जा सका था। कुछ पूर्व की ओर डाकुओं और आतंकवादियों के एक नये दल का चिन्ह दिखाई देता था। यह नया आतंकवादी दल था सोवियत रूस के उन डाकुओं का जिन्होंने आस्ट्रिया के एक भाग पर अपना अधिकार जमा लिया था। इस समय लैनी विचारों में उलझा हुआ था : इन नये डाकुओं की नियत क्या है? क्या ये लोग युद्ध चाहते हैं? और क्या वे लोगों की आशंका के अनुसार सचमुच सारे बर्लिन पर अपना अधिकार जमा लेंगे?

किन्तु लैनी हिल्डे से यह सब न कह सकता था। उससे तो उसने यही कहा कि जहां तक उसका विश्वास है वे लोग युद्ध नहीं चाहते। किन्तु वे लोग ऐसी बहुत सी बातें चाहते हैं जो युद्ध के बिना प्राप्त नहीं की जा सकतीं। प्रश्न यह था कि इन बातों के लिए उनकी इच्छा कितनी प्रबल है। इसका निर्णय क्रेमलिन के उस छोटे से गुट के हाथ में था जिसके विचारों का कोई अनुमान लगाना सम्भव न था।

लैनी ने हिल्डे के साथ अन्य विषयों की चर्चा छेड़ी। वह हाल ही में फ्रेन्च रिवेयरा में वियेनबेनू नामक अपने मकान में रह कर आया था। उसने हिल्डे को बताया की ब्यूटी के बाल अब सफेद हो गये हैं यद्यपि अब भी उन पर नीले रंग का एक हल्का सा पुट है। उसने उसे मार्सेलीन के नये बच्चे की बात भी बतायी और सोफी के गठिया रोग की चर्चा की। लन्दन की चर्चा करते हुए उसने बताया कि इर्मा ने आयकर बचाने के लिये एक नया उपाय खोज निकाला है। उसने हिल्डे को पेरिस की हड़ताल तथा रेम्ब्राण्डट् के उस भव्य चित्र की बात भी बतायी जो उसने हाल ही में खरीदा था। एडगरमीयर तथा शान्तिरेडियो की चर्चा भी हुई। उसने जेनी तथा डे लायले के शानदार जीवन की चर्चा करते हुए कहा कि ऐसा प्रतीत होता है मानो सारी सुरुचि और संस्कृति हालीउड चली गई हो। हिल्डे ने खेदपूर्ण स्वर में कहा "योरोप तो वीरान हो गया है!"

लैनी ने वे सुस्वादु खाद्य पदार्थ निकाले जो वह अपने साथ लाया था। दोनों ने प्रीत के साथ भोजन किया। इसके बाद उन्होने रेडियो पर म्यूनिच केन्द्र से

प्रसारित होने वाली खबरें सुनीं। खबरों के बाद रेडियो पर एक संगीत आयोजन प्रारम्भ हुआ। लैनी और हिल्डे इस संगीत से इतने अधिक उत्तेजित हो गए कि उस विशाल सूने से बैठकखाने में वाल्ज-नृत्य करने लगे। हिल्डे की अपन्ग बहन दोनों को नाचते हुए देखकर हंसने लगी। बैठकखाने की शून्यता को देखकर लैनी ने मन ही मन अनुमान लगा लिया कि हिल्डे को भूख की ज्वाला मिटाने तथा टैक्स चुकाने के लिए अपना फर्नीचर बेचने के लिये वाध्य होना पड़ा होगा।

(२)

इस पहाड़ी अंचल में शानदार मकानों की कमी न थी। प्रातःकाल लैनी को कुछ कला-कृतियों का संवाद मिला और वह इनका निरीक्षण करने के लिए चला गया। उसने इनके सम्बंध में आवश्यक नोट ले लिए और मूल्य आदि के सम्बंध में समुचित जानकारी प्राप्त कर ली। इसके बाद वह उदास मन से टेगर्नसी की ओर रवाना हुआ।

उसने अपनी गाड़ी कर्ट के मकान से कुछ दूरी पर खड़ी करदी और आगे बढ़ा। कर्ट ने तुरन्त बाहर आकर गम्भीर स्वर में कहा, "मैंने अपना निर्णय कर लिया है। तुम्हारी शक्ति मेरी शक्ति से बड़ी है और उसके सामने मुझे झुकना ही पड़ेगा। मैं आज से नाजी आन्दोलन के साथ किसी प्रकार का सम्बंध न रखूंगा और अपने वचन का पूर्णरूप में पालन करूंगा।"

"देखो कर्ट, तुमने एक बार पहले भी वचन दिया था किन्तु इसके बाद तुमने उसका पालन नहीं किया। इस बार यदि तुमने अपना वचन भंग किया तो तुम्हें तुरन्त इस देश से निर्वासित कर दिया जायगा। इस बार किसी प्रकार की उदारता न दिखाई जायगी।"

"मैं इस बात को समझता हूं।"

"तुम्हे यह भी समझ लेना चाहिए कि अधिकृत रूप में मुझे तुम्हारे साथ किसी प्रकार का समझौता करने का अधिकार नहीं है। मैं ए० एम० जी का अधिकारी नहीं हूं। मैं तो तुम्हारा एक मित्र मात्र हूँ और इस आधार पर ही मैंने ए० एम० जी से अनुरोध किया था कि मुझे एक बार तुमसे मिल कर वस्तुस्थिति स्पष्ट करने की अनुमति दी जाय। ए० एम० जी ने मुझे अपनी शर्तें बता दीं :

प्रथम शर्त यह है कि तुम हम लोगों की ओर आ जाओगे और इस गुप्त नाजी आन्दोलन के सम्बंध में सारी जानकारी सरकार को दे दोगे। इसके बाद ही ए० एम० जी इस बात का निर्णय करेगी कि वह तुम्हारा विश्वास करे या न करे।"

"मैं समझता हूं। मैं इसी समय तुम्हे वह सब बताने के लिए तयार हूं जो मैं जानता हूं।"

लैनी अपने साथ एक नोटबुक लेता आया था। किन्तु उसे इस बात की आशा बहुत कम थी कि वह काम में आयेगी। अब उसने अपनी जेब से कलम और नोटबुक निकाल कर नोट लेने शुरू किये। कर्ट ने आल्टआउसे ज़िले में छिपाये गए नाजी गुप्त धनों का विवरण देना शुरू कर दिया। इन गुप्त खजानों को दफनाने का कार्य हिटलर की तूफानी सेना के दो जेनरलों, स्टेफन फ्रोहलिच तथा आर्थर शील्डर को सौंपा गया था। तूफानी सेना के प्रधान अधिकारी जेनरल आर्न्सट् काल्टेनब्रनर जिसे नूरेनबर्ग में मृत्युदण्ड प्राप्त हुआ था के पास से प्राय: एक करोड़ डालर के मूल्य का सोना चांदी तथा हीरे जवाहरात बरामद हुए थे। कर्ट के अनुसार गुप्त रूप में दफनाए गए खजानों का कुल मूल्य चार से पांच करोड़ डालर के लगभग निकलता था। गत २ मई १९४५ को आल्टआउसे में विशाल धन राशि दफन होने के लिए आयी थी। इसमें सोने से भरी हुई वे २२ पेटियां भी सम्मिलित थीं। बाल्कान देशों से बहुत सा नकद रुपया भी आया था जो नाजियों के गुप्त एजेंटों ने वसूल किया था। इसके अतिरिक्त ओटो स्कोजेनी—जिसे मुसोलिनी को छुड़ाने का कार्य सौंपा गया था—का 'विशेष कोष' भी था। सोने तथा हीरे जवाहरात के अतिरिक्त नाजियों के इस गुप्त खजाने में काफी बड़ी तादाद में बहुमूल्य मादक द्रव्य भी थे। इन मादक द्रव्यों का मूल्य सोने से भी बढ़कर था।

इन सब खजानों का क्या हुआ? थोड़ी थोड़ी तादाद में इन्हें खोद कर नाजी नेता लोग जर्मनी से भागते समय अपने साथ ले गए थे। वे भाग कर टायरल गये, वहां से स्विटजरलैंड और स्विटजरलैंड से वायुयान द्वारा मध्य पूर्व के देशों में पहुंच गये। जेनरल आइकमन, ब्रिगेडियर हैन्सी हिर्लेबैंगर और ब्रिगेडियर फ्रेडरिक काटजमान इसी रास्ते से भागे थे। इन लोगों पर ही नाजी

शासन काल में यहूदियों की सामूहिक हत्या का भार था। इस समय ये लोग जेरूसलम के 'ग्रैण्ड मुफ्ती' के यहाँ काम कर रहे थे। इस समय 'ग्रैण्ड मुफ्ती' कैरो में निवास कर रहे थे और ये भूतपूर्व नाजी नेता भी उनके साथ थे।

कुछ नाजी नेता ब्रेनर दर्रे से होकर मिलन की ओर भाग गये थे। इनकी गाड़ियों पर राजनैतिक पदाधिकारियों के चिन्ह अंकित थे और नियम के अनुसार आस्ट्रिया की पुलिस इन गाड़ियों की तलाशी न ले सकती थी। इन भगोड़े नाजी नेताओं ने मैड्रिड की गुप्त राजनैतिक संस्था 'ब्लेक हण्टर' में योगदान किया था। यह गुप्त संस्था मैड्रिड के जर्मन राजदूतावास की भूतपूर्व सेक्रेटरी काउण्टेस हेल्गा वान मिन्केन्स्टाइन के तत्वावधान में चल रही थी। लैनी ने कहा, 'मैड्रिड में उसके साथ मेरी मुलाकात हुई थी'। इस संस्था में ओटो स्कोरजेनी एक प्रमुख व्यक्ति था और हिमलर के भतीजे ने भी यहाँ कुछ दिन काम किया था। इसके बाद वह अर्जेंनटाइन जाकर व्यापार करने लगा था।

नाजी प्रचार कार्य के लिए मैड्रिड की यह गुप्त संस्था एक अच्छा साधन थी। कर्ट ने इसके कई सदस्यों के नाम बताए। एक फ्रांसीसी, जीनआन्द्रे, जो पहले हिटलर की तूफानी सेना में था, इस संस्था का सदस्य हो गया था। बेल्जियम का नाजी नेता लिओन डेग्रोले भी इसका सदस्य था। यहीं से सारे योरोप तथा दक्षिणी अमेरिका में नाजियों का प्रचार कार्य अनवरत रूप में चलता रहता था।

"मैं जानता हूं।" लैनी ने कहा, "मैंने उस पत्र को पढ़ा है जो जेनरल अल्फ्रेड जोड़ल ने फांसी पर चढ़ने के पूर्व नूरेम्बर्ग की जेल से अपनी पत्नी को भेजा था।"

(३)

कर्ट ने लैनी को उन गुप्त संगठनों का भेद भी बताया जो सारी जर्मनी में फैले हुए थे। ये सांकेतिक शब्दावली का व्यवहार करते थे। किन्तु कर्ट ने इन व्यक्तियों के नामों और ठिकानों के सम्बन्ध में कुछ न बताया। उसने कह दिया कि उसे इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। लैनी ने प्रश्न किया, "वाल्टर ग्रेसमायर कहां है?" जब कर्ट ने इस सम्बन्ध में अपनी अनभिज्ञता प्रकट की लैनी

ने कहा, "सुना जाता है कि वह म्यूनिच के पास ही कहीं छिपा हुआ है और इस बात की पूरी पूरी सम्भावना है कि तुम उसे जानते हो।"

कर्ट ने फिर अपनी अनभिज्ञता प्रकट की। लैनी ने यूगेन डोलमान के सम्बन्ध में प्रश्न किया और फिर एमिल बेण्डीडोर के सम्बन्ध में। किन्तु कर्ट ने कहा कि उसे इन लोगों की कोई जानकारी नहीं है। अन्त में लैनी ने कहा "तुम्हारी बातें बड़ी दिलचस्प हैं। मैं किसी समय पत्र-पत्रिकाओं के लिए कोई कहानी लिखूंगा तो इनका उपयोग कर लूंगा। किन्तु यदि तुम यह सोच रहे हो कि सरकार तुम्हारी इन बातों से संतुष्ट हो जायगी तो तुम गलती करते हो। तुम केवल उन व्यक्तियों के नाम बता रहे हो जो विदेशों में हैं और जिनका हम कुछ बिगाड़ नहीं सकते। मैड्रिड तथा ब्यूनस आयर्समें हमारा जो गुप्तचर विभाग है वह इससे दसगुना अधिक जानता है। मैं यहां तक जानता हूँ कि ओटो स्कोरजेनी ने अपना नाम बदल कर स्टाइनबर्गर रख लिया है और शान शौकत के साथ अपना जीवन व्यतीत कर रहा है। यह सब तो ठीक है। किन्तु जब मैं तुमसे उन लोगों के बारे में प्रश्न करता हूं जो यहां बबेरिया में काम कर रहे हैं तो तुम मौन साध लेते हो। मैं जानता हूँ कि तुम सक्रिय रूप में इन व्यक्तियों के साथ सम्बन्धित थे।"

"यह सत्य नहीं है, लैनी। मैं इस गुप्त संगठन के लिए लेख आदि अवश्य लिख देता था किन्तु व्यवहारिक स्तर पर उसके साथ मेरा कोई सम्बन्ध न था।"

"तुम अपने लेख वहां तक कैसे भेजते थे?"

"इन्हे मैं जोहान जोसेफ शूल्ज नामक एक व्यक्ति को दे देता था। किन्तु वह अपने काम से घबरा कर प्रायः एक मास पूर्व भाग गया। इस समय वह कहां है इसका मुझे कोई पता नहीं है।"

"और तुम यह भी नहीं जानते कि नाजियों के गुप्त खजाने कहां पर छिपे हुए हैं?"

"मुझे सचमुच कुछ पता नहीं है। मैंने सुना है कि सारे खजाने यहां से बाहर भेज दिये गये हैं।"

"वे बारह सोनेकी पेटियां जो ब्रिन्कमान ने ब्रिन्डलसी झीलसे निकाली थीं?"

"उसने ये पेटियां कब निकाली थीं, इसकी मुझे कोई जानकारी नहीं है।"

"कर्ट, तुम जानते हो कि अमेरिका में एकबार भीषण गृह-युद्ध हुआ था। गृह-युद्ध में दक्षिण की हार हुई थी। किन्तु युद्ध में हार जाने के बावजूद बहुत से लोगों ने आत्मसमर्पण करने से इनकार कर दिया था। वे छिपे छिपे षड़यन्त्र रचते रहे थे। किन्तु इससे कोई लाभ न हुआ था। आज हमारे देश में शान्ति है और लोग उस गृह-युद्ध को भूल चुके हैं। मैं आशा करता हूं कि नयी जर्मनी में भी ठीक यही होगा। मैं अपने मन में यह आशा लेकर चला था कि तुम्हे एकबार फिर समझा बुझा कर उचित मार्ग पर लाने का प्रयत्न करूं। किन्तु मैं असफल रहा। अब मेरे सामने इसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं है कि मैं वापस लौट कर सेना विभाग से कह दूँ कि उसे तुम्हारे सम्बन्ध में जो कुछ करना हो करे। तुमने मुझे सदा छोटा समझा है और अपने सम्बन्ध में एक प्रकार के बड़प्पन की धारणा रखी है। मैंने इस प्रसंग में कभी आपत्ति भी नहीं की क्योंकि आयु में तुम मुझसे बड़े हो और बुद्धि में भी मैं तुम्हें अपने से बड़ा मानता आया हूं। किन्तु अब मेरी धारणा बदल गयी है। मैं देख रहा हूँ कि तुम मूर्ख हो। मुझे तुम्हारे ऊपर दया आती है। किन्तु मैं तुम्हारी कोई सहायता करने में असमर्थ हूं। अब मैंने तुम्हारे सम्बन्ध में सारी आशाएं छोड़ दी हैं। मैं जा रहा हूं और दुबारा तुम्हे परेशान करने के लिये न आऊंगा।"

(४)

यह संकेत कर्ट के लिए स्पष्ट था। उसे लैनी की मोटर से निकल कर बाहर आ जाना चाहिये था। किन्तु वह पूर्ववत बैठा रहा। उसकी भौंहें तनी हुई थीं और वह मन ही मन किसी उधेड़ बुन में लगा हुआ था। लैनी प्रतीक्षा करने लगा।

"मैं तुमसे कह चुका हूं कि मैं इस नये नाजी आन्दोलन से अलग होना चाहता हूं। इसे छोड़ना ही पड़ेगा। किन्तु मैं तुम्हे इस आन्दोलन के नेताओं के नाम नहीं बता सकता क्यों कि इससे मेरा जीवन खतरे में पड़ जायगा। मैं अपने जीवन को विशेष महत्व नहीं देता किन्तु बच्चों का प्रश्न महत्वपूर्ण है। तुम मुझे जो यह आश्वासन देते हो कि मेरी रक्षा करोगे उसका कोई विशेष मूल्य नहीं है।

क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारे आदमी सुस्त और काहिल हैं किन्तु मेरे आदमी सतर्क और कृतसंकल्प हैं।"

"मेरे आदमी इतने सुस्त नहीं हैं कि तुम्हारे वक्तव्य को ज्यों का त्यों स्वीकार कर लें। यदि तुम्हें और कुछ नहीं बताना तो सौदा समाप्त समझो।"

"मैं तुम्हें एक वस्तु और दे सकता हूं—रुपया। मेरा विश्वास है कि तुम्हारी अमरीकी सरकार को इस वस्तु की ही सबसे अधिक आवश्यकता है।"

"मेरी अमरीकी सरकार जर्मन जनता का पेट भरने के लिये करोड़ों डालर खर्च कर रही है। इसका एक अंश भी चुराए हुए नाजी खजानों से पूरा नहीं हो सकता। कोई भी विवेकशील व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि हम रुपये के लोभ से जर्मन जनता को खिला रहे हैं। कोई नाजी भी यह दावा नहीं कर सकता।"

"मेरी स्वतन्त्रता के लिये ए० एम० जी० कितना रुपया लेना चाहेगी?"

"तुम गलत प्रस्ताव कर रहे हो, कर्ट। तुम पूर्वी जर्मनी से उड़ाकर नहीं लाए गए हो बल्कि स्वेच्छा से आए हो। तुम एक शरणार्थी के रूप में यहां आए थे और तुमने जो वचन सरकार को दिया था उसका भी पालन नहीं किया। हम लोग नाजियों और कम्युनिस्टों की भांति निर्दय नहीं हैं। हम लोग तुम्हे जेल में बन्द करके तुम पर अत्याचार न करेंगे। हम तुम्हे वहीं भेज देंगे जहां से तुम आए हो।"

"अच्छी बात है, लैनी। शब्दों को लेकर झगड़ा करने से कोई लाभ नहीं। तुम यह बताओ कि ए० एम० जी० कितना रुपया लेकर मुझे यहां पर रहने की छूट प्रदान कर देगी? मैं यह वचन देता हूं कि भविष्य में मैं किसी प्रकार की राजनैतिक क्रियाशीलता में भाग न लूंगा और अपना सारा समय संगीत की साधना में लगाऊँगा।"

"तुम खुलेआम राजनीति से अवकाश ग्रहण करने की घोषणा करोगे?"

"मैं व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक दोनों ही रूपों में यह घोषणा करूंगा। मैं अपने वचन का पालन न करूं तो तुम्हारी सेना वालों को यह अधिकार रहेगा कि वे मुझे गोली मार दें।"

"मैं तुम्हारे इस प्रस्ताव का कोई उत्तर नहीं दे सकता, कर्ट, क्योंकि मैं संदेश वाहक मात्र हूं। इसका निर्णय ए० एम० जी० ही कर सकती है। यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हारा प्रस्ताव वहां तक पहुँचा सकता हूं।"

"अच्छी बात है। तुम ए० एम० जी० को मेरा यह प्रस्ताव दे दो कि मैं उसे अपनी स्वतन्त्रता के लिये साठ से अस्सी लाख डालर तक का सोना दे सकता हूँ।"

"यह सोना किसका है?"

"यह सोना नये नाजी आन्दोलन की सम्पत्ति है। यह गुप्त धन है। मुझे यह सोना इसलिये सौंपा गया था कि मैं इसकी रक्षा करूं। मेरे आत्म-सम्मान पर विश्वास करके ही मुझे यह उत्तरदायित्व सौंपा गया था। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे दलमें भी देशद्रोही आ गए हैं। कम से कम एक व्यक्ति ने दल के साथ विश्वासघात किया है।"

"मुझे इस सम्बन्ध में पूरी जानकारी नहीं है किन्तु इतना मैं कह सकता हूँ कि तुम्हारे साथ कई व्यक्तियों ने विश्वासघात किया है।"

"हमारा सारा आन्दोलन इन विश्वासघातियों के कारण छिन्न भिन्न हो रहा है। वस्तुस्थिति को अस्वीकार करने में कोई लाभ नहीं है। जिन लोगों पर हमने विश्वास किया था अथवा जिन पर विश्वास करने के लिए हम बाध्य थे वे करोड़ों डालर की सम्पत्ति लेकर स्पेन, ब्रेजील, अर्जेण्टाइन, मिस्र और मोरक्को भाग गए। वे लोग आज आमोद प्रमोद के साथ अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आज उन्हें उस आन्दोलन का कोई ध्यान नहीं है जिसने उन्हें कूड़े से निकाल कर समाज के उच्च स्तर पर आसीन किया था। मुझे यह आदेश दिया गया है कि मैं इस सोने को छिपाए रखूं। किन्तु मैं जानता हूँ कि दो दिन आगे या दो दिन पीछे मुझे इसे किसी न किसी व्यक्ति को सौंप देना पड़ेगा और यह व्यक्ति विदेश जाकर इस सोने से गुलछर्रे उड़ाएगा। रात भर मैं इस प्रश्न पर विचार करता रहा कि क्या मैं इस प्रकार के विलासी व्यक्तियों के लिए अपने बच्चों का भविष्य नष्ट कर दूं! मुझे अपनी कला का ध्यान आया था। किन्तु उसकी बात सोचना व्यर्थ है। अब मैं किसी उपयोगी संगीत की रचना शायद ही कर सकूं।"

कर्ट क्षण भर के लिये रुक गया। लैनी ने कहा, "कर्ट, तुम्हे एक बार प्रयत्न करके देखना चाहिये। इस समय तुम्हारे मन की सारी शक्ति ध्वंसात्मक क्रियाशीलता की ओर लगी हुई है।"

"बहुत दिनों से मैं अन्य किसी बात पर सोच ही नहीं पाता। किन्तु अब मैंने निश्चय कर लिया है। मैं यह खजाना तुम लोगों को सौंप दूंगा। किन्तु इसकी व्यवस्था इस प्रकार होनी चाहिए कि संसार यह समझे कि ए० एम० जी ने स्वयं इस खजाने का भेद प्राप्त करके इस पर अधिकार किया है।"

"ए० एम० जी को इस पर कोई आपत्ति न होगी, इसका मुझे पूर्ण विश्वास है।" लैनी ने कहा। और कोई समय होता तो लैनी इस बात को मुस्करा कर कहता किन्तु इस समय वह विनोद की मुद्रा में न था।

'तुम्हारी सेना को आकर मेरे घर पर छापा मारना पड़ेगा। उसे मुझे गिरफ्तार करके कुछ समय के लिये हाजत में रखना पड़ेगा। मेरे प्राणों की रक्षा का यही एक उपाय है। अन्त में सेना विभाग वाले यह वक्तव्य निकाल दें कि पर्याप्त प्रमाणों के अभाव में मुझे छोड़ दिया गया। तुम एक चालाक व्यक्ति हो और सेना विभाग को कोई मनगढ़न्त कहानी रचकर दे सकते हो कि उसे गुप्त खजाने का भेद किस प्रकार प्राप्त हुआ। सोने की ये पेटियां ग्रन्डलसी झील से आयी थीं और तुम्हारे सेना विभाग को इस बात का पता है ही कि इन पेटियों को ब्रिन्कमान लाया था। इसलिये सारा दोष उसके गले मढ़ा जा मकता है।"

"यह एक आसान काम है।" लैनी ने प्रफुल्ल स्वर में कहा। वह इस समय उतना ही उत्तेजित हो गया था जितना कि बचपन में 'ट्रेजर आइलैण्ड' पढ़ते समय हुआ था। कुछ ठहर कर उसने कहा, "सम्भव है सेना विभाग को सारी बातों का पता हो।"

"यदि ऐसा होता तो वे लोग तुम्हें भेजने के स्थान पर स्वयं यहां आ गए होते।" कर्ट ने शुष्क स्वर में कहा।

(५)

"मेरे साथ आओ" कर्ट ने मोटर का दरवाजा खोलकर लैनी को बाहर आने का संकेत किया। दोनों साथ साथ एक ओर जाकर झाड़ियों की घनी कतार के

पीछे खड़े हो गए। कर्ट ने अपने नव-निर्मित मकान की ओर हाथ उठाकर कहा, "इस मकान को देखते हो न? यह काफी मजबूती के साथ बना है। इसमें छै कमरे हैं। इसकी दीवारें खोखली ईंटों से बनी हैं और इसकी नींव मजबूत कांक्रीट की है। इसमें आग नहीं लग सकती। परिवार के लिये एक स्थायी निवास स्थान बन गया है। बन्दी शिविरों में यहूदियों की लाशों को जलाने के पहले उनके मुंह से सोने के दांत तोड़ लिये जाते थे। उस सोने की छै पेटियां काले बाजार में बेचकर यह जायदाद बनायी गयी है। इस विषय पर ही एक गीत की रचना हो सकती है। है न लैनी?"

"हां।" लैनी ने निस्तरंग स्वर में कहा।

"मैं यह मकान तुम्हारी ए० एम० जी को नहीं दे रहा।" वह ए० एम० जी के साथ सब समय 'तुम्हारी' का प्रयोग करता था मानों वह लैनी की व्यक्तिगत सम्पत्ति हो और वही इसकी सारी बुराइयों के लिये उत्तरदायी हो। "मुझे यह मकान अपने परिवार के लिये आवश्यक है। ए० एम० जी के साथ मेरे प्रस्ताव की चर्चा करते हुए तुम इस बात को भली भांति स्पष्ट कर देना कि वे लोग इस मकान को तोड़ फोड़ कर नष्ट कर देने की कल्पना न करें।"

"वे तुम्हारे मकान को भला तोड़ना क्यों चाहेंगे?"

"मैं चाहता हूं कि वे लोग कुछ कुशल राजमिस्त्रियों के साथ यहां आवें। जर्मनी में बहुत से कुशल राज-मिस्त्री हैं। इन्हें खोजने में कोई कठिनाई न होगी। ये राज-मिस्त्री मेरे मकान की नींव के आस पास की भूमि खोदें किन्तु इस बात का ध्यान रहे कि इमारत पर कोई आघात न लगने पावे। यह मकान एक विशेष ढंग से बनाया गया है। नींव कहीं पर सच्ची है और कहीं पर दिखावटी। असली नींव और नकली नींव के बीच जो भूमि है वहां दो हजार एक सौ सैंतालीस सोने की ईंटें छिपी हुई हैं। सम्भव है इनमें से कुछ चुरा ली गयी हों किन्तु अधिकांश अभी सुरक्षित हैं। ये ईंटें असली सोने की हैं जिसकी परीक्षा म्यूनिच के सरकारी टकसाल में हुई थी। जिस समय तुम्हारे जेनरल पैटन की सेनाएं तेजी के साथ आ रही थीं इन ईटों को ग्रण्डलसी झील में डाल दिया गया था। इसके बाद जैसा कि तुम जानते ही हो, ये ईंटें अभी हाल ही में वहाँ से

निकाल ली गयी थीं : इन्हें लाकर इस मकान में रख दिया गया था। मेरे कुछ सहयोगी इस बात को जानते थे कि मैं अपने लिये एक नया मकान बनवा रहा हूँ। उन्होंने मुझसे यह प्रस्ताव किया था कि मैं इस सोने को मकान की नींव में छिपा दूं। मैंने इस सोने को कभी गिना नहीं है। किन्तु मुझसे कहा गया था कि इसका मूल्य साठ से अस्सी लाख डालर के लगभग होगा। अब मेरा प्रस्ताव यह है कि ए० एम० जी० यह सोना लेकर मुझे यहाँ रहने की स्वतन्त्रता दे दे।"

"इसका प्रबन्ध हो जायगा, कर्ट।" लैनी ने गम्भीर स्वरमें उसे आश्वासन दिया। लैनी सुप्रसिद्ध बड-अलिन्ग परिवार का पुत्र था किन्तु उसने भी कभी इतनी बड़ी धनराशि न देखी थी।

"मैंने नये नाजी आन्दोलन के साथ विश्वासघात किया है।" कर्ट ने खेद-पूर्ण स्वर में कहा। "मैंने अपने नेता हिटलर की स्मृति के प्रति विश्वासघात किया है। मैंने अपनी कला और अपने जीवन-दर्शन के प्रति विश्वासघात किया है। आज मैं एक पराजित व्यक्ति हूं। किन्तु इतना सब होते हुए भी मैं जीवित रहना चाहता हूं क्योंकि मुझे अपनी पत्नी तथा बच्चों का लालन पालन करना है। मैं आशा करता हूं कि मैं अपने बच्चों को अपनी तुलना में अधिक बुद्धिमान बनाने में सफल होऊंगा।"

क्षण भर के लिये कर्ट रुक गया। इसके बाद उसने अचानक लैनी से कहा, "अब तुम जाओ!" वह चुपचाप मुड़कर घर की ओर चल दिया। लैनी ने भी कुछ न कहा। वह चुपचाप अपनी मोटर में बैठकर म्यूनिच की ओर रवाना हो गया।

(६)

रास्ते में लैनी इस प्रश्न पर गम्भीरतापूर्वक सोचने लगा। होलजकिर्चन नामक शहर में रुक कर वह एक सार्वजनिक टेलीफोन-गृह में घुसा। यह टेलीफोन-गृह एक काफे में था। वहाँ पर काफी भीड़ थी। यह ठीक था कि उसे बातें अंगरेजी में ही करनी थीं किन्तु वह जानता था कि अधिकांश शिक्षित जर्मन अंगरेजी समझते हैं। उसने मान्क के साथ सांकेतिक भाषा में बातें करने का निश्चय किया।

"मैं स्टीवेन्सन की वह कहानी पढ़ रहा था, मान्क। याद है न तुम्हे ?"

"हां, हां। मुझे याद है।" मान्क ने टेलीफोन पर उत्तर दिया।

"बड़ी आश्चर्यजनक कहानी थी वह। उस कहानी के नायक का नाम था बूढ़ा फर्डीनेण्ड। कहानी में वह समुद्री डाकुओं के हाथ पड़ जाता है और अपने प्राणों के लिए भयभीत हो जाता है। बात यह है कि उसका गुप्त धन बहुत मूल्यवान था—कई करोड़ की सम्पत्ति थी। उसे भय था कि यदि डाकुओं को इस बात का पता चल जायगा कि वह उन्हे धोखा देने का प्रयत्न कर रहा है तो उसकी जान के लाले पड़ जायंगे। सम्भव है वह डर कर विदेश भाग जाय। डाकुओं के जासूस उस पर अवश्य निगरानी रखते होंगे और उन्होंने उसे शत्रु के साथ बातें करते हुए देख लिया होगा। सारा मामला एक सनसनीखेज दुखान्त नाटक की भांति है। बहुत दिनों बाद मैंने ऐसी सुन्दर कहानी पढ़ी है।"

"मैं तुम्हारी बात समझ गया।" मान्क ने आश्वासन के स्वर में कहा।

"मैं इस कहानी की फिल्म बनाना चाहता हूं। मैं इसे लेकर म्यूनिच जा रहा हूं। क्या तुम कोई सलाह दे सकते हो कि इसे मैं किसके पास ले जाऊं ?"

"कर्नल आर्मस्ट्रान्ग के पास।" मान्क ने स्पष्ट स्वर में कहा। वह किसी काफे से न बोल रहा था और इसलिये उसे लैनी की भांति सतर्कता की कोई आवश्यकता न थी।

"अच्छी बात है। क्या तुम उन्हें टेलीफोन करके सूचित कर दोगे कि मैं उनके पास आ रहा हूँ ?"

"मैं उन्हें अभी टेलीफोन किये देता हूं। बधाइयां !"

(७)

लैनी ने टेलीफोन रख दिया और काफे के बाहर चला आया। काफे के ग्राहकगण इस एकांगी वार्त्तालाप का क्या अर्थ लगा सकते थे ? हालीउड के फिल्म निर्माता म्यूनिच में कई बार आ चुके हैं किन्तु होल्जकिर्चन जैसे छोटे से नगर के लिये यह एक अभूतपूर्व घटना थी।

म्यूनिच पहुंचने में लैनी को प्रायः आधे घण्टे का समय लगा। शीघ्र ही

उसने कर्नल आर्मस्ट्रान्ग के कार्यालय का पता लगा लिया। ज्यों ही उसने उनके कार्यालय के सामने अपनी गाड़ी खड़ी की त्यों ही उसने देखा कि दो जीपों में अमरीकी सैनिक अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित तयार खड़े हैं। उसे यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

लैनी ने अन्दर जाकर कर्नल को सारी बातें बता दीं। किन्तु खुफिया विभाग के पदाधिकारी के लिये यह कहानी उतनी आश्चर्यजनक न प्रमाणित हुई जितनी कि लैनी ने कल्पना कर रखी थी। कर्नल ने कहा कि यह प्रथम अवसर नहीं है कि किसी नाजी नेता ने अपने मकान की नींव में सोने की ईंटें लगाने की कल्पना की हो। सोने पर मौसम का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसलिये यदि कोई व्यक्ति जानबूझकर अपना भेद न बता दे तो नींव में पड़ा हुआ सोना अनन्तकाल तक उसी रूप में पड़ा रह सकता है।

"किन्तु क्या आप को इस बात का पूरा पूरा निश्चय हो गया है कि कर्ट ने आपको चकमा देने का प्रयत्न नहीं किया?"

लैनी ने कहा कि उसे पूरा विश्वास है। वह कर्ट को बहुत दिनों से जानता था और इस बात से अवगत था कि कर्ट कभी अभिनय नहीं कर सकता। प्रश्न यह था कि कर्ट के पास बहुत से भेद थे और उसके साथ समुचित रूप में व्यवहार हुआ तो उससे ये भेद प्राप्त हो जाने की आशा थी। लैनी ने कहा कि आखिर कर्ट एक महान व्यक्ति है और उसके साथ नम्रता का व्यवहार होना आवश्यक है। उसकी गिरफ्तारी नकली थी किन्तु उसे इस प्रकार सजाना आवश्यक था कि वह संसार को असली प्रतीत हो। अन्यथा उसके सहयोगी उसका काम तमाम करने में क्षण मात्र का विलम्ब न करेंगे। कर्नल आर्मस्ट्रान्ग तथा लैनी ने निश्चय किया कि कर्ट के निवासस्थान पर सैनिकों का पहरा बैठा दिया जाय ताकि उसके सहयोगी रात के समय इस गुप्त खजाने को खोद कर निकाल ले जाने का प्रयत्न न कर सकें। रात बीतने पर सबेरे सरकार के राज-मिस्त्री आ जाएंगे और जमीन के अन्दर से सोने की वे ईंटे विधिवत रूप में निकाल ली जाएंगी।

"उन राज-मिस्त्रियों को यह कड़ा आदेश दे दीजिए कि मकान को किसी प्रकार की क्षति न पहुंचने पावे। कर्ट इसे कभी क्षमा न करेगा।"

जिस सर्जेण्ट को इस मामले का उत्तरदायित्व लेना था उसे बुलाकर सारे आदेश दे दिये गए। इसके बाद लैनी ने मान्क को टेलीफोन किया। यहां से वह मान्क को सारी घटना स्पष्ट रूप में बता सकता था। किन्तु टेलीफोन करने पर ज्ञात हुआ कि मान्क वायुयान द्वारा म्यूनिच के लिए रवाना हो चुका है।

म्यूनिच और बर्लिन के बीच वायुयान घण्टे घण्टे के अन्तर से चलते रहते थे। लैनी बाहर से कुछ नाश्ता करके लौटा तो देखा कि मान्क उपस्थित है। तुरन्त उच्चपदस्थ सैनिक अधिकारियों की एक गुप्त सभा हुई। लैनी ने कर्ट मेसनर के सम्बन्ध में सब कुछ बता दिया। किन्तु वह यह कहना न भूला कि कर्ट एक गर्वित देश का दर्पपूर्ण नागरिक है—यद्यपि आज वह देश तथा उसका नागरिक दोनों ही पराभूत हो गए हैं। यह निश्चय हुआ कि उसके साथ शिष्टता का व्यवहार होगा—ठीक वैसा ही जैसा कि एक महान कलाकार के साथ होना चाहिए।

(८)

सर्जेण्ट को यह आदेश दिया गया था कि वह वहां पहुँचते ही कर्ट को म्यूनिच भेज दे। रास्ता केवल एक घण्टे का था। शीघ्र ही कर्ट को लेकर कुछ सैनिक आ पहुँचे। लैनी ने अधिकारियों के साथ कर्ट का परिचय कराया। उन्हो ने उसके साथ हाथ मिलाया और शिष्टता का व्यवहार किया। उन्होने कर्ट से कहा, कि "आपने हम लोगों की जो सहायता की है उसके लिए हम आपके आभारी हैं। हम सारी व्यवस्था आपकी रुचि के अनुकूल करने का भरसक प्रयत्न करेंगे। आप किस स्थान में ठहरना अधिक पसंद करेंगे?"

कर्ट ने कहा कि उसके लिए सब स्थान एक से हैं। "यदि 'बोल्किश्चरबण्ड' को इस बात का पता चल जायगा कि गुप्त खजाने का भेद मैंने स्वयं आपको बता दिया है तो वे मेरे प्राण लेने के लिए उतावले हो उठेंगे और मैं कहीं भी क्यों न रहूं वे मुझे खोज निकालेंगे।" कर्नल ने कहा कि नगर के बाहर एक सुन्दर बंगला है जो इस समय सेना विभाग के अधिकार में है। बंगले के चारों ओर एक सुन्दर उद्यान है। कर्ट के ठहरने के लिये यह स्थान अधिक उपयुक्त होगा। बंगले पर कड़ा पहरा रखा जायगा ताकि उसके पुराने साथी लोग वहां न आ सकें। सेना

विभाग की ओर से जो विज्ञप्ति निकाली जायगी उसमें इस गिरफ्तारी को अधिक से अधिक वास्तविकता का रङ्ग देने का प्रयत्न किया जायगा। कर्नल ने यह भी कहा कि फिलहाल वे अपने अतिथि से कोई प्रश्न न पूछेंगे। कर्ट स्वयं सोच विचार करके देख लें कि वे कितनी दूर तक सहयोग करने के लिए तैयार हैं। कर्ट की पत्नी को एक पत्र लिख दिया गया कि वह कोई चिन्ता न करे; उसके पति के साथ भद्रता का व्यवहार किया जायगा। लैनी ने कर्ट को अपना मन बहलाने के लिए कुछ पुस्तकें तथा स्वरलिपियां भेजने का आश्वासन दिया। उसने कर्ट से कह दिया कि यदि उसे किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो वह पहरे पर तैनात सर्जेण्ट से कह दे। वह वस्तु तुरन्त उसकी सेवा में उपस्थित हो जायगी।

लैनी को कर्ट से एक गुप्त भेंट करनी थी। उसे एक आवश्यक बात की चर्चा करनी थी। फलस्वरूप उसने एकान्त में कर्ट के साथ भेंट करके उसे बताया कि प्रायः एक वर्ष पूर्व उसने कर्ट के बड़े भाई जेनरल एमिल से मुलाकात की थी और उस समय उन्होने कर्ट के उग्र दृष्टिकोण के सम्बन्ध में बड़ा खेद प्रकट किया था। लैनी ने परामर्श दिया कि वह जेनरल एमिल से एक बार मिल ले। कुछ देर तक सोचकर कर्ट ने अपनी स्वीकृति दे दी। लैनी इससे बड़ा प्रसन्न हुआ।

लैनी ने कर्नल से मिल कर उन्हें सारी बात बता दी और कहा कि वह वायुयान द्वारा नूरेनबर्ग जाकर वहां से जेनरल एमिल को लाना चाहता है। इस समय लैनी का कोई अनुरोध टाला न जा सकता था। उसने सेना विभाग का इतना बड़ा कार्य किया था कि यदि वह उत्तरी ध्रुव की यात्रा का प्रस्ताव करता तो कदाचित वह भी स्वीकृत हो जाता।

नूरेनबर्ग जाने के लिए वायुयान हर समय मिलते रहते थे। उसी दिन संध्या के समय लैनी रवाना हो गया। प्रातःकाल उसने जेनरल एमिल से मुलाकात की और उन्हें सारी कहानी सुना दी। उसने इस मामले में जेनरल का विश्वास कर लिया। इसी समय रेडियो पर टेगर्नसी की इस सनसनीखेज गिरफ्तारी की अधिकृत रूप में घोषणा हुई। सरकारी विज्ञप्ति में बताया गया था कि प्रसिद्ध कलाकार कर्ट मेसनर को सेना विभाग के अधिकारियों द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया है। उन पर यह अभियोग है कि वे गुप्त नाजी सोने को छिपे छिपे देश के बाहर

भेजने का षड़यन्त्र कर रहे थे। किन्तु विज्ञप्ति में इस बात की कोई चर्चा न की गई थी कि वह सोना कहां पर है। शायद यह संवाद उस समय के लिये सुरक्षित रख लिया गया था जब चतुर राजमिस्त्री अपना काम पूरा कर चुकेंगे।

एमिल ने प्रसन्नतापूर्वक कर्ट से मिलने की स्वीकृति दे दी। उन्होने यह भी कह दिया कि वे कर्ट को अमेरिका की ओर बनाए रखने का भरसक प्रयत्न करेंगे। एमिल आजकल एक स्कूल में शिक्षक का कार्य कर रहे थे। किन्तु उन्हे म्यूनिच जाने के लिए छुट्टी मिलने में कोई कठिनाई न हुई। दूसरे दिन दोनों म्यूनिच के लिये रवाना हो गये। लेनी भाइयों की इस मुलाकात में स्वयं उपस्थित रहना उचित न समझता था। यह एक पारिवारिक मामला था। इसीलिये वह एमिल के साथ कट के पास न गया। उसका काम यां भी समाप्त हो गया था। उसने मान्क से मिल कर कहा कि एमिल कर्ट को समझाने का प्रयत्न करेंगे। इसके बाद वह स्वयं कर्ट से मिले और भविष्य की योजनाओं पर विचार करे। इसके बाद वह बर्लिन के लिये रवाना हो गया क्योंकि उसने 'रिआस' को कुछ आश्वासन दे रखे थे जिन्हे पूरा करना वह आवश्यक समझता था।

(९)

'रिआस' के नये मकान का उद्घाटन हाल ही में हुआ था। यह नया मकान पांच मञ्जिलों का था और सामने की ओर मुख्य द्वार पर बड़े बड़े चार अक्षर स्पष्ट रूप में अंकित थे—"आर० आई० ए० एस०"। पहले इस मकान में रासायनिक द्रव्योंका उत्पादन करने वाला एक कारखाना था। हाल ही में इसकी मरम्मत की गयी थी जिसके फलस्वरूप यह एकदम नया प्रतीत होता था। 'रिआस' के कर्मचारीगण जो अभी तक एक टूटे फूटे छोटे से मकान में अपना काम चला रहे थे के लिये यह विशाल अट्टालिका सचमुच बड़ी आनन्ददायिनी थी। 'रिआस' को यह नया मकान मिल जाने का अर्थ यह था कि अमेरिका ने आखिर इस बात का निश्चय कर लिया है कि वह रूसियों के शब्द-युद्ध का मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए तयार रहेगा।

लैनी बड अब फिर 'हर फ्रोहलिच' हो गया। अब वह एक अनुभवी रेडियो प्रवक्ता हो गया था। उसने अपने रेडियो भाषण में जर्मन जनता को बताया कि

अमेरिका शान्ति चाहता है और उसने अपने शान्ति प्रेम का एक ठोस प्रमाण भी दे दिया है। उसने अपनी सेनाओं का विघटन शुरू कर दिया है। किन्तु वह जर्मनी में एक स्वतंत्र, संयुक्त तथा गणतांत्रिक राष्ट्र का उदय देखने के लिए कृत-संकल्प है। उसने यह भी स्पष्ट कर दिया कि गणतंत्र से उसका अर्थ एक सच्चे गणतंत्र से है—उस तथाकथित गणतन्त्र से नहीं जिसमें केवल एक व्यक्ति चुनाव के उम्मेदवार के रूप में खड़ा होता है और निर्वाचन का सारा काम पार्टी की तानाशाही के हाथ में रहता है। लैनी ने कहा कि अमेरिका पश्चिमी जर्मनी में एक गणतांत्रिक शासन व्यवस्था की स्थापना करने के लिए हर सम्भव प्रयत्न कर रहा है किन्तु पूर्वी जर्मनी में गणतन्त्र का नाम निशान मिटा देने का प्रयत्न हो रहा है।

लैनी का यह भाषण आवश्यक था। इस समय पश्चिमी जर्मनी एक ऐसे संक्रमण काल से गुजर रहा था कि जनता को इस प्रकार के आश्वासनों की आवश्यकता थी। रूसी लोग किसी न किसी बहाने से उस यातायात को बन्द करने पर तुले हुए थे जो उनके अंचल से होकर गुजरता था। बर्लिन को जाने वाली सड़कें उनके अंचल से गुजरती थीं। वे येन केन प्रकारेण इन सड़कों को बन्द कर देना चाहते थे। कभी वे मोटर लारियों के लिए नये प्रकार के लाइसेन्सों की घोषणा कर देते और सड़कों पर हजारों लारियों की लम्बी पंक्ति खड़ी हो जाती। कभी वे यातायात भंग करने का अन्य कोई कारण खोज निकालते। वे मित्र राष्ट्रों को जिस प्रकार भी हो परेशान करने के लिये कृतसंकल्प थे।

बर्लिन को चार भागों में विभाजित करने का निर्णय पोट्सडम सम्मेलन में हुआ था। उस समय चार महानों ने यह योजना एक समझौते के रूप में बनायी थी। उभय पक्ष अपने मन में यह समझते थे कि वे आवश्यकता से अधिक उदार हो गए। अमेरिका में प्रेसीडेण्ट ट्रूमन के विरोधियों ने पोट्सडम में होनेवाले समझौते की कड़ी निन्दा की थी। किन्तु वर्तमान परिस्थितियों का उत्तरदायित्व प्रेसीडेण्ट ट्रूमन पर न था। इस परिस्थिति का कारण पोट्सडम समझौता न था बल्कि रूसियों द्वारा उस समझौते का भंग होना ही इसके लिये उत्तरदायी था। प्रेसीडेण्ट ट्रूमन इस बात की कल्पना कैसे कर सकते थे कि रूसी लोग इस

समझौते का पालन न करेंगे ? वे यह कैसे सोच सकते थे कि जिस मित्र को उन्होंने करोड़ों डालरों की आर्थिक सहायता दी थी वह युद्ध समाप्त होते ही एक घृणित शत्रु के रूप में परिवर्तित हो जायगा ? उनके मनमें यह विचार कैसे आ सकता था कि पोलिटब्यूरो ने छल की यह नीति युद्ध समाप्त होने के पूर्व ही निर्धारित कर ली थी ?

किन्तु स्टालिन की स्थिति भिन्न थी। रूस में कोई व्यक्ति उनकी आलोचना करने का साहस न कर सकता था। और उनके जिन सैनिक अधिकारियों पर पोट्सडम समझौते की शर्तों के पालन का भार था वे यह फूटी आंखों भी न देख सकते थे कि पूर्वी जर्मनी के साथ पश्चिमी जर्मनी का कोई भी सम्पर्क रहे। समझौते के अनुसार यह निश्चय हुआ था कि बर्लिन के प्रत्येक नागरिक को नगर के किसी भी भाग में आने जाने की सुविधा रहे। किन्तु व्यवहारिक स्तरपर इसकी पूर्ण उपेक्षा होती थी और बात बात में झगड़े झमेले हो जाते थे। रूसी अधिकारी यह न चाहते थे कि पूर्वी जर्मनी वाले नागरिक पश्चिमी जर्मनी में जाकर वहां के नागरिकों को अधिक सुखी और समृद्ध देखें और अपनी दासता तथा उनकी स्वतन्त्रता पर विचार करें। दासता और स्वतन्त्रता का यह सम्मिश्रण सम्भव भी नहीं है—कम से कम इतिहास में इसका कोई उदाहरण नहीं मिलता।

(१०)

जून १९४८ के अन्त के समय रूसियों ने यह अरुचिकर स्थिति समाप्त करने का निश्चय कर लिया। उन्होंने अचानक बर्लिन की नाकेबन्दी कर ली ; जल और स्थल मार्ग से यातायात के सारे साधन बन्द हो गए। हेल्मस्टेड्ट वाली रेलवे लाइन भी किसी औपचारिक कठिनाई का बहाना बताकर बन्द कर दी गयी। किन्तु यह निरा बहाना ही था। यदि सचमुच उनके रेलवे यार्ड में कोई खराबी आ गयी थी तो अमरीकी इञ्जीनियर उसे सहज ही ठीक कर सकते थे। किन्तु अमरीकी इञ्जीनियरों को न बुलाया गया !

लैनी ने अधिकारियों के साथ रूसियों के इस विचित्र रुख की चर्चा की। रूसी लोग सरासर झूठ बोल रहे थे और इस सम्बन्ध में उन्हें किसी प्रकार की

द्विधा का अनुभव न हो रहा था। उन्हें किसी प्रकार की नैतिक मान्यताओं के प्रति किंचितमात्र आदर न था। वे एकदम सफेद झूठ बोल कर हंसते रह सकते थे। रूसी लोग अपने आप को अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक उत्कृष्ट जीव समझते थे। वे अपने विरोधियों को निकृष्ट जीवों के रूप में देखते थे—ऐसे जीवों के रूप में जिनका पराभव सुनिश्चित है।

तो इस प्रकार 'औपचारिक कठिनायाँ' उपस्थित हो गयीं और पश्चिमी बर्लिन में मालगाड़ियों का आना सम्भव न रह गया। बीस लाख नागरिकों के लिये भूखों मरने का प्रश्न उपस्थित हो गया। नगर की पक्की सड़कों पर आलू की खेती न की जा सकती थी। इसके अतिरिक्त बिजली की समस्या भी थी। बर्लिन में विद्युत शक्ति कोयले से पैदा की जाती थी। युद्ध के पूर्व यह कोयला साइलेसिया से आता था। किन्तु अब यह बेल्जियम, रूर, इङ्गलैण्ड और अमेरिका से आता था। यातायात का मार्ग बन्द हो जाने के कारण यह कोयला आने की कोई सम्भावना न रह गयी थी। इसका यह अर्थ था कि बर्लिन के सारे कारखाने बन्द हो जायंगे और रात के समय लोग अन्धकार में बैठे रहेंगे! परिणाम यह होगा कि पश्चिमी जर्मनी में मित्र राष्ट्रों की सरकार की लोकप्रियता तेजी के साथ घटने लगेगी और अन्त में अंगरेजों और अमरीकियों को बर्लिन छोड़कर भाग जाने के लिये बाध्य होना पड़ेगा!

मित्र राष्ट्रों की सरकारों ने इस जटिल समस्या के समाधान के लिये आपस में विचार विनिमय किया। सैनिक अधिकारियों ने बल प्रयोग का सुझाव दिया। उनका कहना था कि दृढ़ता के साथ रूसियों का मुकाबिला किया जायगा तो वे सदा की भाँति इस बार भी ढीले पड़ जाएंगे। किन्तु यह आशंका थी कि यदि वे न झुके तो युद्ध अनिवार्य हो जायगा। ऐसी अवस्था में बर्लिन में मित्र राष्ट्रों के सैनिक चारों ओर से घिर जाएंगे और उन्हे आत्मसमर्पण के लिये बाध्य होना पड़ेगा। युद्ध हुआ तो बर्लिन फिर से नष्ट-भ्रष्ट होगा और उसका नाम निशान मिट जायगा। किन्तु अन्त में मित्र राष्ट्रों के सैनिकों को आत्मसमर्पण करना ही पड़ेगा। बर्लिन में मित्र राष्ट्रों की सेनाएं भी बहुत कम थीं। अधिकांश सैनिक छुट्टी पर घर चले गये थे। जो बच रहे थे वे रूसी लौहयन्त्र को अकेले कैसे रोक

सकते थे ? रूस की सेनाएं सारे प्रदेश को रौंदती हुई सीधे पिरानीज पर्वतमाला तक जा सकती थीं !

अमेरिका के पास अणु बम अवश्य था और अणु बम से मास्को तथा लेनिन ग्राड को नष्ट भ्रष्ट किया जा सकता था; सोवियत तैल क्षेत्रों को वीरान किया जा सकता था। किन्तु तब तक रूसी सेनाएं ब्रूसेल्स, एम्सटर्डम, पेरिस तथा अन्य बड़े बड़े औद्योगिक नगरों और बन्दरगाहों में पहुंच जातीं ! और क्या इन नगरों को भी अणु बम द्वारा नष्ट कर देने की बात सोची जा सकती थी ? इसकी कल्पना भी न की जा सकती थी। स्पष्ट था कि रूसी सेनाएं एक बार यहां पहुंचने पर इन नगरों को दास-मजदूर-शिविरों के रूप में परिवर्त्तित कर देंगी। इसके बाद इनका उद्धार कैसे होगा ?

वाशिन्गटन में सेना विभाग तथा मन्त्रि-मण्डल द्वारा इन्हीं प्रश्नों पर विचार हो रहा था। बर्लिन की नाकेबन्दी जिस दिन शुरू हुई थी उसके दो दिन बाद दो अमरीकी वायुयान खाद्य पदार्थ लेकर बर्लिन के टेम्पलहोफर हवाई अड्डे में आए। यह घोषणा की गयी कि वायुयानों द्वारा आवश्यक मालों की सप्लाई जारी रहेगी और इसमें क्रमशः वृद्धि की जायगी। किन्तु कम्युनिस्टों को विश्वास न हुआ। उन्होंने सोचा कि ये खाद्य पदार्थ तो अमरीकी सेना के लिये आ रहे हैं—जर्मन नागरिक भूखों मरेंगे।

सोवियत सेनाधिकारी मित्र राष्ट्रों की संयुक्त कमान्ड से अलग हो गए। यह मित्र राष्ट्रों के समझौते की अन्तिम धारा का अतिक्रमण था। इसके बाद मार्शल सोकोलोव्सकी ने बर्लिन का घेरा उठाने से साफ इनकार कर दिया। पश्चिमी बर्लिन के नागरिक अधिकारियों ने बिजली की सप्लाई में कटौती करना शुरू कर दिया। रात के समय केवल दो तीन घण्टों के लिये बिजली आती थी। इस प्रकार इस औद्योगिक तथा प्रचार-युद्ध का श्रीगणेश हुआ। यह आगामी ग्यारह मासों तक चलनेवाला था और लैनी का सारा ध्यान इसी पर केन्द्रित था।

किन्तु लैनी ने बर्लिन में ठहरकर घटना क्रम की प्रतीक्षा करना उचित न समझा। यह तमाशा वह न्यूजर्सीमें अपने घर से भी देख सकता था। वहां दिन

में दो बार समाचार पत्रों की डाक आती थी। इसके अतिरिक्त वह घण्टे घण्टे के अन्तर पर रेडियो द्वारा वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त कर सकता था। उसने 'रिआस' पर अपने भाषण यथाविधि समाप्त किये और इसके बाद अमेरिका की ओर रवाना हो गया।



अध्याय २१

● कानून के फंदे ●

(१)

घर पर लैनी को हैन्सी और रोज़ के पत्र मिले। इन युगल प्रेमियों ने रेनो में कोई निवास स्थान न लिया क्यों कि इन्हे समाचार पत्रों के रिपोर्टरों का भय था। अपने वकील की सलाह मान कर वे लोग कोयले की खदानों वाले एक छोटे से नगर में चले गये थे। यह नगर काफी ऊंचाई पर बसा हुआ था और इसीलिये वहाँ जलवायु शीतल थी। वकील महोदय अपने धनाड्य ग्राहकों की आवश्यकताओं से भली भांति अवगत थे। उन्होने हैन्सी को एक ऐसी महिला का पता दे दिया था जिसके पास किराये से उठाने के लिये कई सजे सजाए मकान थे। इन सुन्दर साफ सुथरे मकानों में से एकाध को चुन कर मिस्टर तथा मेसर्स जिनसेनहायमर आनन्द के साथ रह सकते थे। इसके बाद छै सप्ताह का समय बीत जाने पर हैन्सी मकान मालकिन को अपना नाम बता सकता था। फिर मकान के किराये की नयी रसीद हैन्सी के वास्तविक नाम में काटी जा सकती थी। इस प्रकार तलाक का आवेदन पत्र न्यायालय में दाखिल होने के पूर्व यह भेद गुप्त रखना सम्भव हो गया था।

हैन्सी पहले हिटलरवाद की विभीषिका का शिकार हुआ था और इसके बाद स्टालिनवाद की विभीषिका का। अब वह एक नया जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न कर रहा था। जीवन में प्रथम बार ही उसे वास्तविक सुख और आनन्द मिला था। उसे इस स्थान की शुष्क किन्तु शीतल जलवायु बड़ी पसंद थी। वायु इतनी साफ थी कि बीस मील दूर के पर्वत भी समीप ही प्रतीत होते थे। यह जङ्गलों से हरा भरा पश्चिम का पार्वत्य प्रदेश था। अब वह घोड़े की सवारी करना सीख रहा था। यह प्रथम अवसर ही था कि उसने इस प्रकार के असम्भव कार्य में अपना हाथ डाला हो। वह अपनी वायलिन बजाता रहता था और रोज़ इसे सुनते न अघाती थी। कभी कभी वे नयी पुस्तकें पढ़ लेते थे और आपस में इनकी

चर्चा करते थे। वे रेडियो पर लैनी के शान्ति-प्रोग्राम भी सुनते रहते थे। वे अपना भोजन किसी छोटे से होटल में करते थे जहां उनसे किसी प्रकार के प्रश्न पूछे जाने की सम्भावना न रहती थी। दोनों ने इस बात का निश्चय कर लिया था कि वे भविष्य में किसी बड़े नगर में न रहेंगे और जहाँ तक सम्भव होगा बड़े नगरों से बच कर ही रहेंगे।

एक दिन एडगरमीयर में लैनी को हैन्सी का टेलीफोन मिला। वही सुपरिचित कण्ठ स्वर कह रहा था, "मैं हूं मोइशे"। हैन्सी को इस बात की आशा न थी कि लैनी घर पर होगा। इसलिये उसे एडगरमीयर में सुरक्षित पाकर उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने टेलीफोन पर कहा, "शैतान से मुझे मुक्ति मिल गयी। मुझे न्यायालय में गवाही न देनी पड़ेगी।"

"वाह! वाह!!" लैनी ने प्रसन्न स्वर में कहा। हैन्सी ने कहा कि अधिकारियों को इस बात का विश्वास हो गया है कि उनका मामला बहुत मजबूत है और मेरी गवाही की कोई आवश्यकता नहीं है। इसके अतिरिक्त उन्होने इस बात पर भी विचार किया है कि पति को अपनी पत्नी के विरुद्ध गवाही देते हुए देख कर सम्भव है जूरी की महिला सदस्यायें बिगड़ उठें। इसलिए यह निश्चय किया गया है कि इस न्यायालय में मामला विफल होने पर दुबारा अपील करनी पड़े तभी हैन्सी से गवाही दिलवाई जाय। हैन्सी ने लैनी को बताया कि अधिकारियों ने इस बात का प्रबन्ध कर लिया है कि पर्याप्त प्रमाणों के अभाव में उसका नाम अभियुक्तों की तालिका से काट दिया जाय।

लैनी ने कहा, "श्रीमती रोज़ के लिये तो यह समाचार अत्यन्त सुखद होगा।'

रोज़ ने टेलीफोन पर लैनीकी बात सुन ली। उसने चिल्ला कर कहा, "भविष्य में मैं इस बात का पूरा पूरा ध्यान रखूंगी कि मेरा पति कानून भंग करके फिर झंझट में न फंसने पावे।"

मामले की सुनवाई शीघ्र ही शुरू होने वाली थी। अभियुक्तों के वकीलों ने कुछ और समय मांगा था और उनका अनुरोध स्वीकृत कर दिया गया था। इसके बाद दुबारा फिर समय की मांग की गई तो न्यायालय ने इनकार कर दिया। सुनवाई केवल एक सप्ताह बाद शुरू होने वाली थी। लैनी ने हैन्सी को टेलीफोन

करके इसकी सूचना दे दी। हैन्सी को अभियुक्त के रूप में न्यायालय के सम्मुख उपस्थित होना पड़ेगा। किन्तु उसे तुरन्त छोड़ दिया जायगा। लैनी ने हैन्सी को चेतावनी दे दी, "तुम दोनों साथ मत आना ; यह खतरनाक हो सकता है। हैन्सी ने कहा, "हम दोनों ने पहले ही इस पर विचार कर लिया था। मैं ट्रेन से आऊंगा और वह मोटर द्वारा आयेगी।"

(२)

दूसरे दिन सबेरे लैनी को एवरेट नामक एक व्यक्ति का टेलीफोन मिला। उसने कहा कि वह श्रीमती बेस रोबिन का वकील है और उनके भाई से मिलना चाहता है। लैनी ने स्वीकृत दे दी।

एक विचित्र स्थिति पैदा हो गयी। हैन्सी ने लैनी के साथ सैर पर जाते समय बेस को एक पत्र लिख दिया था कि पिछले कुछ दिनों की चांचल्यकर घटनाओं के कारण वह थक गया है और कुछ दिनों के लिए बाहर जा रहा है। मुकदमे की पेशी के दिन वह लौट आयेगा। इसके बाद उसने अपने स्थानीय पोस्ट आफिस को यह आदेश दे दिया था कि उसकी डाक एडगरमीयर भेज दी जाया करे। लैनी और लारेल हैन्सी की डाक को नये लिफाफे में भर कर मिस्टर मोइशे जिनसेनहायमर के नाम से भेज दिया करते थे। पोस्ट आफिसों को इस बात का कड़ा आदेश रहता है कि वे किसी के व्यक्तिगत पते का भेद दूसरे किसी व्यक्ति को न बताएं। किन्तु वकील लोग हर प्रकार का भेद प्राप्त कर लेने में बड़े कुशल होते हैं। मिस्टर एवरेट ने आते ही प्रश्न किया कि हैन्सी कहां छिपा हुआ है।

लैनी जानता था कि यह भेद प्रकट हो जाने से मुकदमे पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। इस बात का पता चल गया कि हैन्सी एक कम्युनिस्ट-विरोधी महिला के प्रेम में पड़ गया है तो इससे यह प्रमाणित करने का प्रयत्न किया जायगा कि हैन्सी को कम्युनिस्ट आन्दोलन के साथ कोई सहानुभूति नहीं रही और वह जान बूझ कर कम्युनिस्ट अभियुक्तों के विरुद्ध सरकारी गवाह के रूप में प्रस्तुत होने के लिये तयार है। लैनी ने कहा कि जब हैन्सी नगर के बाहर चला जाता है तो अपनी डाक मेरे पते पर भेजने का आदेश दे जाता है ; वह सदा से

ऐसा करता रहा है। इसमें किसी प्रकार की विचित्रता नहीं है। किन्तु वह अपना पता ठिकाना नहीं बता गया। जाते समयय वह केवल इतना ही कह गया था कि मुकदमे की पेशी के दिन वह स्वयं आ जायगा। यह स्पष्ट था कि मिस्टर एवरेट को इस बात का पता चल गया था कि सरकार हैन्सी पर से मुकदमा उठा लेने का निश्चय कर चुकी है। किन्तु लैनी ने इस सम्बन्ध में अपनी ओर से कुछ न कहा।

वकील लोग साधारणतया मानव स्वभाव के सम्बन्ध में कुछ ऐसा दृष्टिकोण बना लेते हैं कि उन्हे इस बात पर विश्वास करना कठिन हो जाता है कि कोई व्यक्ति सच बोल सकता है। मिस्टर एवरेट को लैनी की बातों पर विश्वास न हुआ। उन्होंने कहा, कि यह एक आश्चर्य की बात है कि जिस व्यक्ति पर सरकार की ओर से इतना गम्भीर अभियोग लगाया गया है वह अपने वकीलों के साथ बिना मुलाकात किये ही इस प्रकार अन्तर्धान हो जाय। लैनी ने कहा कि अभियुक्त एक कलाकार है और कलाकार बहुधा आधे पागल होते हैं। सम्भव है उसे सचमुच अपने मुकदमे की कोई चिन्ता न हो अथवा वह जान बूझ कर शहीद बनना चाहता हो।

मिस्टर एवरेट ने कहा कि यदि उसे शहीद ही बनना है तब भी उसे एक अच्छा शहीद बनने का प्रयत्न करना चाहिए और इसके लिये एक अच्छे वकील की आवश्यकता है। लैनी ने अपने दोनो हाथ फैला कर और कंधे उचका कर ऐसा भाव प्रदर्शित किया मानों उसे इस मामले में तनिक भी दिलचस्पी नहीं है। उसने कहा कि जब से हैन्सी कम्युनिस्ट बन गया है तब से उसे उसके प्रति कोई सहानुभूति नहीं रह गयी है; वह कम्युनिस्टों से तीव्र घृणा करता है। किन्तु हैन्सी के साथ एक समय उसकी प्रगाढ़ मित्रता थी और इसीलिए वह उसके पते को गुप्त रखने तथा उसकी डाक की देख भाल करने का अनुरोध नहीं टाल सका!

(३)

वकील के जाने के बाद लैनी ने अपनी पत्नी के साथ विचार विनिमय किया। इसके बाद उसने एफ० बी० आई के विल्वर पोस्ट को टेलीफोन करके पूछा: "क्या मैं आपके कार्यालय में आ सकता हूं? अब तो वहां समाचार

पत्रों के रिपोर्टरों की भीड़ न होगी ?" विल्बर पोस्ट ने आने के लिये कहा। लैनी ने जाकर उन्हें मिस्टर एवरेट के साथ अपनी भेंट का समाचार दिया। पोस्ट हैन्सी को सदा एक 'लाजुक' के रूपमें देखते थे। इस समय भी उन्हें यह सोचकर बड़ा कौतूहल हुआ कि इस लज्जाशील व्यक्ति के सामने कैसी कैसी कठिनाइयां उपस्थित हो रही हैं।

लैनी ने कहा, "मेरे मनमें एक विचार आया है। आप कहें तो मैं बताऊं।"

पोस्ट ने कहा, "अवश्य बताइये।" लैनी ने कहा, "आपने कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर हैन्सी के रूप में एक ऐसा व्यक्ति रख छोड़ा था जिससे आपको वहां की सारी खबरें मिलती रहती थीं। अब आप इसी प्रकार की व्यवस्था अभियुक्तों के सम्बन्ध में क्यों नहीं कर लेते ? वहां अपना एक आदमी रहने से हमें इस बात की जानकारी मिलती रहेगी कि वे लोग अपने बचाव के लिये क्या प्रबन्ध कर रहे हैं। एवरेट हैन्सी से मिलने के लिये उत्सुक था। क्या इस प्रकार की कोई व्यवस्था नहीं की जा सकती कि हैन्सी उन लोगों को बहका कर न्यायालय में कुछ ऐसी बातें कहने के लिये बाध्य कर दे जो एकदम असत्य हों ?'

पोस्ट को यह योजना जंच गयी। उन्होंने तुरन्त कहा कि वे असिस्टेण्ट अटर्नी जेनरल से मिलकर इस सम्बन्ध में बात करेंगे। यदि वे राजी हो जाएंगे तो हैन्सी को टेलीफोन करके प्रथम वायुयान द्वारा यहां बुला लेना होगा। लैनी ने पोस्ट को यह बता देना उचित समझा कि हैन्सी इस समय नवादा में है और वह बेस को तलाक देकर एक दूसरी महिला से विवाह करने का इच्छुक है। "हैन्सी आएगा तो वह महिला भी उसके साथ आएगी।"

"भगवान के नाम पर तुम उसे यह कह दो कि दोनों साथ साथ यात्रा न करें और यहां आकर भी दोनों एक होटल में न ठहरें।"

"महिला मेरे घर पर ठहर सकती है।" हैन्सी ने मुस्करा कर कहा।

"जो मित्र मुसीबत के समय काम आता है वही सच्चा मित्र है।"

(४)

न्यूयार्क पहुंचकर हैन्सी एफ० बी० आई के कार्यालय में न गया। वह सीधे एक सुप्रसिद्ध क्लब में चला गया जहां कम्युनिस्टों के रहने की कोई सम्भावना न

थी। वहीं पर लैनी, विल्वर पोस्ट तथा असिस्टेण्ट अटर्नी जेनरल फ्रैन्क स्टुई-नेसेण्ट मिल गए। अटर्नी महोदय कालेज के दिनों में एक अच्छे खिलाड़ी थे। और आज भी उनका मस्तिष्क और जिह्वा उतनी ही गतिशील थी जितने कि उनके पैर।

चारों ने बैठकर बातें शुरू की और हैन्सी को मामले की सारी स्थिति समझा दी। हैन्सी से कहा गया कि वह जाकर मिस्टर एवरेट से मिले और उनसे कहे कि वह मुकदमे के लिये तयार है। उसे यह कहना पड़ेगा कि वह शोर गुल से घबरा कर भाग गया था। किन्तु एकान्त में कुछ दिनों तक रहने के बाद वह पूर्णतया स्वस्थ हो गया है और संकट का सामना करने के लिये तयार है। लैनी उसकी डाक की देख भाल करता रहा था किन्तु इसका कोई विशेष महत्व नहीं है। वह एक पुराना मित्र है और पिछले कई अवसरों पर भी उसने ऐसा किया था।

हैन्सी को अपनी पत्नी बेस से भी मिलना पड़ेगा और उसे यह विश्वास दिलाना पड़ेगा कि वह पार्टी के प्रति पहले की भाँति ही वफादार है। सम्भव है वे लोग उसका विश्वास न करें और अपने बचाव की योजना उसे न बतावें। यह भी सम्भव है कि उससे कहा जाय कि वह अपने लिये कोई दूसरा वकील रख ले। यदि इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न हो तो हैन्सी यह कहे कि वह कोई वकील न रखेगा और अपना मुकदमा स्वयं लड़ेगा। यह बात वे लोग पसंद न करेंगे और उसे समझाने का प्रयत्न करेंगे। इस प्रकार उसे दो दिन आगे या दो दिन पीछे उन लोगों की योजना की कुछ न कुछ जानकारी अवश्य मिल जायगी।

हैन्सी ने सारी बातों को समझ कर प्रस्थान किया। पहले उसके सम्बन्ध में कुछ हिचक सी दिखाई गई किन्तु बाद में उसे उन मंहगे वकीलों के पास ले जाया गया जो अभियुक्तों के लिये नियुक्त किये गये थे। ये वकील कम्युनिस्ट न थे; सहयात्री भी न थे। किन्तु वे इस बात पर हृदय से विश्वास करते थे कि प्रत्येक अभियुक्त को न्यायालय में अपनी निर्दोषिता प्रमाणित करने का पूरा पूरा अवसर प्राप्त होना चाहिये। अपने इस विश्वास के द्वारा वे अमेरिका की महान गणतांत्रिक परम्पराओं की रक्षा कर रहे थे। यह एक आकस्मिक बात थी कि उन्हे अपना कर्त्तव्य पालन करने के साथ लम्बी फीस भी प्राप्त हो रही थी।

वह एक दुर्भाग्य की बात है कि कभी कभी फौज़दारी के वकील स्वयं कानून भंग करने के लिये लालायित हो जाते हैं। अपराधियों के साथ दिन रात मिलते जुलते रहने के कारण ही ऐसा होता है। वे देखते हैं कि बहुधा कानून भंग करने वाले अपराधी बेदाग छूट जाते हैं और उनके पास करोड़ों की सम्पत्ति हो जाती है। जब कभी कोई अपराधी देखता कि उसका वकील एक कर्त्तव्यप्राण व्यक्ति है और झूठ नहीं बोल सकता तो वह तुरन्त ऐसा वकील खोजने लगता जो अपने कर्त्तव्य के प्रति इतना अधिक जागरूक न हो। नगर में ऐसे व्यक्तियों का कोई अभाव भी न था। वे कर्त्तव्यशून्य वकील अपने ग्राहकों के लिये सच को झूठ और झूठ को सच बना देने के लिये सदा प्रस्तुत रहते थे। अपराधी संसार में इस प्रकार के वकीलों को 'ग्रामोफोन' कहा जाता है।

कुछ समय बाद हैन्सी ने पोस्ट को यह समाचार दे दिया कि एकाउण्टेण्ट जोहानसेन न्यायालय में अपना अपराध स्वीकार कर लेगा। किन्तु बेस अपना अपराध स्वीकार न करेगी। वह न्यायालय में यही कहेगी कि वह किसी प्रकार के फोटो प्रिण्ट लेकर कहीं नहीं गयी और उसने पार्टी के लिये कोई जासूसी का कार्य नहीं किया। जोन्स एलेक्ट्रिकल वर्क्स के पास अपनी उपस्थिति का स्पष्टीकरण वह इस प्रकार देगी कि वहां उसका कोई मित्र रहता है। प्रति शनिवार को वह उसे एक पार्टी में आमंत्रित करता था। उसने छै सात गवाहों को तयार कर लिया है जो न्यायालय में यह कहेंगे कि उन्होंने उसे इन पार्टियों में देखा था।

कागजों के सम्बन्ध में वह यह कहेगी कि उसे ये कागज पार्टी के अभियुक्तों ने दिये थे। उससे कहा गया था कि इनमें कोई महत्वपूर्ण कागज नहीं है; पार्टी के सदस्यों के फार्म आदि हैं। बिना देखे भाले उसने इन्हें अपने बगीचे में रख दिया था क्योंकि अन्यत्र रहने के लिये स्थान न था। इन कागजों को किसी गोदाम में भी न रखा जा सकता था क्योंकि कम्युनिस्ट पार्टी गोदाम वालों का विश्वास न कर सकती थी। फोटोग्राफ-स्टूडियो वालों की ओर से यह दलील दी जायगी कि उनकी स्टेशनरी की दूकान न चली इसलिये बाध्य होकर उन्हे फोटो उतारने का काम करना पड़ा। वे हर प्रकार की फोटो उतारने का काम करते थे; यह

उनका पेशा था। उन्हें अपने पैसे के अतिरिक्त अन्य किसी बात में कोई दिलचस्पी न थी। जिन कागजों के उन्होंने फोटो उतारे थे वे डम्ब्रोन्सकी उसके पास लाया था। इस व्यक्ति को उन्होंने पहले कभी न देखा था। फोटो लेकर वह व्यक्ति कहां गया इसका भी उन्हे कोई पता न था।

और हैन्सी? हैन्सी से यह कहा गया था कि वह यह कहे कि स्टीमर द्वारा कई बार अपनी पत्नी के साथ वह लान्ग आइलैन्ड गया था। वे सदा सामाजिक सम्मेलनों में भाग लेने के लिये जाते थे। इन सम्मेलनोंमें बहुत से बन्धु बान्धव एकत्रित होते थे। इनमें से कुछ कम्युनिस्ट थे और कुछ गैरकम्युनिस्ट। किन्तु उसका इन बातों के साथ कोई सम्बन्ध न था। वह इस बात को जानता था कि उसकी पत्नी कम्युनिस्ट है और पार्टी की सदस्या है। किन्तु पार्टी की सदस्या होना कोई अपराध नहीं है। अपनी पत्नी के प्रति प्रेम और सहानुभूति के कारण ही वह कम्युनिस्ट पार्टी में आया था। वस्तुतः उसे राजनीति में कोई दिलचस्पी न थी। वह अपनी कला की आराधना में डूबा रहता था। उसे इस बात की कल्पना तक न थी कि उसकी पत्नी कोई गैरकानूनी कार्य कर रही है। उसके बगीचे से जो कागज खोद कर निकाले गए थे वे उसकी अनुपस्थिति में ही वहां गाड़े गए थे। किन्तु यदि वे कागज उसकी उपस्थिति में भी गाड़े जाते तो भी उसे किसी प्रकार का संदेह न होता क्योंकि वह जानता था कि सरकार कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों के पीछे पड़ी हुई है और वे अपनी जान बचाने के लिए सारे कागज पत्र छिपाते फिर रहे हैं। इसके अतिरिक्त उसकी यह धारणा थी कि किसी भी राजनैतिक पार्टी को अपने भीतरी मामले गुप्त रखने का पूरा पूरा अधिकार है।

सरकारी अटर्नी तथा मिस्टर पोस्ट ने भी यही अनुमान लगाया था कि अभियुक्तों की ओर से इसी प्रकारकी सफाई दी जायगी। उन्होंने हैन्सी से कहा कि वह घर जाकर बेस को हर प्रकार से यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न करे कि वह कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति वफादार है और उसके आदर्शों तथा विश्वासों में किसी प्रकार की शिथिलता नहीं आयी है। वह यह कह दे कि घर से अचानक भाग जाने का कारण क्षणिक स्नायु-दौर्बल्य मात्र था।

(५)

लैनी ने अपने घर जाकर बेस से भेंट की। इधर रोज़ पिपन भी अपनी मोटर द्वारा आंधी की भांति सारा रास्ता पार करके आ गयी थी। लैनी तथा लारेल ने उसे सारी वस्तुस्थिति समझा दी। यह बात उसे पसंद तो न आयी किन्तु इस सम्बन्ध में कुछ करना सम्भव न था। उसने स्वीकार किया कि संसार में बहुत सी ऐसी बातें हैं जो उसे पसंद नहीं आतीं किन्तु कोई उपाय नहीं है। लैनी और लारेल ने उसका मन बहलाने के लिये उसे शान्ति प्रोग्राम में कुछ काम दे दिया। उससे कहा गया कि वह स्वयं अपना कोई भाषण तयार करके रेडियो पर बोले रेडियो पर वक्तृता देना उसके लिये कोई नयी बात भी न थी। हालीउड में कई बार वह यह कार्य कर चुकी थी। किन्तु इस बार वह गम्भीरता के साथ अपनी वक्तृता तयार करने लगी क्योंकि इस बार उसे खरगोशों की आदतों पर न बोलना था बल्कि कहीं अधिक गम्भीर विषयों की चर्चा करना था।

इधर समाचार पत्रों में यह समाचार प्रकाशित हुआ कि सरकार ने हैन्सी के विरुद्ध अपना मामला उठा लेने का निश्चय किया है क्योंकि उसे पर्याप्त प्रमाण नहीं प्राप्त हो सके हैं। लैनी प्रतीक्षा करने लगा कि देखें इसके बाद क्या होता है! किन्तु कोई नई बात न हुई। उसे हैन्सी को टेलीफोन करना खतरे से खाली न प्रतीत होता था। और सरकारी अधिकारियों से मिलकर भविष्य की योजनाओं का भेद प्राप्त करने का प्रयत्न भी उसे रुचिकर न लगता था। फलस्वरूप वह चुपचाप घटनाक्रम की प्रतीक्षा करने लगा।

मुकदमे की पेशी के समय लैनी न्यायालय में न गया। वह प्रधान अभियुक्ता का भाई था और इसलिये उसे भय था कि कहीं वह स्वयं आकर्षण का केन्द्र न बन जाय। उसे आशंका थी कि समाचार पत्रों के रिपोर्टर उसे घेर लेंगे। किन्तु रोज़ प्रतिदिन न्यायालय में उपस्थित रहती थी। उसे किसी बात का भय न था। किसी के साथ उसका परिचय न था। पुस्तक प्रकाशकों के साथ अवश्य उसने भेंट की थी और वे लोग इस नयी लेखिका का अधिकाधिक प्रचार करने पर तुले हुए थे। उससे अनुरोध किया गया था कि वह प्रकाशकों की ओर से आयोजित होनेवाले एक प्रीति-भोज में आवे। वहां बड़े बड़े आलोचक तथा साहित्यिक

महारथी भी बुलाए गए थे। इस प्रकार पुस्तक-प्रकाशन जगत् में उसकी आवभगत शुरू हो गयी थी। समाचार पत्रों को ज्यों ही इस बात का पता चला कि मिस रोज़ पिपिन ने न्यायालय में कम्युनिस्टों के मामले की सुनवाई आद्यो-पान्त देखने का निश्चय किया है त्यों ही एक खलबली सी मच गयी। अन्त में एक समाचार पत्र ने उसे पांच सौ डालर प्रतिदिन के वेतन पर अपने कानूनी रिपोर्टर के रूप में नियुक्त कर लिया।

इस प्रकार न्यायालय में उपस्थित रहने के लिये उसे एक अच्छा बहाना प्राप्त हो गया। उसे मामले की दैनिक रिपोर्ट लिखने के लिये जज के समीप एक छोटी सी मेज़ और कुर्सी प्राप्त हो गयी। इस स्थान से वह अभियुक्तों के चेहरों का निरीक्षण कर सकती थी।

एक दिन उसे हैन्सी रोबिन के साथ रिपोर्टर के रूप में मुलाकात करनी पड़ी। यह एक ऐसा दृश्य था कि लैनी और लारेल हंसते हंसते लोट पोट हो गए। रोज़ गम्भीरतापूर्वक अपने नोट लिख रही थी। उसने दर्शकों से कहा कि हैन्सी रोबिन एक महान कलाकार है; सान डियागो में वह उसका संगीत सुन चुकी है। उसने अपनी अभिनय इतनी कुशलता के साथ सम्पन्न किया कि किसी को हैन्सी के साथ उसके गूढ़ सम्बन्ध की छाया तक न मिली।

(६)

सरकार ने धीरे धीरे अभियुक्तों के विरुद्ध अपने मामले का उद्घाटन शुरू किया। घटना क्रम का आरम्भ बड़े विचित्र ढंग से शुरू हुआ था। बेस के घर में दो नौकरानियां थीं। उनमें से एक मध्यवयस्का महिला थी। वह कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्य न थी। किन्तु कम्युनिस्ट आन्दोलन के प्रति वह सहानुभूतिशील थी। इसीलिये उसे बेस के घर में नौकरी प्राप्त हुई थी। वह बेसके प्रति वफादार थी। किन्तु उसके घर पर एक भतीजी थी जो हाई स्कूल की छात्रा थी। वह अपनी चाचीके यहां अपरिचित व्यक्तियों का आना जाना तथा अनन्त रूप में चलनेवाली राज-नीति चर्चा को पसंद न करती थी। उसकी शिकायत यह थी कि चाची के घर पर भांति भांति के लोग आते रहते थे और उसे उनके लिये खाना बनाना पड़ता था। उसे बर्त्तन आदि भी साफ करने पड़ते थे। लड़की का नाम लिण्डी था।

वह अपने ही विचारों में डूबी रहती थी। जब उसकी चाची बीमार पड़ जाती थी तो बेस के यहां उसे काम करना पड़ता था। ऐसे अवसरों पर उसे बेस तथा हैन्सी के बीच चलने वाले तर्क वितर्क की कुछ भनक मिल जाती थी।

उसकी दृष्टि में हैन्सी और बेस बहुत धनाढ्य तथा प्रभावशाली व्यक्ति थे और उनके सम्बन्ध में उसके मन में बड़ा कौतूहल रहता था। वह कभी दरवाजे के पीछे छिपकर, कभी पर्दे की आड़ में होकर उनकी बातें सुनती रहती थी। एक दिन उसने हैन्सी को बेस से यह कहते हुए सुना कि वह जो काम करने जा रही है वह गैरकानूनी है और सरकार उसके विरुद्ध कड़ा कदम उठा सकती है। उसका कौतूहल और भी बढ़ गया। स्कूल में उसे कैनाडा में एक वैज्ञानिक द्वारा आणविक रहस्यों की चोरी पर लेख लिखने के लिये कहा गया था। उसे ऐसा लगा कि यहां भी उसी प्रकार का कोई महत्वपूर्ण षड़यन्त्र रचा जा रहा है। उसने लुके छिपे बेस के हैण्डबैग की तलाशी लेना शुरू किया। उससे कागज निकाल कर वह उनकी नकल करके रख लेती थी। इसी प्रकार उसे डम्ब्रोव्सकी नामक अभियुक्त का नाम मिला था। वह छिपे छिपे बेस की टेलीफोन-वार्त्ताएं सुनती रहती थी। ये वार्त्ताएं बहुधा सांकेतिक भाषा में होती थीं।

एक दिन उसे इस बात का पता चला कि बेस स्टीमर द्वारा लान्ग आइलैण्ड के जोन्स विल्ले नामक स्थान में जाएगी। लिण्डी नगर के पुस्तकालय में गयी और वहां जोन्स विल्ले की जानकारी प्राप्त की। उसे ज्ञात हुआ कि वहां जोन्स एलेक्ट्रिकल वर्क्स का विराट कारखाना है। इस कारखाने पर कड़ा पहरा रहता है क्यों कि वहां सरकार का कोई अत्यन्त गुप्त प्रयोग चल रहा है। उसने मन ही मन विचार किया। उसे ऐसा लगा कि बेस इस कारखाने से कोई गुप्त रहस्य निकालने का षड़यन्त्र रच रही है और हैन्सी को इसका पूरा पूरा पता नहीं है। उसने सोचा कि हैन्सी को यह जानकारी देकर सतर्क कर देना चाहिये। उसने एक जासूसी उपन्यास में पढ़ा था कि समाचार पत्रों से अक्षर काट काट कर उन्हें एक कागज पर गोंद से चिपका कर कोई पत्र लिखा जा सकता। इससे लिखने वाले का पता नहीं चल सकता। उसने ऐसा ही किया। समाचार पत्रों से अक्षर

काट काट कर यह संवाद तयार किया—"बेस रूस के लिये जासूसी कर रही है।" उसने न्यूयार्क जाकर यह पत्र डाकखाने में डाल दिया और प्रतीक्षा करने लगी। किन्तु कुछ भी न हुआ। अन्त में उसने इसी प्रकार का एक पत्र लैनी बड को डाला। लैनी बड को वह कई बार बेस के घर पर देख चुकी थी और रेडियो पर उसके भाषण सुन चुकी थी। किन्तु न्यायालय में अपनी गवाही देते हुए उसने इस द्वितीय पत्र का कोई उल्लेख न किया; केवल प्रथम पत्र की चर्चा की। एफ० बी० आई ने अपना मामला यहीं से प्रारम्भ करने का निश्चय किया था।

एफ० बी० आई० ने बेस के पीछे कुशल जासूस लगा दिये थे। जोन्सविल्ले में कम्युनिस्टों के षड्यन्त्र का भण्डा फोड़ करने के लिए भी उसकी ओर से जासूसों का एक दल नियुक्त कर दिया गया था। कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर हैन्सी के रूप में उसका विश्वासी व्यक्ति था ही। फलस्वरूप नगर के अन्दर कम्युनिस्टों तथा सह-यात्रियों के नाम तथा ठिकाने प्राप्त करने में एफ० बी० आई को कोई कठिनाई न हुई। रूसी डम्ब्रोव्स्की का पता भी आसानी से लग गया। एफ० बी० आई ने सबसे पहले जोन्स एलेक्ट्रिक कम्पनी के सारे महत्वपूर्ण कागज और मानचित्र दूसरे स्थान पर भेजवा दिये और उनकी जगह ऐसे कागज तथा मानचित्र रखवा दिये जो विशेष महत्वपूर्ण न थे। कम्युनिस्टों को इस स्थानान्तरीकरण का पता न चल पाया। वे इन नकली कागजों के पीछे पड़े रहे। काफी लम्बे समय तक जासूसी का काम चलता रहा। किन्तु न्यायालय में एफ० बी० आई ने यह भेद प्रकट न किया क्योंकि उसकी इच्छा थी कि रूस के अधिकारीगण चुराये हुए कागजों को असली समझ कर वहां अपना काम इनके आधार पर शुरू कर दें और बाद में काफी धन तथा समय का अपव्यय होने के बाद ही उन्हें इनकी निष्प्रयोजनीयता का पता चले। इस प्रकार एकाउन्टेण्ट को तिजोरी से कागज चुराते समय गिरफ्तार न किया गया। इसके पूर्व भी तिजोरी पर उसकी उंगलियों के फोटो ले लिये गये थे। उसको गिरफ्तार उस समय किया गया जब वह फोटोग्राफ स्टूडियो से इन कागजों की माइक्रो-फिल्में लेकर लौट रहा था। एफ० बी० आई ने बेस के घर की नौकरानियों के परिवारों तथा मित्रों का भी पता लगाया था और इन जांच के तारतम्य में लिण्डी मिल गयी थी।

(७)

मुकदमे की एक नाटकीय घटना यह थी कि बेस की मोटर चुरा ली गयी थी। उसने पुलिस को सूचना दी थी। दो दिन बाद मोटर तो मिल गयी किन्तु चोर का कोई पता न चल सका। अब न्यायालय में इस बात पर प्रकाश पड़ा कि वह गाड़ी चुराई न गयी थी। उसे एफ० बी० आई के आदमी गैरज से ले गये थे। उन्होंने गाड़ी के चक्कों आदि की रासायनिक जांच की थी और इससे उस स्थान का पता लग गया था जहां बेस जोहानसेन के साथ लुके छिपे भेंट किया करती थी। गाड़ी में माइक्रोफिल्म का एक छोटा सा टुकड़ा भी मिल गया था। इस माइक्रोफिल्म में प्लैटोनियम के उत्पादन के सम्बन्ध में कोई सैद्धांतिक विश्लेषण था। बेस इस बात का कोई उत्तर न दे सकी कि यह माइक्रोफिल्म का टुकड़ा उसकी गाड़ी में कहां से आ गया था। वह बराबर यही कहती रही कि पुलिस ने उसके विरुद्ध एक जाल रचा है।

इसके बाद वे कागज पेश हुए जो बेस के बगीचे में बरामद हुए थे। इन कागजों को प्रमाणित करने में कोई कठिनाई न हुई। बेस का माली फिनलैण्ड का निवासी था और वह रूसियों के विरुद्ध था क्योंकि रूसियों ने उसके देश पर आक्रमण कर दिया था। उसने न्यायालय में यह गवाही दी कि वह एक सप्ताह की छुट्टी लेकर बाहर गया था ; लौटने पर उसने देखा कि एक वृक्ष के नीचे की जमीन हाल ही में खोदी गयी है। उसे संदेह हुआ कि यहाँ पर कोई चीज गाड़ी गयी है। उसे यह आशंका हुई कि शायद किसी व्यक्ति की हत्या करके उसे यहां गाड़ दिया गया हो। उसने अपने एक मित्र से इस बात की चर्चा की और इस प्रकार यह सूराग एफ० बी० आई तक पहुंच गया।

सरकार की ओर से इन कागजों की एक तालिका पेश की गई थी। इन कागजों में कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों का विवरण था। इसके अतिरिक्त पार्टी के आय व्यय का हिसाब भी था। सरकार की ओर से इन कागजों को बेस की जासूसी का प्रमाण के रूप में न पेश किया गया था। इन कागजों से केवल इतना ही प्रमाणित होता था कि बेस कम्युनिस्ट पार्टी की एक विश्वसनीय सदस्या है।

(८)

सरकार की ओर से पेश होने वाले मुकदमे का संक्षेप में यह स्वरूप था। जनता का विश्वास था कि यह एक ठोस मुकदमा है किन्तु अभियुक्तों की ओर से यह सफाई दी गयी कि यह एफ० बी० आई का षड़यन्त्र मात्र है! अभियुक्तों के एक वकील ने कहा कि एफ० बी० आई ने कम्युनिस्ट पार्टी को बदनाम करने के लिए यह जाल फैलाया है। कम्युनिस्ट पार्टी एक वैधानिक संस्था है और अमेरिका की गौरवशाली गणतांत्रिक व्यवस्था में उसका एक महत्वपूर्ण स्थान है। यह विश्वास प्रकट किया गया कि लाल-विरोधियों का यह कुचक्र कानून की दृष्टि में ठहर नहीं सकता।

अभियुक्तों की ओर से प्रथम गवाही एकाउन्टेन्ट जोहानसेन की हुई। उसने चोरी का अपराध स्वीकार कर लिया किन्तु जासूसी का नहीं। उसने कहा कि एक दिन उसके पास एक अपरिचित व्यक्ति आया और उसने कहा कि एक दूसरा बिजली का कारखाना वे कागज चाहता है। उसने इन्हें चुराने के लिए जोहानसेन को पांच लाख डालर देने का प्रलोभन दिया और इस प्रकार उससे यह चोरी करवाई। इसके बाद एकबार फिर उसने कुछ और कागज चुराने का प्रयत्न किया किन्तु इस बार उसे पकड़ लिया गया। उसनें कहा कि कम्युनिस्टों अथवा रूसियों के साथ उसका कोई लेन देन नहीं है। उसने न कभी बेस से मुलाकात की थी न हैन्सी रोबिन से। जिरह के समय वह बराबर यही कहता रहा।

इसके बाद फोटोग्राफिक स्टूडियो के दोनों अभियुक्तों का बयान हुआ। उन्हो ने कहा कि फोटो उतारने का काम उनका पेशा है। उन्होने जीविकोपार्जन के लिए इस कार्य को अपनाया था। वे हर प्रकार का काम अपने हाथ में लेते थे किन्तु अपने पैसे के अतिरिक्त उन्हे इस सम्बन्ध में और कोई दिलचस्पी न रहती थी। वे केवल इतना ही देखते थे कि उन्हों ने जो फोटो 'डेवलप' की है वह साफ सुथरी है या नहीं। आलोच्य माइक्रोफिल्म को 'डेवलप' करने के बाद उन्हों ने इसकी जांच की तो उन्हे ऐसा लगा कि यह इण्जीनियरिन्ग से सम्बन्धित कोई विवरण है। उन्होने इसके साथ दिमागपच्ची करने की कोई आवश्यकता न समझी। जो व्यक्ति यह काम लेकर उनके पास आया था वह एक

विदेशी था। किन्तु वे इस बात को न जानते थे कि वह रूसी है। और जानते भी तो उनके लिए यह बात कोई महत्वपूर्ण अन्तर न उपस्थित करती। वे कम्युनिस्ट न थे और कम्युनिज्म में कोई दिलचस्पी न रखते थे।

(९)

बेस का बयान सबके अन्त में हुआ। वह महत्वपूर्ण अभियुक्त थी और समाज में उसकी बहुत बड़ी प्रतिष्ठा थी। उसके वकीलों ने उसकी जन्मगत कुलीनता, पारिवारिक प्रतिष्ठा, शिक्षादीक्षा आदि की चर्चा की। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अभियुक्ता नागरिक स्वतन्त्रता, गणतन्त्र, सामाजिक न्याय और विश्व-शान्तिपर विश्वास रखती है। बेस ने स्वयं कई धाराप्रवाह भाषण दिये। वह इस अवसर से लाभ उठाने के लिये पूर्णतया प्रस्तुत थी। जज ने कई बार उसे रोकने का प्रयत्न किया। किन्तु जरा सा अवसर मिलते ही वह अपना भाषण फिर शुरू कर देती थी। उसके वकीलों की ओर से जूरी पर यह प्रभाव डालने का प्रयत्न हो रहा था कि वह एक आदर्शवादिनी महिला है और उसने अपने आदर्श के लिए बड़े से बड़ा त्याग किया है। क्या वह कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्य है? अवश्य है। और उसे इस बात का गर्व है क्योंकि पार्टी शान्ति और गणतंत्र के आदर्श पर विश्वास रखती है।

इसके बाद काम की बात शुरू हुई। क्या उसने कम्युनिस्ट पार्टी के लिये गुप्त रूप में जासूसी का कार्य किया है? कभी नहीं। क्या चुराये गये कागजों तथा मानचित्रों के साथ उसका कोई सम्बन्ध था? बिल्कुल नहीं। उसने सदा अपने विचारों को स्पष्ट रूप में व्यक्त किया है। उसने बिना किसी दुराव छिपाव के अपने इस मत का प्रदर्शन किया है कि इस समय देश का नेतृत्व जिन लोगों के हाथ में है वे देशको एक गलत दिशा की ओर ले जा रहे हैं—एक ऐसी दिशा की ओर जो अन्त में आक्रमणात्मक नीति तथा युद्ध की ओर जाती है। इस प्रसंग को लेकर फिर एक लम्बी चौड़ी कम्युनिस्ट वक्तृता हो गयी। इसके बाद उसकी सफाई ठीक उसी रूप में पेश हुई जिस रूप में उसे पेश करना निश्चित हुआ था। ज़िरह के समय भी वह ठीक यही बातें दोहराती रही।

सरकारी अटर्नी मिस्टर स्टुवेसेण्ट एक कुशल व्यक्ति थे। उन्होंने बेस से उसके

राजनैतिक विश्वासों के सम्बन्ध में कुछ न पूछा। उन्होंने उससे प्रश्न किया कि माइक्रोफिल्म का वह टुकड़ा उसकी गाड़ी में कैसे आ गया ? उत्तर में बेस ने कहा कि उसने माइक्रोफिल्म का नाम तक नहीं सुना है, देखने को कौन कहे। यदि वह उसकी गाड़ी से निकला था तो इसका यही अर्थ है कि किसी ने जान बूझ कर उसे मुसीबत में फंसाने के लिए उस टुकड़े को उसकी गाड़ी में डाल दिया था। मोटर के टायरों पर जिन रासायनिक पदार्थों के चिन्ह मिले थे उनके सम्बन्ध में भी उसने यही कहा। काफी देर तक जिरह होती रही। उससे पूछा गया कि वह जोन्स विल्ले में अपने किस मित्र के यहां जाया करती थी ? उत्तर में उसने उस मकान का पूरा नक्शा खींच दिया और कहा कि वहां के बर्गर परिवार के साथ उसकी पुरानी मित्रता है। बहुधा शनिवार की संध्या को वह वहां जाया करती थी। उसके पति बहुधा उसके साथ न जाते थे क्यों कि वे घर पर अपने संगीत की साधना करने में लगे रहते थे।

उसकी इस कहानी के समर्थन में कई गवाह पेश गये। प्रत्येक के साथ जिरह हुई। सब ने यही मत प्रदर्शित किया कि श्रीमती रोबिन पूर्णतया निर्दोष हैं। वे एक महान आदर्शवादिनी महिला हैं और जासूसी जैसा जघन्य काम वे कर ही नहीं सकतीं।

(१०)

अब सरकार की ओर से अभियुक्तों के वकीलों का खण्डन शुरू हुआ। सरकारी अटर्नी ने बर्गर परिवार के मकान के आमने सामने रहने वाले पड़ोसियों को पेश किया और इन लोगों ने यह बयान दिया कि बर्गर परिवार के लोग बहुधा बाहर जाते थे किन्तु उनके घर पर मेहमान बहुत ही कम आते थे। कभी मेहमान आते भी थे तो उनकी संख्या दो तीन से अधिक न रहती थी। बेस ने जिन पार्टियों और प्रीतिभोजों की चर्चा की है वे कल्पित हैं। बर्गर परिवार में कभी पार्टियां या प्रीतिभोज होते हुए नहीं देखे गये। यदि ये पार्टियां होतीं तो आगन्तुक मेहमानों की गाड़ियां तथा शोरगुल पड़ोसियों का ध्यान अवश्य आकर्षित करता। यह असम्भव है कि प्रति शनिवार को ये पार्टियां होती रहीं और पड़ोसियों को इनका पता न चल पाया। बर्गर परिवार खुले आम कम्युनिस्ट है

और पड़ोसी उसके प्रति सदा सशंक रहते हैं। एक महिला ने अपने बयान में कहा कि यदि उसे इन पार्टियों को जरा भी संकेत मिलता तो वह तुरन्त पुलिस को सूचित कर देती।

इसके बाद गवाह के रूप में एक युवती पेश हुई। ज्यों ही यह युवती अपनी गवाही देने के लिये खड़ी हुई कम्युनिस्टों के दल में एक हलचल सी मच गयी। युवती का नाम मारी हगिन्स था। उसने अपने बयान में कहा कि वह तीन वर्ष तक कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्य रह चुकी है। किन्तु वह वस्तुतः एफ० बी० आई की एजेंट थी। उसने कहा कि कम्युनिस्ट पार्टी ने बर्गर परिवार में तथा-कथित प्रीतिभोजों की बात प्रमाणित करने के लिये कुछ झूठे गवाह तयार करने का काम सौंपा था। उसने खुलेआम घोषणा की कि प्रतिवादी पक्ष की ओर से जिन व्यक्तियों ने गवाही दी है वे जाली बयान देने के लिए सिखा पढ़ा कर तयार किये गये थे। बर्गर परिवार के मकान में ही इन्हे सिखा पढ़ा कर तयार किया गया था।

अभियुक्तों के वकीलों ने इन सरकारी गवाहों के बयानों को मिथ्या प्रमाणित करनेका भरसक प्रयत्न किया। एक अच्छा खासा वाग्युद्ध छिड़ गया। समाचारपत्र जगत में हलचल मच गयी। मिस रोज़ पिपिन की उत्तेजना भी कम न थी। न्यायालय के निर्णय के सम्बन्ध में लोग बाजियां लगाने लगे। अन्त में चौबीस घण्टे के चांचल्यकर वाद विवाद के उपरान्त जूरी के सदस्य विचार विनिमय के लिए चले गये। दो बार वापस आकर उन्होंने जज से कुछ परामर्श किया। फिर बारह सम्मानीय व्यक्तियों की जूरी ने एक स्वर से अपना निर्णय दिया कि चारों अभियुक्त दोषी हैं!

(११)

लैनी को यह समाचार रेडियो पर मिल गया। वह अपने कमरे में अकेला बैठा हुआ था। समाचार सुनते ही उसकी आंखों से अश्रु धारा बह चली। वह पत्थर की प्रतिमा की भांति चुपचाप बैठा रहा। यह उसके जीवन की सबसे अधिक दुःखपूर्ण घड़ी थी। मन ही मन उसने अतीत के उस स्वर्णयुग की कल्पना की जब वह अपने पिता के घर में रहता था और बेस के साथ उसका

प्रथम परिचय हुआ था। उस समय उसकी आयु सत्रह वर्ष की थी और बेस की नौ वर्ष की। बेस उसकी बातें बड़े चाव से सुना करती थी क्यों कि वह योरोप का भ्रमण कर आया था और बहुत सी मनोरञ्जक बातें जानता था। उसे पेरिस में ऐमिली चैटर्सवर्थ के मकान पर बेस और हैन्सी के प्रथम मिलन की याद आयी। रोबी ने ठीक ही कहा था कि बेस के पथभ्रष्ट होने का उत्तरदायित्व बहुत दूर तक लैनी पर ही था। दोनों आदर्शवादी थे और हैन्सी भी कल्पना-लोक में विचरण करने वाला व्यक्ति था। तीनों मिलकर एक सुन्दर समाज की कल्पना किया करते थे—एक ऐसे समाज की जहां समानता और न्याय का राज्य हो। किसी ने क्षण भर के लिए भी इस बात की कल्पना न की थी कि यह सुन्दर स्वप्न किसी दिन घृणा, हिंसा और छल कपट की विभीषिकाओं से अतिरञ्जित होकर एक भयानक आतंकके रूप में भी परिणत हो सकता है! इसके बाद बेस और लैनी के विचारों में अन्तर आने लगा; दोनों के मार्ग भिन्न भिन्न दिशाओं की ओर मुड़ने लगे। ये मार्ग फिर से मिल कर एक होने की की कोई सम्भावना न रह गयी थी। वे केवल एक स्थान पर मिल सकते थे—यह स्थान था युद्ध क्षेत्र!

लैनी उठ कर अन्दर गया और उसने लारेल को यह समाचार सुनाया। लारेल पहले से ही इसके लिए तयार थी। उसे लैनी की ही अधिक चिन्ता थी। लैनी ने अपने आंसू पोछ लिये थे। किन्तु वह जानती थी कि उसके हृदय में भीषण द्वन्द्व चल रहा है। उसने लैनी को अपनी बाहों में जकड़ लिया और उसे भांति भांति से आश्वासन देना शुरू किया। "तुम शोक मत करो लैनी. संसार में शोक की भांति घातक अन्य कोई वस्तु नहीं है। बेस ने जानबूझ कर शहीद बनना स्वीकार किया था। कदाचित वह मन ही मन अपने भाग्य पर प्रसन्न हो रही होगी। उसका गर्व उसकी रक्षा करेगा। इसके अतिरिक्त उसके जेल जाने में अभी काफी समय है। वे कुशल वकील लोग मामले को सुप्रीम कोर्ट तक ले जायेंगे और जहां तक होगा अधिक से अधिक विलम्ब करने का प्रयत्न करेंगे। कम्युनिस्टों के पास पैसेकी कमी नहीं है; वे मामले को यथासम्भव दूरी तक घसीटने में कोई कोर कसर न उठा रखेंगे। इधर बेस अपना कांटों का मुकुट पहने हुए जनता के सम्मुख अपने आदर्श का प्रचार करती घूमेगी।"

लारेल ने बेस का पहले वाला रूप न देखा था। इसलिए यदि उसके शब्दों में कुछ कटुता की छाया थी तो वह क्षम्य ही थी।

दोनों ने हैन्सी के प्रश्न पर विचार किया। अब वह स्वतन्त्र था। अब उसे न कम्युनिस्ट पार्टी के आदेशों का पालन करना था न एफ० बी० आई के आदेशों का। किन्तु उसकी स्थिति बड़ी विचित्र हो गयी थी। उसने खुले आम अपने आपको एक कम्युनिस्ट के रूप में घोषित कर दिया था और अपनी पत्नी के प्रति वाह्य रूप में पूर्ण वफादारी दिखाई थी। अब जब कि वह जेल जा रही थी हैन्सी के लिये उसे तलाक देना लौकिक दृष्टि में कुत्सित रुचि का सूचक था। हैन्सी यह कह सकता था कि वह सरकार के भेदिये के रूप में ही कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर गया था और बेस के साथ भी उसका कभी मतैक्य नहीं रहा था। किन्तु जनता इन बातों को सहज ही स्वीकार न करेगी!

लैनी ने यह आशा प्रकट की कि हैन्सी निराश न होगा और भविष्य का सामना उत्साह के साथ करेगा। लारेलने बात काटते हुए कहा, "उसे क्या चिन्ता है? बेस के साथ तो उसका जीवन साक्षात नर्क हो गया था। अब वह एक ऐसी स्त्री पा गया है जिसके साथ वह सचमुच प्रेम कर सकता है। मेरा अनुमान है कि रोज़ अपना कर्त्तव्य भूलेगी नहीं।"

(१२)

लैनी ने यह उचित समझा कि वह न्यूकैसेल जाकर अपने पिता तथा सौतेली मां को यह संवाद सुना दे। वह लारेल को अपने साथ न ले गया क्योंकि वह एक पारिवारिक मामला था। लैनी जानता था कि उसके परिवार वाले लारेल की उपस्थिति में अपने परिवार की व्यक्तिगत समस्याओं की चर्चा करना पसंद न करेंगे।

बेचारे रोबी बड! लैनी जानता था कि रोबी के मनमें अब भी यह धारणा है कि बेस के सर्वनाश के लिये उनका पुत्र ही उत्तरदायी है। बात यह है कि उनकी दृष्टि में गणतांत्रिक समाजवाद तथा कम्युनिज्म के बीच कोई विशेष अन्तर न था। यदि कोई अन्तर था भी तो इसे वे पूर्णतया दार्शनिक ही समझते थे। उनका कहना था कि ये दोनों ही चिन्तनधाराएं अमेरिका की जीवन प्रणाली

के अनुकूल नहीं हैं। अमेरिका की जीवन प्रणाली से उनका तात्पर्य बड-अलिन्ग एयर क्राफ्ट कम्पनी में उनके स्वामित्व से था। सोशलिस्टों को भी वे कम्युनिस्टों के रूप में ही देखते थे और यह समझते थे कि सोशलिस्ट लोग केवल खुलेआम अपने उद्देश्यों की घोषणा नहीं करते। अन्यथा वे भी कम्युनिस्टों की भांति ही हैं। अवसर मिलते ही वे भी बड-अलिन्ग-एयरक्राफ्ट कम्पनी को हथिया कर उसे किसी लेबर-यूनियन के अधीन करने में कोई कोर कसर न उठा रखेंगे। यों भी बड-अलिन्ग कम्पनी में एक ट्रेड यूनियन थी और व्यवहार कुशल रोबी बड उसके साथ नम्रता का व्यवहार करते थे। किन्तु मन ही मन वे उससे तीव्र घृणा करते थे।

किन्तु आजकल वे इतनी उदारता दिखाने लगे थे कि "मैं अब बूढ़ा हो गया हूं, भविष्य युवकों के लिये है।" लैनी के अतिरिक्त उनके दो और पुत्र भी थे, राबर्ट और पर्सी। इन लोगों ने कारखाना चलाने का काम सीख लिया था और रोबी बड धीरे धीरे यह उत्तरदायित्व उनको सौंपते जा रहे थे।

लैनी ने जाकर उन्हे न्यायालय के दुखद निर्णय की बात सुनायी। रोबी ने पूछा कि बेस की अपील की क्या सम्भावनाएं हैं और कम्युनिस्ट लोग इस अपील के लिये आवश्यक धन का संग्रह कर सकेंगे अथवा नहीं। लैनी ने कहा, "इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है।" इसके बाद पिता पुत्र इस बात पर अनुमान लगाते रहे कि बेस को कितने वर्ष की सज़ा मिलेगी और वह इस सज़ा को बर्दाश्त कर सकेगी या नहीं। लैनी ने यह मत प्रकट किया कि बेस अपने विश्वासों पर अडिग है और इसलिये वह सजा की परवाह न करेगी। "उसने घृणा में आनन्द खोजने की प्रकृति हृदयंगम कर ली है।" पिता के सामने पुत्री के सम्बन्ध में इस प्रकार की कठोर बात कहना उचित न था। किन्तु लैनी के मुंह से यह बात निकल ही गयी।

अपनी सौतेली मां को आश्वासन देते हुए लैनी ने कहा कि बेस उन पुराने कट्टर धार्मिक व्यक्तियों की भांति ही है जिनका एकमात्र अपराध विवेक का अभाव है। किन्तु घर लौटते समय उसे ऐसा अनुभव हुआ कि वह बेस के प्रति अनावश्यक रूप में भावुक हो रहा है। उसने निश्चय किया कि वह उसके प्रति अपने

हृदय की सारी सहानुभूति समाप्त कर देने का प्रयत्न करेगा। उसने सोचा कि बेस का संसार उसके संसार से एकदम भिन्न है। एक न एक दिन उसे ऐसा कोई व्यक्ति मिल जायगा जो उसके विचारों से पूर्णतया सहमत हो। और इस प्रकार उसकी व्यक्तिगत समस्या का समाधान हो जायगा। जेल में रहते हुए भी वह कैदियों को अपने पक्ष में मिलाने का प्रयत्न करेगी और उन्हें व्यक्तिगत अपराधों के स्थान पर सामूहिक अपराध करने के लिये राज़ी करने का प्रयत्न करेगी। मकानों में चोरी करने के स्थान पर वे राष्ट्रों में घुसकर चोरी करने का प्रयत्न करेंगे। लोगों के बटुए चुराने के स्थान पर वे सारे संसार को चुरा लेने का प्रयत्न करेंगे !!

(१३)

एडगरमीयर पहुँचने पर टेलीफोन की घण्टी बजी। एक परिचित कण्ठ स्वर ने कहा, "मैं हूं मोइशे जिनसेनहायमर। हम लोग तुमसे मिलना चाहते हैं।"

लैनी ने उत्तर दिया, "यह 'हम' शब्द सुनकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। तुम लोग यहां क्यों नहीं आ जाते ?"

"हम लोग तुम्हारे घर पर आना ठीक नहीं समझते। संध्या को छै बजे हम शेफर्डस् टाउन के पोस्ट आफिस के सामने तुम्हारी प्रतीक्षा करेंगे। इसके बाद सब लोग साथ साथ कहीं पर भोजन करने के लिये जायंगे।"

"अच्छी बात है।" लैनी ने कहा और लारेल को इस संवाद से अवगत करा दिया।

"मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि रोज़ हैन्सी को सम्हाल लेगी।" लारेल ने मुस्कराते हुए कहा। "मुझे ऐसा लगता है कि दोनों नेवादा जाने की तयारी कर रहे हैं।"

जब लेनी ओर लारेल निश्चित स्थान पर पहुंचे हैन्सी और रोज़ वहां पहले से ही उपस्थित थे। उनकी मोटर पर भाँति भाँति का सामान लदा हुआ था। उन्होंने लैनी को सारी कहानी सुना दी। हैन्सी न्यायालय के निर्णय की प्रतीक्षा कर रहा था। रोज़ ने टेलीफोन करके उसे बता दिया कि बेस अपराधिनी घोषित हुई है। हैन्सी ने बेस के लिये एक पत्र पहले ही लिख कर रख लिया था। उस

पत्र में उसने बेस को लिखा था कि मैंने अपने जीवन को तुम्हारे जीवन के साथ संतुलित करने का भरसक प्रयत्न करके देख लिया किन्तु इस दिशा में मुझे सफलता न मिल सकी। फलस्वरूप मैं सदा के लिये तुम्हारा साथ छोड़कर जा रहा हूं। यह पत्र उसने बेस की ड्रेसिन्ग टेबिल पर रख दिया था। इसके साथ उसने एक हजार डालर का एक चेक भी रख दिया था। वह जानता था कि बेस के पास रुपया है किन्तु उसने अपना कर्त्तव्य समझा कि दाम्पत्य जीवन भंग करते समय वह अपना आर्थिक ऋण चुका दे।

इस प्रकार हैन्सी और रोज़ स्वच्छन्द रूप से संसार में विचरण करने के लिए निकल पड़े थे। हैन्सी ने बताया कि उसी रात को वे लोग नेवादा जा रहे हैं। जाने के पूर्व वे अपने प्रिय मित्रों के साथ बैठ कर भोजन करने के इच्छुक हैं। रोज़ ने कहा कि हैन्सी ने उसे इस बात का वचन दिया है कि वह अपनी संगीत लिपियों के अतिरिक्त अतीत से सम्बन्धित सारी घटनाओं को भूल जाएगा। "मैंने उसे चेतावनी दी है कि यदि मैं उसे कभी विचारमग्न मुद्रा में देखूंगी तो उसकी आंखों के सामने ही उसकी वायलिन तोड़कर फेंक दूंगी।"

यह भविष्य के प्रति एक स्वस्थ दृष्टिकोण था। लारेल ने रोज को प्रोत्साहन दिया। उसने कहा कि हैन्सी ने बेस को सर्वनाश के पथ से बचाने का हर सम्भव प्रयत्न किया था। उसने स्वयं दोनों के तर्क वितर्क को सुना था। केवल हैन्सी ही नहीं लैनी और लारेल ने भी बेस को समझाने का हर सम्भव प्रयत्न किया था। बार बार उसके मस्तिष्क में यह बात जमाने का प्रयत्न किया गया था कि स्टालिनवाद समाजवाद का एक अत्यन्त विकृत स्वरूप है। वह वस्तुतः फासिज्म ही है।

सन् १९३९ में स्टालिन ने हिटलर के साथ जो समझौता किया था उससे यह बात भली भांति प्रमाणित हो गयी थी। बेस भी इसपर कुछ कुछ विश्वास करने लगी थी। किन्तु इसके बाद हिटलर ने रूस पर आक्रमण कर दिया और वस्तुस्थिति का स्वरूप बदल गया। रूस परिस्थितियों के फलस्वरूप अमेरिका का मित्र बन बैठा था। संसार के लाखों करोड़ों समाजवादियों ने यह निश्चय किया था कि इस नये मित्र को हर प्रकार की सहायता दी जाय। किन्तु बाद में

जो शीत-युद्ध चला उसने इनकी आंखें खोल दीं। फिर भी बहुत से समाजवादियों ने अपनी आंखें बन्द रखने का निश्चय कर लिया। किन्तु विवेकशील पुरुषों से यह आशा कैसे की जा सकती थी कि वे आंखें मूंद कर चुपचाप शत्रु के जाल में प्रवेश कर जायंगे ?

लारेल की बात समाप्त होने पर लैनी ने रोज़ को हैन्सी की निर्दोषिता के सम्बन्ध में दो चार बातें बतायीं। उसने कहा कि बेस का उसके साथ निर्वाह होना एकदम असम्भव हो उठा था। हैन्सी के लिये बेस का साथ छोड़ना अनिवार्य हो गया था। यह एक सौभाग्य की बात थी कि उसके जीवन का भार सम्हालने के लिये उसे एक सुयोग्य महिला मिल गयी अन्यथा अन्य असफल दम्पतियों की भांति उसका जीवन भी नष्ट भ्रष्ट हो गया होता।

(१४)

अपनी अपनी मोटर में बैठकर वे लोग एक छोटे से नगर में पहुंचे जहां किसी परिचित व्यक्ति से मिलने की कोई सम्भावना न थी। वहां सबने सांध्य भोजन किया। भोजन के समय वे लोग दबे स्वर में उस सनसनीखेज मामले की बातें करते रहे जिसे सफल बनाने में सरकारी अटर्नी ने ऐसी अद्भुत कार्य क्षमता का परिचय दिया था। यह एक दुर्भाग्य की बात थी कि एफ० बी० आई ने कम्युनिस्टों को पकड़ने का काम बहुत पहले ही न शुरू कर दिया। अन्यथा आणविक रहस्यों की चोरी न हुई होती। किन्तु युद्ध के समय स्टालिन ने फ्रैन्कलिन रूजवेल्ट से लेकर साधारण से साधारण नागरिक तक को चकमे में डाल दिया था – लैनी और लारेल, हैन्सो और बेस, सब पर उसका जादू चल गया था।

रोज़ ने बताया कि हैन्सी ने रेनो में अपने वकील को टेलीफोन करके उसकी सलाह ली थी। यह निश्चय हुआ था कि हैन्सी की ओर से बेस को यह सूचना दे दी जाय कि वह न्यायालय में तलाक का आवेदन-पत्र दाखिल करने जा रहा है। वह कानून की दृष्टि में अपराधिनी प्रमाणित हो चुकी थी और इसलिये तलाक मिलने में कोई कठिनाई न होगी। यह कहना ही पर्याप्त होगा कि बेस कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्या है और इसके फलस्वरूप उसके पति को समाज में नीचा देखना पड़ता

है। रेनो में तलाक मिलना और भी सुविधाजनक है क्योंकि वह इस मामले में अपनी उदारता के लिये प्रसिद्ध है। लोग दो तीन हजार मील की लम्बी यात्रा करके यहां तलाक लेने के उद्देश्य से आते थे और उनकी आशा विफल न होती थी।

इस प्रकार हैन्सीबेस दम्पति अब हैन्सीरोज़ होने जा रहे थे। रोज़ ने इस नये नाम को लेकर विनोद करना शुरू कर दिया—ऐसा सुन्दर विनोद जो केवल वही कर सकती थी। इस बार फिर उसने हैन्सी से कहा कि उसे अपना बटुआ अलग रख देना होगा और माल के बोरे की भांति यात्रा करना होगा। इस मज़ाक पर सब लोग जी खोलकर हंसे। किन्तु यह मज़ाक न था। रोज़ गम्भीर थी। उसने इस प्रश्न पर कानूनी सलाह ली थी और यह आवश्यक था कि हैन्सी इस बार भी रोज़ के खर्च पर यात्रा करे। उसने इसके प्रमाण में लैनी और लारेल के रूप में दो गवाह भी प्राप्त कर लिये थे। पैसे की उसके पास कोई कमी न थी क्योंकि न्यूयार्क में बेस के मामले में रिपोर्टर का काम करते हुए उसे बाईस दिनों के वेतन के रूप में ग्यारह हजार डालर की एक रकम प्राप्त हुई थी। पानी के रूप में आने वाला पैसा यदि पानी के रूप में बह जाय तो यह बात आपत्तिजनक भी नहीं होती। किन्तु रोज़ ने कहा कि भविष्य में उसका पैसा पानी की भांति न बहेगा। वह शीघ्र ही एक बड़ा सा खेत खरीदेगी और उसके चारों ओर तारों का बेड़ा लगा देगी ताकि कम्युनिस्ट और खरगोश उसके अन्दर न घुसने पावें।

(१५)

बातों का तारतम्य घूम फिर कर बेस पर आ गया। लैनी और हैन्सी उसके प्रति सहानुभूतिशील थे। किन्तु रोज़ और लारेल दृढ़तापूर्वक उसके विरुद्ध थीं। इनका कहना था कि बेस ने जान बूझ कर शहीद बनना स्वीकार किया था और इसलिये वह किसी को दोष नहीं दे सकती। लारेल ने कहा कि बेस ने साधनों को साध्य बना लिया था और उसके साधन निश्चित रूप में गंदे थे। फलस्वरूप उसका व्यक्तित्व भी गन्दा हो गया था।

सबसे कठिन समस्या थी हैन्सी के दोनों बच्चों की। लारेल ने हैन्सी से

कहा, "तुम्हें एक ही बात का निश्चय करना है। वह यह कि तुम अपने बच्चों को कम्युनिष्ट षड्यन्त्रकारियों के रूप में विकसित करना चाहते हो या सभ्य नागरिकों के रूप में। यदि उन्हें सभ्य नागरिक बनाना है तो तुम्हें उनको बेस से अलग करना पड़ेगा'। तुम्हे उनको अपनी माता के सम्बन्ध में सारी बातें साफ साफ रूप में बतानी होंगी। यह आवश्यक है—भले ही इससे उनके अथवा तुम्हारे हृदय को पीड़ा पहुँचे।" रोज़ ने भी इसका समर्थन किया। यह स्पष्ट था कि वह अपने सौतेले पुत्रों को कम्युनिस्ट बनते हुए न देख सकती थी। हैन्सी ने भी यही निश्चय किया था।

इसके बाद सम्पत्ति के बंटवारे का प्रश्न था। हैन्सी बेस के साथ आर्थिक प्रश्नों पर सदा उदार रहा था। फलस्वरूप बेस के पास काफी पैसा हो गया था बेस पहले हैन्सी के संगीत समारोहों में पियानो-वादिका का कार्य करती थी। किन्तु समारोहों में मुख्य आकर्षण हैन्सी का ही रहता था और बेस का गौण फिर भी यह सम्बन्ध प्रेम का था। फलस्वरूप वह अपनी आय का आधा भाग बेस को दे देता था।

इस समय भी हैन्सी की इच्छा थी कि वह अपना मकान बेस को दे दे। किन्तु लैनी और लारेल ने इस प्रस्ताव का विरोध किया। लारेल ने कहा, "इसका यह अर्थ होगा कि तुम कम्युनिस्ट पार्टी के युद्ध-कोष को पचास हजार डालर का दान दोगे। वह मकान को नीलाम करके सारा रुपया कम्युनिस्ट पार्टी को दान दे देगी। यदि तुम्हें उदारता दिखाने का इतना शौक है तो यह मकान शान्ति-परिवार को दे दो। हम लोग इस मकान को बेचकर सारा रुपया कम्युनिस्टों के छल का भण्डाफोड़ करने में खर्च करेंगे।"

इस पर सब लोग हंस पड़े। हैन्सी एक भावुक व्यक्ति था। उसने यह मत प्रदर्शित किया कि कदाचित बेस स्वयं उसका मकान अथवा पैसा स्वीकार न करेगी। किन्तु लारेल ने बात काटते हुए कहा, "यदि पार्टी उसे यह मकान स्वीकार करने का आदेश देगी तो वह उसे तुरन्त स्वीकार कर लेगी।" हैन्सी ने कहा कि उसने इस दृष्टिकोण से विचार न किया था। लारेल कहती गयी, "मैं कम्युनिस्ट पार्टी के उच्चस्तरीय बुद्धिजीवियों से मिल चुकी हूँ और मैं जानती हूँ कि उनका जीवन तपस्वी का जीवन नहीं होता। वे लोग बड़ी शान शौकत

के साथ रहते हैं—ऐसे ऐश्वर्य का उपयोग करते हैं जो पुराने ज़माने में राजपरिवारों के लिए सुरक्षित रहता था।"

कुछ सोचकर लारेल ने फिर कहा, "मेरी सलाह मानो और रोज़ को तब तक छिपाकर रखो जब तक कि तुम्हें तलाक नहीं मिल जाता। यह निश्चित है कि बेस रोज़ को देख लेगी तो तुरन्त लड़ने के लिये तयार हो जायगी।"

लैनी ने इस विचार विनिमय में कोई भाग न लिया। वह चुपचाप सुनता रहा। वार्त्तालाप का प्रत्येक शब्द उसके हृदय को बींधता हुआ चला जाता था। वार्त्तालाप का केन्द्र उसकी बहन ही थी। हैन्सी को एक दूसरी पत्नी मिल सकती थी किन्तु बेस के स्थान पर कोई दूसरी बहन लैनी को न मिल सकती थी। मार्सेलीन थी किन्तु वह सैकड़ों मील दूर रहती थी। इसके अतिरिक्त उसमें बेस के वे बौद्धिक गुण कहां थे? जिन गुणों के कारण बेस लैनी के जीवन में इतनी घनिष्टता प्राप्त कर सकी थी वे किसी दूसरी स्त्री में सहज ही प्राप्य न थे। लैनी को ऐसा प्रतीत हो रहा था कि बेस के रूप में उसके शरीर का ही आधा भाग खो गया है और उसे अपने ही इस अर्द्धाङ्ग को दफनाना पड़ रहा है। किन्तु यह अनिवार्य था। उसके पास लारेल की दलीलों का कोई उत्तर न था।



अध्याय २२

● मृत्यु की प्रतिध्वनि ●

(१)

जुलाई मास में अमेरिका के दोनों प्रमुख राजनैतिक दल—डेमाक्रेटिक पार्टी तथा रिपब्लिकन पार्टी – राष्ट्रपति के निर्वाचन के प्रसंग में व्यस्त हो गये। प्रत्येक दल के सम्मेलन में भिन्न भिन्न देशों से लगभग दो दो हजार प्रतिनिधि आ गये। हवाई और अलास्का जैसे सुदूरस्थित प्रदेशों से भी प्रतिनिधि आए थे। जितने प्रतिनिधि आए उनसे दूने रिपोर्टर, फोटोग्राफर, तथा रेडियो-प्रतिनिधि आए। इनके अतिरिक्त असंख्य दर्शकों की भीड़ थी। सभास्थल में तिल धरने का स्थान न था। अमेरिका के प्रत्येक राज्य का झण्डा तथा उसके प्रतिनिधि का नाम सभा मण्डल में प्रदर्शित किया गया था। भाषण देते समय वक्ताओं ने अमेरिका की गौरवपूर्ण परम्पराओं की चर्चा की, वाशिंगटन और लिन्कन का नाम लिया। श्रोताओं ने विराट करतलध्वनि से वक्ताओं का स्वागत किया। बैण्ड-वादन से वातावरण गूंज उठा और प्रतिनिधि लोग अपने अपने राज्य के झण्डे लेकर जलूस निकालने लगे। प्रत्येक उम्मेदवार की लोकप्रियता की मुख्य कसौटी यह थी कि उसके स्वागत में कितनी बड़ी भीड़ आयी थी और तालियोंकी गड़गड़ाहट कितनी देर तक रही थी। यह क्रम रात दिन चलता रहता था। नाश्ते की लाखों तश्तरियां और सोडावाटर की असंख्य खाली बोतलें अपनी कहानी आप कह रही थीं।

सन् १९४८ में दोनों पार्टियों के सम्मेलन फिलाडेल्फिया में हुए थे। पहला सम्मेलन रिपब्लिकन पार्टी का हुआ था। उसने प्रेसीडेन्ट के पद के लिये न्यूयार्क के गवर्नर मिस्टर डेवे को मनोनीत किया था। अमेरिका के राजनैतिक पण्डित एक स्वर से यह घोषणा कर रहे थे कि मिस्टर डेवे की विजय सुनिश्चित है; रिपब्लिकन पार्टी के उत्साह का कोइ ठिकाना न था। फ्रैन्कलिन रूजवेल्ट की मृत्यु हो चुकी थी और उनका आकर्षक व्यक्तित्व जो कि डेमाक्रेटिक पार्टी का मुख्य

आधार था अब न रह गया था। अपने इस आधार को खोकर डेमाक्रेटिक पार्टी एक प्रकार से निरावलम्ब हो गयी थी।

फ्रैन्कलिन रूजवेल्ट के विराट व्यक्तित्व के स्थान पर जिस व्यक्ति ने पदार्पण किया था वह एक साधारण व्यक्ति ही प्रतीत होता था। न तो उसका व्यक्तित्व ही विशेष प्रभावोत्पादक था न वह भाषण देने की कला में कोई पटुता रखता था। उसके स्वर में मिसूरी के उच्चारण की हल्की सी छाप रहती थी। वह अपना प्रत्येक वाक्य शीघ्रता से समाप्त कर देने का अभ्यस्त था; एक एक शब्द पर ज़ोर देते हुए बोलना उसके स्वभाव में ही न था। संक्षेप में हैरी ट्रूमन नामक यह व्यक्ति ऊपर से देखने पर अत्यंत साधारण प्रतीत होता था। किन्तु प्रेसीडेन्ट का उत्तरदायित्व अत्यन्त विशाल था। इसलिये जो लोग ट्रूमन के प्रति सहानुभूति शील थे वे उन पर दया करते थे और जो उनके विरुद्ध थे वे उनकी कठोर आलोचना करते रहते थे।

दो वर्ष पूर्व जिस कांग्रेस का गठन हुआ था उसमें प्रतिक्रियावादी तत्वों की अधिकता थी। प्रेसीडेण्ट ट्रूमन उसके विरुद्ध किसी प्रकार अपना काम चला रहे थे। यह ८०वीं कांग्रेस थी और लोगों का कहना था कि अमेरीका के इतिहास में इससे अधिक खराब कांग्रेस और कभी न देखी गई थी। प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट ने जिस 'नये सौदे' की घोषणा की थी वह ट्रूमन को उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त हुआ था। किन्तु कांग्रेस ने एक के बाद एक कानून स्वीकृत करके इस 'नये सौदे' को समाप्त कर दिया था। उसने और भी कई प्रतिक्रियावादी कानून स्वीकृत कर दिये थे। अमेरिका का संविधान बनाने वाले पूर्वजों ने यह व्यवस्था की थी कि सरकार के अन्दर कहीं भी शक्तिका अत्यधिक केन्द्रीयकरण का न होने पावे। उन्होंने बड़ी सतर्कता के साथ शासन-शक्ति को भिन्न भिन्न भागों में विकेन्द्रित कर रखा था। किन्तु उन्होंने इस बात की कल्पना भी न की थी कि आगे चलकर देश के अन्दर भयंकर प्रचार-युद्ध होने लगेंगे। जो भी हो, इस समय यह आशा प्रदर्शित की जा रही थी कि अब रिपब्लिकन पार्टी सत्तारूढ़ होने जा रही है और अमेरिका के अन्दर एकता की आशा पैदा हो गयी है। लोगों का कहना था कि

रिपब्लिकन पार्टी के सत्तारूढ़ होने के फलस्वरूप 'समाजवाद की ओर झुकने' की प्रवृत्ति निश्चित रूप में समाप्त हो जायगी।

डेमाक्रेटिक पार्टी ने राष्ट्रपति के पद के लिए फिर से ट्रूमन को मनोनीत किया ; कोई दूसरा व्यक्ति इसके उपयुक्त था भी नहीं। किन्तु पेशेवर राजनीतिज्ञ लोग ट्रूमन के प्रति विशेष उत्साहपूर्ण न थे। मिस्टर ट्रूमन जब चुनाव के प्रसंग में लास एन्जेल्स में अपना भाषण देने के लिए गये तो उन्हें सभा आयोजित करने के लिए कोई उपयुक्त स्थान न मिल सका !! मिस्टर ट्रूमन को मनोनीत करने के बाद सम्मेलन अपनी खाना-पूर्ति में लगा रहा था और कई घण्टों के बाद वे अपना स्वीकृति-भाषण दे सके थे।

जिस समय वे भाषण देने के लिये खड़े हुए रात के दो बज गये थे। सब लोग थक गये थे। किन्तु मिस्टर ट्रूमन के भाषण में दो बातें ऐसी आयीं कि श्रोताओं को आश्चर्यचकित रह जाना पड़ा। उन्होंने प्रतिक्रियावादी डेमोक्रेटों तथा रिपब्लिकनों के गठबंधन की तीव्र आलोचना की और सारे सभामण्डप को अपने आग्नेय शब्दों द्वारा चमत्कृत कर दिया। एक नयी आशा का संचार हुआ। प्रतिनिधिगण आश्वस्त होकर अपने अपने घरों की ओर लौट गये। दूसरे दिन समाचार पत्रों में जब यह भाषण प्रकाशित हुआ सारे देश में उत्तेजना की एक लहर सी आ गयी।

अमेरिका के राष्ट्रपति के चुनाव के लिए होने वाले विशाल राजनैतिक अभियान का श्रीगणेश इसी प्रकार हुआ था। यह अभियान साढ़े तीन मास तक अनवरत रूप में चलता रहा था। लैनी और लारेल तथा शान्ति-परिवार के अन्य सदस्य प्रतिदिन समाचार पत्रों में इसका विवरण ध्यानपूर्वक पढ़ते रहते थे। किन्तु उन्होंने अपने आपको तटस्थ रखा। शान्ति-रेडियो पर उन्होंने किसी भी पक्ष का समर्थन अथवा विरोध न किया। उनकी नीति घरेलू राजनीति के मामलों में पूर्ण तटस्थता की थी। यों ही उनके सामने एक विशालकाय कार्य पड़ा हुआ था—संसार में शान्ति-रक्षा का कार्य। कम्युनिज्म नामक एक तथाकथित सर्वविजयी शक्ति पूंजीवाद रूपी एक अडिग शक्ति को पराभूत करने के लिये कृतसंकल्प थी और

मांनि ही था जो मनुष्यों की आत्माओं को नर्क की अग्नि से बचाने के लिये अपने धार्मिक विरोधियों की इस पृथिवी पर ही अग्नि की भेंट चढ़ा देता था।

(३)

रेनो में तलाक आसानी से मिल जाता है। जो लोग सैकड़ों मील की यात्रा करके यहां तलाक लेने के लिये आते हैं वे कभी निराश नहीं होते। किन्तु समय की बर्बादी और धन की बर्बादी तो होती ही है।

आजकल लैनी और लारेल ध्यानपूर्वक रेडियो पर समाचार सुनते रहते थे। उन्हें प्रतिक्षण यह आशंका सताती रहती थी कि कहीं बर्लिन में तृतीय महायुद्ध का श्रीगणेश न हो जाय। किन्तु रेडियो पर तृतीय महायुद्ध का समाचार सुनने के स्थान पर उन्होंने यह समाचार सुना कि हैन्सी को तलाक मिल गया है। बाद में समाचार पत्रों में उसने पढ़ा कि जज ने बच्चों को हैन्सी के सुपुर्द करने में कुछ आनाकानी की थी क्योंकि उसका विश्वास था कि हैन्सी एक कम्युनिस्ट है। हैन्सी ने इसके उत्तर में यह कहा था कि वह अपनी पत्नी के कारण ही कम्युनिस्ट आन्दोलन में शामिल हुआ था। बेस ने उससे कहा था कि कम्युनिस्ट आन्दोलन एक अमरीकी आन्दोलन है और वह पूर्णतया गणतांत्रिक तथा वैधानिक है। जब उसे इस बात का पता चला कि पार्टी एक विदेशी शक्ति के लिये अमेरिका के अन्दर जासूसी का कार्य कर रही है, उसने तुरन्त उससे अपना सम्बद्ध विच्छेद कर लिया था।

हैन्सीबेस दम्पति अब हैन्सीरोज़ हो गए थे। उन्होंने लैनी को टेलीफ़ोन किया। दोनों बड़े प्रसन्न थे और एक साथ टेलीफोन पर बोलने का प्रयत्न कर रहे थे। उन्होंने बताया कि तलाक स्वीकृत होते ही दोनों एक न्यायाधीश के पास गए और चटपट विवाह कर लिया। फीस केवल पांच डालर थी। किन्तु हैन्सी ने जज को एक बीस डालर का नोट दे दिया और फिर रेज़गी वापस न ली। अब हैन्सी अपने पास पैसा रख सकता था औप रोज़ के साथ मनमाने ढङ्ग से अन्तर्राज्यीय सीमाएं पार कर सकता था। वे लोग कैलीफोर्निया के भ्रमण की तयारी कर रहे थे। टेलीफोन पर वे बड़े आनन्द के साथ बार बार लैनी और और लारेल को अपना अभिवादन जना रहे थे।

दूसरे दिन समाचारपत्रों में यह समाचार विस्तारपूर्वक प्रकाशित हुआ। समाचार पत्र वालों ने अपने ढंग से एक कहानी रच डाली थी। उनका अनुमान था कि यह प्रणय-व्यापार न्यायालय में ही शुरू हो गया था जहां "रैबिट रेस" की लेखिका मिस रोज़ पिपिन मुकदमे के रिपोर्टर के रूप में बैठती थीं। प्रणय शब्द रोज़ को विशेष प्रिय न था। किन्तु उसका कहना था कि शब्दों का झगड़ा व्यर्थ है, उसे जिस व्यक्ति की खोज थी वह मिल गया और इतना ही पर्याप्त है। उसने यह निश्चय कर लिया था कि जब तक न्यूयार्क में इस विवाह की चर्चा जोर शोर से चल रही है वह हैन्सी के साथ कहीं दूर बनी रहेगी। हैन्सी अपने संगीत प्रदर्शनों के लिये दौरे पर तब तक न निकलेगा जब तक कि जनता इस बात को न भूल जायगी कि वह कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य था।

उसी दिन संध्या को लैनी के पास उसकी सौतेली बहन बेस का टेलीफोन मिला। बेस ने कहा, "लैनी मैं तुमसे मिलना चाहती हूँ।"

लैनी इसकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह इनकार न कर सका। वह जानता था कि बेस पर दुर्भाग्य ने जो कठोर आघात किया है वह किसी भी व्यक्तिके हृदय को हिला सकता है। लैनी उस विपत्ति के सम्बन्ध में कुछ कर न सकता था किन्तु थोड़ी बहुत सांत्वना तो दे ही सकता था।

"कहां मिलोगी तुम?" उसने प्रश्न किया।

"क्या तुम न्यूयार्क आ सकते हो?"

"तुम्हें असुविधा न हो तो मैं तुम्हारे घर आ जाऊं?"

"अब वह मेरा घर नहीं रहा।" उसने शान्त स्वर में कहा। किन्तु उस स्वर में भी कटुता का हल्का सा पुट था। "मैं यह घर छोड़कर जानेवाली थी। खैर तुम आना चाहते हो तो यहीं आ जाओ। किन्तु तुम अकेले ही आना।"

वह बेस का संकेत समझ गया। लारेल उसकी शत्रु थी। उसने आश्वासन देते हुए कहा, "मैं अकेला ही आऊंगा।"

लैनी ने लारेल से इसकी चर्चा की तो उसने सावधान करते हुए कहा, 'देखो, वह रोज़ के सम्बन्ध में पूछे तो तुम कुछ भी मत बताना। और वहां अधिक

भावुकता दिखाने की भी कोई आवश्यकता नहीं है। याद रखो तुम उस संसार के सदस्य हो जिसे वह पूर्णतया नष्ट भ्रष्ट करने पर तुली हुई है।"

"मैं उसके बारे में सोच सोचकर दुःखी होता रहता हूँ। उससे दो चार बातें कर लेने में कोई हानि नहीं है।"

(४)

बेस उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसकी आंखों में आंसू न थे। यदि उसने आंसू बहाये भी थे तो भी इस समय उनका कोई चिन्ह न था। लैनी ने देखा कि बातें करते समय उसकी मुट्ठियां मजबूती के साथ बंधी हुई थीं। कई बार उसे ऐसा लगा कि उसका आत्मनियंत्रण जवाब दे रहा है। किन्तु बेस संयत स्वर में ही बातें करती रही।

"मुझे यह आदेश मिला है कि मैं इस घर को खाली कर दूं। और तुम देख ही रहे हो कि मैं अपना सामान बांध चुकी हूं।"

"तुम कहां जा रही हो?"

"मैंने एक फ्लैट किराये पर ले लिया है।" उसने लैनी को अपना नया पता तथा टेलीफोन नम्बर दे दिया। इसके बाद उसने कहा, "हैन्सी के हृदय में होनेवाले इस आश्चर्यजनक परिवर्तन ने मुझे स्तब्ध कर दिया है। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं इसका क्या अर्थ लगाऊं?"

वह लैनी के उत्तर की प्रतीक्षा करने लगी। किन्तु लैनी के पास कोई उत्तर न था। इस सम्बन्ध में उसने पूर्ण मौन धारण करने का निश्चय कर लिया था। तर्क से कोई लाभ भी न था।

"तुम जीत गये, लैनी। मैं समझती हूँ तुम अपनी विजय पर बड़े आनन्दित होगे।"

"तुम गलती कर रही हो, बेस। हैन्सी एक वयस्क व्यक्ति है। वह अपना निर्णय सोच समझ कर ही करता है।"

"किन्तु क्या तुम समझते हो कि मैं इतने से ही सन्तुष्ट हो सकती हूं? तुम नहीं जानते कि हैन्सी को मैं कितना प्यार करती थी। घर से निकल जाना एक

आसान बात है किन्तु किसी व्यक्ति को अपने हृदय से निकाल देना उतना आसान काम नहीं है। जो भी हो, तुम मुझे बताओ कि उसे क्या हो गया है ?'

"जो हुआ है वह तुम जानती ही हो, बेस। कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल होने वाले हजारों व्यक्तियों के साथ यही हुआ है। एक बार पार्टी में घुसने के बाद वे धीरे धीरे इस बात का अनुभव करने लगते हैं कि उन्होंने उसके सम्बन्ध में जो धारणाएं बना रखी थीं वे निराधार हैं। धीरे धीरे वे पार्टी से ऊब जाते हैं और उसे छोड़ कर निकल जाते हैं। मैं समझता हूँ कम्युनिस्ट पार्टी में जितनी दुर्घटनायें होती हैं उतनी अन्य किसी राजनैतिक दल में नहीं होतीं।"

"मैंने यह घृणित मुकदमा शुरू होने के समय ही समझ लिया था कि पार्टी के बाहर वाले मेरे मित्र मुझे छोड़ कर चले जाएंगे। किन्तु हैन्सी भी मुझे त्याग देगा, यह मेरे लिए एकदम अकल्पनीय था। वह कौन स्त्री है जिसने उसके मस्तिष्क को इस प्रकार अभिभूत कर डाला है ?"

"वह एक पुस्तक-लेखिका है। उसकी पुस्तक पढ़कर तुम उसके व्यक्तित्व की जानकारी प्राप्त कर सकती हो। मुख्य बात यह है कि हैन्सी के साथ उसके विचार मिलते जुलते हैं और दोनों के बीच तर्क वितर्क की सम्भावना बिल्कुल नहीं है।"

"इसका यह अर्थ हुआ कि तुम मुझे पूरी बात बताना नहीं चाहते। किन्तु तुम्हे चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं। जिस व्यक्ति ने मुझे ठोकर मार कर भगा दिया उसके लिये लालायित होना मेरे स्वभाव में ही नहीं है। मैं उसका एक पैसा भी नहीं चाहती और उसे दण्ड देने की भी मेरे मन में तनिक भी इच्छा नहीं है। किन्तु मुझे यह विचार बहुत पीड़ा देता है कि हैन्सी ने भी अन्त में मेरे साथ विश्वासघात किया।"

लैनी इस विषय को टालना चाहता था। उसने कहा, "बेस तुमने वह पुरानी कहावत तो सुनी ही होगी कि सिर मुड़ाने से ही कोई सन्यासी नहीं हो जाता। जब किसी व्यक्ति को अपनी इच्छा के विपरीत विचार-परिवर्त्तन करना पड़ता है तो उसका आधारभूत दृष्टिकोण पहले जैसा ही रह जाता है। हैन्सी के साथ यही हुआ। तुम बराबर उसके साथ तर्क करती थीं। उस पर दबाव डाल कर तुम उसे

अपने विचारों में परिवर्त्तन करने के लिए बाध्य कर देना चाहती थीं। वह एक भावुक व्यक्ति है—प्रत्येक कलाकार भावुक होता है। वह तुमसे प्रेम करता था और उसका सारा व्यक्तित्व तुम्हारी दया पर निर्भर करता था। तुमने इस प्रकार की अशान्ति पैदा कर दी कि अन्त में उसने खीझ कर शान्ति के लिये अपने विचारों की स्वतन्त्रता तुम्हे समर्पित कर दी। किन्तु जहां तक बात विचारों तक ही सीमित थी तहां तक तो ठीक था पर जब उसने देखा कि तुम सरकार के विरुद्ध एक घातक षड़यन्त्र में लग गयी हो तब उसकी सहनशक्ति जवाब देने लगी।"

"तो तुम भी यही समझते हो कि मैं अपराधिनी हूँ?"

"मैं तुम्हारी स्थिति को समझता हूं। तुम्हें बाह्य संसारके सामने यही कहना आवश्यक है कि तुम निर्दोष हो। किन्तु तुम जानती हो कि मैं इस बात पर विश्वास नहीं कर सकता। मैंने कम्युनिस्ट मैनीफेस्टो पढ़ा है। मैंने लेनिन और स्टालिन की दो एक पुस्तकें भी पढ़ी हैं। मैं जानता हूँ कि कम्युनिज्म का अर्थ है युद्ध, यद्यपि आजकल उसने आपको शान्ति के प्रतीक के रूप में घोषित करना शुरू कर दिया है। मैंने हिटलर और उसके राष्ट्रीय समाजवाद के विरुद्ध एक खेल खेला था। मैं यह भी जानता हूँ कि तुम अमरीकी पूंजीवाद के विरुद्ध उसी प्रकार का खेल खेल रही हो। मुझे भी सच्ची बात बताने में तुम्हे द्विविधा होती है। किन्तु तुम्हें यह आशा न करनी चाहिए कि मैं एक मूर्ख की भांति तुम्हारी बातों पर विश्वास कर लूंगा। खैर, इसकी चर्चा करना व्यर्थ है।"

बेस का चेहरा उत्तेजना के कारण लाल हो गया। उसकी मुट्ठियां और भी मज़बूती के साथ बंध गयीं। किन्तु उसने अपने आपको सम्हालते हुए संयत स्वर में कहा, "लैनी, तुम मेरे साथ निर्दय हो रहे हो।"

"मैं तुम्हारे साथ निर्दयता का नहीं ईमानदारी का व्यवहार कर रहा हूं। किन्तु इस समय जैसी परिस्थितियां हैं उनमें निष्कपट व्यवहार निर्दय ही प्रतीत होगा। तुम अपने विश्वासों को छोड़ने के लिए तयार नहीं हो और मैं अपने विश्वासों को छोड़ने के लिए तयार नहीं हूं। मैंने तुम्हें इस विपत्ति से बचाने का यथासम्भव प्रयत्न किया था। किन्तु तुमने एक भी न सुनी। और आज मैं तुम्हारे

दुर्भाग्य पर मन ही मन दुःख मनाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सकता। किन्तु अब भी यदि तुम किसी समय मुझसे आकर यह कहोगी कि तुमने कम्युनिस्ट पार्टी की प्रवञ्चना को त्याग कर नया जीवन बिताने का निश्चय कर लिया है तो मैं तुम्हारी सहायता करने का यथासम्भव प्रयत्न करूंगा। किन्तु मैं समझता हूं कि अभी वह समय नहीं आया है।"

(५)

बेस ने स्वीकार किया कि वह समय अभी नहीं आया है, न आने की कोई सम्भावना ही है। इस प्रश्न पर और अधिक चर्चा व्यर्थ थी। अन्त में लैनी ने कहा, "मैं समझता हूँ तुमने मुझे एक स्टालिनपंथी कम्युनिस्ट बनाने के उद्देश्य से यहां नहीं बुलाया है। साफ साफ कहो कि मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूं?"

"मैं अपने बच्चों को देखना चाहती हूं। मैंने घर पर अपनी मां को टेलीफोन किया था किन्तु उन्होने बच्चों का पता देने से इनकार कर दिया।"

"मैं तुम्हें केवल इतना ही बता सकता हूं कि वे स्वस्थ्य और सुखी हैं। इस समय वे विद्यार्थियों के एक दल के साथ सैर पर गये हैं। बाहर की जलवायु स्वास्थ्यवर्द्धक होती है। वे आधे दिन पढ़ते हैं और शेष समय खेल कूद में बिताते हैं। बच्चों के लिए इस प्रकार का जीवन आदर्श है। तुम वहां जाकर उनकी सुख शान्ति क्यों भंग करना चाहती हो?"

"मैं उनकी सुख-शान्ति नहीं भंग करना चाहती, लैनी। किन्तु मुझे अपने बच्चोंको देखनेका अधिकार है। क्या उन्हें मेरी गिरफ्तारी की बात मालूम है?"

"उन्हे बता दिया गया है, बेस। इसे छिपाना सम्भव भी न था। उनके सहपाठियों में प्रत्येक को तुम्हारे मुकदमे तथा निर्णय की बात मालूम थी। अब इन बच्चों को आजीवन इस कलंक का भार ढोते रहना पड़ेगा। और यह कलंक तुम्ही ने उन पर लादा है।"

"इसका यह अर्थ है कि उनसे कहा गया है कि मैं एक बदमाश औरत हूँ!"

"नहीं, ऐसी बात कहना तो कोई भी पसंद न करेगा क्यों कि इससे उन अबोध बच्चों को पीड़ा पहुंचेगी। मैंने परिवार के साथ इस प्रश्न पर विचार विनिमय किया था। सर्वसम्मति से यह निश्चय किया गया था कि उन बच्चों से यह

कहा जाय कि तुम्हारी मां ने सोवियत सरकार की सहायता की क्योंकि उसका विश्वास था कि सोवियत सरकार एक अच्छी सरकार है। किन्तु हम लोग समझते हैं कि वह एक निर्दय और पतित सरकार है। उनसे यह कहना आवश्यक था क्यों कि इस समय रूस के साथ हम लोगों का एक अच्छा खासा युद्ध चल रहा है। यद्यपि इसे शीत-युद्ध कहा जाता है तथापि उसमें इतना ताप है कि वह दो भावुक-हृदय बच्चों की मानसिक शान्ति को जला कर राख कर दे। यह युद्ध प्रत्येक चिन्तनशील व्यक्ति के हृदय और मस्तिष्क को स्पर्श कर रहा है—विशेष कर युवकों के मस्तिष्क को। कम्युनिस्ट लोग इस प्रकार के युद्ध में बड़े पटु होते हैं। मैं तुम्हे साफ साफ बतला देता हूं कि यदि हैन्सी मुझसे सलाह लेगा कि तुम्हारे साथ बच्चों की मुलाकात करायी जाय या नहीं तो मैं तुम्हारे विपक्ष में ही अपना मत प्रकट करूंगा। तुम उन बच्चों की मानसिक शान्ति नष्ट भ्रष्ट करने के अतिरिक्त उनका कोई लाभ नहीं कर सकती हो।"

"यदि मैं तुम्हें यह वचन दूं कि मैं उनके सामने इस विषय की चर्चा न करूंगी?"

"इस विषय के अतिरिक्त तुम अन्य किस विषय की चर्चा कर सकती हो? तुम अपनी समस्या का जीता जागता स्वरूप हो। इसके अतिरिक्त कम्युनिस्टों के वचनों का कोई मूल्य नहीं होता। असत्य-भाषण की नीति का स्वयं लेनिन ने समर्थन किया था। इसके बाद स्टालिन ने संसार के प्रत्येक कम्युनिस्ट के लिये इसे एक अनिवार्य सिद्धान्त के रूप में परिवर्त्तित कर दिया। कम्युनिस्टों की यह नीति है बड़ी भयंकर क्योंकि इससे मानव समाज के पारस्परिक सम्बन्ध पूर्णतया संदिग्ध हो उठते हैं। यह नीति पारिवारिक जीवन को एकदम नष्टभ्रष्ट कर देती है। एक बहन अपने भाई का विश्वास नहीं कर पाती और उसे यह बात स्पष्ट रूप में यह कह देने के लिये वाध्य कर देती है।"

"लैनी तुम मेरे प्रति एकदम निर्दय हो गए हो!"

"मैं उस व्यक्ति के प्रति निर्दय होना अपना कर्त्तव्य समझता हूं जिसने मेरे तथा मेरे देश के विरुद्ध एक निर्दय युद्ध छेड़ रखा है। तीन वर्ष पूर्व प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट ने मुझे स्टालिन के पास भेजा था। उस समय भी उनके मन में यह

आशा थी कि यह व्यक्ति सही रास्ते पर आ जायगा। एक वर्ष बाद प्रेसीडेण्ट ट्रूमन ने भी मुझे इस कठोर व्यक्ति के पास यही संदेश लेकर भेजा था। किन्तु दोनों बार धोखा हुआ। इस व्यक्ति ने गम्भीरतापूर्वक हमें जो आश्वासन दिये थे उनका उसने पालन न किया। एक के बाद एक उसने अपने सारे वचन भंग कर दिये। अवसर मिलते ही उसने हमारे साथ की गयी संधियों को रद्दी की टोकरी में फेक दिया। मैंने उसे यह समझाने का प्रयत्न किया था कि मेरा देश शान्ति चाहता है और उसने अपनी सेना का विघटन करके इस बात को भली-भाँति प्रमाणित भी कर दिया है। सेना के विघटन का समाचार सुनकर उसे मन ही मन बड़ी प्रसन्नता हुई थी। उसने हम अमरीकियों को फिर से शान्ति का आश्वासन दिया और इसके बाद भीतर ही भीतर युद्ध की तयारी करने लगा। यही उसकी नीति है—यह नीति आज उसने अपने धर्म के रूप में परिवर्त्तित कर ली है। वह आज एक नये धर्मान्ध नेता के रूप में परिणत हो गया है। मैं किसी भी अवस्था में यह न चाहूंगा कि मैं अथवा मेरा देश उसके अधिकार में आ जाय।"

"लैनी, तुम व्यर्थ का बकवास कर रहे हो।"

"हां, बेस। हम लोग फिर से अपने पुराने तर्क वितर्क पर उतर सकते हैं। मैं तुम्हें बताता हूं, सुनो। जान मसारिक की मृत्यु के कुछ ही पूर्व मैंने उनसे भेंट की थी। वे जानबूझकर मृत्यु का आलिंगन करने के लिये अपने देश को लौटे थे। मानव स्वातन्त्र्य के लिये उन्होंने जान बूझकर शहीद होना स्वीकार किया था। तुम स्टालिनवाद की दलील चाहे जिस रूप में दो मुझ पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता।"

"तो तुम हैन्सी को यह परामर्श देने जा रहे हो कि वह मुझे बच्चों से न मिलने दे?"

"मैं उतनी दूर न जाऊंगा। यदि रोबिन परिवार मेरी सलाह माँगेगा तो मैं इतना ही कहूंगा कि उन बच्चों को तुमसे तब तक न मिलने दिया जाय जब तक कि वे पूर्ण रूप में वयस्क नहीं हो जाते अर्थात् जब तक वे इस बात को समझने योग्य नहीं हो जाते कि कम्युनिज्म क्या है और संसार के लिये वह कैसा

भयानक खतरा उपस्थित कर रहा है। वयस्क हो जाने के बाद वे बच्चे तुमसे मिलेंगे तो ठीक उसी स्वर में बातें करेंगे जिस स्वर में मैं इस समय तुम्हारे साथ कर रहा हूँ। वे तुमसे यही कहेंगे कि तुम कुछ भयानक भ्रान्तियों की शिकार हुई हो और तुमने एक नये ढंग के फासिज्म के लिये अपना सारा जीवन, अपना सारा सुख-स्वाछंद्य नष्ट भ्रष्ट कर डाला है। यह नया फासिज्म इस ढंग से रंग चुन कर आकर्षक बना दिया गया है कि संसार के निर्धन और पिछड़े हुए लोग इसके चकमे में आ जायं।"

"उन्हें निर्धन और पिछड़ा हुआ कौन बनाए रखता है?" बेस ने कुर्सी से उठ कर अत्यन्त तीक्ष्ण स्वर में कहा। उसने अपनी तर्जनी लैनी की ओर इस प्रकार बढ़ायी कि वह एक पिस्तौल की भाँति प्रतीत होने लगी। "तुम सुख सुविधा के संसार में मौज कर रहे हो और यह आशा करते हो कि निर्धन और पिछड़े हुए लोग दासता की बेड़ियों में इसी प्रकार जकड़े रहें। तुम यह आशा करते हो कि मजदूर जीवन-निर्वाह के वेतन पर तुम्हारे लिये बारह से सोलह घन्टे प्रतिदिन परिश्रम करते रहेंगे और तुम इनके शरीर के रक्त का एक एक बूंद चूसते रहोगे। तुमने ही मेरे हृदय में विद्रोह की अग्नि सुलगायी थी। उस समय तुमने मेरी आंखें खोलकर मुझे सारे संसार में अत्याचार और शोषण का नग्न ताण्डव दिखाया था: तुमने ही मुझे गरीबों से सहानुभूति करना सिखाया था। और आज तुम स्वयं अपने आदर्श से विचलित होकर प्रतिक्रियावादी बन गए हो। तुमने अपने आदर्श के साथ विश्वासघात किया और जनता के आदर्श के साथ विश्वासघात किया। आज तुम जनता के हितों के विरुद्ध युद्ध कर रहे हो। मैं इस बात को भलीभांति जानती हूँ। सम्भव है तुम्हीं ने सरकार से मिलकर मुझे गिरफ्तार करवाया हो!"

"नहीं, बेस। मेरी बात सुनो। लैनी ने शान्ति के स्वर में कहा। "मैंने तुम्हें जो कुछ सिखाया था उसका तुमने उल्टा अर्थ लगा लिया। मैंने कभी हिंसा और पाशविक बल के प्रयोग का समर्थन नहीं किया। मैंने तुम्हें यही सिखाया था कि सामाजिक न्याय की स्थापना आवश्यक है किन्तु यह काम केवल गणतांत्रिक उपायों तथा शिक्षा प्रचार द्वारा हो सकता है। गणतन्त्र और तानाशाही

के बीच आधारभूत अन्तर है। गणतांत्रिक उपायों द्वारा होनेवाला लाभ स्थायी होता है। तानाशाही से होनेवाले लाभ अस्थायी होते हैं। तानाशाही शासकों के एक नये राजवंश को ही जन्म दे सकती है, इसके अतिरिक्त वह और कुछ नहीं दे सकती। एक अत्याचारी को हटा कर उससे भी अधिक कठोर अत्याचारी आ जाता है, हत्याओं का क्रम अबाध रूप में चलता रहता है, दास-मजदूर-शिविरों का एक जाल सा बिछ जाता है। विभीषिकाओं की यह आंधी इस प्रकार चलती रहती है कि संसार आतंकित हो उठता है। अन्त में विचारशील व्यक्तियों को कम्युनिज्म के नाम से घृणा हो जाती है।"

बेस की उंगली अब भी तनी हुई थी किन्तु वह भावावेश के कारण कांपने लगी थी। बेस के हृदय में क्रोध अथवा भय अथवा शोक अथवा इन तीनों का एक सम्मिश्रण प्रचण्ड रूप में आलोड़न विलोड़न कर रहा था। किन्तु लैनी ने देखा कि तर्क करना व्यर्थ है। इसलिये वह उठ खड़ा हुआ। अचानक उसने देखा कि बेस की आंखों में आंसू छलछला आए हैं। वह धम से पास की एक कुर्सी पर गिर पड़ी और अपने मुंह को दोनों हाथों से ढक कर फूट फूटकर रोने लगी। लैनी प्रतीक्षा करता रहा। उसे इस बात का निश्चय करना कठिन प्रतीत हो रहा था कि वह क्या करे। वह जानता था कि बेस भी मन ही मन इस बात को समझती होगी कि कम्युनिस्ट आतंक के सम्बन्ध में उसने जो कुछ सुना है वह सत्य है। प्रत्येक कम्युनिस्ट—कम से कम अमेरिका में प्रत्येक कम्युनिस्ट इस बात को जानता है। फिर भी वह इस कठोर सत्य को काल्पनिक समझ कर टालने का भरसक प्रयत्न करता रहता है।

बेस की स्थिति बड़ी जटिल थी। उसका आदर्श एक स्वप्न था किन्तु वह इस स्वप्न को छोड़ने के लिये तयार न थी। उसने अपने आंसू पोछ डाले और तन कर खड़ी हो गयी।

"मैं अपनी इस निर्बलता के लिये लज्जित हूं। मैं अपने महान आदर्श के प्रति गाली गलौज सुनती हूं तो मुझे बड़ा कष्ट होता है। अब इस सम्बन्ध में कोई चर्चा करना व्यर्थ है, लैनी। मुझे बड़ा दुःख है।"

"दुःख तो मुझे भी है।" लैनी ने कहा—"मुझे विश्वास है कि एक न एक

दिन ऐसा समय आयगा जब तुम्हें अपने विचारों को बदलने की आवश्यकता का अनुभव होगा। यदि वस्तुतः ऐसा समय आ जाए तो तुम मुझे मत भूलना। मैं उस समय तुम्हारी यथासम्भव सहायता करने का प्रयत्न करूंगा।"

इतना कहकर लैनी चल दिया।

(६)

इस समय बर्लिन में एक नये प्रकारका आकाश-युद्ध चल रहा था। अमरीकियों ने सोवियत सरकार की चुनौती को स्वीकार लिया था। उन्होने इस बात का निश्चय कर लिया था कि वे बर्लिन छोड़कर न भागेंगे। साथ ही उन्होने यह संकल्प भी कर लिया था कि वे पश्चिमी बर्लिन की जनता को भूखों न मरने देंगे। यदि कम्युनिस्टों ने रेल, नहर और सड़क का मार्ग अवरुद्ध कर दिया तो आकाश मार्ग से पश्चिमी बर्लिन को आवश्यक माल पहुंचाया जायगा। टेम्पलहोफर का विशाल वायुयान-अड्डा था ही। इसके अतिरिक्त अमरीकी क्षेत्र में फ्रैन्क फर्ट का तथा ब्रिटिश क्षेत्रमें हैनूवर और हैम्बर्ग के हवाई अड्डे भी थे। यह निश्चय किया गया था कि अमेरिका अपने विशाल मालवाही वायुयानों द्वारा बर्लिन को खाद्य सामग्री भेजेगा। इसके फलस्वरूप अमेरिका को कुछ कठिनाई अवश्य होगी किन्तु कम्युनिस्ट चुनौती का सफलतापूर्वक सामना करके संसार को आश्वस्त करने का कार्य सर्वोपरि महत्व का था।

अमेरिका में सैनिक आवश्यकताओं के मालों को सुरक्षित रखने के लिए एक नये प्रकार की व्यवस्था का आविष्कार हो गया था। इन मालों की इस समय कोई आवश्यकता न थी किन्तु भविष्य में इनकी आवश्यकता पड़ सकती थी। गोदामों के अभाव के कारण ही उन्हे सुरक्षित रखने के लिए इस नयी प्रणाली का आविष्कार किया गया था। बन्दूकों, टैन्कों, तोपों, वायुयानों, यहां तक कि युद्धपोतों के आवश्यक पुर्जों पर प्लास्टिक का एक विशेष प्रकार का पतला पर्दा डाल दिया जाता था जिसके कारण इन पर बाहर के मौसम का प्रभाव न पड़ने पाता था। इस प्रकार की स्थिति में ये सैनिक माल अनन्त काल तक पड़े रह सकते थे। किसी प्रकार की हानि होने की सम्भावना न थी।

अब प्लास्टिक के इन पर्दों से ढके हुए वायुयानों को बाहर निकालना आव-

श्यक हो उठा था। फलस्वरूप युद्ध के दिनों की भांति ही विशालकाय सी ४७ और सी ४९ वायुयान एक बार फिर उड़ते हुए दिखाई दिये। ये वायुयान खाद्य सामग्री भर कर न्यूफाउण्डलैंड तथा स्काटलैंड के रास्ते बर्लिन की ओर रवाना हो जाते थे। पूर्वी बन्दरगाहों बोस्टन और न्यूऔरलियन्स से समुद्री जहाज गेहूं भर भर कर लाते थे। और यह गेहूं एण्टवर्प, ब्रेमेन तथा हैम्बर्ग को पहुँचा दिया जाता था। कोयला ब्रिटेन, बेल्जियम तथा रूर से लाकर बोरों में भरा जाता था और तेल टेक्सास तथा वेनेजुएला से लाकर टीनों में भर दिया जाता था। इसके बाद इसे वायुमार्ग द्वारा जर्मनी पहुँचा दिया जाता था।

पांच पांच मिनट के अंतर पर बर्लिन के लिये वायुयान छूटते रहते थे। ज्यों ही टेम्पलहोफर हवाई-अड्डे पर कोई वायुयान उतरता त्यों ही उसे एक किनारे पर ले जाकर उसके माल की खलासी शुरू कर दी जाती। इस माल को नगर में ले जाने के लिए लारियां पहले से ही खड़ी रहती थीं। खाली हो जाने पर वायुयान तुरन्त वापस लौटकर नया माल लाने के लिए रवाना हो जाता। प्रत्येक वायुयान को अमेरिका और बर्लिन की तीन तीन यात्राएं प्रति दिन करनी पड़ती थीं। वायुयान चालकों का एक दल भोजन के लिए उतरता तो तुरन्त दूसरा दल तैनात कर दिया जाता। छुट्टियों के दिन बर्लिन की जनता इस आश्चर्यजनक तमाशे को देखने के लिए हवाई अड्डे के आस पास खड़ी हो जाती। बच्चे अपने मकानों की छतों पर खड़े होकर यह अद्भुत दृश्य देखते रहते। उनके लिए अन्न लेकर आने वाले वायुयानों का वे बड़ी प्रसन्नता के साथ अपनी टोपियां हिला हिला कर स्वागत करते।

बर्नहार्ड मान्क ने लैनी को इन सारी बातों का सविस्तार वर्णन भेज दिया था। उसने ए० एम० जी० की ओर से बर्लिन तथा म्यूनिच में प्रकाशित होने वाले समाचार पत्र "नेउए जीतन्ग" की कुछ कतरनें भी भेज दी थीं। कभी परिहास के रूप में वह उन समाचार पत्रों की कतरनें भी भेज देता था जो कम्युनिस्ट लोग अपने क्षेत्र में प्रकाशित कर रहे थे। वे लोग अमेरिका के इस सफल प्रयास से बड़े क्रुद्ध थे। वे यह दावा करते थे कि अमरीकी वायुयान-चालक सुरक्षा के नियमों का पालन नहीं करते। अमरीकी वायुयान-चालकों के जीवन के प्रति

वे बेचारे कितने चिन्तित थे !! वे उन जर्मनों के प्राणों की रक्षा के लिए भी बड़े चिन्तित थे जो टेम्पलहोफर हवाई अड्डे के आस पास रहते थे !! उनकी ओर से यह दावा हो रहा था कि अमरीकी लोग ग्रीष्मकाल में बर्लिन को खाद्यान्न पहुंचाने में भले ही सफलता प्राप्त कर लें, शीतकाल में यह सम्भव न रहेगा। शीत ऋतु में बर्फीले तूफानों के कारण आकाश मार्ग द्वारा यह यातायात सम्भव न रहेगा। इसके अतिरिक्त शीत ऋतु में पश्चिमी बर्लिन वालों को अधिक बिजली तथा कोयले की आवश्यकता पड़ेगी। किन्तु मान्क ने अपने पत्र में लिखा था कि अमरीकी अधिकारियों ने इन सारी बातों को दृष्टिगत करते हुए भविष्य के लिए आवश्यक मालों का संग्रह करना शुरू कर दिया है। उसने लिखा था कि आज सारे संसार के लिए पश्चिमी बर्लिन एक प्रतीक के रूप में परिवर्त्तित हो गया है। वह किसी किले पर उड़ने वाली उस पताका के रूप में परिणत हो गया है जो बार बार स्पष्ट रूप में इस बात की घोषणा करती रहती है कि उसने शत्रु के सम्मुख आत्मसमर्पण नहीं किया है।—और स्वतन्त्र संसार आत्मसमर्पण की कल्पना तक न कर सकता था।

(७)

कभी कभी मान्क अपने गुप्त व्यापार के प्रसंग में एकाध वाक्य संकेत के रूप में लिख देता था। कभी वह लिखता, "फर्डीनेण्ड का कोई समाचार नहीं मिल सका है।" कभी वह लिख देता, "बूढ़ा फर्डीनेण्ड अब सही रास्ते पर आ गया है और उपयोगी जानकारी प्रदान कर रहा है।" एक बार मान्क ने म्यूनिच के समाचार पत्र से एक कतरन भेज दी। इस कतरन में यह समाचार था कि बवेरिया की सरकार ने हायनरिक ब्रिन्कमान को इस अभियोग पर गिरफ्तार कर लिया है कि वह राष्ट्रीय सम्पत्ति चौरानयन द्वारा विदेशों को भेजने का प्रयत्न कर रहा था। इस कतरन पर मान्क ने "ओ० एफ०" ये दो अक्षर संकेत के रूप में लिख दिये थे। इसका अर्थ यही था कि सरकार को यह जानकारी 'बूढ़े फर्डीनेण्ड ने दी थी।

लैनी लारेल के साथ कभी इन गुप्त बातों की चर्चा न करता था। किन्तु उसने लारेल को यह बात बता दी कि इस बार कर्ट मेसनर सरकार को सच्ची

सच्ची बातें बता रहा है ; कोई छल कपट नहीं कर रहा। लारेल कर्ट के गुप्त खजानों की बात जानती थी क्यों कि जब लैनी जर्मनी में था तभी अमेरिका के समाचार पत्रों में यह सारी कहानी प्रकाशित हो चुकी थी। समाचार पत्रों में लैनी के नाम का कोई उल्लेख न किया गया था किन्तु वह कई वर्षों से उसका नाम सुन रही थी। कर्ट विएनवेन्यू में आठ वर्ष तक रहा था और वहां उसका एक चित्र टंगा हुआ था। लारेल ने इस चित्र को देखा था।

इस प्रकार लारेल के मस्तिष्क में कर्ट का एक अत्यन्त स्पष्ट चित्र था। अब मान्क का पत्र आने के फलस्वरूप कर्ट की काफी चर्चा होने लगी थी। कदाचित इसी के परिणाम स्वरूप वह विचित्र घटना घटित हुई जो बुद्धि को चुनौती देती थी। इस प्रकार की विचित्र घटनाएं पहले भी घट चुकी थीं और इन पर भांति भांति से तर्क वितर्क करने के बावजूद लैनी और लारेल किसी निष्कर्ष पर न पहुँच सके थे।

हमारे सारे विचार और अनुभव उस अतल महासागर में डूब जाते हैं जिसे हम स्मृति कहते हैं। इस स्मृति रूपी महासागर में लाखों नाम, स्थान, तारीखें, तथा अन्यान्य बातें डूबी रहती हैं। किन्तु साथ ही हमारे अन्दर एक रहस्यमय 'एलीवेटर' सा लगा हुआ है। हम ज्यों ही बटन दबाते हैं त्यों ही कोई रहस्यमय दूत इस महासागर में डुबकी लगाकर लाखों करोड़ों वस्तुओं में से छांट कर वह वस्तु निकाल लाता है जिसकी हमें उस क्षण आवश्यकता होती है। पचास वर्ष पूर्व हम किसी व्यक्ति से मिले थे। अब उसके नाम की आवश्यकता अचानक उपस्थित हो गयी। हमारे बटन दबाते ही यह रहस्यमय गोताखोर स्मृति रूपी महासागर में डुबकी लगा कर लाखों नामों के बीच से इस नाम को चुन कर ऊपर ले आयगा। चाहे व्यक्तियों के नाम हों, चाहे किसी कविता की कोई पंक्ति— यह गोताखोर सदा तत्पर रहता है। कभी कभी यह गोताखोर असफल हो जाता है। किन्तु फिर भी हमारी वांछित वस्तु स्मृति के महासागर में सुरक्षित रहती है। मनोवैज्ञानिक लोग ऐसा ही कहते हैं। वे लोग हमें सम्मोहित करके वह वस्तु ऊपर ले आते हैं।

कभी कभी ऐसा भी होता है कि हम उस रहस्यमय गोताखोर को अपने

आदेश दोहराते रहते हैं और अचानक हमारी वांछित वस्तु गैस भरे हुए एक बुलबुले की भांति सतह पर आ जाती है। संसार का बड़े से बड़ा मनोवैज्ञानिक पण्डित भी हमें यह नहीं बता सकता कि यह सब क्यों और किस प्रकार होता है। किन्तु यह होता अवश्य है और हम लोग इसे निस्संदिग्ध रूप में स्वीकार कर लेते हैं।

किन्तु हमारे रहस्यमय गोताखोर के पास कोई आदेश नहीं रहता और वह चुपचाप बैठा रहता है तब हमारे स्मृति रूपी महासागर के तल प्रदेश में क्या होता रहता है? क्या हमारी स्मृतियां हमारे आदेशों की प्रतीक्षा करती हुई चुपचाप पड़ी रहती हैं या वे स्वयं प्रणावन्त होती हैं? क्या वहां भी किसी प्रकार की मनोवैज्ञानिक सत्ताओं का निवास रहता है जो एक दूसरे के विरुद्ध संघर्ष में रत रहती हैं? क्या कहां भी जीवन सत्ता नये नये रूपों में रूपायित होती रहती है? लैनी ने बोस्टन के एक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक डाक्टर मोर्टन प्रिन्स की एक पुस्तक पढ़ी थी। इस पुस्तक का नाम था—"दि डिसोसियेशन आफ पर्सनैलिटी।" इस पुस्तक में उन्होंने एक सम्भ्रान्त परिवार की किसी महिला का वर्णन किया था जिसने अपने अवचेतन मन में पांच स्वतन्त्र व्यक्तित्वों का विकास कर लिया था। ये पाँचों व्यक्तित्व आपस में झगड़ते रहते थे। इनमें से प्रत्येक उस महिला के चेतन मन पर अधिकार प्राप्त करने का प्रयत्न किया करता था। इस महिला का नाम था मिस व्यूचाम्प। डाक्टर प्रिन्स ने उन पांचों व्यक्तित्वों में से दो को चुना और महिला को सम्मोहित करके उन्होंने इन दोनों व्यक्तित्वों को मिलाकर एक व्यक्तित्व में परिणत कर दिया। अन्य तीनों व्यक्तित्वों की मनोवैज्ञानिक हत्या कर दी गयी। डाक्टर प्रिन्स ने इन तीन व्यक्तित्वों को सदा के लिये सुला दिया।

इस अवचेतन मन के सम्बन्ध में मनुष्य सदा से अनुमान लगाता आया है। यह अवचेतन मन एक अन्तहीन कूप अथवा खदान की भांति प्रतीत होता है। यह कूप अथवा खदान सदा से इसी प्रकार रहस्यमयी रही है। कभी हम उसे ईश्वर का नाम दे देते हैं, कभी शैतान का। यदि हम भौतिकतावादी होते हैं तो इसे 'अहं' अथवा 'इड' का नाम दे देते हैं। किसी वस्तु को एक नाम देकर

हम अपने मन में यह समझने लगते हैं कि हमने उसके सम्बन्ध में सब कुछ जान लिया। किन्तु यह एक भ्रम मात्र है। लोग बहुधा कह देते हैं—"अरे मैं सब जानता हूं। वह सम्मोहन मात्र है।" किन्तु यह कहते समय वे इस बात को भूल जाते हैं कि उन्हें सम्मोहन-विद्या के सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। इसी प्रकार लोग बहुधा कह देते हैं—"मैं तो टेलीपैथी पर विश्वास करता हूं।" किन्तु वे इस बात को भूल जाते हैं कि यदि वस्तुतः उन्हें यह मालूम हो जाता कि टेलीपैथी क्या है तो वे एक ऐसी स्थिति में पहुँच जाते जब वे अपने पड़ोसियों से प्रेम किये बिना रह न सकते।

(८)

जो भी हो हमारे स्मृति रूपी महासागर के तलप्रदेश से बुलबुले उठते ही रहते हैं और कभी कभी इनका विस्फोट भी हो जाता है। लारेल ने अनेकों बार कर्ट मेसनर का नाम सुना था। वह इस बात से अवगत थी कि उसके पति के जीवन में इस व्यक्ति का बहुत बड़ा स्थान रहा है। वह बहुधा अनुमान लगाया करती थी कि कर्ट नामके इस व्यक्ति के साथ उसके पति का क्या सम्बन्ध हो सकता है। हाल ही में उसे इस बात का प्रमाण मिल गया था कि कर्ट के सम्बन्ध में उसकी अटकलें निराधार न थीं। इन सब बातों के फलस्वरूप कर्ट की स्मृति उसके अवचेतन मन में और भी क्रियाशील हो उठी थी।

कारण जो भी हो यह विचित्र घटना इस प्रकार घटित हुई : लारेल अपनी आराम कुर्सी पर लेटी हुई दैनिक डाक देख रही थी। लैनी बगल के कमरे में था। लारेल ने अचानक अपनी डाक एक ओर सरका कर लैनी को पुकारा। लैनी आ गया तो वह बोली, "लैनी, हम लोग अपनी मनोवैज्ञानिक शक्तियों को भूल से गए हैं।"

"तुम अपनी मनोवैज्ञानिक शक्ति की बात कर रही हो क्या? मुझमें तो वह शक्ति है नहीं।" इसके बाद उसने महाकवि वर्डस्वर्थ की वह प्रसिद्ध उक्ति दोहरा दी—'दि वर्ल्ड इज़ टू मच विथ अस'!

लारेल ने कहा, "इस समय मुझे एक विचित्र प्रकार का अनुभव हो रहा है। आओ हम लोग किसी प्रेतात्मा को बुलाने का प्रयत्न करें।"

"अच्छी बात है।" लैनी ने कहा। वह तयारी करने लगा। उसने खिड़कियों पर पर्दे डाल दिये और बत्ती का प्रकाश धीमा कर दिया। लारेल अपनी आराम कुर्सी पर लेट गयी। उसने आंखें बन्द कर लीं। लैनी कागज और पेन्सिल लेकर उसके पास बैठ गया।

लारेल आंखें बन्द करके गहरी सांसें लेने लगी। थोड़ी देर बाद कमरे में पूर्ण निस्तब्धता छा गयी। एकाध मिनट तक प्रतीक्षा करने के बाद लैनी ने धीमे स्वर में कहा, "कोई है क्या?"

"तुम हो लैनी?" एक आवाज़ ने उत्तर दिया। यह आवाज लारेल के मुंह से निकल रही थी किन्तु उसका स्वर लारेल के स्वर से भिन्न था। लैनी प्रेतात्माओं पर विश्वास न करता था—कमसे कम वह इस बात पर विश्वास न करने का भरसक प्रयत्न करता था। किन्तु वह जानता था कि इस प्रकार की समाधि-अवस्था में लारेल के शरीर में जिस रहस्यमय वस्तु का प्रवेश होता है उसके साथ नम्रता का व्यवहार करना आवश्यक होता है।

"आप आयी हैं क्या, मैदम? मुझे आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई।" उसने नम्र स्वर में कहा।

"बहुत दिनों बाद तुमसे मुलाकात हुई है, लैनी।' आवाज ने धीमे स्वर में उत्तर दिया।

"मैं बड़ा कार्य व्यस्त था मैदम। लारेल और मैं—हम दोनों मिलकर इस बात का प्रयत्न कर रहे हैं कि तीसरा महायुद्ध न होने पावे। हमारा सारा समय इसी में लग जाता है।"

"मुझे भय है कि तुम इस कार्य में सफल न होगे लैनी। संसार के सामने दुर्भाग्य के दिन आ रहे हैं। यहां एक जर्मन युवक है। पहले मैं इसे देख चुकी हूँ। उस पर भयानक अत्याचार हुआ है।"

"उसका नाम क्या है, मैदम?"

"वह अपना नाम फर्डीनेण्ड बताता है। वह कहता है कि तुम उसे जानते हो।"

"मैं उसे जानता हूं। वह आपके साथ है क्या?"

"वह यहां है। वह कहता है कि वह प्रसन्न है और शान्ति का अनुभव कर रहा है।"

"मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ, मैदम। क्या वह मुझसे कुछ कहना चाहता है?"

"वह यह कहना चाहता है कि उसके पिता भी यहीं पर हैं।"

"फर्डीनेण्ड के पिता?" कागज पर लिखते समय लैनी की उंगलियां कांप उठीं। किन्तु उसने अपने आप को संयत कर लिया। "मैं न जानता था कि वे भी वहां पहुँच गए हैं।"

"वे अभी अभी आए हैं। वे एक दुःखी वृद्ध व्यक्ति हैं। वे अधिक वृद्ध नहीं हैं किन्तु दिखाई देते हैं ठीक एक वृद्ध की भांति। तुम्हारे साथ उनका बड़ा घनिष्ट परिचय था। उन्होंने तुम्हारे साथ झगड़ा कर लिया था। अब वे यह कहना चाहते हैं कि तुम्हारे विचार ही ठीक हैं।"

"उन्हें क्या हुआ था, मैदम?"

"वे कहते हैं—वे एक ऐसे शब्द का व्यवहार कर रहे हैं जिसे मैं नहीं जानती। वेहम्—ठहरो—वेहम्गरीच्ट।"

"मैं उस शब्द को जानता हूँ।"

"उन लोगों ने उन्हें फांसी पर लटका दिया था। बड़ी भयानक बात थी। वे अपने परिवार की बात कह रहे हैं। कहते हैं कि तुम उसकी देखभाल करना।'

"आप उनसे कह दीजिए कि वे चिन्ता न करें। मैं उनके परिवार की सहायता करता रहूंगा।"

"यहां और भी बहुत से व्यक्ति हैं। वे सब सैनिक वर्दियों में हैं। एक मोटा ताजा व्यक्ति है, वह बराबर हंसता रहता है। उसने बहुत से तगमें लगा रखे हैं। उसके साथ एक महिला भी है। उसे वह कार्टिन के नामसे पुकारता है। वह कहता है कि तुमने उसे कुछ चित्र बेचे थे। वह कह रहा है कि अब तुम चाहो तो अपने चित्र वापस ले सकते हो। एक दुबला पतला व्यक्ति भी यहां खड़ा हुआ है। वह एक सैनिक अफसर था। युद्ध में मारा गया था। वह कहता है तुम उसकी मां को जानते हो। उस महिला का नाम हिल्डे है। तुम उससे कह देना

कि उसका पुत्र सुखी है। आह! सब लोग एक साथ बातें कर रहे हैं। यह मुझे अच्छा नहीं लगता! सब जर्मन हैं। तुम जानते हो कि मैं जर्मनों से बड़ी घृणा करती हूँ। उन्होंने मेरे देश को नष्ट भ्रष्ट कर डाला है। मैं तुमसे फिर कभी बातें करूंगी। इस समय मेरी शक्ति जवाब दे रही है।"

(९)

आवाज़ धीरे धीरे धीमी पड़ने लगी और फिर एकदम निरतब्धता छा गयी। लैनी ने पूछा, "मैदम, आप चली गयीं क्या?" कोई उत्तर न आया। लारेल आहें भरने लगी मानो वह कष्ट में हो। इसके बाद उसने अपनी आंखें खोल दीं। कुछ देर तक वह भौचक्की सी बैठी रही। फिर उसने धीरे से प्रश्न किया, "क्या हुआ!"

लैनी ने कहा, "मैदम आयी थीं। उन्होंने बताया कि कर्ट वहां पहुँच गया है।"

"नहीं, नहीं।" लारेल ने तनकर बैठते हुए कहा, "उसे क्या हुआ था?"

"मैदम कहती थीं कि उसे फांसी पर लटका दिया गया था। मैं समझता हूं कि उसके सहयोगियों ने ही उसकी यह दशा की होगी। मैदम कहती थीं कि यह वेहमगरीच्ट का काम था।"

"यह क्या चीज़ है?"

"यह मध्ययुगीन जर्मनी की एक गुप्त संस्था का नाम है। इस गुप्त संस्था के सदस्य अपने विरोधियों को फांसी पर लटका देते थे। कर्ट ने मुझसे स्वयं कहा था कि यदि वह अमरीकियों की ओर चला आएगा तो वह एक सप्ताह भी जीवित न रह सकेगा।"

"कैसी भयानक बात है लैनी?" लारेल ने आतंकित स्वर में कहा। "क्या तुम समझते हो कि यह समाचार सच है?"

"तुम इसकी सचाई का पता लगा सकती हो।" लैनी ने उत्तर दिया। "सम्भव है वह तुम्हारे अवचेतन मन की आशंका की प्रतिक्रिया मात्र हो।"

लैनी ने उसे वे सारी बातें बता दीं जो कि मैदम ने बतायी थीं। उसने कहा कि समाधि की अवस्था में गोयरिन्ग आया था और हिल्डेगान डोनर्सटाइन का वह

पुत्र भी जो युद्ध क्षेत्र में हत हुआ था। किन्तु लैनी ने लारेल को कर्ट के पुत्र फ्रित्ज की बात नहीं बतायी। उसने केवल इतना ही कहा, "मैदम ने उस जर्मन युवक की चर्चा भी की थी जो पिछली समाधि के अवसर पर आया था।" फ्रित्ज का मामला फिलहाल गुप्त रखना आवश्यक था। किन्तु कर्ट के सम्बन्ध में अब किसी प्रकार की सतर्कता की आवश्यकता न थी। लैनी ने सोचा कि यह बात अब तक चारों ओर फैल गयी होगी कि एक प्रमुख जर्मन प्रचारक की हत्या कर दी गयी क्योंकि वह अपने दल से निकल कर अमरीकियों की ओर चला गया था।

लैनी ने कहा कि वह मान्क को टेलीफोन करके इस बात का पता लगाने का प्रयत्न करेगा। उसने टेलीफोन किया। सौभाग्यवश मान्क अपने कार्यालय में मिल गया। लनी ने प्रश्न किया, "पुराने फर्डीनेन्ड की कोई खबर है तुम्हारे पास?" मान्क ने उत्तर दिया, "उसकी प्रार्थना स्वीकार करके सेना विभाग ने उसे छोड़ दिया था। मैंने कुछ समय पूर्व तुम्हें इस सम्बन्ध में लिखा भी था।"

"वह पत्र मुझे नहीं मिला। कर्ट सकुशल तो है?"

"जहां तक मेरी जानकारी है वह सकुशल ही है। तुम यह प्रश्न क्यों कर रहे हो?"

"लारेल को समाधि अवस्था में यह जानकारी प्राप्त हुई है कि उसे फांसी पर लटका दिया गया है।"

लैनी जानता था कि उसके मित्र मान्क पर इसका कोई प्रभाव न पड़ेगा। वह एक समाजवादी था और जर्मनी के समाजवाद की सैद्धान्तिक मान्यताएं मार्क्सवाद तथा पुराने ज़माने के जर्मन भौतिकतावाद पर आधारित हैं। इन भौतिकतावादियों के अनुसार यह विश्व-ब्रह्माण्ड अणु-परमाणुओं से बना है जो निश्चित नियमों के अनुसार अपने कार्यकारण चक्र में घूमते रहते हैं और कोई भी शक्ति इन नियमों में किंचित मात्र परिवर्तन नहीं कर सकती। एक शताब्दी पूर्व एक जर्मन दार्शनिक लुडविग ब्रुकनर ने अपनी पुस्तक में यह बात प्रमाणित कर दी थी और कार्ल मार्क्स ने इस पुस्तक को पढ़ा था। मान्क भी इस भौतिकतावादी सिद्धान्त पर विश्वास रखता था। उसे इस बात पर हंसी आती थी कि उसका एक अमरीकी मित्र इस बीसवीं शताब्दी में भी प्रेतात्माओं आदि पर विश्वास

करता था। उसे यह बात बड़ी मनोरञ्जक प्रतीत होती थी कि एक धनी अमरीकी ने टेलीफोन पर दस डालर केवल इस बात के लिये खर्च कर दिये क्यों कि उसकी पत्नी को किसी तथाकथित प्रेतात्मा का कोई संदेश प्राप्त हुआ! इसे वह निरा अंध-विश्वास समझता था।

किन्तु मान्क ने नम्र स्वर में ही कहा, "मैं पता लगाकर तुम्हें सूचित करूंगा। इसके बाद उसने कहा, "अमरीकी वायुयान बर्लिन को खाद्य सामग्री बड़ी तत्परता के साथ पहुंचा रहे हैं। बड़ा सुन्दर दृश्य है। सारा योरोप इस विराट आयोजन की ओर उत्सुक दृष्टि से ताक रहा है। तुम भी आकर इस अद्भुत दृश्य को क्यों नहीं देखते?"

(१०)

लैनी ने अपने दैनन्दिन कार्यों में मन लगाया। उसने कर्ट मेसनर के विचार को अपने मन से निकाल दिया। सम्भव है यह लारेल के अन्तर्मन की आशंका मात्र हो। उसने सोचा कि इसके पूर्व भी कई बार ऐसा हो चुका है कि लारेल के आदिभौतिक संदेश सत्य न निकले।

संन्ध्या के समय वह रेडियो पर समाचार सुन रहा था। लारेल, रिक और नीना भी उस समय वहीं पर उपस्थित थे। रेडियो ने स्पष्ट स्वर में यह समाचार दिया। "म्यूनिच से आनेवाली एक रिपोर्ट के अनुसार प्रसिद्ध जर्मन संगीतज्ञ और पुराने जमाने में हिटलर का सहयोगी, कर्ट मेसनर, टेगर्नसी झील के पास एक जंगल में वृक्ष से लटका हुआ पाया गया। ऐसा समझा जाता है कि उसके नाज़ी सहयोगियों ने उसकी हत्या की है। कारण यह है कि कर्ट ने अमरीकी सरकार को अपने घर की नींव में छिपे हुए नाज़ी गुप्त धन का पता दे दिया था।"

अब संदेह के लिये कोई स्थान न था। कर्ट की हत्या कर दी गयी थी। रिक और नीना इस चमत्कार के गवाहों के रूप में थे क्योंकि गत सन्ध्या को लैनी ने उन्हे बुलाकर लारेल के आदिभौतिक संदेश की बात बता दी थी। अन्य नव-युवकों की भांति रिक भी भौतिकतावाद की ओर ही झुकता था किन्तु उसमें कोई कट्टरता न थी। वह लारेल के आदिभौतिक अनुभवों पर शंका न करता था क्योंकि

सत्रह वर्ष की आयु में लैनी का प्रथम आदिभौतिक अनुभव रिक के सम्बन्ध में ही हुआ था।

लारेल का यह नया अनुभव इस ओर स्पष्ट रूप में संकेत करता था कि मानव मस्तिष्क के अन्दर एक अत्यन्त रहस्यमयी शक्ति निवास करती है। पुस्तकों में इस प्रकार के हजारों उदाहरण मिलते हैं। लैनी ने इनमें से अनेकों पुस्तकें पढ़ी थीं और कुछ चमत्कार स्वयं देखे थे। उसने अपने मित्रों के साथ इनकी चर्चा भी की थी। किन्तु कैसे आश्चर्य की बात है कि साधारणतया लोग इन बातों के प्रति कोई कौतूहल नहीं दिखाते। वे चन्द्रमा अथवा मंगल ग्रह की यात्रा की योजनाओं में ही अधिक दिलचस्पी दिखाते हैं।

लैनी मान्क के पत्र की प्रतीक्षा कर रहा था। आखिर वह पत्र आया। मान्क ने लिखा था, "यह सचमुच एक अत्यन्त आश्चर्यजनक बात है। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं इसका क्या अर्थ लगाऊं। किन्तु यदि मैं तुम्हारी भांति आदिभौतिक सत्ता पर विश्वास करने लगूंगा तो मुझे अपना सम्पूर्ण जीवन-दर्शन बदलना पड़ेगा। किन्तु साठ वर्ष की आयु वाले व्यक्ति से इसकी आशा नहीं की जा सकती।" फलस्वरूप, मान्क के लिये वुकनर और मार्क्स ही ध्रुव सत्य बने रहेंगे !!

लैनी ने एल्सा मेसनर को एक पत्र लिखकर अपनी हार्दिक सहानुभूति जनायी और उसे हर प्रकार की सहायता का आश्वासन दिया। कर्ट मेसनर अमरीकी सरकार का काम करते हुए मरा था और इसलिये लैनी उसकी विधवा के लिये सरकारी पेन्शन का दावा कर सकता था। किन्तु सरकारी कामों में बड़ा विलम्ब होता है। इसलिये उसने एल्सा को व्यक्तिगत रूपमें सहायता पहुंचाने का निश्चय कर लिया।



अध्याय २३

● वायु सेना का चमत्कार ●

(१)

पिछले कुछ दिनों से लैनी का ध्यान बर्लिन के घेरे पर लगा हुआ था। इधर 'रिआस' रेडियो के बोरिस शब का एक पत्र भी आया था। शब ने लिखा था, "यह संघर्ष का चरमोत्कर्ष है। हमें बर्लिन की जनताको अपनी ओर बनाए रखना है। यदि जनता को यह विश्वास हो जायगा कि हम प्राणप्रण से उसकी सहायता करने के लिए तयार हैं तो वह बड़ी प्रसन्नता के साथ हर प्रकार का कष्ट झेलने के लिए तयार रहेगी। तुम एक बार यहां आ जाओ, लैनी। यह 'रिआस' के लिए एक अत्यन्त महत्वपूर्ण समय है। 'रिआस' इसी समय की प्रतीक्षा इतने दिनों से कर रहा था। क्या तुम वाशिंगटन के अधिकारियों को इस बात का विश्वास नहीं दिला सकते कि जर्मन जनता के मन पर विजय पाना उतना ही आवश्यक है जितना बंदूकों और वायुयानों का उत्पादन करना। अस्त्र शस्त्रों का उत्पादन करने में तो वे अरबों खरबों डालर खर्च करने के लिए तयार हैं किन्तु प्रचार-कार्य में थोड़ा सा रुपया खर्च करना भी उनके लिए दूभर है!"

इसके बाद मान्क का एक पत्र आया। उसमें भी यही मत प्रदर्शित किया गया था। किन्तु उसने एक नयी बात का उल्लेख किया था। "बहुत से रूसी अपना देश छोड़ कर हमारी ओर आ रहे हैं। वे अपनी जान की जोखिम उठा कर सीमा पार करके अमरीकी अंचल में आ जाते हैं। पूर्वी जर्मनी से भी दिन दिन भगोड़ोंका पलायन बढ़ता जा रहा है। वे लोग अत्याचार की विचित्र विचित्र कहानियां सुनाते रहते हैं। मैं चाहता हूं कि तुम यहां आकर इन भगोड़ों से बातें करो और फिर रेडियो पर इनके वृत्तान्त को प्रसारित करो। अमरीकी लोग हम जर्मनों की समस्याओं को नहीं समझते। वे शिक्षा के महत्व को नहीं समझ पाते। अमेरिका में वे अवश्य शिक्षा प्रसार को काफी महत्व देते हैं किन्तु यहां नहीं।

वे इस बात को नहीं समझ पाते कि इस समय आदर्शों का एक अन्तर्राष्ट्रीय द्वन्द्व चल रहा है। इसे अमेरिका अकेले नहीं जीत सकता।"

इसके अतिरिक्त लैनी का कुछ व्यक्तिगत काम भी था। वह संसार में अभी कुछ वर्षों तक जीवित रहने की आशा करता था और इसलिये यह स्वाभाविक ही था कि वह जितना खर्च करता था उतना कमा लेने का इच्छुक था। जब उसे अपने किसी ग्राहक का पत्र मिलता कि उसे अमुक चित्रकार का अमुक चित्र चाहिए तो वह विश्व-कल्याण की अपनी योजनाओं को कुछ समयके लिए स्थगित करके अपना सारा ध्यान इस ओर लगा देता था। उसे अपने व्यापार के सम्बंध में पूरी फाइलें तयार रखनी पड़ती थीं। इन फाइलों में चित्रों के विवरणों, अनुमानित मूल्यों आदि की सारी जानकारी रहती थी। जब किसी ग्राहक का आदेश आता कि उसे अमुक चित्रकार का चित्र चाहिए लैनी की फाइल में उस चित्रका पन्ना तुरन्त ऊपर आ जाता।

लैनी के पुराने ग्राहकों में मिस्टर हार्लेन विन्सटीड भी थे। वे सुरुचिपूर्ण टक्सेडो पार्क में रहते थे। उनका पारिवारिक जीवन असफल रहा था और फलस्वरूप उनका स्वभाव संदेहशील हो गया था। वे जल्दी किसी का विश्वास न करते थे। उनके पुराने मित्रों में अधिकांश की मृत्यु हो गई थी और वे नये मित्र बनाने में घबराते थे। उन्होंने अपने हृदय की सम्पूर्ण माया ममता अपने चित्र-संकलन में लगा रखी थी। लैनी ने उन्हें बीसों सुन्दर कला-कृतियां खरीद दी थीं। हार्लेन महोदय अपने इन कला-चित्रों को देख देख कर बड़े संतुष्ट होते थे। वे सोचते थे कि ये कला-कृतियां उन्हे कभी धोखा न देंगी. इनका सौंदर्य मानव सौंदर्य की भांति क्षणभंगुर न प्रमाणि होगा, इनका आर्थिक मूल्य भी कभी न घटेगा। उन्होंने मन ही मन यह निश्चय किया था कि वे अपनी कला-कृतियों को एक ऐसे मकान में सुरक्षित रख जाएंगे जिसमें आग लगने का कोई भय न रहेगा। वे इस मकान में अपना नाम अंकित करा कर शताब्दियों के लिए अमरत्व प्राप्त कर लेंगे। सारे संसार से कलाप्रेमी लोग आकर विन्सटीड कला संग्रहालय के चमत्कारों को देखेंगे और उनमें से कुछ तो अवश्य ही इसके संस्थापक का नाम तथा जीवनी पढ़ने का कष्ट उठायेंगे।

वृद्ध विन्सटीड महोदय एक अध्ययनशील व्यक्ति थे। वे कला के सम्बंध में नयी नयी पुस्तकें पढ़ने के बड़े शौकीन थे। पुस्तकें पढ़ने के बाद वे अपने कमरों में टहलते हुए इस बात का पता लगाने का प्रयत्न करते कि उनके चित्र संकलन में कौन सी कमी रह गयी है। जब उन्हें कोई अभाव दिखाई देता तो वे तुरन्त लैनी को टेलीफोन करके भोजन के लिए बुला लेते। लैनी विन्सटीड महोदय का निमंत्रण कभी अस्वीकार न करता। विन्सटीड महोदय लैनी पर पूर्ण विश्वास रखते थे और उसकी सलाह को सब समय स्वीकार कर लेते थे।

विन्सटीड महोदय से मिल कर लैनी अपने घर लौटता और अपनी फाइल देखता। उस फाइल में प्रायः प्रत्येक प्राप्य चित्र की जानकारी सुरक्षित थी। इसी लिए जब मिस्टर विन्सटीड किसी चित्र विशेष का आग्रह करते तो लैनी तुरन्त कह देता, "अच्छा, मिस्टर विन्सटीड। यह चित्र मैं आपको ला दूंगा।"

(२)

इस बार ऐसा संयोग उपस्थित हुआ कि लैनी को जर्मनी जाकर हरमान गोयरिन्ग के बचे खुचे चित्रसंकलन का निरीक्षण करने के लिए बाध्य होना पड़ा। गोयरिङ्ग ने जिस समय इन चित्रों का संकलन किया था उस समय उसने बड़े गर्व के साथ यह घोषणा की थी कि हिटलर के सुदीर्घ सहस्र वर्षीय साम्राज्य में पीढ़ी दर पीढ़ी इन चित्रों के आश्चर्यजनक संकलन की चर्चा होती रहेगी और लोग इन्हें देखकर स्तम्भित होते रहेंगे। लारेल लैनी को फिर जर्मनी की यात्रा के लिए न जाने देना चाहती थी। आखिर जब बड़ी कठिनाई से वह राजी हुई तो उसने लैनी से वचन ले लिया कि वह म्यूनिच में प्रवेश न करेगा और उस भयानक पर्वतीय प्रदेश में भी न जायगा जहां 'वेहमगरीच्ट' के लोग घूमते रहते हैं। लैनी ने मान्क को टेलीफोन कर दिया कि वह शीघ्र ही जर्मनी आ रहा है। उसने 'रिआस' पर अपने कुछ भाषण देना भी स्वीकार कर लिया। मान्क को लैनी के लिए आवश्यक पास पोर्ट बनवाने में किंचित मात्र विलम्ब न हुआ।

इस प्रकार एक बार फिर लैनी को एक सैनिक वायुयान में यात्रा करने का अवसर प्राप्त हुआ। वह लंदन में रुक गया। वहां से उसने लारेल को टेलीफोन

कर दिया कि वह सकुशल है। इसके बाद वह विकथार्प कैसेल में इर्मा से मुलाकात करने के लिए गया। किन्तु उसे पता चला कि लार्ड और लेडी विकथार्प मछली का शिकार करने के लिए स्काटलेण्ड चले गए हैं। लैनी ने उन्हे एक पत्र लिख कर सूचित कर दिया कि फ्रांसेस और स्क्रबी इंगलैण्ड आने वाले थे। किन्तु अब वे लैनी के वापस जाने पर ही इङ्गलैण्ड की यात्रा के लिए निकलेंगे। इसके बाद लैनी अल्फ्रेड पामेराय-नील्सन एम० पी से मिलनेके लिये गया। अल्फ्रेड के साथ गप शप करने में सारी संध्या बीत गयी। उन दिनों ब्रिटेन में कागज का अभाव था। इसलिए समाचार पत्रों में पूरी खबरें न छप पाती थीं। अल्फ्रेड ने बेस के मामले का पूरा पूरा विवरण जानने का कौतूहल प्रकट किया। बदले में उसने लेबर पार्टी की सरकार की सफलताओं की कहानी सविस्तार सुनायी। दूसरे दिन सबेरे लैनी का जहाज नूरेम्बर्ग के लिए रवाना हो गया। इस बीच में लैनी ने एक छोटा सा लेख लिख लिया था जिसे उसने हवाई डाक द्वारा एडगरमीयर भेज दिया।

जर्मनी पहुंच कर लैनी ने पहले अपने व्यक्तिगत काम समाप्त किये। युद्ध ध्वंस्त नगर के पास एक सुन्दर संकलन में उसे "फ्रेन्च इम्प्रेशनिस्ट" चित्रकला का प्रतिनिधित्व करने वाले कुछ चित्र मिल गए। मेजेल्स, लीबर मान्स, मोनेट, डेगास, रेनायर आदि कई प्रसिद्ध चित्रकारों के चित्र उसे चाहिए थे। मूल्य काफी न्याय-संगत थे। फल स्वरूप लैनी ने छै चित्र खरीद कर अपने ग्राहक के पास भेज दिये।

अपने व्यक्तिगत काम समाप्त करने के उपरान्त लैनी ने मित्रों की ओर ध्यान दिया। उसने एमिल मेसनर से मुलाकात करके अपने कठोर कर्त्तव्य का पालन किया। भूतपूर्व नाज़ी जेनरल एमिल मेसनर ने कहा कि कर्ट निश्चित रूप में अमरीकियों के पक्षमें हो गया था और वह जानता था कि उसे इसका मूल्य अपने प्राणों से चुकाना पड़ेगा। जहां तक एमिल की जानकारी थी न अमरीकी सेना विभाग न बवेरिया की सरकार हत्यारों का पता लगाने में किंचित मात्र सफलता प्राप्त कर पायी थी। वे लोग मानो वायु में विलीन हो गए हों! यह आशंका प्रकट की जा रही थी कि वे जर्मनी छोड़कर विदेशों की ओर भाग गए हैं। एमिल ने कहा कि वेहम्गरीच्ट जर्मनी को पुनः मध्ययुगीन अंधकार की ओर लौटाने का

प्रयत्न मात्र था। "लैनी, तुम गेटे के 'गोएत्ज वान बर्लिचिन्गेन' में इस गुप्त संस्था की एक छाया देख सकते हो। ये लोग रात्रि के समय जंगल में अपनी बैठक करते हैं, अपराधी को मृत्यु दण्ड देते हैं और उसे तुरन्त फांसी पर लटका देते हैं।"

लैनी को सांत्वना देते हुए कट के बड़े भाई ने कहा, "लैनी तुम्हें इस मामले को लेकर परेशान होने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह एक सुखद बात है कि नाज़ीवाद का विरोध करते हुए उसकी मृत्यु हुई। यदि वह नाज़ीवाद का समर्थन करते हुए जीवित रहता तो मैं इसे एक कलंक की बात ही समझता। आज एक नयी जर्मनी का जन्म हो रहा है और मेरा विश्वास है कि यह जर्मनी टिक जाएगी—यदि कम्युनिस्टों ने इसे रौंद न डाला।"

लैनी ने एल्सा के सम्बन्ध में प्रश्न किया। एमिल अपने परिवार से मिलकर आए थे और उसे अपना परामर्श दे आए थे। बच्चों ने अपने चाचा की बात ध्यान में रखते हुए सदा नाज़ी षड़यन्त्रकारियों से बच कर रहने का आश्वासन दिया था। एल्सा के पास गुजर बसर के लिये काफी रुपया बच रहा था। लैनी ने मन ही मन अनुमान लगा लिया कि बेचारी एल्सा को अपने रुपये के मूल स्रोत का कोई पता नहीं है। एमिल ने लैनी को सलाह दी कि वह टेगर्नसी अंचल में न जाय। षड़यन्त्रकारियों को इस बात का पता था कि नज़ी गुप्त धन का भण्डाफोड़ करने में लैनी का बहुत बड़ा हाथ था और वे बदला लेने के लिये अवश्य उत्सुक होंगे। एमिल स्वयं इन षड़यन्त्रकारियों की दृष्टि में थे। वे लोग इन्हें हिटलर के प्रति विश्वासघात करने के अपराधी के रूप में ही देखते थे। इसीलिये एमिल बड़े सतर्क रहते थे। जहां तक सम्भव होता वे रात के समय बाहर न निकलते थे। सोते समय वे सदा अपनी पिस्तौल तकिये के नीचे रखते थे और दिन के समय भी उसे अपनी मेज़ की दराज में सदा तयार रखते थे।

(३)

कुछ देर तक दोनों बर्लिन के घेरे की चर्चा करते रहे। एमिल ने कहा कि इस समय प्रत्येक जर्मन के मस्तिष्क में यह प्रश्न ही सर्वोपरि है। यह भी भाग्य की विडम्बना ही थी कि आज जर्मन लोग यह सोचकर प्रसन्न हो रहे थे कि अमरीकी

सेनाएं उनके देश को छोड़कर चली नहीं गईं। एमिल ने कहा कि स्टालिन एक एशियाई है और अन्य एशियाइयों की भांति वह अभिनय पर विश्वास करता है। किन्तु इस बार उसका अभिनय पूर्णतया असफल रहा है।

लैनी ने उन चित्रों की चर्चा की जो उसने खरीदे थे। एमिल इन चित्रों के मालिक से परिचित थे और उसके घर हो आए थे। जब लैनी ने कहा कि उसे फ्रैन्कफर्ट में इसी प्रकार के कुछ और चित्र खरीदने हैं तो एमिल ने कहा, "वहां तुम मेरा एक काम कर देना, लैनी। वहां जर्मन वायु सेना का एक युवक अधिकारी रहता है। वह मेरे एक पुराने मित्र का पुत्र है। यह परिवार जर्मनी के अत्यन्त कुलीन परिवारों में से एक है। यह युवक बिस्मार्क का प्रपौत्र है। युद्ध के दिनों में उसने पैंतीस रूसी वायुयानों को गिराकर एक नया रेकर्ड स्थापित किया था। इसके बाद उसका वायुयान स्टालिनग्राड में गिरा दिया गया और उसे पकड़कर बन्दी बना लिया गया। तुम जानते ही हो कि कम्युनिस्ट लोग किस प्रकार अपने बन्दियों को कम्युनिज्म में दीक्षित करने का प्रयत्न करते हैं। हमारे कई अफसरों को उन्होंने अपनी ओर फोड़ लेने में सफलता भी पायी थी। इस समय यह जर्मन युवक फ्रैन्कफर्ट की जेल में बन्द है। बात यह है कि अमरीकी अधिकारियों का विश्वास है कि वह एक रूसी जासूस है। यह बात मुझे सम्भव नहीं प्रतीत होती किन्तु मैं निश्चय पूर्वक कुछ नहीं कह सकता; वर्षों से मैंने इस युवकको नहीं देखा है। मैं समझता हूं कि पूर्वी जर्मनी से पश्चिमी जर्मनी में आनेवाले व्यक्तियों में अधिकांश इसी बहाने से आते हैं कि वे सोवियत सरकार के लिये जासूसी करेंगे। किन्तु मुझे विश्वास नहीं होता कि हायनरिक जैसा कुलीन युवक ऐसे कार्य में प्रवृत्त होगा।"

"सम्भव है उसने सोवियत अंचल से भाग आने के लिये यह बहाना रचा हो।"

"हां इसकी काफी सम्भावना है। किन्तु यह भी सम्भव है कि यह युवक अपने नये आदर्शवाद के प्रवाह में बह गया हो और कम्युनिज्म के प्रति श्रद्धालु हो गया हो। तुम तो उनके प्रचार कौशल को जानते ही हो। वे सदा यही कहा करते हैं कि वे गणतन्त्र और शान्ति के समर्थक हैं। बिना उनके कार्यों को

देखे उनकी बातों पर अविश्वास करना कठिन हो जाता है। मैं चाहता हूँ कि तुम इस युवक से मिलो और उसे अमरीकी दृष्टिकोण समझाने का प्रयत्न करो। पिछली बार जब मैं कर्ट से मिला था तब उसने मुझसे कहा था कि लैनी लोगों को मोह लेने की कला में दक्ष है।"

"मुझे यह सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैंने उसे समझा बुझाकर ठीक रास्ते पर लाने का भरसक प्रयत्न किया था क्योंकि मैं उसे हृदय से प्यार करता था।'

"मेरा विश्वास है कि तुम्हें यह युवक हायनरिक पसंद आएगा। उसका पूरा नाम है हायनरिक ग्राफ आइन्सीडेल। जिस समय मैंने उसे देखा था वह एक स्वस्थ और सुन्दर युवक था। अठारह वर्ष की आयु में ही वह जर्मन वायु सेना में ले लिया गया था। स्टालिनग्राड में गिरफ्तार होने के समय उसकी आयु इक्कीस वर्ष की थी। इस प्रकार तुम देख सकते हो कि संसार के सम्बन्ध में उसकी जानकारी सीमित ही है। स्टालिनग्राड के बाद वह छै वर्षों तक रूसियों के साथ रहा था। तुम अमरीकियों के साथ वह केवल पिछले तीन चार मासों से है। इसके अतिरिक्त प्रचार कौशल में रूसी लोग तुम अमरीकियों की तुलना में कहीं अधिक दक्ष हैं। यह तो तुम मानोगे ही।"

लैनी ने सहमति प्रकट की।

(४)

लैनी ने फ्रैन्कफर्ट पहुंचकर काउण्ट आइन्सीडेल हायनरिक का पता लगाया। वह जेल में आवश्यक जांच के लिये बन्द था। लैनी ने मान्क को टेलीफोन करके बिस्मार्क के इस प्रपौत्र के साथ एक गुप्त मुलाकात की व्यवस्था करा देने के लिए कहा। मान्क ने स्वीकार कर लिया। आवश्यक प्रबन्ध होने में देर न लगी। लैनी को उस युवक कैदी की कोठरी में न जाना पड़ा। उसे एक आरामदायक कमरे में बैठाकर कैदी को वहीं ले आया गया। सम्भव है अधिकारियों ने वहां एक डिक्टाफोन लगा दिया हो। किन्तु लैनी को इसकी कोई चिन्ता न थी। उसे कुछ छिपाना न था।

हायनरिक छरहरे बदन का एक लम्बा युवक था। जेल में रहने के कारण उसका रंग कुछ पीला पड़ गया था। यों वह एक प्रसन्न और विनोदप्रिय व्यक्ति

था। अपनी परेशानियों के बावजूद वह अमरीकियों से नाराज न था। यह सारे घटनाक्रम को एक मज़ाक के रूप में लेने के लिये तयार था। उसने कहा कि अमरीकी अधिकारियों ने उसके साथ भद्रता का व्यवहार किया था। किन्तु उन्होंने उसे अकारण ही जेल में बन्द कर रखा है और यह कोई भद्रता की बात नहीं है। उसने कहा कि प्रतिवाद के रूप में उसने भूख हड़ताल कर दी थी। किन्तु किसी ने कोई ध्यान न दिया तो अठारह दिन बाद उसने चुप-चाप अपनी हड़ताल तोड़ दी। उसने कहा कि वह पश्चिमी जर्मनी में अपने माता पिता से मिलने आया था। किन्तु अमरीकी सेना विभाग के दो व्यक्तियों ने आकर उसे अकारण गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने कहा कि पासपोर्ट में कुछ गड़बड़ी है। किन्तु यह दलील व्यर्थ है। पासपोर्ट बिल्कुल ठीक है और उस पर बर्लिन के अमरीकी अंचल के अधिकारियों के हस्ताक्षर हैं।

"उन लोगों का कहना है कि तुम एक सोवियत जासूस हो।" लैनी ने कहा, "मैं स्वयं एक जासूस रह चुका हूं, इसलिये मुझे इस कला की पूरी पूरी जानकारी है। मुझे सच्ची बात बता दो।"

हायनरिक मुस्करा पड़ा। "आप तो जानते ही हैं, मिस्टर बड। रूसी अंचल से पश्चिमी अंचल में लोग आते ही रहते हैं। रूसी अंचल में जब कोई व्यक्ति पासपोर्ट के लिये आवेदन करता है तो एम० वी० डी के अधिकारी उसे बुलाकर यह आदेश देते हैं कि वह पश्चिमी अंचल से यथासम्भव जानकारी उनके पास भेजता रहे। मुझे भी यह आदेश दिया गया था और मैंने मन ही मन मुस्कराते हुए इसे स्वीकार कर लिया था। किन्तु यह बात एकदम व्यर्थ ही है क्यों कि मैं ऐसी कोई बात नहीं जानता जो एम० वी० डी के अधिकारी स्वयं न जानते हों। मैं एक सम्पादक हूं—शायद आप यह नहीं जानते। मैं पूर्वी बर्लिन से प्रकाशित होनेवाले 'ताग्लीचे रण्डस्चाऊ' नामक पत्र के सम्पादक-मण्डल का सदस्य हूं।"

"जेनरल एमिल ने मुझे यह बात न बतायी थी। शायद वे स्वयं न जानते थे।"

"पूर्वी बर्लिन में पत्र-सम्पादन का कार्य पश्चिमी बर्लिन की तुलना में काफी

भिन्न होता है। आप इसकी कल्पना तक नहीं कर सकते। वहां सम्पादक को स्वतन्त्र रूप में कार्य करने का अधिकार नहीं रहता। समाचार तक ऊपरसे आने वाली नीतियों के अनुसार संशोधित परिवर्द्धित होने के बाद ही प्रकाशित किये जा सकते हैं। यद्यपि बहुत से लोगों की यह धारणा है कि पूर्वी जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी में कठोर आन्तरिक एकता है। तथापि वास्तविक स्थिति एकदम भिन्न है। वहां भी शक्ति के लिये भिन्न भिन्न गुटों के बीच भयंकर संघर्ष चलता रहता है। एक गुट दूसरे गुटपर अपनी नज़र रखता है और ज्यों ही उसे दूसरे की कोई भूल दिखाई देती है वह उसे ले उड़ता है। मेरे लिये यह एक कठिन कार्य है क्योंकि मैं स्वभाव से स्पष्टवादिता का कायल हूं। मैं गुटबन्दी पसंद नहीं करता।"

"आप पश्चिमी जर्मनी में क्यों नहीं बस जाते?"

"मुझे पता नहीं कि पश्चिमी जर्मनीवाले मुझे अपने यहां रहने की अनुमति देंगे या नहीं। इसके अतिरिक्त इस प्रश्न पर कोई निश्चय करना मेरे लिये बड़ा कठिन है। सोवियत अंचल में मेरे बहुत से जर्मन मित्र हैं; वे जर्मन अफसर जो सोवियत रूस से मिल गए थे। मैं स्वयं 'बण्ड ड्यूटस्चर ओफिजायर' का उपाध्यक्ष हूं। मैं ऐसा कोई काम नहीं करना चाहता जिसे मेरे मित्रों की भावनाओं पर आघात पहुंचे। मेरा जीवन बड़ा विचित्र रहा है। मैं पैदा हुआ जर्मनी में और युवावस्था बिताई नाज़ी आन्दोलन के पक्ष में लड़ते हुए। इसके बाद मैंने अपने देश के साथ विश्वासघात किया और सोवियत रूस की ओर चला गया। अब मैं फिर विश्वासघात करके पश्चिमी जर्मनी में चला आऊं तो लोग क्या कहेंगे? एक बार का विश्वासघात ही बहुत है। आप तो समझते हैं, मैं रूस में छै वर्ष से हूँ और रूसियों ने मुझे जो कुछ सिखाया पढ़ाया है उसे मैं आसानी से नहीं भुला सकता।"

"मैं समझता हूं।" लैनी ने कहा।

(५)

लैनी इस व्यक्ति पर अधिक दबाव न डालना चाहता था। फलस्वरूप वह बीते हुए दिनों की चर्चा करने लगा। उसने कहा कि वह कुछ चित्र खरीदने के

लिये आया है जो एक समय गोयरिन्ग के पास थे। "क्या तुम कभी गोयरिन्ग से मिले थे?"

"मैं उनसे कई बार मिला था।" हायनरिक ने उत्तर दिया। "मेरी धारणा थी कि वे एक महान व्यक्ति हैं। मेरा विश्वास था कि वे युद्ध में विजयी होंगे और जर्मनी को संसारके सबसे अधिक शक्तिशाली देश के रूप में परिवर्त्तित कर देंगे।"

"मैं उसके वायु सेना वाले कार्यालय में एक बार गया था।" लैनी ने कहा। "उस समय तो शायद तुम भी वहीं होगे। मैंने उसे उसका चित्र संकलन तयार करने में सहायता पहुंचाई थी। मेरा मतलब उसके उस संकलन से है जो उसने चुराया नहीं बल्कि खरीदा था।"

"मैं मास्को के ट्रेटीकाकोव म्यूजियम में कुछ कला-चित्र देख आया हूँ। चित्रकला के सम्बन्ध में मेरी जानकारी यहीं तक सीमित है। आप को यह समझना चाहिये कि पिछले छै वर्षों में मेरा अधिकांश समय एक युद्धबन्दी के रूप में ही बीता था। रूसी लोग मुझे अपना प्रचार-साहित्य पढ़ने के लिये देते थे। मैं बड़े मनोयोग के साथ इसे पढ़ता था। जब उन्होंने देखा कि मैं एक परिश्रमी विद्यार्थी हूं तो उन्होंने मुझे एण्टी-फासिस्ट स्कूल में भेज दिया। वहां वे जर्मन युद्ध-बन्दियों को कम्युनिस्टों के रूप में परिवर्त्तित करने का प्रयत्न करते थे। मैंने भी कम्युनिस्ट साहित्य का आद्योपान्त अध्ययन किया। मुझे यह सब बड़ा आश्चर्यजनक लगता था। कम्युनिज्म यह दावा करता था कि वह युद्ध और दरिद्रता को पृथिवी से सदा के लिये भगा देगा, श्रमजीवी समाज का अभ्युदय होगा और एक नये शासनतन्त्र की स्थापना होगी। धीरे धीरे राज्य रूपी संस्था का तिरोधान हो जायगा और प्रत्येक व्यक्ति वास्तविक स्वतन्त्रता का उपभोग करने लगेगा। यह सब मैंने उसी प्रकार सीखा जिस प्रकार कि अपनी माता से बाइबिल अथवा एडोल्फ हिटलर से 'माइन काम्फ' का सबक सीखा था। प्रत्येक बार मैंने मानव जाति की चिरवांच्छित मुक्ति के लिये एक सुनिश्चित योजना की कहानी पढ़ी।"

"मैं ये सारी बातें जानता हूं।" लैनी ने कहा। "मैं स्वयं कभी कम्युनिस्ट

नहीं हुआ। किन्तु मेरे कुछ मित्र कम्युनिस्ट थे। स्वयं मेरी बहन कम्युनिस्ट है। मैं इन आदर्शमुखी बातों से भलीभांति अवगत हूँ। किन्तु तुम्हें यह समझ लेना चाहिये कि क्रान्ति भी पतनोन्मुखी हो सकती है। राज्यसंस्था कम्युनिज्म की भविष्यवाणी के अनुसार समाप्त नहीं हो जाती। बल्कि शक्तिलोलुप व्यक्तियों का एक ऐसा दल खड़ा हो जाता है जो उसे समाप्त नहीं होने देते। वे लोग निर्दयतापूर्वक अपने विरोधियों की हत्या शुरू कर देता हैं। रामराज्य पुलिस राज्य के रूप में परिवर्त्तित हो जाता है। यदि किसी के साथ शासक वर्ग का मतविरोध होता है तो उसे तुरन्त गुप्त रूप में गिरफ्तार कर लिया जाता है और भांति भांति से अत्याचार होने लगता है। अमरीकी जीवन-दर्शन का आधारभूत सिद्धान्त यह है कि प्रत्येक नागरिक को अपने जीवन, स्वतन्त्रता तथा सुख स्वाछन्द्य के उपभोग का अधिकार है। किन्तु सोवियत यूनियन में व्यक्ति एक गौण वस्तु है और शासनसत्ता ही सब कुछ है।"

"मिस्टर बड, इसका आधार यह सिद्धान्त है कि राजसत्ता ही व्यक्ति को शोषण से मुक्त करती है।"

"यह एक सुन्दर सिद्धान्त प्रतीत होता है और बहुत से लोग इसके मोह में पड़ जाते हैं। किन्तु तीस वर्ष तक व्यवहारिक क्षेत्र में कम्युनिज्म की प्रगति का अध्ययन करने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि राजसत्ता कुछ थोड़े से व्यक्तियों के समूह के रूप में ही परिवर्त्तित हो जाती है जो अपने अधिकारों की रक्षा करने के लिए शेष जनता का शोषण करता रहता है। मेरी दृष्टि में स्टालिनतन्त्र उतना ही बुरा है जितना कि रोमन साम्राज्य के पतन के समय की शासन व्यवस्था। खैर, क्या तुमने सरगोई आइसेन्सटाइन द्वारा बनायी गयी वह फिल्म देखी है जिसमें ईवान दि टेरिबिल का जीवन चित्रित किया गया है?"

हायनरिक ने यह फिल्म न देखी थी।

लैनी ने कहना शुरू किया :

"यह ईवान दि टेरिबिल निर्दयता का साक्षात अवतार था। वह उपदंश रोग का रोगी था और अपने पागलपन के लिए प्रसिद्ध था। किन्तु यह भयानक व्यक्ति

भी सोवियत रूस वालों के लिए सफलता का प्रतीक है। उसने निर्दयता के साथ अपने शत्रुओं का हनन किया था और अपने साम्राज्य का विस्तार किया था। इसीलिए आज के सोवियत शासक उसका गुणगान कर रहे हैं। इस अभाव के समय में भी वे करोड़ों रूबल खर्च करके उसकी फिल्म बनवाते हैं। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि अमेरीका में इस बातकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। पहली बात तो यह है कि हमारे इतिहास में ईवान जैसे व्यक्तित्व हैं ही नहीं। हमारे लोकप्रिय ऐतिहासिक पुरुष कोलम्बस जैसे व्यक्ति ही हैं। कोलम्बस की कहानी तो तुम जानते ही होगे। वह तीन छोटे छोटे जहाजों को लेकर निकला था और उसने एक विशाल महाद्वीप का आविष्कार कर लिया था। हमारे ऐतिहासिक महापुरुषों में डेनियल बून का नाम आता है जिसने जंगल में नाना प्रकार की विघ्न बाधाओं का सामना किया था। पाल रेवरे जिसने अंगरेज सैनिकों के विरुद्ध अमरीकी किसानों को संगठित किया था, टामस जेफर्सन जिसने अमेरिका की स्वाधीनता का घोषणापत्र लिखा था, जान ब्राउन जिसने दासों को जगाने का प्रयत्न किया था; अब्राहम लिन्कन जिसने सचमुच उन्हे जगा कर मुक्ति दिलाई थी। शायद कुछ दिनों बाद हम अपने ऐतिहासिक महापुरुषों की परम्परा में फ्रैन्कलिन रूजवेल्ट का नाम भी जोड़ देंगे। रूज़वेल्ट! एक अपङ्ग व्यक्ति जिसने वालस्ट्रीट की शक्ति को चकनाचूर कर दिया और उसे ह्वाइट हाउस के आदेशों को स्वीकार करने के लिए वाध्य कर दिया! इन बातों से तुम हम अमरीकियों की आत्मा के सम्बंध में कुछ अनुमान लगा सकते हो। थोड़ा सा विचार करने पर तुम देख सकते हो कि हमारे देश की आत्मा रक्तपात और हिंसा के उस देश की आत्मा से एकदम भिन्न है जिसने लाखों दास-मजदूरों के परिश्रम से एक विराट सैनिक शक्ति खड़ी कर ली है।"

"मुझे इन सब बातों का कोई पता नहीं है।" बिस्मार्क के प्रपौत्र ने कहा। "जिन नामों का आप ने उल्लेख किया है वे मैं पहली बार ही सुन रहा हूं।"

(६)

लैनी इस जर्मन युवक की अधूरी शिक्षा पूरी करने में लग गया। उसे यह नवयुवक पसंद आ गया था क्यों कि उसकी बुद्धि कुशाग्र थी और उसके चेहरे पर

सदा मुस्कराहट खेलती रहती थी। भाग्य ने उसे धोखा दिया था किन्तु उसने भाग्य की इस विडम्बना को भी एक मजाक के रूप में स्वीकार कर लिया था। अमरीकियों ने उसे जेल में बन्द कर रखा था किन्तु इसमें अमरीकियों का विशेष दोष न था। इस युवक को समझने का उनके पास कोई उपाय न था। युवक जर्मन वायुसेना में रह चुका था। मुस्कराते हुए उसने कहा, "जब आकाश में वायुयान परस्पर विरोधी झकोरों के बीच डगमगाने लगता है तो कुशल वायुयान चालक खीझता नहीं। वह वायु के इन प्रबल आघातों पर नियन्त्रण प्राप्त करने में लग जाता है।"

लैनी ने फिर से अपनी वह वाग्पटुता दिखाई जो बेस के सामने पूर्णतया असफल प्रमाणित हो चुकी थी। उसने हायनरिक के प्रश्नों का उत्तर बड़ी सुन्दरता के साथ देना शुरू किया। यह ठीक है कि अब भी अमेरिका में नीग्रो लोगों को फांसी पर लटकाया जाता है। वर्ष में एकाध 'लिन्चिन्ग' की दुःखद घटना घट जाती है। किन्तु लाखों नीग्रो जो एक शताब्दी पूर्व दास थे आज शिक्षा प्राप्त करके नया जीवन बिता रहे हैं। वे रुपया कमा रहे हैं और भविष्य के लिए उसे बचा कर रख रहे हैं। एक के बाद एक भिन्न भिन्न न्यायालयों में उन्हे अपने अधिकारों के पक्ष में स्पष्ट निर्णय मिल रहे हैं। वे धीरे धीरे प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहे हैं। इसीलिये अमेरिका के नीग्रो लोगों के साथ कम्युनिस्टों की दाल नहीं गलने पायी।

यह भी ठीक है कि अमेरिका में मजदूर आन्दोलन को दबा दिया जाता है। कभी कभी ट्रेड यूनियनों को भंग कर दिया जाता है और मजदूरों को मारा पीटा जाता है। उपन्यासों में वस्तुस्थिति का यही चित्र मिलता है। किन्तु ये उपन्यास तीस चालीस वर्ष पूर्व लिखे गये थे और आज स्टालिन के रूस में इन्ही का प्रचार कराया जाता है। तारीखों के सम्बन्ध में पूर्ण मौन साध लिया जाता है। रूस की जनता को बताया जाता है कि आज के अमेरिका में इसी प्रकार की वस्तुस्थिति है। किन्तु यह बात एकदम असत्य है। आज अमेरिका में कम से कम दो करोड़ मजदूर ट्रेड यूनियनों में संगठित हैं और ये ट्रेड यूनियनें इतनी मालदार हैं कि मालिकों के साथ समानता के स्तर पर ही बातें करती हैं। मजदूरों को हड़ताल

करने का अधिकार है और यदा कदा हड़तालें होती भी रहती हैं—यह एक ऐसी बात है जिसकी कल्पना तक स्टालिन के साम्राज्य में असम्भव है। पिछले सोलह वर्षों में इन ट्रेड यूनियनों का सरकार पर काफी प्रभाव रहा है। भांति भांति के सुधारमूलक कानून स्वीकृत हुए हैं और हो रहे हैं। इङ्गलेण्ड में इसे फेबियन सोशलिज्म कहा जाता है। अमेरिका में इसके शत्रु इसे "छिप कर आने वाला समाजवाद" कहते हैं। किन्तु गाली गलौज इस समाजवादी प्रगति को रोक नहीं सकी। और यह सब पूर्णतया गणतांत्रिक उपायों द्वारा हुआ। किसी की हत्या न की गई, किसी को बन्दीगृह में न भेजा गया, दास-मजदूर-शिविरों की स्थापना न करनी पड़ी और असत्य प्रचार का आश्रय न लेना पड़ा।

(७)

संक्षेप में, लैनी ने उस जर्मन युवक को गणतांत्रिक आदर्शों के सम्बंध में विस्तृत जानकारी दी। युवक सब कुछ ध्यानपूर्वक सुनता गया। उसके हाव भाव से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह काफी प्रभावित हुआ है। लैनी ने मन ही मन यह आशा की थी कि यदि उसे पश्चिमी क्षेत्र में रहने का अवसर प्रदान किया जायगा तो वह तुरन्त राजी हो जायगा। किन्तु ऐसा न हुआ। उसने स्पष्ट स्वर में कहा कि वह पश्चिमी जर्मनी में बस जाने के लिए राजी न होगा। इसके लिये उसने यह कारण बताया कि पूर्वी जर्मनी में उसके मित्र यह समझेंगे कि जेल से बचने के लिये ही उसने अपने आदर्श का परित्याग कर दिया। अमरीकी लोग भी ऐसा ही सोचेंगे और वे कभी हृदय से उसका विश्वास न करेंगे। उसने कहा कि वह जेल में इसी प्रकार प्रतीक्षा करता रहेगा। अन्त में अमरीकियों को उसे छोड़ देने के लिए बाध्य होना पड़ेगा क्यों कि उसके विरुद्ध कोई प्रमाण नहीं है। उसने कहा कि जेल से छूटने के बाद वह वापस पूर्वी जर्मनी चला जायगा और 'तागलीचे' पत्र में पूर्ववत् काम करने लगेगा। उसने स्पष्ट रूप में यह घोषणा की कि वह अपने पुराने मित्रों के प्रति वफादार रहना अधिक पसंद करता है। पूर्वी जर्मनी में लौट कर वह अपने मित्रों से उन बातों को चर्चा करेगा जो लैनी ने इतने यत्नपूर्वक समझायी हैं।

"नहीं, नहीं। तुम भूल कर भी ऐसा मत करना।" लैनी ने युवक को

चेतावनी देते हुए कहा। "यह एक खतरनाक बात होगी। मुझे तो ऐसा लगता है कि तुम कभी सफल षड़यन्त्रकारी नहीं बन सकते। तुम्हारे चेहरे को देख कर यह बात साफ जाहिर होती है कि तुम क्या सोच रहे हो।"

"मैं समझता हूँ कि मेरे कुछ ऐसे मित्र हैं जिनका मैं पूर्ण विश्वास कर सकता हूं।"

"मेरा विश्वास है कि एक पुलिस राज्यमें सच्चे मित्र मिलना एकदम असम्भव है। ज्यों ही तुम्हारे विश्वासों में कोई परिवर्त्तन होने लगता है त्यों ही आतंक और भय की विभीषिका शुरू हो जाती है। इसका कोई ठिकाना नहीं रहता कि कब कौन सा मित्र तुम्हारे साथ विश्वासघात कर बैठेगा। याद रखो, तुम्हारे साथ विश्वासघात करने वाले व्यक्ति के लिए लाभ ही लाभ है। दूसरी ओर तुम्हारे भेद को सुरक्षित रखने में किसी को किसी प्रकार का लाभ न होगा। तुम्हें क्षण भर के लिए भी मानसिक शान्ति न मिलेगी। अधिकारियों को तुम पर किंचित मात्र संदेह हो जायगा तो तुम्हारा सर्वनाश सुनिश्चित है। हमारे स्वतंत्र संसार में यह व्यवस्था है कि भले ही सौ दोषी दंडित होने से बच जायं किन्तु किसी निर्दोष को दण्ड न मिले। किन्तु स्टालिन के राज्य में वस्तुस्थिति इसकी ठीक उल्टी है। कारण यह है कि स्टालिन को सदा इस बात का भय रहता है कि कहीं यह एक व्यक्ति ही उसका सर्वनाश न कर दे। प्रत्येक अत्याचारी शासन में इसी प्रकार की स्थिति रहती है। वह अनिवार्य रूप में घृणा, संदेह और आतंक का वातावरण तयार करता रहता है। इस घृणा और संदेह के वातावरण में ही वह जीवित रह सकता है। स्वतंत्र संसार में प्रत्येक व्यक्ति को एक मानव आत्मा के रूप में देखा जाता है और उसके आधारभूत अधिकारों को पवित्र समझा जाता है। किन्तु स्टालिन के साम्राज्य में मनुष्य कीड़े मकोड़ों के रूप में ही समझे जाते हैं। यदि किसी समय यह शंका उपस्थित हो जाती है कि कोई कीड़ा काटने का प्रयत्न कर रहा है तो उसे तुरन्त नष्ट कर दिया जाता है।"

जर्मन युवक मुस्करा उठा। "आप अपने मित्रों से कह दीजिये कि उन्होने जिस कीड़े को संदूक में बन्द कर रखा है उसे छोड़ दें—वह काटने का प्रयत्न न करेगा। वह पूर्वी जर्मनी जाकर उनके सम्बन्ध में कोई मिथ्या प्रचार न करेगा।

उसने यहां जो कुछ सीखा है उसकी चर्चा पूर्वी जर्मनी में अपने मित्रों के साथ करेगा। सम्भव है किसी दिन उसके विचारों में कोई परिवर्तन हो जाय। किन्तु इस सम्बन्ध में वह किसी प्रकार का आश्वासन नहीं दे सकता।"

लैनी ने फ्रैन्कफर्ट के अधिकारियों को अपनी रिपोर्ट दे दी। वे बड़ी उत्सुकता के साथ लैनी की वार्त्ता के फल की प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होने आइन्सीडेल को संदेह के आधार पर गिरफ्तार किया था। उनका विश्वास था कि वह सोवियत जासूस है। किन्तु लैनी इस सम्बन्ध में किसी प्रकार का निश्चित आश्वासन न दे सकता था। उसे इस युवक को देखकर स्टालिन के प्रचार-यन्त्र की अद्भुत शक्ति पर मन ही मन आश्चर्य हो रहा था। उन्होने हिटलर की सेना के एक युवक और अनुभवशून्य अधिकारी को किस प्रकार अपनी ओर मिला लिया था! यह सचमुच एक आश्चर्य की बात थी। किन्तु उन लोगों को एक बहुत बड़ी सुविधा भी थी। जब तक कोई व्यक्ति उनके सिद्धांतों के साथ सहमत न होता था तब तक वह बन्दीगृह में पड़ा रहता था। किन्तु सहमत होते ही वह एक सम्मानीय व्यक्ति हो जाता था! इसके अतिरिक्त एक बात और भी थी। सोवियत अधिकारियों और प्रचारकों ने उस युवक को छै वर्षों की सुदीर्घ अवधि में जो कुछ सिखाया पढ़ायां था उसे लैनी दो घण्टे में समाप्त कर न कर सकता था। फिर भी लैनी को मन ही मन यह आशा थी कि अब वह युवक नये प्रश्नों पर कुछ नये दृष्टिकोणों से अवश्य विचार कर रहा होगा। यह बात उसके लिए गर्व की ही थी कि जेल से छूटने के लिए उसने एक झटके साथ अपने विचारों में परिवर्त्तन कर डालना उचित न समझा।

"आप लोग उसे पुस्तकें क्यों नहीं देते?" लैनी ने अधिकारियों से प्रश्न किया। अधिकारियों ने कहा कि वे स्वयं नहीं जानते कि वे उसे कौन सी पुस्तकें पढ़ने के लिए दें। वे प्रचार कार्य में कोई दक्षता न रखते थे। अमेरिका के सैनिक शिक्षालयों में इस कला की कोई शिक्षा नहीं दी जाती। अमरीकी सैनिक अधिकारियों के लिए प्रचार कार्य में पटुता प्राप्त करने का प्रश्न एकदम नया था और वे इसे पसंद भी न करते थे। उनकी धारणा थी कि यह कार्य समाचार पत्रों और रेडियो का है, सैनिकों का इसके साथ कोई सम्बन्ध नही है। औसत अमरीकी

अधिकारी कम्युनिज्म और सोशलिज्म के अन्तर को भी ठीक से न समझता था ; उसकी दृष्टि में दोनों बातें प्रायः एक सी थीं। लैनी ने भी स्वीकार किया कि इस अन्तर को समझना सरल नहीं है। हिटलर अपने आपको सोशलिस्ट कहता था—उसके नाज़ी आन्दोलन का नाम था नैशनल सोशलिज्म। उसने जर्मनी के सोशलिस्टों के वोट हथियाने के लिए ही यह चाल चली थी। इसी प्रकार आज स्टालिन का भी दावा था कि वह सोशलिज्म की स्थापना के लिए कार्य कर रहा है। किन्तु यह एक चाल मात्र है। वस्तुतः वह पुराने जमाने के जारों की भांति ही अपना साम्राज्य बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील है और उसकी कार्यप्रणाली जारों की तुलना में कहीं अधिक भयानक है। दूसरी ओर अमरीकी लोग अपने देश में धीरे धीरे समाजवादी व्यवस्था की स्थापना कर रहे हैं किन्तु उन्हें स्वयं इस बात का पता नहीं है। वे अतीत के रास्ते भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं और उन्हें स्वयं इस बात का अनुमान नहीं है कि वे कहां जा रहे हैं। डेमोक्रेट लोग इसे अभी तक 'नया सौदा' और 'उचित सौदा' बता रहे हैं। केवल रिपब्लिकन लोग ही समझ सके हैं कि यह तथाकथित 'नया सौदा' वस्तुतः क्या है !!

(८)

लैनी वायुयान द्वारा बर्लिन पहुंचा। उन दिनों वायुयानों में स्थान मिलना प्रायः असम्भव ही था। बड़े बड़े सैनिक अधिकारी भी वायुयानों में अखबार अथवा बोरे बिछाकर बैठ जाते थे। जर्मनी को खाद्यान्न तथा अन्य आवश्यक माल पहुंचाते रहना आवश्यक था और प्रत्येक वायुयान ठसाठस भरा रहता था। वायुयान की दीवारों के किनारे किनारे पर लगे हुए छल्लों से रस्सियां निकाल कर मालों को कस कर बांध दिया जाता था ताकि वे हिलने डुलने न पावें। लैनी को विक्टर ह्यूगो के एक उपन्यास की याद आ गयी जिसमें एक समुद्री जहाज पर रखी हुई तोप का चित्रण था। तूफ़ान आने के फलस्वरूप वह तोप अपने स्थान से उखड़ गई थी। वह डक के एक किनारे से दूसरे किनारे तक लुढ़क रही थी और रास्ते में जो कुछ सामने आ जाता उसे चकनाचूर कर रही थी। किन्तु लैनी के वायुयान में विक्टर ह्यूगो के उपन्यास का चित्र न उपस्थिति हुआ।

फ्रैन्कफर्ट के हवाई अड्डे पर लैनी ने जो दृश्य देखा था वह सचमुच आश्चर्य-

जनक था। 'सी ४७' वायुयानों की एक विशाल पंक्ति खड़ी हुई थी। ये विराट मालवाहक वायुयान युद्धकाल में पूरा काम कर चुके थे और इसलिए अब उनकी चमक दमक उतनी आकर्षक न रह गई थी। किन्तु अब भी वे दो दो ढाई ढाई टन माल ढो सकते थे। प्रत्येक वायुयान के पास एक ट्रक खड़ी हुई थी और दक्ष हाथों द्वारा माल की खलासी हो रही थी। अद्भुत दृश्य था।

लैनी ने प्रश्न किया तो उसे बताया गया कि कई सौ वायुयान इस कार्य में लगे हुए हैं और वे रात दिन चलते रहते हैं। शीघ्र ही सी ५४ वायुयान भी आ जायंगे जो दस दस टन माल लेकर उड़ने की क्षमता रखते हैं। ये दैत्याकार वायुयान हवाई और अलास्का से आ रहे हैं! अपने कौतूहल की निवृत्ति करके लैनी अपने वायुयान में जाकर बैठ गया। बैठने का स्थान सुविधाजनक न था किन्तु यात्रा लम्बी न थी। फ्रैंकफर्ट से बर्लिन पहुंचने में केवल एक घन्टे का समय लगता था। उसके वायुयान में केवल माल भरा हुआ था; अन्य कोई यात्री न था। फलस्वरूप लैनी किसी के साथ बातचीत करके समय न काट सकता था। वह अपने विचारों में तल्लीन हो गया। उसे ऐसा लग रहा था कि अमेरिका से माल लेकर आने वाले प्रत्येक वायुयान का आगमन क्रेमलिन के लिए एक खतरे की घण्टी होगा। पोलिटब्यूरो के सदस्य मन ही मन सोच रहे होंगे कि स्वतंत्र संसार आसानी से पराभूत न होगा!!

एक हल्के झटके के साथ लैनी का वायुयान जमीन पर उतरा। दरवाजा खोलते ही लैनी ने देखा कि ट्रकों की एक लम्बी कतार और कुशल मजदूर वायुयान से माल उतारने के लिए तयार खड़े हैं। लैनी वायुयान से उतर कर क्षण भर के लिए यह दृश्य देखने के लिए रुक गया। प्रत्येक तीन मिनट के अन्तर पर एक वायुयान आ रहा था और जिस प्रकार यातायात की योजना बढ़ रही थी उससे ऐसा प्रतीत होता था कि आधे आधे मिनट के अन्तर पर वायुयान आने लगेंगे। लैनी ने देखा कि बर्लिन के बच्चे अपने मकानों की छतों से यह मुफ्त का तमाशा देख रहे हैं।

वायुयान-चालक अपने साथ इन बच्चों के लिए लाइम ज्यूइस की गोलियां लाते थे और आकाश से इनकी वर्षा करते हुए मन ही मन बड़े प्रसन्न होते थे।

(९)

लैनी ने मान्क को टेलीफोन कर दिया था। उसके लिये एक होटल में ठहरने की व्यवस्था कर दी गयी थी। शीघ्र ही दोनों मित्रों में मुलाकात हुई। दोनों को एक दूसरे से बहुत कुछ कहना था। सबसे पहले तो कर्ट की दुःखद मृत्यु की चर्चा करनी थी। मान्क ने कहा कि उसे यह बात निश्चित रूप में मालूम है कि कर्ट की हत्या किसने की है। किन्तु उसके पास कोई प्रमाण नहीं है। हत्यारे भाग गए हैं। सम्भव है वे अभी तक जंगल में छिपे हों। यह भी सम्भव है कि वे विदेश चले गए हों। विदेश में वे अपने नाम बदल कर रह रहे होंगे। बवेरिया की सरकार इस मामले की तहकीकात कर रही है किन्तु यह एक संदिग्ध बात है कि वह हत्यारों को पकड़ने के लिये विशेष उत्सुक हो। जर्मन सरकार में अनेकों नाजी प्रविष्ट हो गए हैं। कभी कभी भूतपूर्व नाजियों को सरकारी पदों पर नियुक्त करना आवश्यक हो जाता है क्यों कि अन्यत्र दक्ष व्यक्ति नहीं मिलते। मान्क का विश्वास था कि पाशविक शक्ति पर विश्वास करनेवाले लोग जिन्होंने बारह वर्षों तक जर्मनी में राज्य किया था शीघ्र ही शान्त न होंगे और अमरीकी सरकार को जर्मनी में अभी काफी समय तक रहना पड़ेगा।

"किन्तु क्या स्टालिन हमें इतना लम्बा समय देगा?" लैनी ने प्रश्न किया।

"बस यही तो एक प्रश्न है!" मान्क ने कंधे उचका कर कहा।

मार्क्सवादी मान्क ने लारेल की प्रेत वार्त्ता का प्रश्न न उठाया। लैनी समझ गया कि इस वृद्धावस्था में मान्क के लिये अपने विचार बदलना सम्भव नहीं है। मान्क एक कर्मठ और साहसी व्यक्ति था किन्तु उसे कभी यह प्रश्न चंचल न करता था कि कर्मठता और साहस के ये गुण उसे कैसे प्राप्त हुए। वह इस सम्बन्ध में पूर्ण भौतिकतावादी दृष्टिकोण रखता था। वह जड़वादी संसार के दो सीमान्त प्रश्नों—नाजीज्म और कम्युनिज्म—को सुलझाने का प्रयत्न करने में ही संतुष्ट था।

सभी सीमान्त चिन्तनधाराएं अन्त में एक सी हो जाती हैं। लैनी ने मान्क को आइन्सीडेल के साथ अपनी मुलाकात की बात बतायी। मान्क ने भी स्वीकार किया कि नाजीवाद और कम्युनिज्म में विशेष अंतर नहीं है। नाजी

लोग शक्ति पर विश्वास रखते हैं और स्टालिनवादी लोग भी शक्ति पूजक हैं। दोनों ही अपने लिये विशेष अधिकारों का दावा करते हैं और दोनों एक दूसरे के पूरक हैं—कम से कम उस समय जब कि स्टालिनवादी जर्मनी के एक भाग पर अपना शासन जमाए हुए हैं।

किन्तु लैनी ने यह मत प्रदर्शित किया कि आइन्सीडेल मित्र-राष्ट्रों की ओर चले जाने के प्रश्न पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर रहा होगा। मान्क ने कहा कि यह असम्भव नहीं है। अनेकों जर्मन और रूसी दिन दिन इस बात का अधिकाधिक अनुभव करने लगे हैं कि कम्युनिस्ट सिद्धान्तों और कम्युनिस्ट व्यवहार में आकाश पाताल का अन्तर है। उसने कहा, "प्रतिदिन कुछ सोवियत अधिकारी हमारी ओर आ जाते हैं। मैं हाल ही में आए हुए कुछ अधिकारियों से तुम्हारा परिचय करा दूंगा। इसी विषय पर तुम 'रिआस' के ज़रिये एक भाषण दे डालो। लोगों को इसमें बड़ी दिलचस्पी है।"

मान्क ने बताया कि फ्रित्ज मेसनर और अन्ना सर्डेन के बारे में उसे कोई समाचार नहीं मिला है। लैनी ने जेनरल एमिल की चर्चा की। मान्क ने कहा कि एमिल को बर्लिन लाकर उनसे 'रिआस' पर एक वक्तव्य दिलवाना चाहिये। जर्मन जनता पर इसका बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ेगा। मान्क इस समय बड़ा उत्साह-शील था। युद्ध समाप्त होने के बाद अब पहली बार ही उसे इस बात का अनुभव हुआ था कि जर्मन जनता मित्र राष्ट्रों की ओर झुक रही है। उसने कहा कि बर्लिन की नाकेबन्दी का जर्मनों पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है। प्रथम बार ही जर्मन जनता ने इस बात का अनुभव किया है कि अमरीकी सैनिक-सरकार डींगें मारने की अपेक्षा ठोस कार्य पर विश्वास रखती है। सोवियत सरकार की प्रतिष्ठा पर गहरा आघात पहुँचा है और वह मन ही मन खीझ रही है।

लैनी ने बोरिस शब के साथ मुलाकात की। शब इस समय 'रिआस' का राजनैतिक परामर्शदाता हो गया था। लैनी को देखते ही शब ने अपने दोनों हाथ बढ़ाकर उसका स्वागत किया। वह इस समय बड़ा प्रसन्न था। हाल ही में एक मतगणना द्वारा यह बात प्रमाणित हो गयी थी कि बर्लिन के निवासियों में अस्सी प्रतिशत 'रिआस' रेडियो सुनते थे। दूसरी ओर शक्तिशाली कम्युनिस्ट

रेडियो स्टेशन के पास केवल पंद्रह प्रतिशत श्रोता रह गए थे। अमेरिका जाग रहा था! वह रूसियों को चेतावनी दे रहा था कि उनके विश्व-विजय के स्वप्न पूरे होनेवाले नहीं !!

शव लैनी के साथ बैठकर 'रिआस' पर भावी प्रोग्रामों के सम्बन्ध में विचार विनिमय करने लगा। रूसी अंचल से सैकड़ों लोग भाग भाग कर अमरीकी अंचल में आ रहे थे। वे वहां की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालते थे। वे आकर 'रिआस' के अधिकारियों को धन्यवाद देते थे। इन शरणार्थियों से जो भेद प्राप्त हो जाते थे उन्हे सरकार का गुप्तचर विभाग लाखों डालर खर्च करके भी न प्राप्त कर सकता था। इन भेदों को प्राप्त करके 'रिआस' वाले रेडियो पर अपने श्रोताओं को सारी बातें बता देते थे। कभी कभी श्रोताओं को अग्रिम चेतावनी देना भी सम्भव हो जाता था। उदाहरण के लिए वे रेडियो पर घोषणा कर देते कि, "यदि आप ड्रेस्डेन एक्सप्रेस से यात्रा कर रहे हों तो सावधान! इस गाड़ी की खाना तलाशी का निश्चय हुआ है!" अथवा 'ब्रेमेन केमिकल वर्क्स में तीन कम्युनिस्ट जासूस हैं। हम लोग इनके नामों की घोषणा किये देते हैं!" —और सचमुच वे उनके नाम घोषित कर देते!

(१०)

इस प्रकार 'हर फ्रोहलिच' महोदय रेडियो पर भाषण देने के लिये खड़े हुए। उन्होंने कहा कि वे अमेरिका की ओर से जर्मनी तथा रूस की जनता का आह्वान कर रहे हैं।

"मैं फ्रांस, इङ्गलैण्ड आदि अनेकों देशों का विस्तृत भ्रमण कर आया हूं। और यह बात मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि किसी भी देश की जनता युद्ध नहीं चाहती। लोग एक पीढ़ी में दो भयानक विश्वयुद्ध देख चुके हैं और अब तीसरा युद्ध नहीं चाहते।"

लैनी ने अपने श्रोताओं को बताया कि वह बचपन में जर्मनी आता था तो डालक्रोज स्कूल में नृत्य तथा आमोद प्रमोद मना कर बड़ा प्रसन्न होता था। वह जर्मनी के सहृदय, सुखी तथा सहानुभूतिशील लोगों से मिल कर बड़ा संतुष्ट होता था।

यह ठीक है कि जर्मनी की जनता सामाजिक सुधार चाहती है किन्तु ये सुधार गणनान्त्रिक उपायों द्वारा ही सम्भव हैं। चुनाव-पेटिका का प्रशस्त पथ सामने पड़ा हुआ है युद्ध देवता कैसर ने अपनी युद्ध दुन्दुभी न बजायी होती तो। जर्मनी सामाजिक सुधार के पथपर बहुत आगे बढ़ गया होता। प्रत्येक तानाशाह प्रतिक्रियावादी होता है। वह देश की जनता को अपनी जीवन-यात्रा अपने ढंग से चलाने का अधिकार नहीं देता। वह जनता की इस आधारभूत स्वतन्त्रता का अपहरण करके स्वयं उसका भाग्यविधाता बन जाता है।

हिटलर ने भी यही किया था। वह उग्र राष्ट्रीयतावाद के सहारे सत्तारूढ़ हुआ इसके बाद उसने जर्मन युवकों को अपने पड़ोसियों से तीव्र घृणा करना सिखाया। उसने संसार की अन्य जातियों को सदा के लिये पराभूत करने की भयानक योजना बनायी। पहले उसने जेकोस्लोवाकिया पर अधिकार किया। इसके बाद पौलैण्ड को बांट कर खा जाने के लिये उसने स्टालिन के साथ एक सौदा किया। और फिर शीघ्र ही वह अपने तथाकथित मित्र देश की सीमाओं का अतिक्रमण करके उसके भूभाग को रौंदते हुए चल पड़ा।

"क्या जर्मन जनता रूसी जनता को जीत लेना चाहती थी? क्या रूसी जनता जर्मन जनता को जीत लेना चाहती थी? कदापि नहीं। दोनों देशों की जनता घटनाओं के भयानक आवर्त्त में असहाय सी होकर चक्कर काट रही थी। दोनों देशों के तानाशाह ही भांति भांति की भ्रान्तियों तथा असत्यों का प्रचार कर रहे थे। एक प्रकार के पागलपन से आक्रान्त होकर जापान ने अमेरिका के पर्ल हार्बर पर आक्रमण कर दिया था। फलस्वरूप अमेरिका को युद्धमें शामिल होना पड़ गया था। मैं उस समय अमेरिका में ही था। मैं यह बात दावे के साथ कह सकता हूँ कि अमरीकी जनता युद्ध न चाहती थी। हिटलर ने जापान के साथ कोई न कोई समझौता कर रखा था। फलस्वरूप जापान ने अमेरिका पर आक्रमण कर दिया और उसे बलात युद्ध में घसीट लिया।

"संयोगवश इस युद्ध के तारतम्य में मुझे रूस जाना पड़ा था। मैंने वहां पर कुछ समय कुइबीशेव और मास्को में बिताया था। वहाँ मुझे हजारों रूसियों से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ था। वे लोग मेरे मित्र बन गये थे। मैंने देखा कि

वे सभी सहृदय, उदार और सहानुभूतिशील हैं। वे न मुझसे घृणा करते थे न भय। हम लोग मित्र थे और यह मित्रता पूर्णतया स्वाभाविक प्रतीत होती थी। किन्तु उस बात को आज छै वर्ष हुए और इन छै वर्षों में न जाने कितना अन्तर हो गया है! एक तानाशाह का दिमाग फिर से बदल गया है। हिटलर से साथ युद्ध के समय उसे अमेरिका से अरबों डालर की सहायता प्राप्त हुई थी। अब भी हम उसकी यथासम्भव सहायता करने के लिये तयार हैं। हमने रूस तथा जेकोस्लोवाकिया आदि पराभूत देशों को मार्शल योजना के अन्तर्गत सहायता देनी चाही थी। किन्तु तानाशाह को यह सहायता मंजूर नहीं है। उसने अपने साम्राज्य के चारों ओर एक लौह आवरण डाल रखा है।"

लैनी ने अपने इस भाषण के तारतम्य में शीत-युद्ध के नये आविष्कार की चर्चा भी की। क्रेमलिन के महाप्रभु ने आज अपने विशालकाय प्रचार यन्त्र को अमेरिका की ओर घुमा दिया है ताकि रूसी जनता अमरीकियों से घृणा करने लगे। ब्रिटिश अंचल में रेडियो बर्लिन था। किन्तु यह कम्युनिस्टों के अधिकार में था। वहां से भी अमरीकियों के विरुद्ध भांति भांति का मिथ्या प्रचार हो रहा था।

"यह सब एक पागलखाने की कहानी सा प्रतीत होता है। हमें बाध्य होकर अपने एक रेडियो स्टेशन की स्थापना करनी पड़ी ताकि हम जनता को बता सकें कि हम न वाल स्ट्रीट के गुलाम हैं न युद्ध-पिपासु ही हैं। हम सच्चे गणतन्त्र में विश्वास करते हैं। हमारा विश्वास है कि पृथ्वी पर प्रत्येक जाति को जीवित रहने का अधिकार है और हम इस अधिकार की रक्षा के लिये कृतसंकल्प हैं। संसार की प्रत्येक जाति को यह अधिकार है कि वह अपनी जीवनयात्रा अपने ढंगसे चलाए और अपनी राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सामाजिक समस्याओं का अपने ढंग से समाधान करे।

"संसार के स्वतन्त्र राष्ट्रों ने राष्ट्र संघ नामक एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन को खड़ा किया है ओर यह निश्चय किया है कि भविष्य में वे अपनी सारी अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान यहां आकर शान्तिपूर्ण विचार विनिमय द्वारा करेंगे। बड़े राष्ट्र और छोटे राष्ट्र, धनी राष्ट्र और निर्धन राष्ट्र, सभी कानून की

दृष्टि में समान हैं। किन्तु सोवियत रूस की दृष्टि में स्थिति कुछ दूसरी ही है। उसने राष्ट्र संघ में आकर अपना मिथ्या प्रचार शुरू कर दिया। वह राष्ट्र संघ की कार्यवाही में भांति भांति की अड़चनें डालने लगा। अपने वीटो के अधिकार का दुरुपयोग करके वह अन्य देशों की आशाओं आकांक्षाओं को अन्तहीन रूप में कुचलता रह सकता है। अभी तक वह पचीस बार वीटो का प्रयोग कर चुका है। हम अमरीकियों की इच्छा है कि विभाजित जर्मनी फिर से एक संयुक्त राष्ट्र के रूप में खड़ा हो और इस अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का सदस्य हो। किन्तु आप लोग जानते हैं कि सोवियत सरकार इस बात को कभी न पसंद करेगी क्योंकि वह जर्मनी को एक कठपुतली देश के रूप में परिवर्त्तित करके अपने विशाल साम्राज्य में अन्तर्भुक्त कर लेना चाहती है। यदि वह पूरी जर्मनी को अपने साम्राज्य में न मिला सकेगी तो कम से कम आधी जर्मनी को तो अवश्य ही हड़प जायगी।"

(११)

दो दिन बाद सोवियत नियंत्रित रेडियो-बर्लिन से लैनी की इस वक्तृता का उत्तर आया। यह उत्तर सोवियत रूस के सबसे अधिक प्रचार-कुशल प्रवक्ता इल्या एहरेनबर्ग ने दिया था। वर्षों तक एहरेनबर्ग ने हिटलर के विरुद्ध अपना भयानक शब्द-युद्ध चलाया था और अब उसने अपनी सारी प्रतिभा प्रेसीडेन्ड ट्रूमन और उनके साथियों के विरुद्ध लगा दी थी।

"घड़ियाली आंसू बहाने वाला यह अमरीकी कौन है?" इल्या एहरेनबर्ग ने अपने रेडियो बर्लिन से हुंकार की। "यह अमरीकी घड़ियाल आज जर्मन जनता के सामने अपने बनावटी आंसू बहाकर हमारे सोवियत रूस को गालियाँ देने का साहस कैसे कर रहा है? मैं आपको बताता हूं कि वस्तुतः यह व्यक्ति कौन है। इसका वास्तविक नाम है लैनी बड और यह मृत्यु का रोज़गार करनेवाले एक धनाढ्य अमरीकी उद्योगपति का बेटा है। प्रथम महायुद्ध के समय तथा उसके बाद इसके पिता रोबी बड ने जर्मनी, ब्रिटेन और फ्रांस को करोड़ों डालर के मूल्य की बंदूकें बेची थीं और उसके लिये सारे देश एकसे थे। उसने जर्मनी को भी अपनी बंदूकें बेचीं और ब्रिटेन तथा फ्रांस को भी। द्वितीय महायुद्ध के समय वह

बड-अलिन्ग एयरक्राफ्ट कम्पनी का प्रेसीडेन्ट था और इस बार भी उसने न जाने कितने हत्यारे बमबाज वायुयान अमरीकी सरकार को बेचे थे। युद्ध शुरू होने के पूर्व उसने यही बमबाज वायुयान जर्मनी और जापान को बेचे थे। उसके हाथ योरोपीय तथा एशियाई दोनों के रक्त से समान रूप में रंगे हैं। इस अन्तर्राष्ट्रीय हत्याकाण्डको देखने पर ऐसा प्रतीत होता है मानो मानव समाज भेड़-बकरियों का दल मात्र हो।

"और अब इस पूंजीपति हत्यारे का बेटा—वाल स्ट्रीट का मनुष्यभक्षी बर्बर जन्तु—यहां मिथ्या प्रचार करने के लिये आया है। युद्ध के समय वह रूस आया था और जैसा कि वह स्वयं स्वीकार करता है उसका बड़ा सत्कार किया गया था। वह एक मित्र के वेश में आया था। और आज वह कैसी मित्रता निभा रहा है !! एक अमरीकी महिला इसे दस लाख डालर की सम्पत्ति इसलिये दे गयी थीं कि वह इस रुपये से विश्व शान्ति की स्थापना का प्रयत्न करे। किन्तु इस रुपये से उसने न्यूयार्क के पास एक रेडियो स्टेशन की स्थापना की है। मानव समाज का हितचिन्तक तथा मित्र होने के बहाने वह लाखों श्रोताओं को अपनी ओर अकर्षित कर लेता है और फिर इन श्रोताओं के साथ वह क्या करता है ? ठीक वही जो वह जर्मन तथा रूसी श्रोताओं के साथ इस समय कर रहा है। वस्तुतः वह अपने पिता का सच्चा पुत्र है। वह शीघ्र से शीघ्र एक तीसरा महायुद्ध ले आने का प्रयत्न कर रहा है ताकि उसके पिता अपने गंदे व्यापार द्वारा करोड़ों डालर और पैदा कर लें। आज वह बर्लिन में युद्ध-पिपासु 'रिआस' के माध्यम से अपना घृणित प्रचार कर रहा है और जर्मन जनता को उत्तेजित कर रहा है।"

इस प्रकार एक अच्छे खासे शब्दयुद्ध का श्रीगणेश हो गया। लैनी को यह गालीगलौज बड़ी कुरुचिपूर्ण लगी और उसे मन ही मन बड़ा दुःख हुआ। किन्तु इससे उसने कई बातें सीख लीं। पहली बात जो उसने कामरेड एहरेनबर्ग से सीखी वह यह थी कि वह अपने रेडियो भाषणों पर कभी वैसे कुत्सित शब्दों का प्रयोग न करेगा जैसे कि उन्होंने किया था। वह केवल अपने प्रमाण जनता के सम्मुख रख देगा और उसी को निर्णय करने देगा। अपनी ओर से वह कोई मंतव्य प्रदर्शित न करेगा। उस समय जर्मन लोगों को वाह्य संसार की गतिविधि

का कोई पता न था। लैनी ए० एम० जी के सूचना विभाग में गया। वहां उसने इस बात का पता लगाया कि युद्ध के समय जर्मनी में कितने अमरीकी सैनिक थे और अब इस समय कितने रह गए हैं। इससे यह बात प्रमाणित हो जायगी कि अमेरिका योरोप में एक तीसरा युद्ध करने का उत्सुक है अथवा शान्ति का। क्या कामरेड एहरेनबर्ग भी रूसी सैनिकों के सम्बन्ध में इसी प्रकार के आंकड़े देने की कृपा करेंगे? स्पष्ट था कि यह कार्य कामरेड एहरेनबर्ग के बूते का न था। यदि वे इस प्रकार का कोई प्रयत्न करते भी तो उन्हें तुरन्त गोली मार दी जाती।

और राष्ट्र संघ की सुरक्षा समिति के सामने रूस की ओर से प्रस्तुत होनेवाले वे पचीस वीटो? जब जब अमेरिका की सरकार ने निरस्त्रीकरण, अन्तर्राष्ट्रीय निरीक्षण; मुक्त चुनाव आदि के सम्बन्ध में कोई प्रस्ताव पेश किया तब तब सोवियत रूस ने उसे तुरन्त वीटो कर दिया। मिस्टर ग्रोमीको, मिस्टर मलिक, मिस्टर मोलोटोव और मिस्टर विशिन्स्की ने प्रत्येक बार इन प्रस्तावों का मज़ाक उड़ाया था। कम्युनिस्टों के सामने वस्तुस्थिति एकदम स्पष्ट थी। उनके लिये अधिकार से च्युत होने का अर्थ था सर्वनाश!

लैनी ने सोचा कि लाल प्रचार का उत्तर इसी प्रकार देना उचित होगा—प्रमाण, प्रमाण, केवल प्रमाण!



अध्याय २४

● अपरिजेय मानव आत्मा ●

(१)

लैनी 'रिआस' के मामलों में उलझा हुआ था। उधर न्यूयार्क में वह प्रसिद्ध 'कासेनकीना काण्ड' घटित हो गया। अमेरिका में जो सोवियत राजदूतावास था उसके कर्मचारियों के बच्चों को पढ़ाने के लिए एक सोवियत महिला ओसकाना कासेनकीना अमेरिका भेजी गयी थीं। शहर के एक सुन्दर अंचल की एक भव्य इमारत में उनके स्कूल की व्यवस्था हुई थी। सोवियत शिक्षिका भी सब समय अपने घर में बन्द नहीं रह सकती। उसे भी कभी कभी बाहर निकलना ही पड़ता है। फलस्वरूप कासेनकीना भी यदा कदा इस पूंजीपति राजधानी की सड़कों पर घूमने के लिए निकलती थीं। उन्हें कई बातें बड़ी आश्चर्यजनक प्रतीत होती थीं। उदाहरण के लिए वे यह देख कर स्तम्भित हो जाती थीं कि अमेरिका में कुछ डालर खर्च करके ही एक जोड़ा जूता प्राप्त कर लिया जा सकता है जबकि रूस में इसके लिये एक मास का वेतन भी पर्याप्त नहीं होता। इसी प्रकार उन्हें इस पूंजीपति नगर की और अनेकों बातें बड़ी अच्छी लगती थीं। किन्तु वे रूसी राजदूतावास में जाकर इन बातों की चर्चा न कर सकती थीं। वहां तो उन्हें अपने विचारों को छिपा कर उल्टे मत प्रकट करना पड़ता था।

यह स्कूल भी सोवियत शासन व्यवस्था की एक प्रतिमूर्त्ति ही था। यहां पर भी तानाशाही का राज्य था। बच्चों पर सब समय आतंक सवार रहता था। इसके अतिरिक्त रूस की भांति यहां भी उन्हें एक दूसरे पर जासूसी करना तथा एक दूसरे से घृणा करना सिखाया जाता था। ओसकाना के पति तथा पुत्र लापता हो गये थे। फलस्वरूप वे विक्षिप्त सी हो गई थीं। स्कूल के बाहर एक दिन जेनजीनोव नामक एक वृद्ध रूसी के साथ उनकी भेंट हुई। पुराने जमाने में जारों के विरुद्ध यह व्यक्ति भी बड़ी वीरता के साथ लड़ा था। वह तत्कालीन सोशल रेवोल्यूशनरी पार्टी का सदस्य था। तीन बार उसे साइबेरिया में निर्वासित

किया गया था और तीनों बार वह वहां से भाग आया था। एक बार तो वह जापान के रास्ते भाग आया था। संक्षेप में, वह उन व्यक्तियों में था जिन्होंने अपना खून बहा कर रूस में क्रांति सम्भव बनायी थी।

क्रान्ति के बाद रूस स्वतंत्र हुआ—किन्तु कुछ मासों के लिए ही। बोलशेविक लोग सत्तारूढ़ हो गये और उन्होने अपने आपको रूस के नये मालिकों के रूप में घोषित कर दिया। रूस फिर से गुलाम हो गया। जेनजीनोव को एक बार फिर भागना पड़ा। बहुत दिनों तक योरोप में भटकते रहने के बाद वह आखिर अमेरिका चला आया। वह उन व्यक्तियों में था जिनके लिए क्रान्ति का सिद्धान्त एक जीवन-दर्शन के रूप में परिवर्त्तित हो चुका था। वह न्यूयार्क में एक कमरा किराये पर लेकर रहता था और जीविकोपार्जन के लिए वहीं पर काम करता था। गरीबी के साथ रहकर वह ज्यों ही कुछ रुपया बचा लेता तुरन्त एक छोटी सी पत्रिका निकाल देता। इस पत्रिका का नाम था "स्वतंत्रता के लिए।"

इस वृद्ध रूसी ने ओसकाना को समझाया कि रूस में क्रान्ति के साथ विश्वास घात हुआ है ओर जनता अत्याचार में पिस रही है। किन्तु शिक्षिका ओसकाना इस बात को स्पष्ट रूप में न कह सकती थी। वह स्कूल में बच्चों को यही पढ़ाती रहती थी कि उनका देश एक स्वतंत्र देश है और स्टालिन संसार का सबसे बड़ा महापुरुष है। किन्तु अन्त में वह इस छल को सहन न कर सकी। जेनजीनोव ने उसे सलाह दी कि वह रूसी राजदूतावास के स्कूल से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर ले और हडसन नदी के पास नियाक नामक स्थान में चली जाय। यहां महान लियो टाल्सटाय की एक पुत्री ने अपना एक खेत रख छोड़ा था। यहां 'टाल्सटाय प्रतिष्ठान' नामक एक छोटी सी संस्था थी जो थोड़े से टाल्सटायपन्थियों का उदर पोषण करती थी। टाल्सटाय की इस पुत्री का नाम था एलेक्जेण्ड्रा। वह अपने महान पिता की लाड़ली बेटी थी और उनके जीवन संग्राम में सदा साथ रही थी। आज भी वह अपने पिता के महान आदर्शों की रक्षा तथा प्रचार का भरसक प्रयत्न कर रही थी।

किन्तु यहां आकर ओसकाना सुखी और संतुष्ट न थी। जिन एक सौ शरणार्थियों से इस टाल्सटाय-प्रतिष्ठान का जन्म हुआ था वे बेकार थे और अपने

आप को अकेला अनुभव करते थे। इसके अतिरिक्त ओसकाना को यह भय भी था कि सम्भव है उसके पति पुत्र अभी जीवित हों और उन्हें उसके पलायन के फलस्वरूप सताया जाय। उसने रूसी राजदूतावास से क्षमा याचना करते हुए एक पत्र लिख दिया। राजदूत तुरन्त वहां पहुंचे। उन्होंने उसे आश्वासन दिया कि सरकार उसकी इस भूल को क्षमा कर देगी। ओसकाना आश्वस्त हो गई और राजदूतावास में वापस आ गई।

किन्तु राजदूतावास में पहुँचते ही उसने देखा कि वह बन्दी बना ली गई है। उसे वापस रूस भेजने का प्रबन्ध हो रहा था। वह भय से कांप उठी। रूस जाने पर उसके साथ निश्चय ही बड़ा कठोर व्यवहार होगा। उस पर भांति भांति से अत्याचार किया जायगा! उससे भांति भांति के प्रश्न पूछे जाएंगे और इसके बाद या तो उसे गोली मार दी जायगी या फिर साइबेरिया की ओर निर्वासित कर दिया जायगा। इन सब बातों पर विचार करते करते वह अचानक इतनी उत्तेजित हो उठी कि राजदूतावास की तीसरी मंजिल की एक खिड़की से कूद पड़ी। नीचे कांक्रीट की फर्श पर उसका शरीर चकनाचूर हो गया। इस आत्म-घात के पूर्व ओसकाना का मामला समाचार पत्रों की दृष्टि में आ चुका था और उसे राजदूतावास से छुड़ाने के लिये अदालती कार्यवाही हो रही थी। किन्तु ओस-काना ने उत्तेजित होकर अपनी आत्महत्या का प्रयत्न किया। रूसी राजदूतावास के सामने जनता की अपार भीड़ लग गयी। राजदूतावास के नौकरों ने लाश को घसीट कर अन्दर ले जाने का प्रयत्न किया तो जनता ने बाधा दी। पुलिस को टेलीफोन किया गया। एम्बुलेन्स आयी और ओसकाना के क्षत विक्षत शरीर को लेकर अस्पताल चली गयी।

यह एक सनसनी खेज घटना थी। अब अमरीकियों को इस बात का पूरा पूरा विश्वास हो गया कि रूसी लोग अपने विरोधियों पर अत्याचार करते हैं। लोग अपने मकानों की तीसरी मंज़िल से व्यर्थ ही नहीं कूद पड़ते! समाचार पत्रों में यह घटना प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित हुई। रूसी राजदूत की ओर से यह वक्तव्य प्रसारित किया गया कि ओसकाना का दिमाग खराब हो गया था। उन्होंने अस्पताल जाकर उससे भेंट करनी चाही किन्तु अधिकारियों ने इनकार कर दिया।

आत्महत्या के इस प्रयत्न के पूर्व ही रूसी राजदूत ने मास्को को कासेनकीना के पलायन का समाचार भेज दिया था। परराष्ट्र मन्त्री मोलोटोव की यह विशेषता है कि वे कभी उत्तेजित नहीं होते। उनके काष्ठवत चेहरे पर कभी किसी प्रकार का भाव नहीं दिखाई देता। किन्तु इस बार वे अचानक उत्तेजित हो उठे। उन्होंने अमरीकी राजदूत को अपना एक प्रतिवाद-पत्र देते हुए यह अभियोग लगाया कि 'प्रतिक्रियावादी श्वेत रूसी जेनजीनोव कासेनकीना को रूसी राजदूतावास से उड़ाकर अपने उस अड्डे में ले गया था जो टाल्सटाय-प्रतिष्ठान के नाम से अमेरिका में काम कर रहा है।" इस अड्डे के 'गुण्डों' ने कासेनकीना को बलात रोक कर रखा था। मोलोटोव ने अपने इस प्रतिवाद-पत्र में यह मांग की थी कि कासेनकीना को तुरन्त रूसी राजदूतावास के हवाले कर दिया जाय और "उन सभी व्यक्तियों को दण्डित किया जाय जो सोवियत नागरिकों का अपहरण करने का षड्यन्त्र रचते रहते हैं।'

(२)

यह मामला सचमुच बड़ा सनसनीखेज था। सारे संसार के प्रमुख समाचार पत्रों में इसे प्रथम पृष्ठ प्राप्त हुआ था। जर्मनी में ए० एम० जी की ओर से प्रकाशित होने वाले 'नेउए जीतन्ग' में भी इसे प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ और 'रिआस' ने भी इसका उपयोग किया। संयोगवश बोरिस शब जेनजीनोवसे परिचित था। पश्चिमी जर्मनी में और भी बहुत से रूसी शरणार्थी थे जो जेनजीनोव को जानते थे। मोलोटोव ने जेनजीनोव को 'ह्वाइट गाड गुण्डा' बताया था। 'ह्वाइट गार्ड' से उनका अर्थ क्रांति के जमाने में उन रूसी सैनिक अधिकारियों से था जो जार के पक्ष में लड़े थे। अब बोलशेविक लोग किसी को गाली देना चाहते हैं तो उसे 'ह्वाइट गार्ड' कह देते हैं।

"मोलोटोव भूत देख रहा है"। एक रूसी शरणार्थी ने अपनी सम्मति प्रकट की। शरणार्थियों ने रातोरात आपस में विचार विनिमय करके एक नाटक तयार कर लिया जिसमें चार 'आवाजें' इस कासेनकीना काण्ड की चर्चा करती हुई अपना अपना मत प्रकट करती थीं। यह नाटक 'रिआस' पर प्रसारित किया गया। जर्मन और रूसी जनता को एक ऐसी रोचक कहानी सुनने का अवसर

प्राप्त हुआ जो रोचक होने के साथ साथ पूर्णतया सत्य भी थी। श्रोताओं को यह कहानी इतनी अच्छी लगी कि 'रिआस' को इसे कई बार दोहराना पड़ा। इसके बाद यह एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित कर दी गयी और देखते ही देखते बर्लिन के दोनों क्षेत्रों में इसकी लाखों प्रतियां बिक गयीं। नाटक इस प्रकार था :—

प्रथम आवाज :—"मेरा विश्वास है कि कासेनकीना ने खिड़की से छलांग मार कर सारे संसार को हिला दिया है। मेरा मतलब सोवियत संसार से है।"

दूसरी आवाज :—"जब कोई सोवियत नागरिक मास्को या अन्य कहीं किसी खिड़की से कूद पड़ता है तब तुम क्या यह समझते हो कि सोवियत शासकों की सारी श्रंखला हिल उठती है—चौकीदार से परराष्ट्र मन्त्री तक ?"

तीसरी आवाज :—"मैं इस बात पर विश्वास नहीं कर सकता। वे लोग कट्टर भौतिकतावादी हैं और वे हर बात का निर्णय नपे तुले वैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर करते हैं।"

दूसरी आवाज :—"किन्तु एकाएक क्रेमलिन मधुमक्खियों के छत्ते की भांति भनभना उठती है। कासेनकीना के छलांग मारने के पहले ही मोलोटोव अपना प्रतिवाद पत्र दाखिल कर देते हैं! मालेनकोव एक कठोर, संवेदनशून्य व्यक्ति हैं। किन्तु इस बार वे असाधारण रूप में इतने उत्तेजित कैसे हो उठे! तुम लोग रूस की क्रान्ति की बात नहीं जानते। रूस में भी एक समय था जब प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्रतापूर्वक अपने विचार प्रकट कर सकता था। उस समय रूस बोलशिवकों के हाथ में न आया था। वह क्रान्ति का उषाकाल था। प्रत्येक मजदूर अथवा सैनिक अपने पड़ोसी भाइयों के साथ खुलकर बातें कर सकता था। पेट्रोग्राड की सड़कों पर विद्यार्थियों, अफसरों, श्रमजीवियों, स्त्रियों—सभी के झुण्ड दल बांध बांध कर स्वतन्त्रता के गीत गाते हुए घूमा करते थे। वे देखते थे कि जार

की खुफिया पुलिस का कार्यालय धू धू करके जल रहा है, जेल के दरवाजे खुल गए हैं, जेनजीनोव और मोलोटोव जैसे व्यक्ति स्वतन्त्रता की बसन्त-समीर का स्पर्श अपने शरीर पर अनुभव कर रहे हैं। जेनजीनोव और मोलोटीव पेट्रोग्राड की सोवियत कार्य कारिणी के सदस्यों के रूप में निर्वाचित होते हैं। वहां दोनों साथ साथ बैठते हैं। एक समाजवादी है, दूसरा बोल्शेविक। उनके साथ और भी अनेकों क्रान्तिकारी बैठे हुए हैं।"

चौथी आवाज :—"आज वे लोग कहां हैं?"

दूसरी आवाज :—"आज वे लोग कहां हैं? बताता हूं। मोलोटोव और जेनजीनोव को छोड़कर शेष सारे व्यक्ति सम्भवतः मर चुके हैं। आज मोलोटोव क्रेमलिन के भव्य प्रासाद में रहते हैं और जेनजीनोव न्यूयार्क के एक छोटे से कमरे में। जेनजीनोव की स्मृति में आज भी अतीत की वह भयानक कहानी स्पष्ट है जिसमें सच्चे ईमानदार समाजवादियों का भयानक नरमेध हुआ था। सन् १९१७ के वे समोजवादी! आह, वही तो एक ऐसा समय था जब रूस की जनता को सच्ची स्वतन्त्रता की मादकता का थोड़ा बहुत अनुभव हुआ था! उस समय ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जिन उद्देश्यों के लिये क्रान्तियां होती हैं, वे सचमुच पूर्ण हो गए। स्वयं लेनिन ने लिखा था कि – 'आज रूस संसार का सबसे अधिक स्वतन्त्र देश है।' हां, मार्च से नवम्बर १९१७ तक सचमुच ऐसी ही स्थिति थी। किन्तु आज सोवियत रूस के वर्त्तमान शासक उन दिनों की बात एकदम भूल गए हैं— और दूसरी ओर रूस से भाग कर जाने वाले शरणार्थी समाजवादी इस बात का प्रयत्न कर रहे हैं कि लोग उन दिनों की बात भूलने न पावें!"

चौथी आवाज :—"अब मैं समझ गया। कासेनकीना के मन में कुछ इसी प्रकार के विचार उत्पन्न हुए होंगे। तभी उसने खिड़की से कूदकर आत्म

हत्या का प्रयत्न किया था। अब मैं समझा कि क्रेमलिन के महाप्रभु इस घटना से इतने उत्तेजित क्यों हो गए हैं।"

दूसरी आवाज़ :—"हां, मेरे मित्र! अब सारी बातें इतिहास की भांति स्पष्ट हैं। निस्सीम अधिकार निस्सीम घृणा को जन्म देता है। शासक स्वयं अपनी प्रजा से भय और घृणा करने लगता है। इतिहास इस भय और घृणा के समाधान का कोई मार्ग नहीं बता पाता। आतंकवादियों और एन० के० वी० डी के एजेण्टों को ठिकाने पर लाया सकता है। जनता की दृष्टि में इन्हें हास्यास्पद बना देना ही पर्याप्त होगा। किन्तु तानाशाहों को ठीक रास्ते पर लाना कहीं अधिक कठिन कार्य है। वह साधारण सोवियत शिक्षिका उनके लिये भय और आतंक की वस्तु बन गयी। क्यों? इसलिये कि उसने जेनजीनोव और टालसटाय की पुत्री के साथ बातें कर लीं! और इसमें कोइ संदेह नहीं कि यदि उसकी भांति अन्य लाखों रूसियों को सत्य के साथ साक्षात्कार करने का अवसर मिला होता तो वे भी उसी निष्कर्ष पर पहुंचते जिस निष्कर्ष पर कासेनकीना पहुंची थी। आज भी रूसियों के मनमें स्वाधीनता के प्रति श्रद्धा की भावना है और जब तक उनके मन में यह भावना है तब तक क्रेमलिन के महाप्रभुओं के लिये चिन्ता का पर्याप्त कारण है।"

(३)

इधर बर्लिन का घेरा जारी था। अमरीकी वायुयान उस घेरे का अतिक्रमण करके जर्मनी को आवश्यक माल पहुँचा रहे थे। बर्लिन जो एक समय अपने आप को संसार का सबसे अधिक शानदार नगर बताकर गर्वित होता था आज शीत-युद्ध के आवर्त्त मे पड़कर छिन्न भिन्न हो रहा था। उसकी सारी स्वतन्त्रता, उसका सम्पूर्ण अस्तित्व इस शीत-संघर्ष के फल पर निर्भर करता था। लैनी के मन में कौतूहल हो रहा था कि जनसाधारण इस स्थिति के सम्बन्ध में क्या विचार रखता है। वह मोआबिट जिले के जोहानसीडल परिवार के मिलने से लिये गया। यह परिवार समाजवादी विचारों का था और लैनी को विश्वास था कि

ये लोग उससे स्पष्ट रूप में बातें करेंगे। इस परिवार के लोगों ने एक बार उसके प्राण बचाए थे।

लैनी ने सोचा कि कृतज्ञता ज्ञापन के रूप में वह उनके लिये कुछ चुने हुए अमरीकी खाद्य ले जायगा।

जिस झोपड़ी में सीड्ल परिवार रहता था उसकी पूरी मरम्मत अभी तक न हो सकी थी। अब निकट भविष्य में मरम्मत होने की कोई सम्भावना भी न थी क्यों कि बर्लिन का घेरा अभी तक ज्यों का त्यों बना हुआ था और अमरीकी वायुयान केवल अत्यावश्यक पदार्थ—अन्न, कोयला, तेल, कपड़ा, औषधियां आदि ही लेकर आ रहे थे। सीड्ल परिवार में सदस्यों की संख्या कम न थी। उन्हें अपने रसोईघर में पर्दा लटकाकर कुछ स्थान निकाल लेना पड़ा था ताकि जोहान का एक भतीजा अपनी पत्नी तथा बच्चे के साथ सो सके। इस युवक का नाम था कार्ल। वह पूर्वी जर्मनी से आया हुआ शरणार्थी था। उसका चेहरा सूखा हुआ था जिससे यह प्रमाणित होता था कि इस ईमानदार व्यक्ति को वहां भर पेट भोजन न प्राप्त होता था। लैनी इस व्यक्ति की पूरी कहानी सुनने के लिये उत्सुक था। परिवार के सारे सदस्य तथा कुछ पड़ोसी भी एकत्रित हो गये थे। कार्ल ने अपनी कहानी शुरू की। वह बर्लिन के पूर्वी अंचल की एक टीन-फैक्टरी में काम करता था। युद्ध के समय तोपों के गोलों से सारी फैक्टरी तहस नहस हो गई थी और अब माल बनाने के लिए टीन भी न रह गया था। महीनों तक वह काम की खोज में भटकता रहा था। अन्त में रूसी सैनिकों के एक बैरक में उसे 'फायरमैन' का काम मिला था। वहां उसके साथ दास का सा व्यवहार होता था। उसे झाड़ू देना पड़ता था, गंदगी साफ करनी पड़ती थी, बोझा उठाना पड़ता था। बदले में उसे थोड़े से रुपये दे दिये जाते थे जिनसे वह बड़ी कठिनाई के साथ अपना तथा अपने परिवार का उदरपोषण कर पाता था।

कार्ल बचपन से ही समाजवादी विचारों का था। अब कम्युनिस्टों ने 'सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी' नामक एक नया संगठन खड़ा किया था। उसने भी इस संगठन के साथ योगदान करने का निश्चय किया। पूर्वी जर्मनी में रूसी लोग कभी 'कम्युनिज्म' शब्द का व्यवहार न करते थे। वे सदा यह कहते थे कि वे

एक समाजवादी व्यवस्था की स्थापना का प्रयत्न कर रहे हैं। बर्लिन के जर्मनों में कम्युनिस्ट बहुत कम थे। जो थोड़े बहुत कम्युनिस्ट थे 'उन्हे सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी में ले लिया गया था। सोशल डेमोक्रेट दल का बहुमत था। कार्ल यह समझता था कि यह संगठन समाजवादियों का ही है, कम्युनिस्टों का नहीं।

कुछ समय तक सारा काम ठीक से चलता रहा। किन्तु कार्ल ने एक गलती की। वह पार्टी के कार्यालय में आवश्यकता से अधिक दिलचस्पी लेने लगा। इसके फलस्वरूप पार्टी के मुखियों का ध्यान उसकी ओर आकृष्ट हो गया। एक दिन पार्टी के एक मुखिया ने उसे बुलाकर यह काम सौंपा कि वह पार्टी के अन्य सदस्यों पर जासूसी करे और उनकी बातों की गुप्त रिपोर्ट देता रहे। मुखिया ने कहा कि यह सतर्कता इस लिए आवश्यक है कि उसमें विश्वासघातियों का प्रवेश न होने पाये। कार्ल ने कहा कि उसने कभी इस प्रकार का कार्य नहीं किया है और वह नहीं जानता कि जासूसी किस प्रकार की जाती है। मुखिया ने उसे सारे हत्कण्डे समझाने शुरू किये। उसने कहा कि वह अपने मित्रों के सामने प्रतिक्रियावादी मनोवृत्ति दिखाये और देखे कि वे क्या कहते हैं। सब कुछ सुनने के बाद वह सारा समाचार मुखिया को दे दिया करे।

कार्ल बड़ा चिन्तित हो उठा। जासूसी को वह एक जघन्य काम समझता था। वह टाल मटोल करने लगा। मानसिक उद्वेग के कारण वह बीमार पड़ गया किन्तु पार्टी के मुखिया ने उसका पिण्ड न छोड़ा। उसने कार्ल को भांति भांति की धमकियां दीं। एक दिन उसने यह कह दिया कि उसे कार्ल पर यह संदेह है कि वह स्वयं सोशल डेमोक्रेट है। उसने इस बार स्पष्ट चेतावनी दे दी कि यदि वह पार्टी का काम न करेगा तो इसका परिणाम घातक होगा।

कार्ल सचमुच आतंकित हो गया। वह अपने एक मित्र के घर गया। मित्र के पास एक रेडियो था। दोनों ने रेडियो को धीमा करके छिपे छिपे 'रिआस' का प्रोग्राम सुना। 'रिआस' उस समय जर्मन जनता को जसूसों से बच कर रहने का परामर्श दे रहा था। उसने कुछ जासूसों के नामों की घोषणा भी कर दी और अपने श्रोताओं को इन घृणित जीवों के प्रति सतर्क रहने की चेतावनी दी। साथ ही यह घोषणा भी हुई कि 'प्रतिदिन इसी समय कुछ और जासूसों के नाम

घोषित किये जाया करेंगे। अब कार्ल का रहा सहा धैर्य भी जाता रहा। उसने यह निश्चय कर लिया कि कुछ भी क्यों न हो वह जासूसों की इस घृणित तालिका में अपना नाम न आने देगा।

(४)

कार्ल पूर्वी जर्मनी से भाग कर पश्चिमी जर्मनी में आना चाहता था। दोनों अंचलों के बीच एक सड़क का अन्तर ही था। किन्तु इस सड़क को पार करना उतना आसान काम न था। कार्ल के छोटे से परिवार के पास थोड़ा बहुत माल असबाब था जिसे एकबार खो देने पर वह उसकी पूर्त्ति न कर सकता था। किन्तु इस माल को लेकर सड़क पार न की जा सकती थी। पहरे पर तैनात सिपाहियों को तुरन्त संदेह हो जाता। इसके अतिरिक्त उसके ऊपर पहले से ही संदेह था। उसे भय था कि कहीं उसके पीछे जासूस न लगा दिये गए हों। फलस्वरूप वह प्रतीक्षा करते रहा। अन्त में एक रात को जब भयानक वर्षा हो रही थी और आंधी चल रही थी वह अपने परिवार के साथ सीमा पार करके पश्चिमी जर्मनी में आ गया। उसने अन्य शरणार्थियों की भांति किसी कम्युनिस्ट संस्था के कार्यालय में जाने की गलती न की। इस समय भी पश्चिमी जर्मनी में कई कम्युनिस्ट कार्यालय थे। बहुत से शरणार्थी 'रिआस' के धोखे में रेडियो बर्लिन के कार्यालय में पहुँच जाते थे। कम्युनिस्ट अधिकारी उनकी बातें सुन कर कुछ न कहते। रात तक उन्हे रोके रहते और इसके बाद चुपचाप उन्हें पूर्वी जर्मनी की खुफिया पुलिस के हवाले कर देते। परिणाम यह होता कि इन बेचारों को साइबेरिया में दस से पन्द्रह वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड मिल जाता और जीवन अंधकाराच्छन्न हो जाता। कार्ल ने यह गलती न की। वह सीधे अपने चाचा के यहां चला आया। सबेरे उसके कपड़े सूख गए तब वह शरणार्थियों के मोहल्ले की ओर गया।

यह आवश्यक था। पूर्वी जर्मनी से आनेवाले शरणार्थियों की यहां पर जांच पड़ताल होती थी और यदि यह प्रमाणित हो जाता था कि वह अपने प्राणों की रक्षा के लिये अथवा किसी गम्भीर खतरे से बचने के लिये पूर्वी जर्मनी से भागकर आया है तो उसे पश्चिमी जर्मनी में एक राजनैतिक शरणार्थी के रूप में स्वीकार कर लिया जाता था। उसे रहने के लिये निवास स्थान तथा साठ मार्क प्रति मास

का भत्ता स्वीकृत कर दिया जाता था। इस भत्ते से किसी प्रकार आधे पेट उस शरणार्थी की गुजर बसर होने लगती थी। यदि कोई शरणार्थी अपने पलायन के लिये समुचित कारण न बता पाता था तो उसे वापस चले जाने का परामर्श दिया जाता था। किन्तु एक बार पश्चिमी जर्मनी में आकर कोई भी शरणार्थी वापस जाने के लिये तयार न होता था क्योंकि वहां जाते ही साइबेरिया की ओर निर्वासन सुनिश्चित रहता था। फलस्वरूप इस प्रकार के शरणार्थियों को भी वापस लौटने के लिये बाध्य न किया जाता था। वे अवैध शरणार्थियों के रूप में पश्चिमी जर्मनी में पड़े रहते थे। उन्हें भीख मांग कर अथवा अत्यन्त निम्न वेतन पर काम करके अपनी गुजर बसर करनी पड़ती थी।

लैनी ने कार्ल को कुछ रुपये दे दिये ताकि उसके परिवार का उदर पोषण होता रहे। उसने कार्ल को यह आश्वासन भी दिया कि अधिकारियों से उसकी सिफारिश कर देगा।

(५)

लैनी से अनेकों शरणार्थियों ने एक ही प्रश्न पूछा था—वह यह कि यदि उन्हें पश्चिमी जर्मनी में रहने की अनुमति न दी गयी तो क्या होगा? फलस्वरूप लैनी इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए जेनरल क्ले के कार्यालय में गया। जेनरल क्ले पश्चिम जर्मनी के मिलिटरी गवर्नर थे और वही इस प्रश्न का उत्तर दे सकते थे। जेनरल क्ले का जन्म ज्यार्जिया में हुआ था और इसलिये उनका स्वरोच्चारण कुछ भिन्न था। किन्तु यह भिन्नता इतनी सूक्ष्म थी कि एक अमरीकी ही इसे लक्ष्य कर सकता था, जर्मनों के लिये यह असम्भव था। जेनरल क्ले लम्बे और दुबले पतले कद के थे और उनकी नाक काफी प्रभावोत्पादक थी। वे क्षण भर तक लैनी की ओर अपनी सुतीक्ष्ण दृष्टि से ताकते रहे।

वे एक कार्यव्यस्त व्यक्ति थे। उनकी सैनिक सरकार जर्मनी में एक महत्व-पूर्ण प्रयोग कर रही थी। यह कार्य था एक पराभूत देश को फिर से अपना शासन अपने हाथ में लेने के लिये तयार करना। लैनी ने उनसे प्रश्न किया, "लोग मुझसे पूछा करते हैं कि क्या हम लोग बर्लिन में डटे रह सकेंगे?" जेनरल ने

कहा, "इसका उत्तर मैं अपनी टेलीफोन-वार्त्ता में दे चुका हूँ। मैं आपको बताता हूं कि मैंने क्या कहा था।"

जेनरल क्ले ने जिस टेलीफोन-वार्त्ता की चर्चा की थी वह एक नया आविष्कार था। इसके जरिये बर्लिन, लन्दन, पेरिस और वाशिंगटन के अधिकारीगण आपस में सरलतापूर्वक बातें कर सकते थे। वे जो कुछ कहते थे वह अपने आप 'टेलीटाइप' की भांति अंकित होता रहता था। यह मशीन अपने आप इन शब्दों को सांकेतिक भाषा में परिवर्तित करके वायरलेस यंत्र द्वारा प्रसारित कर देती थी। अन्य नगरों में इसी प्रकार की मशीनें इस संदेश को ग्रहण करके उसकी सांकेतिक भाषा को सरल भाषा में परवर्त्तित कर देती थीं। चौड़े चौड़े कागजों पर सारा संदेश लिपिबद्ध हो जाता था। जेनरल क्ले ने इसी प्रकार के कुछ कागज लैनी की ओर बढ़ाते हुए कहा, "यह देखिये। बर्लिन का घेरा शुरू होने के समय मैंने यह कहा था।"

लैनी ने पढ़ना शुरू किया : "यदि बर्लिन का पतन हो गया तो सम्पूर्ण पश्चिमी योरोप का पतन अनिवार्य है। यदि हमें पश्चिमी योरोप को कम्युनिज्म से बचाना है तो हमें टस से मस न होना चाहिये। हम यदि एक इञ्च भी हटेंगे तो योरोप की स्थिति डांवाडोल हो उठेगी। यदि अमेरिका आज इस खतरे को न समझेगा तो वह कभी न समझेगा और कम्युनिज्म सारे संसार को पराभूत कर डालेगा। मेरा विश्वास है कि गणतन्त्र के आदर्श की रक्षा करने के लिये हम अमरीकियों का जर्मनी में डटा रहना आवश्यक है। यह थोथा दम्भ नहीं है। यह अर्थशून्य शौर्यभावना भी नहीं है। यह कठोर आवश्यकता है।"

"इस बात को स्वीकार कर लिया गया है।" जेनरल क्ले ने कहा। "सरकार की नीति में अभी तक कोई परिवर्त्तन नहीं हुआ है और मेरा विश्वास है कि कोई परिवर्त्तन होने की सम्भावना भी नहीं है।"

"क्या मैं अपने भाषणों में आपके इस वक्तव्य का उद्धरण दे सकता हूं?" लैनी ने प्रश्न किया।

"अवश्य! यह उपयोगी होगा।" जेनरल क्ले ने उत्तर दिया।

(६)

जेनरल क्ले के कार्यालय से निकलकर लैनी अर्न्स्ट रायटर से मिलने के लिए गया। लैनी की इस व्यक्ति के साथ पुरानी मुलाकात की। फ्रेडी रोबिन की सहायता से बर्लिन के इस अंचल में मजदूरों के लिये जिस कालेज की स्थापना हुई थी वहीं पर लैनी की भेंट इस व्यक्ति के साथ हुई थी। प्रथम महायुद्ध समाप्त होने के उपरान्त रायटर सोशल डेमोक्रेट पार्टी से अलग होकर कम्युनिस्ट पार्टी का जेनरल सेक्रेटरी हो गया था। किन्तु शीघ्र ही उसे इस संगठन से घृणा हो गयी थी और वह पुनः सोशल डेमोक्रेट पार्टी में वापस आ गया था। कम्युनिस्ट पार्टी की दृष्टि में रायटर एक विश्वासघाती था। यही कारण है कि जब उसे बर्लिन का मेयर चुना गया था पूर्वी बर्लिन के कम्युनिस्ट अधिकारियों ने उसके साथ सहयोग करने से इन्कार कर दिया था। किन्तु अब बर्लिन का घेरा चल रहा था और तीनों अंचलों का एकीकरण करने की चर्चा उठ रही थी। रायटर मेयर के पद पर अपना काम शुरू करने वाला था।

रायटर एक लम्बे चौड़े कद का दीर्घायतन व्यक्ति था। उसने लैनी का प्रेम के साथ आलिंगन करते हुए उसे झकझोर सा दिया। वह एक स्पष्टभाषी व्यक्ति था। उसने स्पष्ट स्वर में यह मत प्रकट किया कि अमरीकी लोग बर्लिन में डटे रहेंगे और जर्मन जनता उनका साथ न छोड़ेगी। कम्युनिस्ट लोग पश्चिमी जर्मनी को अन्तर्भुक्त करके अपने साम्राज्य में विलीन कर लेने के लिये उत्सुक हैं। किन्तु वे जानते हैं कि उन्होंने यह प्रयत्न किया तो युद्ध अनिवार्य हो उठेगा। वे इस बात को भी समझ गए हैं कि उनकी चालें सफल नहीं हो सकती हैं। 'हम लोग लाल जादूगर की दृष्टि का सामना करते रहे हैं—किन्तु हम लोग पत्थर तो नहीं बने!'

मित्रराष्ट्रों के प्रति रायटर की एक ही शिकायत थी—वह यह कि वे लोग शत्रु पर कठोर प्रहार नहीं करते और प्रचार कार्य की ओर विशेष उत्साह नहीं दिखाते। रायटर ने कहा कि बर्लिन के मेयर के रूपमें वे यथासम्भव प्रयत्न कर रहे हैं किन्तु पश्चिमी जर्मनी की बान-सरकार भिन्न भिन्न दलों में विभाजित है और वह किसी प्रश्न पर एकमत होकर कार्य नहीं कर पाती।

रायटर ने रेडियो पर 'हर फ्रोहलिच' के भाषण सुने थे किन्तु वह यह न

जानता था कि लैनी बड ही 'हर फ्रोहलिच' है। उसने लैनी के एडगरमीयर वाले शान्ति प्रोग्राम का नाम भी न सुना था। जब लैनी ने उसके साथ शान्ति रेडियो की चर्चा की तो वह बड़ा प्रसन्न हुआ और इस दिशा में अपना उत्साह प्रकट किया। रायटर की इच्छा थी कि लैनी संसार के सम्मुख यह बात स्पष्ट करने का प्रयत्न करे कि जर्मन जनता स्वाधीन है और वह अपनी स्वाधीनता की रक्षा के लिये कृतसंकल्प है—वह किसी भी तानाशाह के सम्मुख आत्म समर्पण न करेगी।

(७)

लैनी बड ने एक बार फिर 'रिआस' पर अपना भाषण दिया। भाषण मध्यान्ह के समय कराया गया ताकि पूर्वी बर्लिन के मजदूर अपने घरों में रहें और यह भाषण सुन सकें। लैनी ने अपना भाषण पूर्वी जर्मनों के लिये ही विशेष रूप से तयार किया था। वह जर्मन भाषा धाराप्रवाह रूप में बोल लेता था। भाषण समाप्त होने के बाद उसे रिआस के कार्यालय में बुलाया गया। किसी का टेलीफोन आया था। "वाह! मिस्टर बड, बड़ा सुन्दर रहा आपका भाषण!"

आवाज़ परिचित सी प्रतीत होती थी किन्तु इस समय लैनी को याद न आ रहा था।

"आपका नाम क्या है, महाशय?" उसने प्रश्न किया।

"नाम जानने की कोई आवश्यकता नहीं, मिस्टर बड!"

अचानक लैनी के मस्तिष्क में बिजली की भांति एक विचार दौड़ गया। यह आवाज फ्रैन्कफर्ट जेल के उस नवयुवक की है जिसे उसने समझा-बुझाकर गणतान्त्रिक संसार के पक्ष में लाने का प्रयत्न किया था!! "तुम इस समय कहां हो?" उसने उत्सुकता पूर्वक प्रश्न किया।

"मैं 'रिआस' के मकान से कुछ ही दूरी पर एक मित्र के घरमें रह रहा हूं।"

"वहां तुम कैसे आ गए?"

"यह टेलीफोन पर नहीं बताया जा सकता। क्या आप मेरे साथ कहीं पर भोजन के लिये चल सकते हैं?"

"तुम्हें कोई आर्थिक असुविधा तो न होगी?"

"नहीं, मेरे पास पश्चिमी जर्मनी के कुछ सिक्के बच गए हैं। वापस जाने के पूर्व मुझे इन सिक्कों को खर्च कर डालना है।"

"कोई जोखिम तो नहीं है?"

"नहीं। किसी ऐसे स्थान में चलिये जहां हम लोग बैठकर शान्ति के साथ बातें कर सकें।"

(८)

एक एकान्त होटल में दोनों ने मुलाकात की। आइन्सीडेल ने कृतज्ञताज्ञापन करते हुए लैनी को बताया कि लैनी के साथ मुलाकात होने के बाद फ्रैन्कफर्ट जेल के अधिकारियों ने उसे तुरन्त छोड़ दिया था।

"किन्तु मैंने अधिकारियों से तुम्हारी कोई सिफारिश न की थी।" लैनी ने कहा।

"क्या उन लोगों ने मेरे सम्बन्ध में आप से कुछ न पूछा था?"

"पूछा था। किन्तु मैंने केवल इतना ही कहा था कि मेरे विचार से तुम जासूस नहीं हो।"

"उन्होंने आपके विचार का आदर करते हुए ही मुझे छोड़ दिया होगा। मैं आपका कृतज्ञ हूं। किसी दिन मैं आपके इस ऋण से मुक्त होने का प्रयत्न करूंगा।"

लैनी ने प्रश्न किया : "तुम यहां कैसे आ गए?"

"मैं लेपजिग वाली ट्रेन में बैठकर सीधे पूर्वी बर्लिन चला गया था। मैं अब भी 'तागलीचे' के सम्पादक मण्डल में हूं। फलस्वरूप मैं आपका कुछ उपकार कर सकता हूँ। मैं इस पत्र में हर फ्रोहलिच के भाषणों की आलोचना न होने दूंगा। आप जानते ही हैं कि यदि हम आपकी आलोचना करें तो वह कटु ही होगी। आपको वाल-स्ट्रीट का गुलाम और फासिज्म का प्रवक्ता ही बताया जायगा। इसलिये मैं पत्र में इसकी कोई चर्चा ही न होने दूंगा।"

"तुम बड़ी सहृदयता दिखा रहे हो। किन्तु तुम गलती पर हो। तुम इस आलोचना को रोक कर मेरा नुकसान ही करोगे। गालीगलौज ही सही किन्तु इससे भी मेरे विचार पूर्वी जर्मनी की जनता तक पहुंचते तो हैं।"

कुछ देर तक दोनों इधर उधर की बातें करते रहे। अन्त में जर्मन युवक ने कहा, "मैंने देखा कि आपने अपने भाषण के अंत में पूर्वी जर्मनी की जनता को यह परामर्श दिया था कि वह पूर्वी जर्मनी छोड़ कर पश्चिमी जर्मनी में चली आने का प्रयत्न न करे बल्कि वहीं रहते हुए स्वतन्त्र संसार का हितसाधन करने का प्रयत्न करे। मुझे तो आपने दूसरे ढंग का परामर्श दिया था।"

लैनी ने कहा, "जनता से मेरा कोई व्यक्तिगत परिचय नहीं है। इसलिये उसे इस प्रकार का परामर्श देनेमें कोई द्विधा नहीं होती। किन्तु अपने सामने बैठे हुए मित्र को वैसा ही परामर्श देना सम्भव नहीं रहता।"

"मैं एक स्वतन्त्र विचारों का व्यक्ति हूं और अपने विवेक के आधारपर ही कोई निर्णय करता हूं।"

"अच्छा, मुझे यह बताओ कि फ्रैन्कफर्ट की जेल से छूटनेके बाद मित्रों के साथ तुम्हारी कैसी निभ रही है?"

"वे यह आशा करते थे कि मैं अमरीकियों के विरुद्ध विषवमन करूंगा, उनकी रीति नीति की कटु आलोचना करूंगा। किन्तु मुझे शान्त देखकर उन्हें बड़ी निराशा हुई। वे कह रहे थे कि मैं पहले की भांति तेज़ तर्राट नहीं रह गया।"

"देखा तुमने!" लैनी ने उत्सुक स्वर में कहा। "संदेह शुरू हो गया है। संदेह से ही भय की सृष्टि होती है। सावधान!"

(९)

इस घटना के बाद एक अन्य मनोरञ्जक घटना हुई। शरणार्थी-शिविर के एक अधिकारी ने लैनी को टेलीफोन किया। उसने कहा कि बर्लिन विश्व-विद्यालय के पांच छै विद्यार्थी उसके पास आए थे। वे कह रहे थे कि बर्लिन विश्वविद्यालय में कम्युनिस्टों की ओर से जो प्रचार होता रहता है उससे वे ऊब उठे हैं। विश्व-विद्यालय पूर्वी अंचल में था और फलस्वरूप वह कम्युनिस्टों के अधिकार में था। क्या अमरीकी लोग अपने अंचल में एक कालेज की स्थापना करके सत्य पर प्रकाश नहीं डाल सकते?

लैनी ने विद्यार्थियों से मुलाकात की। सभी विद्यार्थी सोवियत शिक्षा प्रणाली से ऊब गए थे। जहां तक औपचारिक विषयों का सम्बन्ध था स्थिति ठीक ही

थी। किन्तु साहित्य, इतिहास, दर्शन आदि विषयों में कम्युनिस्टों ने धांधली मचा रखी थी। स्वतन्त्र विचारों को एक दम तिलांजलि दे दी गयी थी। साहित्य इतिहास और दर्शन के बहाने कम्युनिस्ट लोग अपने सिद्धान्त पढ़ाते रहते थे। इन्होंने यह मत प्रकट किया कि बर्लिन के अमरीकी अंचल में एक 'स्वतन्त्र विश्व-विद्यालय' की स्थापना की जाय और इसमें हर अंचल के विद्यार्थियों को स्थान दिया जाय। लैनी को यह विचार पसंद आ गया। उसने लास्की को टेलीफोन किया। लास्की को भी यह योजना पसंद आ गयी। लास्की ने शब को टेली-फोन किया और शब ने भी इसका अनुमोदन किया।

लैनी ने मन ही मन यह संकल्प किया कि वह इस विश्वविद्यालय को फ्रित्ज मेसनर की यादगार के रूप में स्थापित करेगा। उसने जेनरल क्ले से मुलाकात की। जेनरल क्ले ने कहा, "इस विश्वविद्यालय में आप भी एक शिक्षक क्यों नहीं बन जाते?" लैनी को विश्वविद्यालय में प्रोफेसर बनने की कल्पना बड़ी मनोरञ्जक प्रतीत हुई। उसे यह सोचकर हंसी आ रही थी कि सेण्ट टामस अकादमी में वह केवल दो वर्ष रहा था और उसकी सैद्धान्तिक शिक्षा यहीं तक सीमित रह गयी थी। उसने जेनरल क्ले से क्षमायाचना करते हुए कहा कि वह असम्भव है। किन्तु वह इसे अन्य प्रकार से यथा सम्भव सहायता पहुँचाने का प्रयत्न करेगा। वह अमे-रिका की जनता को इस कल्पना के सम्बन्ध में जानकारी देगा। सम्भव है उसके बहुत से रेडियो-श्रोता इस विश्वविद्यालय को पुस्तकों का दान दें, कुछ विद्वान निःशुल्क रूप में शिक्षक का कार्य करने के लिये राज़ी हो जायं, बड़े बड़े ट्रस्ट कुछ धन देकर इसकी सहायता करें और एक सुन्दर विश्वविद्यालय की स्थापना हो जाय! लैनी की कल्पना में पंख लग गए थे। वह सोच रहा था कि शायद तीन वर्ष के अन्दर ही बर्लिन का वह 'स्वतन्त्र विश्वविद्यालय' दो सौ शिक्षकों और पांच छै हजार विद्यार्थियों का एक विराट शैक्षिक संगठन बन जाय!!



पंचम भाग

अध्याय २५

● मृत्यु के मुख में ●

(१)

लैनी 'रिआस' में भाषण देने के लिये गया। वह समझता था कि 'रिआस पर यह उसका अंतिम भाषण होगा। इस भाषण में उसका विषय था पश्चिमी बर्लिन में एक स्वतन्त्र विश्वविद्यालय की स्थापना। उसने अपने भाषण में यह बात भलीभांति स्पष्ट कर देने का प्रयत्न किया कि प्रचार तथा वास्तविक सत्य-शोधन में बड़ा अन्तर होता है। उसने बताया कि इस समय संसार के अनेकों देशों में—विशेषकर मास्को और पूर्वी बर्लिन में—राजनैतिक प्रचार की प्रवृत्ति के फलस्वरूप विद्यार्थियों को अनर्गल बातें पढ़ायी जाती हैं। यह कोई नयी बात नहीं है। अत्यन्त प्राचीन काल से सत्यशोधन की स्वतन्त्र प्रवृत्ति का विरोध होता आया है। सुकरात को जहर का प्याला पीना पड़ा था क्योंकि उसने ग्रीस की जनता को यह समझाने का प्रयत्न किया था कि उसके देवी-देवता अन्ध-विश्वास मात्र हैं। गैलीलियो को जेल में बन्द कर दिया गया था क्योंकि उसने यह घोषणा की थी कि पृथ्वी सूर्य के आसपास चक्कर काटती रहती है।

लैनी ने कहा हम जिसे उन्नति कहते हैं वह इस बात पर ही निर्भर करती है कि सत्य-शोधन के लिये प्रत्येक मनुष्य पूर्णतया स्वतन्त्र रहे। उसके इस अधिकार को एक पवित्र अधिकार समझा जाय। प्रत्येक मनुष्य विचारों की अभिव्यक्ति तथा प्रचार के लिये स्वतन्त्र रहे। इस उद्देश्य से प्रेरित होकर ही पश्चिमी बर्लिन में एक स्वतन्त्र विश्वविद्यालय की स्थापना की जा रही है। उसने श्रोताओं से कहा कि यह विश्वविद्यालय शीघ्र ही अपना काम शुरू कर देगा; वे लोग इस सुखद समाचार को दूर दूर तक प्रसारित कर दें। योग्य विद्यार्थी इस विश्वविद्यालय में भर्ती होने के लिये अपने आवेदन पत्र भेजना शुरू कर दें। पूर्वी जर्मनी के विद्यार्थियों का भी स्वागत किया जायगा। उसने यह आशा प्रकट की कि विद्यार्थीगण इस सुविधा से लाभ उठाने के लिये तयार होंगे।

भाषण समाप्त करने के उपरान्त लैनी ने अपने मित्रों के साथ हाथ मिलाया और अपने होटल की ओर चल पड़ा। अगस्त का महीना था; मौसम बड़ा सुहावना था। उसने पैदल जाने का निश्चय किया। वह रास्ते में लोगों की अपार भीड़ को देखते हुए यह सोच रहा था कि सभ्य समाज घोर से घोर विपत्ति में भी अपना अस्तित्व अक्षुण्ण रखने के लिये कितना प्रस्तुत रहता है! अपने विचारों में डूबा हुआ वह एक मोड़ से घूमकर उस छोटी सी सड़क में चला गया जो उसके होटल की ओर जाती थी। सामने से एक मोटर आ रही थी। लैनी एक किनारे खड़ा होकर मोटर निकल जाने की प्रतीक्षा करने लगा। किन्तु मोटर सड़कपर सीधे न जाकर फुटपाथ पर चढ़ गयी और तेज़ी के साथ उसकी ओर झपटी। वह मोटर से बचने के लिये पीछे की ओर दौड़ा। किन्तु इतने में ही उसके कंधे पर एक गहरा आघात लगा और वह लड़खड़ा कर गिर पड़ा।

इसके बाद वह मोटर आगे बढ़ गयी। किन्तु तुरन्त ही उसके पीछे पीछे एक दूसरी मोटर आयी। वह एक झटके से ब्रेक दबाकर वहां पर खड़ी हो गयी जहां लैनी पड़ा हुआ। लैनी का मस्तिष्क क्षण भर के लिये संज्ञाशून्य हो गया था। वह ठीक से समझ न पाया कि यह क्या हो रहा है। किन्तु मोटर से उतर कर जब कुछ लोग उसकी ओर दौड़ आए और उसे अपने पैरों पर खड़ा करके सहानुभूतिपूर्ण स्वर में पूछने लगे कि 'आपको चोट तो नहीं आयी?' तो वह कुछ आश्वस्त हुआ। उसने कहा कि उसे विशेष चोट नहीं लगी है। एक व्यक्ति ने कहा कि उसे अस्पताल जाना चाहिए। किन्तु लैनी ने कहा कि वह ठीक है; अस्पताल जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। किन्तु वह व्यक्ति बार बार यह कहने लगा कि उसे अस्पताल अवश्य जाना चाहिये। वह लैनी को अपनी मोटर की ओर खींचने लगा। लैनी क्षण भर में समझ गया कि ये तीनों व्यक्ति जर्मन हैं और ये उसे बलात अपनी मोटर में ले जाना चाहते हैं।

एक बार तो भय और आतंक से उसका सारा शरीर सिहर उठा। उसे मान्क के ये शब्द याद आ गए कि "तुम्हें कोई बलात पकड़ कर ले जाने का प्रयत्न करने लगे तो भद्रता के चक्कर में मत पड़ना—तुरन्त जी खोल कर चिल्लाने लगना।"

लैनी चिल्लाने लगा। उसे स्वयं इस बात पर आश्चर्य हो रहा था कि वह इतनी जोर से कैसे चिल्ला पा रहा है। मान्क ने कहा था कि लड़ने का प्रयत्न व्यर्थ होगा क्योंकि जो लोग अपहरण के लिये आते हैं वे अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित रहते हैं। अपनी रक्षा का एकमात्र उपाय यह रहता है कि ज़ोर ज़ोर से चिल्लाकर अपना नाम प्रकट कर दो ताकि पास पड़ोस का कोई व्यक्ति इसे सुन ले और ए० एम० जी अथवा पुलिस को सूचित कर दे।

जिस व्यक्ति ने लैनी को अस्पताल जाने के लिये कहा था उसने अपना हाथ लैनी के मुंह पर रखकर उसकी आवाज को बन्द करने का प्रयत्न किया। लैनी ने अपनी सारी शक्ति लगाकर उसका हाथ काट खाया। वह व्यक्ति घबरा गया। उसने शीघ्रता से अपना हाथ खींच लिया और लैनी के सिरपर इतने जोर से एक घूंसा मारा कि उसे चक्कर आ गया और कान बहरे हो गए। किन्तु फिर भी वह अपनी सारी शक्ति से चिल्लाता रहा—'मेरा नाम लैनी बड है!' इसी समय किसी ने उसके मुंह पर एक भीगा हुआ रूमाल रख दिया। रूमाल से एक मीठी मीठी गंध निकल रही थी। लैनी ने सांस रोक कर इस बात का भरसक प्रयत्न किया कि वह उसे न सूंघे। साथ ही वह अपनी सारी शक्ति लगाकर आक्रमणकारियों के साथ लड़ता रहा। किन्तु ये दोनों बातें साथ साथ नहीं चल सकतीं। लड़ते समय मनुष्य के लिये सांस लेना अनिवार्य हो जाता है और सांस के ज़रिये क्लोरोफार्म सूंघ लेने पर लड़ना बन्द हो जाता है। तीनों व्यक्ति उसके साथ लिपटे रहे। उसके मुंह पर वह तर कपड़ा लगा हुआ था। थोड़ी ही देर में लैनी संज्ञाशून्य हो गया और उसे किसी बात का होश न रहा।

(२)

जब उसे धीरे धीरे होश आया तब सबसे पहले अस्पष्ट रूपमें उसके मन में यह विचार उठा कि वह मरा नहीं है; अभी जीवित है। किन्तु उसे यह समझ में न आ रहा था कि वह कहां पर है और उसे क्या हुआ है। उस समय उसकी सारी अनुभूतियाँ मुख्यतः शारीरिक ही थीं। उसे ऐसा लगा कि उसके सिर में भयानक दर्द हो रहा है, कानों में एक विचित्र प्रकार की आवाज़ हो रही है, कंधे में तड़कन सी हो रही है। उसने धीरे से अपने हाथ उठाकर चारों ओर

घुमाया ताकि उसे इस बात का निश्चय हो सके कि वह जीवित है। उसने अपनी आंखें खोलीं किन्तु कुछ देख न पाया। उसे आशंका हुई कि कदाचित वह अन्धा हो गया है। काफी देर बाद वह यह समझ सका कि वह जिस स्थान में है वहां एकदम अन्धकार है। उसे बड़े विचित्र विचित्र स्वर सुनाई दे रहे थे। धीरे धीरे उसकी समझ में आया कि ये स्वर उसके सिर के अन्दर बज रहे हैं। उसके चारों ओर पूर्ण निस्तब्धता छायी हुई थी—ऐसी निस्तब्धता जिसकी उसने कभी कल्पना तक न की थी। कुछ देर बाद उसने अनुभव किया कि जिस स्थान पर वह लेटा हुआ है वह कठोर और ठंडा है। अचानक उसकी समझ में आ गया कि वह क्रांक्रीट की फर्श पर लेटा हुआ है।

उसने पिछले घटनाक्रम को याद करने का प्रयत्न शुरू किया। सोचने से उसके सिर की पीड़ा बढ़ जाती थी। किन्तु उसके अन्दर जीवन रूपी जो प्रेरक शक्ति थी वह उसे सोचने के लिये बाध्य कर रही थी। धीरे धीरे उसके मस्तिष्क में सारी बातें स्पष्ट होने लगीं। उसे याद आया कि वह एक मोटर दुर्घटना की चपेट में आ गया था और इसके बाद कुछ व्यक्ति उसे अस्पताल ले जानेवाले थे। किन्तु क्या यह अस्पताल है? नहीं, यह स्थान तो कब्र सा प्रतीत होता है! क्या वहां वह 'मैदम' से मिलेगा? क्या अब वह लारेल के साथ एक प्रेतात्मा के रूप में बातें करेगा?

उसने मन में समय की कोई कल्पना न रह गयी थी। किन्तु कुछ देर बाद जब उसके विचारों में थोड़ी बहुत स्पष्टता आई तो वह समझ गया कि उसका अपहरण किया गया है। वह यह सोचकर सिहर उठा कि वह कम्युनिस्टों के कब्जे में है और उन लोगों ने उसे एक तहखाने में बन्द कर रखा है। वे लोग मेरे साथ क्या करेंगे?

उसे याद आया कि मान्क ने कहा था कि अपहरण के समय यदि कोई अन्य व्यक्ति देख नहीं लेता तो अपहृत व्यक्ति की रक्षा का कोई उपाय नहीं रहता। किसी को इस अपहरण का पता ही नहीं चल पाता। उसके मस्तिष्क में मान्क के ये शब्द घूम गए—'यदि वे लोग तुम्हें बिना किसी गवाह के उड़ा ले जायंगे तो बस सर्वनाश ही समझो। तुम्हारे बचने का एकमात्र उपाय यह है कि तुम ऐसा अवसर

उपस्थित होने पर जोर जोर से चिल्लाकर राहगीरों को अपना नाम बता दो।' लैनी सोचने लगा। जिस समय उन लोगों ने उसे उठा कर अपनी मोटर में रखा था उस समय सड़क पर कोई अन्य व्यक्ति था या नहीं? हां, कई व्यक्ति थे तो। शायद वे लोग उसके पास आते भी। किन्तु उन्होंने यह समझ लिया था कि यह दुर्घटना नहीं बल्कि अपहरण का मामला है। इसीलिये वे नज़दीक नहीं आए। आखिर वे निरीह नागरिक थे और अपहरण करनेवाले गुण्डों का सामना न कर सकते थे। हस्तक्षेप करने का अर्थ था मृत्यु। किन्तु गुण्डों के चले जाने के बाद पुलिस को टेलीफोन करके इस घटना की सूचना दे देना कोई कठिन कार्य न था। इसमें कोई जोखिम भी न थी।

लैनी को याद आया कि कम से कम छै बार चिल्लाकर उसने अपना नाम स्पष्ट कर दिया था। किसी न किसी ने अवश्य ही सुना होगा। वे यह तो न समझ पाए होंगे कि यह वही व्यक्ति है जिसके भाषण वे रेडियो पर सुना करते हैं तथापि उन्होंने इतना अनुमान अवश्य लगा लिया होगा कि यह एक अमरीकी नाम है और उनको यह समझने में भी कठिनाई न हुई होगी कि अपहरण करनेवाले पूर्वी जर्मनी के लोग हैं। इस प्रकार इस बात की काफी सम्भावना थी कि अधिकारियों को लैनी के अपहरण की सूचना मिल गयी होगी। इसके अतिरिक्त 'रिआस' में उसकी अनुपस्थिति स्वयं उसके मित्रों के मनमें शंका थी सृष्टि करने के लिये पर्याप्त होगी। 'रिआस' अवश्य शोरगुल मचाएगा। किन्तु क्या कम्युनिस्ट लोग इसकी कोई परवाह करेंगे?

लैनी को याद आया कि दो मोटरें आयी थीं। एक ने उसे धक्का देकर गिरा दिया था। दूसरी उसको उठाकर ले आयी थी। स्पष्ट था कि रेडियो स्टेशन से निकलते ही उसका पीछा किया गया था। कम्युनिस्टों को उसके सम्बन्ध में सारी बातों का पता था। सम्भव है 'रिआस' में भी उनके जासूस हों। यह सब सोचने विचारने में काफी समय लगा और उसके सिर का दर्द भी बढ़ गया। उसने अपना कंधा हिलाकर देखा। वह टूटा न था, केवल थोड़ी सी खंरोच आ गयी थी। गिरते समय कुहनी में भी थोड़ी सी चोट आ गयी थी। किन्तु वह भी टूटी न थी। उसने चिल्लाकर अपनी आवाज सुनी और समझ लिया कि वह

बहरा नहीं हुआ है। किन्तु उसे शंका हुई—क्या बहरा आदमी भी भीतर से अपनी आवाज़ सुन सकता है ?

लैनी सोचता गया। शायद वे लोग उस पर अत्याचार करेंगे। किन्तु अत्याचार किसलिये किया जायगा ? बदला लेने के लिये ? या उसे पीड़ित करके आनन्द का अनुभव करने के लिये ? किन्तु यह सम्भव नहीं है। वे लोग जंगली और बर्बर नहीं हैं। वे वैज्ञानिक हैं—मार्क्सवाद-भौतिकतावाद के वैज्ञानिक, और वे जो कुछ करते हैं उसका कुछ न कुछ उद्देश्य होता है। धनाढ्य बड अलिन्ग परिवार के इस लाड़ले से, वाल स्ट्रीट के इस नरमांस भोजी से, वे क्या चाहेंगे ? क्या वे कोई गुप्त भेद प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे ? निश्चय ही वे यह जानना चाहेंगे कि कौन कौन व्यक्ति उसकी सहायता कर रहे हैं, उसके सहयोगी कौन हैं। वे इस समय भी इन बातों के सम्बन्ध में काफी जानकारी रखते होंगे; अब वे इस जानकारी में यथासम्भव वृद्धि करके लैनी की एक पूरी फाइल बना कर रखेंगे। लैनी ने इस प्रकार की अनेकों फाइलें देखी थीं। नाजियों ने इस कला को पूर्णता तक पहुँचा दिया था। किन्तु कम्युनिस्ट लोग इसे और भी पूर्णता तक ले गए हैं। कारण स्पष्ट है। नाजियों को अपने प्रयोग के लिये केवल बारह वर्ष का समय मिला था किन्तु कम्युनिस्टों को तीस वर्ष का समय प्राप्त हुआ था और उन्होंने नाज़ियों के सारे हथकण्डे सीख लिये थे।

(३)

लैनी ने सतर्कतापूर्वक चारों ओर हाथ फिरा कर कांक्रीट की सख्त फर्श को स्पर्श किया। एक ओर करवट लेकर अपना हाथ बढ़ाने पर उसने दीवार को छू लिया। इसी प्रकार दूसरी करवट लेकर उसने उस ओर की दीवार छू ली। उसने समझ लिया कि वह एक कोठरी में बन्द है जिसकी लम्बाई चौड़ाई छै फीट से अधिक नहीं है। वह यह जानना चाहता था कि कोठरी की ऊंचाई कितनी है। फलस्वरूप वह दीवार के सहारे सहारे सतर्कता के साथ खड़ा हुआ किन्तु उसके पैर लड़खड़ाने लगे। वह बैठ कर अपनी खोयी हुई शक्ति बटोरने का प्रयत्न करने लगा।

अन्त में वह उठ कर खड़ा हुआ और उसने अपना हाथ ऊपर उठा कर छत

को स्पर्श कर लिया। इस प्रकार उसने समझ लिया कि इस कोठरी की ऊंचाई सात फीट से अधिक नहीं है। इसके बाद उसने चारों ओर दीवारों को टटोल टटोल कर इस बात का पता लगाया कि एक लोहे का दरवाजा है। दरवाजे का लोहा कठोर, चिकना और ठोस था। अचानक उसके मस्तिस्क में एक विचार बिजली की भांति दौड़ गया। क्या उसे यहां दम घोट कर मार डालने के लिए रखा गया है? क्या वायु के अभाव के कारण ही उसके कानों में सनसनाहट की यह आवाज हो रही है? क्या इसीलिए उसका सिर इतना भारी हो रहा है? किन्तु कुछ देर तक दीवार को टटोल टटोल कर देखने के बाद उसने इस बात का पता लगा लिया कि दीवार के ऊपरी सिरे पर प्रायः चार इञ्च के आयतन का एक छोटा सा छेद है। फर्श के पास दीवार के दूसरे किनारे पर भी इसी प्रकार का एक और छेद था। ये छेद कदाचित् बाहर से वायु आने के लिए बनाए गये थे। उसने देखा कि छेदों से सचमुच ठंडी वायु आ रही थी। किन्तु सहसा उसके मस्तिष्क में एक नया विचार आया। बर्लिन में इस समय तेज गर्मी पड़ रही थी। फिर छेदों से यह शीतल वायु कैसे आ रही थी? क्या उन लोगों ने उसे उन भयानक 'तापनियन्त्रण गृहों' में रख दिया है जिनकी वीभत्स कहानियां वह सुना करता था?

रूसी लोगों ने अपने इन 'ताप नियंत्रण गृहों' का कोई नाम रख लिया था किन्तु लैनी को इस समय वह नाम न याद आ रहा था। इन अत्याचार-गृहों की कार्य प्रणाली यह थी कि पहले कैदी की कोठरी में शीत का वातावरण इतनी दूर तक पैदा किया जाता था कि वह ठिठुर कर मर न जाय किन्तु उसकी चेतना शक्ति नष्ट भ्रष्ट हो जाय। यह विद्या रूसियों ने नाजियों से सीखी थी। नाज़ी लोगों ने वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा यह निश्चित कर लिया था कि कितने तापमान तक मनुष्य जीवित रह सकता है। रूसी लोग अभागे कैदी को इस प्रकार के यंत्रणागृह में रख कर बार बार यह प्रयोग करते रहते थे। इसके बाद वे कैदी को चेतावनी देकर एक दूसरी प्रक्रिया शुरू कर देते थे। शीतके स्थान पर अब कोठरी में क्रमशः ताप की वृद्धि की जाती थी। यह तापमान इतनी दूर तक ले जाया जाता था कि मनुष्य झुलस कर मर न जाय किन्तु प्रतिरोध की उसकी सारी शक्ति

समाप्त हो जाय। इस प्रकार कैदी को बिना मारे पीटे और उसके शरीर पर यंत्रणा का कोई चिन्ह बनाये बिना ही ये विज्ञानवादी अत्याचारी उसकी संकल्प-शक्ति को नष्ट भ्रष्ट कर डालते थे। इसके बाद वे कैदी से जो चाहते कहलवा लेते थे। अत्याचार के इस तरीके में कोई झंझट भी न थी। यह अपने आप अपना काम करती रहती थी।

हाँ, छेद से आने वाली वायु क्रमशः अधिक शीतल होती जा रही थी। लैनी समझ गया कि सोचने के लिये उसके पास बहुत थोड़ा समय रह गया है। वे लोग उससे क्या चाहते हैं? वह उन्हें कौन सी बात बता सकता है जिसे वे स्वयं नहीं जानते? क्या वे उससे 'रिआस' के सम्बन्ध में कुछ जानना चाहेंगे? किन्तु 'रिआस' में उनके जासूस अवश्य होंगे और वे उसके सम्बन्ध में सब कुछ जानते होंगे। क्या वे उससे जेनरल क्लॅ के साथ होने वाली वार्त्ता के सम्बन्ध में कुछ पूछेंगे? किन्तु उस वार्त्ता में कोई भेद की बात न थी। क्या वे लोग बर्नहाड्ट मान्क के सम्बन्ध में कुछ जानना चाहेंगे? किन्तु बर्नहाड्ट एक पुराना कार्यकर्त्ता है और कम्युनिस्टों से उसकी गतिविधि छिपी न होगी।

लैनी के मन में यह विचार आया कि शायद उससे फ्रित्ज मेसनर के सम्बन्ध में कुछ पूछा जाय। फ्रित्ज मेसनर पर उन लोगों ने भयानक अत्याचार किया था और सम्भवतः जान या अनजान में फ्रित्ज ने उन्हें अपना थोड़ा बहुत भेद बता दिया हो। किन्तु यदि फ्रित्ज ने उसके सम्बन्ध में कम्युनिस्टों को बता दिया होगा तो अब उससे कम्युनिस्ट लोग और कौन सी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं? किन्तु यदि फ्रित्ज ने उन्हें कुछ भी न बताया हो और वह अभी जीवित हो तो लैनी के मुंह से उसके सम्बन्ध में एक शब्द भी उसका सर्वनाश कर सकता है। लैनी ने मन ही मन निश्चय किया कि वह फ्रित्ज के सम्बन्ध में कुछ न बोलेगा।

किन्तु दुबारा विचार करने पर उसे ऐसा लगा कि वह कह दे कि उसी ने फ्रित्ज मेसनर को जाली नोट बनाने वाले षड़यन्त्रकारियों का पता लगाने के लिये भेजा था। उसने यह अनुमान लगाया था कि नये नाज़ी ही यह जघन्य काम कर रहे हैं और इससे रूस तथा अमेरिका दोनों की ही हानि हो रही है। उसे इस बात का पूर्ण विश्वास था कि कोई सोवियत अधिकारी जाली सिक्के

बनाने वाले गुण्डों के साथ सहयोग न करेगा। लैनी ने मन ही मन सोचा कि सोवियत अधिकारी उसके मुंह से ये बातें सुन कर प्रसन्न होंगे। वह 'पवित्र' सोवियत भूमि के विरुद्ध कुछ भी न कहेगा। उसने यह निश्चय किया कि वह सोवियत अधिकारियों के प्रति नम्रता और भद्रता का प्रदर्शन करेगा, उद्दण्डता का नहीं; क्योंकि उसका जीवन इस समय इन्हीं लोगों के हाथ में था। वह जानता था कि जो व्यक्ति उससे प्रश्न पूछने के लिये आयेगा वह कट्टर कम्युनिस्ट ही होगा और उसकी व्यक्तिगत भावनाओं को चोट पहुँचाने से कोई लाभ न होगा।

लैनी ने सोचा कि शायद वे लोग कर्ट मेसनर के सम्बन्ध में कुछ पूछें। वे कर्ट मेसनर के सम्बन्ध में सब कुछ जान गये होंगे। टेगर्नसी के खजाने की बात भी उनसे छिपी न होगी। कदाचित वे अन्य खजानों का पता लगाने के लिये उत्सुक होंगे। किन्तु लैनी इस सम्बन्ध में उन्हें क्या बता सकता था? सम्भव है वे लोग उसकी अनभिज्ञता पर विश्वास न करें और उसे सप्ताहों तक यन्त्रणा देते रहें! लैनी को मन ही मन बड़ा पश्चाताप हो रहा था। वह सोच रहा था कि वह लारेल की सलाह मान कर जर्मनी से दूर ही रहता तो अच्छा होता।

(४)

वह अमेरिका के बारे में सोचने लगा। अमेरिका में ऐसी कौन सी बात हो सकती है जिसके सम्बन्ध में कम्युनिस्ट लोग उससे पूछ सकते हैं? क्या वे रोबी के सम्बन्ध में कुछ जानना चाहेंगे? इसकी कोई सम्भावना न प्रतीत होती थी। कम्युनिस्ट लोग रोबी बड के सम्बन्ध में सब कुछ जानते थे। किन्तु सम्भव है वे यह समझते हों कि उनकी जानकारी पूर्ण नहीं है। क्या वे लैनी से यह कहलाना चाहेंगे कि प्रेसीडेंट ट्रूमन की सरकार के पीछे पूंजीपति रोबी बड की शक्ति ही कार्य कर रही है? क्या वे यह जानना चाहेंगे कि रोबी बड के पास कितना रुपया है अथवा वाशिंगटन तक उनके आदेश कौन पहुँचाता है? या वे बेस के मामले के सम्बन्ध में कुछ जानना चाहेंगे? क्या वे लैनी से यह स्वीकार कराना चाहेंगे कि उसी ने अपनी बहन के साथ विश्वासघात करके

उसे एफ० बी० आई के जाल में फंसा दिया ? या वे हैन्सी के सम्बन्ध में कोई जानकारी प्राप्त करना चाहेंगे ?

पूर्वी जर्मनी से आने वाले शरणार्थियों से उसे यह बात भलीभांति मालूम हो गयी थी कि एम० बी० डी वाले सत्य की परवाह नहीं करते। वे अपने कैदी से ठीक वही बात कहला लेते हैं जिसे वे अपने हितों के अनुकूल समझते हैं। लैनी मन ही मन कल्पना करने लगा कि वे लोग उससे क्या कबूल करवाना चाहेंगे और वह इसे कबूल करे अथवा नहीं।

उसके सिर में बड़ा भयानक दर्द हो रहा था। फिर भी उसने सोचना बंद न किया। वह जानता था कि उसके पास अधिक समय नहीं है। उसने यह निश्चय कर लिया कि प्रश्नकर्त्ता उसके साथ कैसा ही व्यवहार क्यों न करें वह अनिच्छा से उसे कोई बात न बतायेगा। वह किसी निर्दोष व्यक्ति को किसी भी परिस्थिति में न फंसाएगा। इस समय कम्युनिस्टों के हाथ में उसके परिचित इष्ट मित्रों में कौन कौन से व्यक्ति हो सकते थे ? केवल तीन—फ्रित्ज मेसनर, अन्ना सर्डेन और ग्राफ आइन्सीडेल।

सम्भव है उन लोगों को यह बात मालूम हो गयी हो कि उसने पश्चिमी जर्मनी के एक होटल में आइन्सीडेल के साथ भोजन किया था। यदि यह प्रश्न उठा तो वह यही कहेगा कि उसने आइन्सीडेल को अमरीकी जेल से छुड़ाने में सहायता पहुंचाई थी और वह उसे धन्यवाद देने के लिये आया था। किन्तु सम्भव है वे लोग उससे यह कहलाना चाहें कि आइन्सीडेल एक राष्ट्रद्रोही है, फासिस्ट जासूस है अथवा ट्राटस्कीवादी है! तब वह क्या कहेगा ? उसने मन ही मन संकल्प किया कि वह इस जर्मन युवक के विरुद्ध कुछ न कहेगा।

(५)

लैनी जानता था कि कम्युनिस्ट लोग अपने कैदियों के साथ शीघ्रता नहीं दिखाते; सारी कार्यवाही बड़े विलम्ब से पूरी होती है। समय एक ऐसी वस्तु थी जिसका सोवियत यूनियन में कोई अभाव न था। लैनी ने 'रिआस' में एक बार एक ऐसे व्यक्ति से बातें की थीं जो एक समय साइबेरिया को निर्वासित कर दिया गया था और वहां से भाग आया था। वह मास्को के 'बुतिर्थी' जेल

में बन्द कर दिया गया था। वह जिस कोठरी में रखा गया था वह इतनी छोटी थी और उसमें इतने अधिक कैदी थे कि लेटने के लिये स्थान न रह गया था। इस स्थान में आठ मास प्रतीक्षा करने के बाद ही उसे प्रश्नकर्त्ताओं के सम्मुख पेश किया गया था। एक दूसरा व्यक्ति सन्देह पर गिरफ्तार कर लिया गया था और उसे तीन वर्ष तक 'लुबयान्का' जेल में बन्द रह कर प्रतीक्षा करनी पड़ी थी। उसने लैनी को बताया था कि मास्को में आठ जेल हैं और सब में इसी प्रकार की भीड़ रहती है। लुबयान्का वाले जेल में प्रायः तीस हजार कैदी थे। यह घृणा, सन्देह और भय की एक महामारी सी थी। इस महामारी का क्रमशः विस्तार होता रहता था। एक व्यक्ति से बलात् 'अपराध' स्वीकार करा कर अनेकों अन्य निर्दोष व्यक्तियों को फंसा लिया जाता था। इसके बाद ये व्यक्ति गिरफ्तार होते थे और ये अन्य निर्दोष व्यक्तियो को फंसा देने के लिये वाध्य होते थे।

लैनी ने अनुमान लगाया कि शायद उसके साथ कुछ जल्दी की जाय। इसके दो कारण थे। एक तो वह विदेशी था, दूसरे वह एक प्रसिद्ध व्यक्ति था। वह जेनरल क्ले से मिल चुका था और 'रिआस' में उसके बहुत से मित्र थे। मान्क के गुप्तचर विभाग के साथ भी उसका घनिष्ट परिचय था। ये लोग उसका पता लगाने के लिये अवश्य भरसक प्रयत्न कर रहे होंगे। उसकी अनुपस्थिति के कारण एक भूकम्प सा आ गया होगा।

कोठरी के अन्दर ठण्ढ क्रमशः बढ़ती जा रही थी। वह फर्श के पास वाले छेद के पास गया। शीतल वायु का प्रवाह अनवरत रूप में चालू था। धीरे धीरे सर्दी के कारण उसके शरीर में कंपकंपी होने लगी। क्लोरोफार्म का प्रभाव भी अभी तक था। उसके सिर में दर्द हो रहा था और जी मचला रहा था। उसे प्यास भी लग रही थी। अत्याचारियों ने उसे भयभीत करके उसके मनोबल को नष्ट कर देने की जो योजना बनायी थी उसमें कहीं पर कोई कमी न रहने पाई थी।

लैनी अपने शरीर में कुछ गर्मी लाने के लिये कोठरी में चहलकदमी करने लगा। किन्तु शीघ्र ही उसने देख लिया कि यह प्रयत्न व्यर्थ है। इससे उसकी

निर्बलता और भी बढ़ जायगी। उसे अपने मनोबल का, दृढ़ इच्छाशक्ति का प्रयोग करना पड़ेगा। नैतिक बल ही इस समय उसे अपने पराभव के विरुद्ध एकमात्र उपाय के रूप में दिखाई पड़ा। उसने निश्चय कर लिया कि कुछ भी क्यों न हो वह किसी निर्दोष व्यक्ति के विरुद्ध एक शब्द भी न कहेगा। वह जानता था कि यदि यहां उसने घुटने टेक दिये तो वह जीवन में कभी अपने आप को क्षमा न कर सकेगा।

(६)

कोठरी का तापमान क्षण क्षण गिरता जा रहा था। उसने छेद की ओर अपना हाथ न बढ़ाया क्योंकि उसे भय लग रहा था। उसे ऐसा लग रहा था कि उसकी हड्डियां जम कर बर्फ हुई जा रही हैं। उसके मन में एक नये आतङ्क का सञ्चार हुआ। क्या सचमुच वे लोग उसे मार डालना चाहते हैं? यह उससे पिण्ड छुड़ाने का एक सस्ता और सुविधाजनक उपाय भी था। उसने सोचा कि यदि उसकी मृत्यु सुनिश्चित है तो वह इस सम्बन्ध में कुछ कर भी नहीं सकता। फिर भी उसे इस बात से कुछ सान्त्वना मिली कि वह एक ईमानदार व्यक्ति के रूप में मर रहा है।

वह उन सारे प्रयोगों को जानता था जो नाज़ी लोग अपने कैदियों के साथ 'दचाऊ' शरणार्थी शिविर में किया करते थे। वे अपने इन प्रयोगों को 'वैज्ञानिक' बताते थे। कोठरी का तापमान ज्यों ज्यों घटता जाता था त्यों त्यों कैदी के हृदय की धड़कन और नाड़ी की गति क्रमशः धीमी होती जाती थी। अन्त में जीवन और मृत्यु के बीच कुछ क्षणों का अन्तर रह जाता था। नाजियों को यह देख कर बड़ी प्रसन्नता होती थी कि वे अपने वैज्ञानिक उपाय द्वारा किसी व्यक्ति को मृत्यु के एकदम किनारे लाकर फिर से वापस लौटा सकते हैं।

लैनी को लारेल की याद आई। उससे सदा के लिए बिछुड़ने की कल्पना से वह मन ही मन अधीर हो उठा। वह जानता था कि लारेल भी उसके बिछोह से इसी प्रकार अधीर हो उठेगी और यह सोचकर उसका मन और भी उद्विग्न हो रहा था। उसे सारी बातें कभी न मालूम हो सकेंगी किन्तु उसे यह समझने

में कोई कठिनाई न होगी कि लैनी की हत्या भयानक परिस्थितियों में की गयी होगी। वह जीवन भर अपने आपको कोसती रहेगी कि उसने अपने पति को रोक क्यों न लिया। किन्तु वह बेचारी कर भी क्या सकती थी? उसके सामने एक समस्या थी। वह जिस व्यक्ति की पत्नी थी वह प्रेम के स्थान पर कर्त्तव्य को अधिक महत्व प्रदान करता था। वह बार बार विदेश जाकर अपने प्राणों की जोखिम उठाता रहता था।

इस भयानक संकट के समय भी लैनी का विनोद भाव पूर्णतया नष्ट न हुआ था। वह सोचने लगा कि इस प्रकार लेटे लेटे लारेल के प्रति अपने प्रेम पर विचार करते करते देहातीत हो जाना भी एक आनन्दप्रद बात हो सकती है। उसे याद आया कि चीन जाते समय समुद्री जहाज 'ओरिओल' पर ही लारेल के साथ उसका प्रथम परिचय हुआ था। जहाज के मालिक की बेटी लिजबेथ होल्डेनहर्स्ट लैनी को बहुत चाहती थी। किन्तु लारेल ने मन ही मन संकल्प कर लिया था कि लैनी के हृदय पर वह अधिकार न कर सकेगी। हुआ भी यही। एक दिन हांगकांग के पास कहीं पर 'ओरिओल' जहाज डूब गया और उसके साथ लिजबेथ भी अतल समाधि में लीन हो गई। सम्भव है उसकी हड्डियां मूंगों और सीपों के रूप में परिवर्त्तित हो गयी हों! इसके बाद लारेल का दावा निस्संदिग्ध हो गया। और इसमें कोई संदेह नहीं कि लारेल एक आदर्श पत्नी प्रमाणित हुई। अब उसके दो बच्चे हैं। इसलिए यह स्पष्ट है कि लैनी के बिछोह से वह कितनी ही व्याकुल क्यों न हो उठे वह आत्महत्या न करेगी। लैनी की दृष्टि के सामने लारेल का एक धुंधला सा चित्र तैरने लगा। सब कुछ धुंधला धुंधला सा प्रतीत हो रहा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों चारो ओर कोहरा छाया हो।

इस धुंधले कोहरे में लेटे लेटे वह इस बात पर विचार कर रहा था कि उसका अस्तित्व विलीन होने में कितना समय लगेगा। इसी समय दरवाजा खुलने की आवाज आयी और एक तेज प्रकाश लैनी के चेहरे पर पड़ा। उसने तुरन्त आंखें बन्द कर लीं क्योंकि टार्च का यह प्रकाश उससे सहन न हुआ। दूसरे ही क्षण उसने अनुभव किया कि कोई उसके हाथ को उठा कर उसकी नाड़ी देख रहा है। इसके

बाद उसका हाथ वापस जमीन पर रख दिया गया। बस, और कुछ न हुआ। न आगन्तुक व्यक्ति ने ही एक शब्द कहा, न लैनी ने। दरवाजा फिर बन्द कर दिया गया।

स्पष्ट था कि वह व्यक्ति यह देखने आया था कि लैनी अभी जीवित है या उसकी मृत्यु हो गयी। क्या ठंढ की मात्रा में और वृद्धि कीं जायगी ? लैनी का मस्तिष्क थक कर चूर चूर हो गया था। उसने सोचना बन्द कर दिया था। वह चुपचाप पड़ा रहा। धीरे धीरे उसकी चिन्तनशक्ति वापस लौटी। अब वह फिर इस बात पर विचार करने लगा कि उसके साथ क्या किया जायगा। निर्णय जीवन के पक्ष में किया जायगा या मृत्यु के पक्ष में ? वह हाड़ मांस के शरीर वाले जीवित व्यक्तियों के संसार में रहेगा या उस धूमिल प्रेतलोक में जिसके अधिवासियों की दो एक झलकें वह देख चुका है ?

उसने अपना हाथ बढ़ाकर क्रांक्रीट के कठोर फर्श को स्पर्श किया। वह अभी तक ठण्डी थी। किन्तु कोठरी की वायु अब गर्म होने लगी थी। वह इस गर्म वायु का आनन्द लेता हुआ जोर जोर से सांसें खींचने लगा। उसकी शक्ति लौटने लगी और शक्ति के साथ ही सोया हुआ कौतूहल भी जाग उठा। वह उठ कर बैठ गया। इसके बाद उसने छेद के पास जाकर वहां अपना हाथ दबा कर इस बात का अनुभव किया कि इस बार बाहर से सचमुच गर्म हवा आ रही है। उन लोगों ने देख लिया था कि वह ठिठुर कर बर्फ हो जाने की स्थिति में पहुंच चुका है। इसीलिए अब उन्होने गर्म हवा भर कर उसे पुनर्जीवित करने का निश्चय किया था। किन्तु लैनी जानता था कि यह प्रयोग अस्थाई ही है। थोड़ी ही देर बाद कोठरी के ताप में इतनी वृद्धि हो जायगी कि वह तवे की रोटी की भांति झुलसने लगेगा और यह और भी कष्टप्रद होगा। किन्तु इस समय कोठरी का तापमान आनन्ददायक प्रतीत हो रहा था और उसका रोम रोम इस सुख का अनुभव कर रहा था। मन ही मन वह सोच रहा था कि आज आनन्द मना लो क्यों कि कल मृत्यु आने वाली है !

(७)

किन्तु कल तो दूर की बात थी। कुछ ही मिनटों के उपरान्त तापमान भया-

नक रूप में बढ़ने लगा। लैनी का शरीर झुलसने लगा। उसका हृदय धड़कने लगा और उसे साँस लेने में कठिनाई का अनुभव होने लगा। उसे पहले से ही प्यास लगी थी किन्तु इस समय तो वह एकदम असह्य हो उठी थी। भयानक गर्मी ने उसके शरीर की सारी नमी खींच ली थी। इस प्रकार झुलस कर मरना कोई आनन्द की बात न थी। लैनी के सामने वे वैज्ञानिक, जो यह भयानक प्रयोग कर रहे थे, आते तो वह यही कहता कि नर्क की यातना भी इससे श्रेष्ठ है।

लैनी मन ही मन सोचने लगा कि इस असह्य यातना को सहने के लिये दृढ़ मनोबल की आवश्यकता है। उसके मस्तिष्क में वे विचार दौड़ गये जो उसने बहुत पहले अपने पितामह एली बड और बाद में अपने सौतेले पिता पर्सीफाल डिन्गल से सुने थे।

उसके पितामह एक पादरी थे। उन्होंने उसे सार्वभौमिकता नामक दर्शन धारा समझायी थी। इस दर्शनधारा के अनुसार विश्व ब्रह्माण्ड के कण कण में ईश्वर की सत्ता विद्यमान है। वह हमारे अन्दर भी निवास करता है। प्राचीन ग्रीस के शंकाशील दार्शनिकों का खण्डन करते हुए सेण्ट पाल ने भी यही कहा था कि 'उस एक की सत्ता में ही हम अनेकों की सत्ता है।' हमें उसके साथ बातें करने की कोई आवश्यकता नहीं, उसका ध्यान करना ही पर्याप्त है। वह स्वयं हमारे विचारों में निवास करता है। लैनी ने इस दर्शनधारा को एक अतिमानुषिक परिकल्पना के रूप में स्वीकार कर लिया था। उसके लिये इस बात पर विश्वास करना कठिन था कि यह विश्व-ब्रह्माण्ड आकस्मिक रूप में उत्पन्न हो गया है अथवा हमारा मन कोई रहस्यमय पदार्थ नहीं बल्कि मस्तिष्क-तंतुओं में चलती रहने वाली रासायनिक तथा विद्युत प्रक्रिया का परिणाम मात्र है। वह इस बात पर विश्वास करने का इच्छुक था कि हमारा मन ही इस ब्रह्माण्ड की सत्ता का एकमात्र आधार है और वह एक विराट सार्वभौमिक मन का अंशमात्र है।

उन दिनों लैनी 'बेनेडिक्ट' पंथ के इस सिद्धान्त को भी बार बार दोहराया करता था कि 'परिश्रम ही प्रार्थना' है। उसे ऐसा लगता था कि संसार में दुःख दारिद्र्य, शोक ताप को मिटाने का प्रयत्न करना ईश्वर को अवश्य सन्तुष्ट करता होगा। किन्तु लैनी के सौतेले पिता को यह सिद्धान्त पूर्ण न प्रतीत होता था।

पर्सीफाल डिन्गल का कहना था कि ईश्वर कोई दार्शनिक सिद्धान्त मात्र नहीं है, वह एक जीवन्त सत्ता है जो निश्चित रूप में मानव मन के अन्दर निवास करती है। हम सब उस विराट सत्ता के गौण अंश मात्र हैं। पर्सीफाल डिन्गल का विश्वास था कि यदि मनुष्य दृढ़ता के साथ यह विचार कर ले कि ईश्वर उसकी सहायता कर रहा है तो सचमुच उसे दैवी सहायता का अनुभव होने लगेगा। लैनी ने शङ्का प्रकट करते हुए कहा था कि कदाचित यह आत्मसंवेदन मात्र हो। पर्सीफाल ने मुस्करा कर कहा था, 'यह आत्मसंवेदन क्या है?' लैनी ने स्वीकार किया था कि वह स्वयं नहीं जानता था कि आत्मसंवेदन से मनोवैज्ञानिकों का क्या तात्पर्य है। पर्सीफाल ने उत्तर दिया था कि 'कदाचित मनोवैज्ञानिकों का यह आत्मसंवेदन ही ईश्वर हो!'

उस समय यह एक मजाक सा प्रतीत हुआ था। किन्तु पर्सीफाल मजाक न कर रहे थे। उनका तात्पर्य यह था कि मनुष्य के लिये यह आवश्यक होता है कि वह अपनी आत्मा की शक्तियों को जगावे। साधारण अवस्था में जिसे वैज्ञानिक लोग आत्मसंवेदन कहते है वह निम्न कोटि का होता है। किन्तु उच्च स्तर पर यह आत्मसंवेदन ही आध्यात्मिक प्रयोग हो जाता है। पर्सीफाल ने कहा था, 'हमारे अन्दर मन अथवा आत्मा नाम की जो वस्तु है वही हमारी गहनतर सत्ता है। आत्मा की शक्ति को जगाने का कार्य ठीक वैसा ही है जैसा कि बाथरूम के नल को खोलने का कार्य। किन्तु बाथरूम का नल भी वही व्यक्ति खोल सकता है जो नल खोलना जानता है और अपनी इस शक्ति पर विश्वास रखता है। यदि मनुष्य के मन से यह विश्वास जाता रहे कि वह नल खोल सकता है तो वह उसे न खोल सकेगा और उसे जल न मिलेगा। बस, इतनी सी बात है।'

पर्सीफाल बहुधा मेरी बेकर एडी की एक बात दोहराया करते थे। मेरी बेकर एडी ने एक बार कहा था कि 'मनुष्य का कष्ट ईश्वर का अवसर है।' और इस समय लैनी जिस स्थिति में था उसमें यह वाक्य पूर्णतया लागू पड़ रहा था। उसे भौतिक जल की भी आवश्यकता थी और आध्यात्मिक जल की भी; वह अपने मन की सारी शक्ति लगा कर इस प्रश्न पर विचार करने

लगा। वह मन ही मन सोचने लगा कि 'ईश्वर मेरी सहायता अवश्य करेगा' और अपना सारा ध्यान इस पर ही केन्द्रित करने लगा। अब इसे चाहे ईश्वरीय चमत्कार समझा जाय चाहे मनोवैज्ञानिक आत्मसंवेदन, इतना अवश्य हुआ कि उसका ध्यान अपने कष्ट से हटकर अन्यत्र केन्द्रित हो गया। धीरे धीरे वह विस्मृति की शान्तिपूर्ण गोद में सो गया।

(८)

जब उसकी चेतना वापस लौटी उसे क्षण भर के लिये यह शंका हुई कि कहीं उसकी मृत्यु तो नहीं हो गयी और यह उसके अस्तित्व का कोई नया रूप तो नहीं है। उसने अपनी आंखें खोलीं तो देखा कि सामने एक तीक्ष्ण प्रकाश चकाचौंध कर रहा है। उसने घबरा कर अपनी आंखें फिर मूंद लीं। उसने अनुभव किया कि कोठरी में फिर से शीतलता आ रही है। यह शीतलता उसे आनन्ददायक प्रतीत हुई। पहले तो उसे यह शीतलता एक अमूर्त्त परिकल्पना सी प्रतीत हुई किन्तु बाद में उसने समझ लिया कि उसके अत्याचारियों ने गर्मी का प्रयोग बन्द करके फिर से शीतलता का प्रयोग शुरू कर दिया है।

कोठरी में टार्च का प्रकाश इधर से उधर हिल रहा था। फिर से उन लोगों ने आकर उसकी नाड़ी की परीक्षा की। लैनी प्यास से व्याकुल था। उसका तालू सूखा जा रहा था। उसने बड़े कष्ट से जर्मन भाषा में जल मांगा। किन्तु अचानक उसे ख्याल आया कि उसके अत्याचारी जर्मन नहीं रूसी हैं। उसने रूसी भाषा में जल का पर्यायवाची शब्द याद करने का प्रयत्न किया किन्तु उसे याद न आया।

किन्तु कदाचित उसके अत्याचारी समझ गये। लैनी ने अनुभव किया कि किसी ने उसका सिर उठाकर जल से भरा हुआ एक प्याला उसके होठों से लगा दिया है। उसने आतुरता के साथ जल पी लिया। उसका स्वाद कुछ मीठा सा था। वह चाय न थी; शायद कोई अन्य पेय था। लैनी को लगा कि वह उसकी प्रार्थना का प्रतिफल है। उसने परम संतोष के साथ एक एक बूंद पी ली। उसकी चेतना पूर्ण रूप से वापस लौट आयी। अचानक उसके मनमें एक विचार आया। कहीं ये लोग उसे कोई मादक पदार्थ तो नहीं पिला रहे हैं ताकि वह

अनजान में उनको अपने सारे भेद बता दे। उसने मन ही मन संकल्प किया कि वह यह न होने देगा।

एक बार फिर उसे पर्सीफाल के कथन का ध्यान आया। उसने अपने मन की सारी शक्ति को ईश्वर के विचार पर केन्द्रित कर दिया। छोटी छोटी तरंगों के रूप में उसके मन में साहस का संचार होने लगा। उसने निश्चय किया कि वह किसी भी अवस्था में शत्रु के सम्मुख पराभूत न होगा। वह यह प्रमाणित कर देगा कि ईश्वर की शक्ति मनुष्य की शक्ति से कहीं अधिक है। उसके अत्याचारियों ने ईश्वर की सत्ता को अस्वीकार कर दिया है। किन्तु इससे क्या हुआ? इससे ईश्वर का अस्तित्व तो मिट नहीं गया। और स्पष्ट है कि ईश्वर नास्तिकों की अपेक्षा आस्तिकों का ही पक्ष लेना पसंद करेगा!

कोठरी का दरवाज़ा फिर बन्द हो गया। उसने देखा कि वह एक बार फिर निविड़ अन्धकार में है। अब उसे अन्धकार अच्छा लगने लगा था। गर्मी समाप्त हो गयी थी और लैनी को ऐसा प्रतीत हो रहा था कि यह उसकी प्रार्थना का ही परिणाम है। उसने निश्चय किया कि वह ईश्वर के प्रति अपनी निष्ठा इसी प्रकार स्थिर रखेगा और भविष्य में इस बात को ही अपने जीवन का केन्द्रबिन्दु बना लेगा। कैसा भी संकट क्यों न आए वह धैर्य के साथ उसका सामना करेगा। वह अपने आप को इस अग्नि-परीक्षा के लिये तयार कर रहा था। ईश्वर के रूप में उसने जो 'आत्मसंवेदन' किया था वह सफल प्रमाणित हुआ था।

समय बीतता जा रहा था किन्तु लैनी को समय की गति का कोई ध्यान न था। प्रार्थना करते समय मनुष्य समय के अस्तित्व को भूल जाता है। प्रार्थना के अनेकों उपयोगों में से एक यह भी है। जब कोई व्यक्ति अत्याचारियों के हाथ में पड़ जाय और वे उसे किसी काल कोठरी में बन्द कर दें तो समय का यों भी कोई मूल्य नहीं रह जाता। उस समय उस व्यक्ति की आत्मा तथा उसकी शक्तियां ही एक मात्र संबल रह जाती हैं। ऐसी स्थिति में अकेला रहना असहायता और निर्बलता है, ईश्वर का साथ शक्ति सम्पन्नता और प्रफुल्लता है।

इसलिये लैनी अपने अन्तर्मन में शारीरिक यातना तथा शंका संदेह की छायाओं से युद्ध करने लगा। उसने अपना हाथ फैलाते समय इस बात का अनुभव किया

कि उसके अत्याचारी उसके सिरहाने रोटी की एक तश्तरी रख गए हैं। उसने एक टुकड़ा तोड़कर मुंह में रखा। चोकर मिले हुए आटे की रोटी थी। लैनी को इस प्रकार की रोटी अच्छी लगती थी। वह उसे खाने लगा। उसे इस बात का विश्वास न था कि इस रोटी को पचाने लायक शक्ति उसके शरीर में है या नहीं। किन्तु उसने ईश्वर पर अडिग निष्ठा के आड़े आने वाले इस विचार को तुरन्त त्याग दिया।

ईसामसीह ने कहा था कि ईश्वर के लिये कोई कार्य असम्भव नहीं है; वह सब कुछ कर सकता है। पर्सीफाल का भी यही सिद्धान्त था। उन्होंने अपने इस सिद्धान्त पर विश्वास करते हुए ही अनेकों असाध्य रोगियों को ठीक कर दिया था। डाक्टरों ने इन रोगों को असाध्य घोषित कर दिया था किन्तु पर्सीफाल ने उन्हें ठीक कर दियो था। लैनी ने सोचा कि उसकी अंतड़ियों में पाचन शक्ति का प्रवाह कर देना ईश्वर के लिये कोई कठिन कार्य नहीं है। और फिर हमारी आंतों में यह शक्ति आखिर कहां से आती है? वह इतने दिनों से कैसे चल रही है? इसके अस्तित्व का क्या रहस्य है? स्वयं लैनी के अस्तित्व का क्या रहस्य है? लैनी के मन में फिर से साहस का संचार होने लगा और साहस के साथ साथ शक्ति भी लौट आयी।

(९)

वह रोटी के कुछ ही टुकड़े खा पाया था कि दरवाज़ा फिर खुला। फिर से टार्च का प्रकाश उसकी आंखों से टकराया। उसे यह प्रकाश अच्छा न लगता था। उसने अपनी आंखें मूंद लीं। वह मन ही मन सोचने लगा कि ये अत्याचारी हैं और ईश्वर उसे इनका सामना करने की शक्ति प्रदान करेगा।

कोठरी में बन्द होने के बाद यह प्रथम अवसर ही था कि लैनी ने मानव कण्ठ स्वर सुना हो। किसी ने रूसी शब्द 'सिउदा' कहा। लैनी इस शब्द का अर्थ न जानता था। उसने अनुभव किया कि कोई व्यक्ति उसके कंधे पकड़कर उसे उठाने का प्रयत्न कर रहा है। लैनी ने भी उठने का प्रयत्न किया। लड़खड़ाते पैरों से वह उठकर खड़ा हो गया। आगन्तुक व्यक्ति ने उसे सहारा दिया।

कोठरी के दरवाजे से प्रकाश झिलमिला रहा था। उसे उसी ओर चलने के लिये कहा गया।

लैनी ने मन ही मन यह निश्चय कर लिया था कि उससे जो कहा जायगा वह वही करेगा और अत्याचारियों को जान बूझ कर उत्तेजित न करेगा। फल-स्वरूप वह लड़खड़ाते पैरों से दरवाजे की ओर चला। आगन्तुक उसे सहारा दे रहा था। उसने देखा कि यह व्यक्ति कोई मध्यवयस्क रूसी सैनिक है। वह चमड़े की जैकेट पहने हुए था और उसके सिर पर हरे रंग की एक टोपी थी। लैनी ने सोचा कि कदाचित वह इस कालकोठरी का जेलर होगा। किन्तु उसे इस बात में कोई विशेष दिलचस्पी न थी कि उसे कहां ले जाया जा रहा है। उसने यह सोच लिया था कि उससे जो कहा जायगा वही करेगा; कोई प्रतिवाद न करेगा।

उस व्यक्ति ने कोठरी का दरवाज़ा बन्द कर दिया और टार्च के प्रकाश के सहारे लैनी को एक गलियारे से ले चला। थोड़ी ही देर में दोनों सीढ़ियों के पास पहुंचे। इस अवस्था में सीढ़ियां पार करना लैनी के लिये एकदम असम्भव था। किन्तु वह सैनिक इस कठिनाई को समझता था। वह उसे धीरे धीरे एक एक सीढ़ी पार करता हुआ चलने लगा।

लैनी ने मन ही मन अनुमान लगाया कि शायद वह 'प्रेन्जलाअरवर्ग' के जेल में है। यह जेल पूर्वी जर्मनी में था और रूसियों ने इसे अपने अधिकार में ले लिया था। उसने इसे एक बार बाहर से देखा था। वह एक किले की भाँति प्रतीत होता था और इसके अन्दर होनेवाले अत्याचार की अनेकों किंवदन्तियां उसने सुन रखी थीं। किन्तु इस समय ईश्वर से प्रार्थना करने के अतिरिक्त उसके पास अन्य कोई उपाय न था। वह मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था कि वह उसे इन अत्याचारों को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। आधुनिक संसार में अधिकांश व्यक्ति प्रार्थना करने की कला को भूल गए हैं। प्रार्थना का विचार ही उन्हें बड़ा विचित्र सा लगता है। वे कालेज में पढ़ाये जानेवाले मनोविज्ञान का ही अधिक भरोसा रखते हैं। उनके लिये 'आत्म-संवेदन' पर विश्वास करना ईश्वर पर विश्वास करने की अपेक्षा सरल हो गया है।

पूर्वी जर्मनी से भाग कर आने वाले बहुत से शरणार्थियों से लैनी को मालूम हुआ था कि रूसी जेलों में काम करने वाले कर्मचारी बहुधा सहृदय व्यक्ति होते हैं और वे कैदियों पर अत्याचार को पसंद नहीं करते। फलस्वरूप उसने मन ही मन कल्पना की कि उसके साथ चलने वाला यह कर्मचारी भी सहृदय व्यक्ति है। उसने रूसी भाषा में उसे अपना धन्यवाद जनाया। गलियारे के दूसरे छोर से दो अन्य व्यक्ति आते हुए दिखाई दिये। शायद कोई वार्डर अपने कैदी के साथ आ रहा था। अचानक चाबुक मारने का सा तीव्र शब्द सुनाई दिया। पुराने जमाने में जब कोचवान अपनी बग्घी के शिथिल घोड़े के अन्दर उत्साह का संचार करना चाहता था तो इसी प्रकार चाबुक मारता था। ज्यों ही लैनी के वार्डर ने इन व्यक्तियों को आते हुए देखा त्यों ही उसने लैनी को एक दीवार के सहारे खड़ा करके उसकी आंखें कस कर मूंद दीं। लैनी समझ गया। उसे जेल के अन्य कैदियों को देखने की अनुमति न थी। यदि वह अपना सिर हिला डुला कर उस कैदी को देखने का प्रयत्न करता तो निश्चय ही उसके सिर पर हथौड़े का भयानक प्रहार होता। फलस्वरूप वह अचल मुद्रा में चुपचाप खड़ा रहा। थोड़ी ही देर में वे लोग आगे निकल गये और लैनी का वार्डर लैनी को लेकर अपने गंतव्य स्थान की ओर अग्रसर हुआ।

रास्ते में एक बार फिर सीढ़ियां मिली। एक दूसरा गलियारा पार करना पड़ा। रास्ते में तीन बार लैनी को चाबुक का वह कठोर शब्द सुनाई दिया। अब चाबुक के इस शब्द के सम्बन्ध में लैनी के मन में एक प्रकार की भावना-ग्रन्थि पड़ गई थी जिसे रूसी वैज्ञानिक पावलोव ने 'कन्डीशन्ड रेफ्लेक्स' के नाम से प्रसिद्ध कर दिया है। ज्यों ही चाबुक का शब्द सुनाई पड़ता त्यों ही वह दीवार की ओर घूम कर अपनी आंखें बन्द कर लेता।

थोड़ी ही देर में लैनी का वार्डर एक दरवाजे के सामने आकर रुक गया। लैनी ने देखा कि दरवाजे पर 'नम्बर ८१३' की तख्ती लगी हुई है। वार्डर ने दरवाजा खोल कर भीतर प्रवेश किया। यह दस फीट लम्बा और इतना ही चौड़ा एक कमरा था। एक खिड़की थी जिसमें लोहे के मोटे मोटे छड़ लगे हुए थे। कमरे के बीच में एक मेज रखा हुआ था और मेज के पीछे कोई कुर्सी

बैठा हुआ था। अधिकारी का ऊपरी भाग ही दिखाई देता था, शेष मेज़ से ढक गया था। वह इस प्रकार निर्विकार भाव से बैठा हुआ था मानों मोम का पुतला हो। मेज़ के इस ओर एक छोटा सा स्टूल रखा हुआ था। वार्डर ने लैनी को इस स्टूल पर बैठा दिया। इसके बाद हरी टोपी वाले वार्डर ने अधिकारी को सलाम ठोकी और बिना एक शब्द कहे दरवाजा बन्द करके चला गया।

लैनी समझ गया कि वह किस स्थान में लाया गया है। उसने शरणार्थियों से इसके सम्बन्ध में सब कुछ सुन रखा था। यह भयानक प्रश्नोत्तर की पूर्वभूमिका थी। इस प्रणाली का आविष्कार रूसी वैज्ञानिकों द्वारा हुआ था और दो पीढ़ियों पर इसके भांति भांति के प्रयोग होने के बाद अब इसे एक पूर्ण विज्ञान का गौरव प्राप्त हो गया था। लैनी समझ गया कि उससे कुछ 'स्वीकार' कराने का प्रयत्न होगा। किन्तु क्या ?



अध्याय २६

● ईश्वर का अवसर ●

(१)

लैनी इतना थक गया था कि उसकी आंखों के सामने सब कुछ धुंधला धुंधला सा प्रतीत हो रहा था। किन्तु उसने प्रयत्न करके अपना ध्यान सामने बैठी हुई मनुष्य-मूर्ति पर केन्द्रित किया। वह एक युवक रूसी अधिकारी था। उसकी आयु तीस वर्ष के लगभग थी। इसका यह अर्थ था कि वह रूसी राज्य-क्रान्ति के उपरान्त पैदा हुआ था और इसके पूर्व के संसार तथा मानव समाज के सम्बन्ध में उसकी कोई जानकारी न थी। वह इस नयी बोलशेविक शासन सत्ता के सिद्धान्तों तथा चुटकुलों को ही जानता था। सम्भव है वह हृदय से कोई बुरा व्यक्ति न हो। किन्तु लैनी जानता था कि सोवियत अधिकारी की व्यक्तिगत अच्छाई या बुराई कोई विशेष महत्व नहीं रखती।

अधिकारी ने अपनी मेज पर लगे हुए एक बटन को दबाया। दूसरे ही क्षण बड़ा तीक्ष्ण प्रकाश लैनी की आंखों को बींधने सा लगा। मेज़ पर एक गोलाकार डण्डे के सहारे सहारे बिजली के कई बल्ब लगे हुए थे। यह असह्य प्रकाश उन बल्बों से ही निकल रहा था। इतने लम्बे समय तक घटाटोप अन्धकार में रहने वाले व्यक्ति के लिये अचानक इस तीव्र प्रकाश को सहन कर लेना असम्भव सा था ; लैनी ने तुरन्त अपने दोनों हाथों से आंखों को ढक लिया। कोई आपत्ति न की गयी। वह अपने हाथों को तब तक उठाये रखने के लिये स्वतन्त्र था जब तक कि वे थक न जायं।

लैनी ने इस प्रकाश के सम्बन्ध में सुन रखा था। वह जानता था कि प्रश्नोत्तर के समय यह प्रकाश उसकी आंखों के सामने असह्य रूप में चमकता रहेगा। वह यह भी जानता था कि सम्भवतः यह क्रम निरन्तर चलता रहेगा। समय समय पर प्रश्नकर्त्ता बदलते रहेंगे किन्तु प्रकाश में किसी प्रकार का परिवर्तन न होने पाएगा। वह यह भी जानता था कि कुछ ही समय बाद

वह थक जायगा किन्तु प्रश्नकर्त्ताओं के उत्साह में किसी प्रकार की शिथिलता न आएगी।

अधिकारी ने प्रश्न किया, "तुम्हारा नाम ?" उसने जर्मन भाषा में ही प्रश्न किया था। लैनी के मन में यह विचार आया कि इन लोगों ने उसे 'हर फ्रोह-लिच' के रूप में ही गिरफ्तार किया है। सम्भवतः वे 'रिआस' पर उसके भाषणों से असन्तुष्ट हो गये हैं।

उसने जर्मन भाषा में ही उत्तर दिया, "मेरा नाम है लैनिन्ग प्रेस्काट बड।" इसके बाद अधिकारी ने लैनी की आयु पूछी। इस बार भी लैनी ने जर्मन में ही उत्तर दिया। उसे यह समझने में देर न लगी कि अधिकारी को इस भाषा का अधिक ज्ञान नहीं है। उसका उच्चारण भी अशुद्ध था। किन्तु लैनी ने इसकी कोई चर्चा न की। वह जानबूझ कर झगड़ा मोल न लेना चाहता था।

रूसी अधिकारी ने अब लैनी को 'अभियुक्त बड' कहना शुरू दिया। यह सोवियत कानून के अनुरूप ही था। यह कानून क्रांति के आदर्शवादी दिनों में बना था। क्रांति के उस ऊषाकाल में लैनी भी पेट्रोग्राड गया था; उसने भी समानता, मित्रता और स्वतन्त्रता की आदर्शवादी चर्चा सुनी थी। उससे कहा गया था कि नये समाज में न्यायसंगत कानून बनेंगे—आश्चर्यजनक कानून! किन्तु बाद में जो कुछ हुआ उसने न्याय की सम्पूर्ण परिकल्पना को ही बदल दिया। फिर भी यद्यपि कानून की मूल आत्मा की हत्या कर दी गयी थी तथापि शब्द-शृङ्खला ज्यों की त्यों रखी गयी थी। इसीलिये रूसी अधिकारी ने लैनी को 'षड़यन्त्रकारी बड' 'बदमाश बड' अथवा 'फासिस्ट बड' न कह कर 'अभियुक्त बड' ही कहा और लैनी ने भी प्रश्नकर्त्ता को 'अत्याचारी अधिकारी' न कह कर 'महाशय' का शिष्ट सम्बोधन किया।

(२)

प्रश्नोत्तर का क्रम चलता रहा। लैनी ने कहा कि वह अमेरिका एक नागरिक है। उसने यह भी कहा कि वह बलात रूसी क्षेत्र में ले आया गया है और इसलिये वह प्रश्नोत्तर की इस कार्यवाही के विरुद्ध प्रतिवाद का अधिकार रखता है। अधिकारी ने बिना एक शब्द कहे सामने पड़े हुए कागज़ पर यह

उत्तर लिख लिया। किन्तु लैनी उस तीव्र प्रकाश के कारण कागज़ की ओर देख न सका।

"तुम पश्चिमी बर्लिन में क्या कर रहे थे?"

"इस भयानक चमचमाहट से मेरी आंखों को बड़ा कष्ट हो रहा है, महाशय।" लैनी ने अत्यन्त नम्र स्वर में कहा, "इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। कमरे में पर्याप्त प्रकाश है और हम एक दूसरे को आसानी के साथ देख सकते हैं। कृपया इस चमचमाहट को बन्द कर दीजिये।"

"इस प्रकाश के साथ तुम्हारा कोई लेनदेन नहीं है, अभियुक्त बड।"

"इस प्रकाश के कारण न तो मैं ठीक से सोच ही सकता हूँ न आपके प्रश्नों का समुचित उत्तर दे सकता हूँ। कृपया इसे बन्द कर दीजिये।"

"नहीं, यह प्रकाश यों ही रहेगा।"

"महाशय, मैं सोवियत कानून जानता हूँ। मुझे यह बात मालूम है कि आप किसी कैदी को मार नहीं सकते।"

"क्या मैंने तुम्हें मारा है? अभियुक्त बड?"

"आप मुझे मार रहे हैं, महाशय। मुट्ठी से मारना ही मारना नहीं है। यह प्रकाश मुझ पर जैसा कड़ा प्रहार कर रहा है वैसा प्रहार आप की मुट्ठी भी नहीं कर सकती। मैं नहीं जानता की प्रकाश के सम्बन्ध में आपकी वैज्ञानिक धारणाएं क्या हैं किन्तु सारे वैज्ञानिक एक स्वर से यह कहते हैं कि प्रकाश शक्ति है। आप इस शक्ति का मुझ पर निर्दय प्रयोग कर रहे हैं।"

"प्रकाश इसी प्रकार रखा जायगा, अभियुक्त बड।"

"महाशय, मुझे आप से यह कहते हुए दुःख हो रहा है कि जब तक आप यह प्रकाश बन्द न कर देंगे मैं आप के प्रश्नों का उत्तर न दूंगा।"

"तुम्हें उत्तर देने के लिये बाध्य कर दिया जायगा।"

"महाशय, मैं फिर निवेदन करता हूँ कि जब तक आप यह प्रकाश बन्द न कर देंगे तब तक मैं आप के प्रश्नों का उत्तर न दूंगा। प्रकाश बन्द होते ही मैं आप के प्रश्नों का उत्तर देने लगूंगा। किन्तु इस अत्याचार के सम्मुख झुकना मुझे स्वीकार नहीं है।"

"ऐसा कभी नहीं हुआ, अभियुक्त बड !"

"महाशय, मैंने सोवियत कानून का अध्ययन किया है और मैं जानता हूं कि मैं अपने अधिकारों के अंदर ही हूँ।"

सोवियत अधिकारी के लिए इतना ही पर्याप्त था। क्रोध से चीत्कार करते हुए उसने कहा, "फासिस्ट कुत्ता !"

"महाशय, आप जानते हैं कि सोवियत कानून व्यवस्था के अनुसार आपको यह अधिकार नहीं है कि आप किसी अभियुक्त को गाली दें अथवा आपत्तिजनक भाषा का व्यवहार करें।

"प्रतिक्रियावादी डाकू ! मैं तेरी हड्डी पसली तोड़ कर रख दूंगा।"

"महाशय, आपको सोवियत कानून का पालन करना चाहिए।"

अधिकारी क्षण भर तक चुप बैठा रहा। इसके बाद उसने अपना स्वर बदल कर उसे यथासम्भव मुलायम बनाते हुए कहा, "अभियुक्त बड, तुम्हें मेरी स्थिति समझनी चाहिए। मुझे यह आदेश दिया गया है कि मैं प्रकाश को इसी प्रकार रखूं।"

"महाशय, मैं अपने हाथ अन्तहीन रूप में अपनी आंखों के सामने नहीं रख सकता। और इस अवस्था में भी यह भयानक प्रकाश हाथों को भेद कर मेरी आंखों को पीड़ा पहुँचा रहा है। यह स्पष्ट है कि इस प्रकार की स्थित में मैं न सोच सकता हूँ, न आपके प्रश्नों को ठीक से समझ सकता हूँ। मैं इस बात पर विश्वास नहीं कर सकता कि महान सोवियत सरकार यह चाहती है कि मैं बिना सोचे समझे आपके प्रश्नों के उत्तर दे दूं।"

"अभियुक्त बड, इस मामले में मैं कुछ नहीं कर सकता। मैं बड़ों का आज्ञा-पालन मात्र कर रहा हूं।"

'किन्तु महाशय, जिस व्यक्ति ने आपको ऐसा आदेश दिया है वह सोवियत कानून का उल्लन्घन कर रहा है।"

"क्या तुम यह कहना चाहते हो कि तुम हम लोगों की अपेक्षा सोवियत कानून को अधिक समझते हो ?"

"महाशय, मैं पांच बार सोवियत रूस की यात्रा कर चुका हूँ। लेनिन के

गौरवशाली युग में भी मैं एकबार यहां आ चुका हूं। इसके अतिरिक्त मैंने आप की पुस्तकों तथा समाज व्यवस्था का भी गहरा अध्ययन किया है—कानून का भी।"

अधिकारी पर इन शब्दों का जादू सा असर पड़ा। लैनी की बात कुछ अतिशयोक्तिपूर्ण थी, इसमें कोई संदेह नहीं। उसने सोवियत रूस के सम्बन्ध में काफी जानकारी प्राप्त कर रखी थी किन्तु यह जानकारी उसे मुख्यतः शरणार्थियों से प्राप्त हुई थी। 'रिआस' में काम करने वाले कुछ जर्मन शरणार्थियों ने भी उसे बहुत सी बातें बतायी थीं। ये लोग स्वयं प्रश्नोत्तर की इस अग्नि-परीक्षा से गुजर कर आए थे। अधिकांश अभियुक्त प्रश्नकर्त्ता के सामने आते ही घबरा उठते थे। इसके अतिरिक्त उन्हें कानूनों का भी कोई ज्ञान न रहता था। यह ठीक है कि अत्याचारी के सामने अधिकारों की चर्चा बहुधा व्यर्थ ही प्रमाणित होती है। किन्तु कभी कभी अपवाद उपस्थित होने की सम्भावना तो रहती ही है।

(३)

लैनी के अवचेतन मस्तिष्क में यह विचार बहुत जम कर बैठ गया था कि ईश्वर उसकी सहायता कर रहा है। और उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो ईश्वर उससे कह रहा हो कि उसके सामने जो काष्ठवत रूसी अधिकारी बैठा हुआ है उसके साथ वह दया और नम्रता का व्यवहार करे। वह बेचारा ठीक वही कर रहा था जिसका आदेश उसे प्राप्त हुआ था। सम्भव है उसका मस्तिष्क इतना विकृत हो गया हो कि वह सचमुच यह विश्वास करने लगा हो कि वह अपने कैदियों के साथ जो व्यवहार करता है वह उचित और न्यायसंगत है। जो भी हो, इस समय इस रूसी अधिकारी की मनोवृत्ति कुछ दूसरे ढंग की हो गयी थी। वह आतंकित सा हो उठा था। वह लैनी से वे बातें 'स्वीकार' करा लेने के लिये उत्सुक था जिन्हे 'स्वीकार' करा लेने का आदेश उसे मिला था। इस कार्य में सफल होने का अर्थ था विजय, असफल होने का अर्थ था सर्वनाश! फलस्वरूप उसने लैनी के साथ कुछ नर्मी दिखा कर अपना इष्ट साधन करने का निश्चय किया।

इधर लैनी ने उस पर अपना प्रभाव डालने के लिये एक छोटी सी वक्तृता

दे देना आवश्यक समझा। 'मैं एक सभ्य और सुसंस्कृत मनुष्य हूं, महाशय। और मैं जानता हूं कि आप भी एक सभ्य और सुसंस्कृत व्यक्ति हैं। अन्यथा आप इतनी परिमार्जित जर्मन न बोल पाते।' लैनी जानता था कि बोलशेविक लोगों के लिये यह 'संस्कृति' शब्द बड़ा आकर्षक होता है। प्रत्येक बोलशेविक यह चाहता है कि उसे एक 'सुसंस्कृत' व्यक्ति समझा जाय। वे सुसंस्कृत व्यक्तियों को मन ही मन आदर की दृष्टि से देखते थे, भले ही ऊपर से उसे 'फासिस्ट कुत्ता' कहते रहें।

लैनी कहता गया :

"मैं आपको विश्वास दिलाता हूं, महाशय, कि यदि हम लोग एक दूसरे के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण लेंगे तो हम दोनों ही लाभान्वित होंगे। मुझे आपसे कुछ भी नहीं छिपाना है। मुझे यह देख कर प्रसन्नता हो रही है कि आप अपने कर्त्तव्य के प्रति इतने जागरूक हैं। मैं आपके साथ हर प्रकार का सहयोग देने के लिये तैयार हूँ। आप जो जानना चाहेंगे मैं आपको अवश्य बता-ऊंगा। किन्तु क्या आप यह नहीं देख सकते कि इस प्रकार की शारीरिक यंत्रणा के रहते हुए मेरे लिये कुछ सोचना समझना एकदम असम्भव है? हम लोग मित्रों की भांति बातें क्यों न करें? मैं आपके सारे प्रश्नों का उत्तर देने के लिए तयार हूं।"

"मैं जानता हूँ, अभियुक्त बड, कि तुम उन प्रश्नों का उत्तर न देना चाहोगे जो मैं तुमसे पूछूँगा।"

"किन्तु आपने पहले से ही यह धारणा कैसे बना ली, महाशय? यदि मैं आपके प्रश्नों का उत्तर न दूं तो आप मुझे जितना चाहें सता लीजियेगा। आप मुझे एक अवसर तो दीजिये।"

दैवी सहायता के फलस्वरूप यह चमत्कार भी सम्भव हो गया। अधिकारी ने बटन दबा दी। प्रकाश बुझ गया। लैनी के जैसे प्राण लौट आये। उसने दो एक बार अपनी आंखें मलीं, इसके बाद नीली आंखों और भूरे रङ्ग वाले इस रूसी अधिकारी की ओर देखा। उसके कंधे चौड़े थे और चेहरा मंगोलियन लोगों की भांति उभरा हुआ सा था। वह कुशाग्र बुद्धि का न प्रतीत होता था। किन्तु

साथ ही साथ वह निर्दय भी न प्रतीत होता था। लैनी के हृदय में साहस का संचार हुआ।

"धन्यवाद, महाशय!" और मन ही मन उसने सोचा कि ईश्वर मेरी सहायता कर रहा है।

"अभियुक्त बड," अधिकारी ने गम्भीर स्वर में प्रश्न किया, "तुम हाल ही में पोलैण्ड गये थे?"

"गया था, महाशय।" लैनी ने उत्तर दिया।

"तुमने उस यात्रा के लिये सोवियत सरकार से अनुमति-पत्र लिया था?"

"लिया था, महाशय।"

"उस यात्रा का क्या उद्देश्य था?"

"मैं स्टूबेनडर्फ जाना चाहता था। पुराने जमाने में यह नगर अपर साइलेसिया में पड़ता था। वहां मेरे कुछ मित्र थे। जेनरल स्टूबेनडर्फ भी मेरे मित्र थे। उनसे मैं कुछ प्राचीन चित्र खरीदना चाहता था।"

"क्या तुम यह आशा करते हो कि मैं इस बात पर विश्वास कर लूंगा कि तुमने यह लम्बी और खतरनाक यात्रा केवल कुछ पुराने चित्र प्राप्त करने के लिए ही की थी?"

"महाशय, एक अमरीकी के लिए यह यात्रा न खतरनाक थी, न लम्बी। मैं स्वयं अपने विशाल देश का मोटर द्वारा कई बार भ्रमण कर चुका हूं। मेरे देश के दोनों किनारों के बीच तीन हजार मील का अन्तर है। पोलैण्ड की यात्रा करते समय मुझे किसी प्रकार का खतरा न दिखाई दिया था। मैं समझता था कि मैं एक मित्र-देश की यात्रा कर रहा हूं जो युद्ध के समय हृदय से हम लोगों के साथ था।"

"क्या तुम्हें चित्र कला के प्रति इतना मोह है?"

"महाशय, मैं इन कला-चित्रों द्वारा ही जीविकोपार्जन करता हूं। मैं इन कला-चित्रों का पता लगाने के लिये घूमता फिरता हूँ। जब कभी कोई अच्छा चित्र मुझे मिल जाता है मैं अपने ग्राहकों को इसकी सूचना दे देता हूं। यदि सौदा पट जाता है तो मुझे इस पर दस प्रतिशत कमीशन प्राप्त होता है

मैं पिछले पचीस वर्षों से यही कार्य कर रहा हूँ। इस बार भी जर्मनी आने का यही प्रयोजन था। मैंने कुछ चित्र नूरेनबर्ग में खरीदे थे और कुछ फ्रैन्कफर्ट में। मैं आप को इन चित्रों के मूल्य तथा ग्राहकों आदि के सम्बन्ध में पूरा पूरा विवरण दे सकता हूं।"

अधिकारी ने उपेक्षा के भाव से कहा, "इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। हम लोग जानते हैं कि प्रत्येक जासूस किसी न किसी बहाने से ही आता है। तुम इस बात को तो स्वीकार करते हो कि तुम एक जासूस हो?"

"महाशय, मैं इस बात को स्वीकार नहीं करता। हां पिछली बार नाजियों के विरुद्ध मैंने कुछ जासूसी की थी और उन्हें सत्ताच्युत करने में मेरा भी थोड़ा बहुत हाथ रहा था। किन्तु सोवियत यूनियन के विरुद्ध मैंने कभी कोई जासूसी नहीं की।"

"फिर भी तुम बर्लिन में रेडियो द्वारा सोवियत सरकार के विरुद्ध गाली गलौज करते रहे?"

"महाशय, हम लोग राजनैतिक विवाद में न पड़ें तो अच्छा है। राजनैतिक प्रश्नों पर हम दोनों के विचार भिन्न हो सकते हैं। मेरे देश में प्रत्येक व्यक्ति को अपने विचार व्यक्त करने की पूर्ण स्वतन्त्रता रहती है। यही समझ कर मैंने बर्लिन में अपने विचारों को स्वतन्त्र रूप में व्यक्त किया था। किन्तु रेडियो पर भाषण देना जासूसी के ठीक विपरीत है। इन दोनों का एक दूसरे के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। यदि मैं सोवियत सरकार के विरुद्ध जासूसी करना चाहता तो मै यह बहाना करने का प्रयत्न करता कि मैं सोवियत सरकार की रीति-नीति के साथ पूर्णतया सहमत हूँ। किन्तु मैंने तो खुलेआम यह घोषणा की थी कि मैं सोवियत सरकार द्वारा बर्लिन के घेरे का समर्थन नहीं कर सकता। क्या आप मुझे अपना मित्र समझ कर यह बताने की कृपा करेंगे कि मेरे विरुद्ध शंका का क्या कारण है?"

"मैं यहां प्रश्न पूछने के लिये बैठा हूँ; उत्तर देने के लिये नहीं।" रूसी अधिकारी ने कठोर स्वर में उत्तर दिया। वह उतना मूर्ख न था जितना कि लैनी ने समझ रखा था।

(५)

प्रश्नोत्तर का क्रम अत्यन्त धीमी गति से चल रहा था। जब लैनी कोई उत्तर देता अधिकारी उसे लिखने लगता। वह लिखता बहुत धीरे धीरे था। फलस्वरूप लैनी को अगले प्रश्न तथा अपने उत्तर कां अनुमान लगाने के लिये कुछ समय मिल जाता था। वह मन ही मन पर्सीफाल का यह वाक्य दोहरा रहा था कि 'ईश्वर मेरी सहायता कर रहा है'। वह उसे 'आत्म संवेदन' नहीं बल्कि अपने गहनतर व्यक्तित्व के अन्दर प्रतिष्ठित एक ध्रुव सत्य के रूप में समझ रहा था। यहां यह शंका उठ सकती थी कि ईश्वर रूपी शक्ति सामने बैठे हुए रूसी अधिकारी के अन्दर भी क्रियाशील है अथवा नहीं। किन्तु इस समय लैनी को इस प्रश्न पर विचार करने का अवकाश न था।

"क्या तुम स्टूबेनडर्फ में किसी विशेष व्यक्ति से मिलने के लिये गए थे?"

"मैं वहां कई व्यक्तियों से मिलने के लिये गया था, महाशय। मैं पिछले जमाने में कई बार स्टूबेनडर्फ की यात्रा कर चुका था। जेनरल ग्राफ के साथ मेरी पुरानी मित्रता थी। कर्ट मेसनर भी मेरा पुराना मित्र था। जिस समय मैं स्टूबेनडर्फ की यात्रा के लिये निकला था उस समय मुझे इस बात का निश्चय न था कि इन लोगों के साथ मेरी मुलाकात हो जायगी। किन्तु मुझे यह आशा थी कि इनका कुछ न कुछ पता सुराग अवश्य लग जायगा।"

"क्या तुम्हें सफलता मिली?"

"मुझे यह पता लगा कि जेनरल ग्राफ इस समय टेगर्नसी में रह रहे हैं और कर्ट मेसनर हार्ज पर्वतमाला पर। बाद में मैं इन दोनों सज्जनों से मिला था।"

"यह कर्ट मेसनर वही व्यक्ति है जिसकी बवेरिया में हत्या कर दी गयी थी?"

"वही व्यक्ति है, महाशय।"

"और तुमने उसके साथ विश्वासघात करके अमरीकी सेना विभाग को उसका भेद बता दिया?"

"नहीं, महाशय। मैंने उसके साथ कोई विश्वासघात नहीं किया। अमरीकी सेना विभाग के अधिकारियों ने स्वयं मुझसे कहा था कि वे कर्ट की गुप्त क्रियाशीलता के सम्बन्ध में सब कुछ जानते हैं। कर्ट छिपे छिपे नाजीवाद को

पुनर्जीवित करने का प्रयत्न कर रहा था। यह बात मुझे अच्छी न लगी। मैं नाज़ीवाद को अपने शत्रु के रूप में देखता था और हर सम्भव उपाय द्वारा उसे दबाने के लिये प्रयत्नशील रहता था। फलस्वरूप मैं कर्ट मेसनर के पास गया और मैंने उसे बताया कि अमरीकी सेना विभाग को उसके सारे भेदों की जानकारी प्राप्त हो गयी है। मैंने उसे समझा बुझाकर ठीक रास्ते पर लाने का प्रयत्न किया। वह राज़ी हो गया और नाज़ी षड्यन्त्रकारियों का साथ छोड़कर अमरीकी सरकार की ओर आ गया। किन्तु बाद में शायद उसके सहयोगियों ने उसकी हत्या कर दी—कम से कम मुझे ऐसा ही बताया गया है।

"कर्ट मेसनर ने अमरीकियों को यह बता दिया था कि किसी स्थान विशेष में बहुत सा सोना छिपा हुआ है?"

"हां, यह बात सत्य है।"

"तुम्हें भी उस सोने का एक भाग मिला था?"

"नहीं, महाशय। यह बात सत्य नहीं है। मैंने कभी इसकी कल्पना तक न की थी। मैं आपको बता ही चुका हूं कि मैं किस प्रकार अपनी जीविका चलाता हूं। मैं जीविका के लिए गुप्त खजानों की खोज में नहीं भटकता फिरता।"

"क्या कर्ट ने तुम्हें यह भी बताया था कि और कहां कहां यह सोना छिपा हुआ है?"

"नहीं महाशय। यदि उसने बताया होता तो मैं तुरन्त अमरीकी अधिकारियों को बता देता और वे उसका पता लगा लेते। गुप्त खजानों से जो व्यक्तिगत सम्पत्ति बरामद होती है उसे अमरीकी सरकार स्वयं नहीं रख लेती बल्कि जिसकी होती है उसे वापस लौटा देती है। जो सोना नाज़ी सरकार का था उसे भी उन देशों को लौटा देने की व्यवस्था की जाती है जिनसे वह लूटा गया था। मैं समझता हूं कि सोवियत सरकारवाला भाग अब तक उसे वापस मिल गया होगा।"

"अभियुक्त बड! तुम्हें यह समझ लेना चाहिए कि तुम मुझे जो उत्तर दे रहे हो उन्हें मैं लिखता जा रहा हूं। तुमने मुझे वचन दिया है कि तुम सत्य बात

ही बताओगे। यदि कोई बात असत्य प्रमाणित हुई तो तुम्हें बड़ा भयानक दण्ड भोगना पड़ेगा।"

"मैं आपको सत्य बात ही बता रहा हूँ, महशय। कुछ सोवियत विरोधी लोग यह प्रचार करते रहते हैं कि प्रश्नोत्तर के समय सोवियत अधिकारी सत्य बात नहीं सुनना चाहते बल्कि अभियुक्त के मुंह से अपनी बात कहलाना चाहते हैं। किन्तु मेरा विश्वास है कि आप उन अधिकारियों जैसे नहीं हैं।"

"अभियुक्त बड ! मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ।" अधिकारी ने कहा।

सतर्क लैनी ने इतनी ही देर में यह अनुमान लगा लिया कि सोवियत अधिकारी नाज़ी गुप्त खजानों का पता लगाने के लिये उत्सुक हैं और उसको इसी-लिये उड़ाकर अपने क्षेत्र में ले आए हैं। फलस्वरूप मन ही मन उसने इस प्रश्न पर काफी लम्बे समय तक शाब्दिक दांव पेंच करते रहने का निश्चय कर लिया। यदि नाजी गुप्त खजानोंके सम्बन्ध में उसे सचमुच कोई जानकारी होती तो वह अपने प्राण बचाने के लिये निश्चय ही इसे सोवियत अधिकारियों को दे देता। किन्तु उसके पास कोई जानकारी न थी। वह सोच रहा था कि कदाचित इस अनभिज्ञता के कारण उसे अपने प्राणों से हाथ धोना पड़े।

(५)

दूसरा प्रश्न आया : "क्या तुम कर्ट मेसनर के परिवार से परिचित थे ?"

"मैं इस परिवार से भलीभांति परिचित था, महाशय,। मैं कभी कभी स्टूबेनडर्फ में उनसे मिलने के लिये चला जाता था। कर्ट की पत्नी एल्सा को मैं भलीभांति जानता था। उसके आठ बच्चे थे। सभी बच्चे बड़े स्वस्थ और सुन्दर थे और मैं जब वहां जाता था इनके लिये कोई न कोई उपहार अवश्य ले जाता था।"

"पिछली बार जब तुम स्टूबेनडर्फ गए थे तब क्या कर्ट के परिवार के साथ तुम्हारी मुलाकात हुई थी ?"

"नहीं उस समय वे स्टूबेनडर्फ छोड़कर बाहर चले गए थे। उस समय वे हार्ज पर्वतमाला पर चले गए थे। वहां जाकर मैं उनसे मिला था। उस समय कर्ट मुझसे बहुत ही क्रुद्ध था।"

"इन लोगों के साथ और कहीं भी तुम्हारी मुलाकात हुई थी ?"

"हाँ महाशय। कर्ट के बड़े पुत्र फ्रित्ज के साथ पश्चिमी बर्लिन में मेरी मुलाकात हुई थी। वह पूर्वी बर्लिन में पढ़ता था। मुझसे मिलने के लिये पश्चिमी बर्लिन चला आया था। उसने मुझसे कहा था कि वह अपने पिता के नाजी विचारों से बड़ा असन्तुष्ट है। उसने मुझसे कहा था कि मैं उसके पिता को समझा बुझाकर ठीक रास्ते पर ले आने का प्रयत्न करूं। मैंने उसे आश्वासन दिया था कि मैं कर्ट से मिल कर इस सम्बन्ध में बातचीत करूंगा। मैं कर्ट से मिला भी था।"

"तुम्हारे प्रयत्नों का क्या फल निकला ?"

"उसने मुझे आश्वासन दिया था कि वह अपनी नाज़ी क्रियाशीलता बन्द कर देगा। किन्तु उसने अपने वचन का पालन न किया।"

"उस समय भी उसके पास सोने की वह अपार राशि थी ?"

"नहीं। मेरा विश्वास है कि यह सोना उसे बाद में प्राप्त हुआ था।"

"तुम्हें इसका पता कैसे चला ?"

"अमरीकी अधिकारियां को यह बात ज्ञात हो गयी थी और वे लोग उसे गिरफ्तार करने जा रहे थे। मैंने उनसे अनुरोध किया कि मुझे एक बार कर्ट से मिलकर उसे समझाने बुझाने का प्रयत्न करने की अनुमति दी जाय। मुझे अनुमति मिल गयी और मैं उसके पास आ गया। उसी समय बातचीत के तारतम्य में उसने बताया कि उसके मकान की नींव में बहुत सा सोना छिपा पड़ा है।"

"क्या तुम्हें पूरा पूरा विश्वास है कि उसने तुम्हें अन्य किसी खजाने का सूत्र नहीं दिया ?"

"नहीं, उसने मुझसे अन्य किसी खजाने की चर्चा नहीं की।"

"क्या उसने अमरीकी सेना-विभाग को अन्य किसी खजाने का सूत्र दिया था ?"

"इस सम्बन्ध में मैं कुछ नहीं जानता। न तो मैंने सेना-विभाग से इस सम्बन्ध में कुछ पूछा था न उन्होंने मुझे अपनी ओर से कुछ बताया था। आप

तो जानते ही हैं, मैं अमेरिका में रहता हूं और बर्लिन यदाकदा ही आता हूं। मैं बर्लिन आता भी हूँ तो अपने कला-चित्रों के व्यापार के प्रसंग में।"

"तुम वही व्यक्ति तो हो जो रेडियो पर हर फ्रोहलिच के रूप में भाषण देता है?"

"हां महाशय। मैं वही व्यक्ति हूं।"

"क्या तुम सोवियत यूनियन के शत्रु हो?"

"मैं इस बात को एकदम अस्वीकार करता हूं कि मैं सोवियत यूनियन के प्रति किसी भी प्रकार की शत्रुता रखता हूँ। मैं केवल इसकी कुछ नीतियों से असंन्तुष्ट हूँ।"

"ये नीतियां कौन सी हैं?"

"महाशय, हम लोग राजनैतिक वाद विवाद में न पड़ें तो अच्छा है। मुझे विश्वास है कि मैंने 'रिआस' पर जितने भी भाषण दिये हैं उन्हें आपके रेडियो-बर्लिन ने लिपिबद्ध कर रखे हैं। मैं एक अमरीकी हूं और मैं उन सारी बातों पर विश्वास करता हूं जिनपर मेरे देशवासियों को विश्वास है। अन्य अमरीकियों की भांति मैं भी गणतन्त्र पर विश्वास रखता हूं।"

"तुमने सोवियत सरकार के प्रति गाली गलौज की है।"

"मैंने उन सभी सरकारों की निन्दा की है जो जनता पर आधारित न होकर तानाशाही पर आधारित हैं।"

"तब क्या तुम्हारा यह अभिप्राय था कि सोवियत रूस की जनता को उसकी वर्त्तमान सरकार पसंद नहीं है?"

"जहां तक मैं समझता हूं कि सोवियत रूस की जनता को इस प्रश्न पर अपने विचार व्यक्त करने का कोई अवसर नहीं मिला है। इसीलिये मैं अथवा कोई भी अन्य व्यक्ति यह अनुमान नहीं लगा सकता कि सोवियत रूस की जनता अपनी सरकार के सम्बन्ध में क्या विचार रखती है। किन्तु महाशय, जैसा कि मैं आपसे अनुरोध कर चुका हूं हम लोगों को राजनैतिक वादविवाद में न पड़ना चाहिये। हम दोनों का जन्म तथा लालन पालन भिन्न भिन्न प्रकार की समाज व्यवस्थाओं में हुआ है और फलस्वरूप हमारे विचारों में भिन्नता होना स्वाभाविक

ही है। महान कार्ल मार्क्स ने इस बात को भलीभांति स्पष्ट कर दिया था कि मनुष्य के विचार उसकी आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियों पर निर्भर करते हैं। आपको यह न समझना चाहिये कि मैं इस नियम का अपवाद हूं।"

(६)

सोवियत अधिकारी कुछ प्रभावित हुआ। उसने बात का प्रसंग बदलते हुए कहा, "मैंने सुना है कि तुम हम लोगों के महान नेता स्टालिन से मिलने का गौरव प्राप्त कर चुके हो।"

"यह ठीक है, महाशय। मैं दो बार उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त कर चुका हूँ।"

"क्या तुम मुझे इस सम्बन्ध में पूरी बात बताओगे?"

"अवश्य। प्रथम बार मैं उनसे सन् १९४२ में मिला था। उस समय मैं हांगकांग में था। जापानियों से बचने के लिये मुझे अपनी पत्नी के साथ भागना पड़ा था। चीन पार करके हम लोग वायुयान द्वारा मास्को पहुँचे थे। संयोगवश उस समय मैं प्रेसीडेंट रूजवेल्ट के प्रतिनिधि के रूप में यात्रा कर रहा था। जिस समय मैं मास्को पहुंचा वाशिंगटन तथा मास्को के बीच केबिलग्राम द्वारा कुछ वार्त्ता हुई। परिणाम स्वरूप मार्शल स्टालिन ने मुझे बुला कर अपने साथ बातचीत का दुर्लभ सौभाग्य प्रदान किया।"

"तुम्हें किस स्थान पर बुलाया गया था?"

"क्रेमलिन के किसी भाग में।"

"यानी तुम्हें मार्शल स्टालिन के घर पर बुलाया गया था!!" अधिकारी ने आश्चर्यचकित स्वर में प्रश्न किया।

"महाशय, मुझे यह न मालूम था कि वह उनका घर है। मुझे क्रेमलिन में रात के समय ले जाया गया था। मैं चारों ओर का दृश्य देख न सका था। जिस समय मैं एक अण्डाकार विशाल कमरे में ले जाया गया मैंने देखा कि चारों ओर की दीवारें सफेद हैं और उन पर बीच बीच में सोना जड़ कर सुनहली झलक पैदा कर दी गयी है। मार्शल स्टालिन आकर एक विशाल मेज के पास बैठ गये। हम लोग प्रायः दो घण्टे तक बातें करते रहे। मेरे प्रति उनका व्यव-

हार शिष्टता और मित्रता का था। मेरा विश्वास है कि यदि आप उनको मेरी गिरफ्तारी का समाचार देंगे तो वे आप को भी यही आदेश देंगे कि मेरे साथ भद्रता का व्यवहार किया जाय।"

"दूसरी मुलाकात किन परिस्थितियों में हुई?"

"यह मुलाकत चार वर्ष बाद हुई—अर्थात् युद्ध-समाप्त होने के प्रायः एक वर्ष बाद। इस बार मैं प्रेसीडेंट ट्रूमन के प्रतिनिधि के रूप में गया था। मैं वायुयान द्वारा वाशिंगटन से सीधे मास्को चला गया था और इस बार भी मुझे उसी अण्डाकार कमरे में बैठाया गया था। मुझे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ था कि कमरे में सब कुछ पूर्ववत् ही था। कमरे में कई टेलीफोन रखे हुए थे। प्रत्येक टेलीफोन का रङ्ग दूसरे से भिन्न था। कदाचित् भिन्न भिन्न प्राइवेट लाइनों को समझने के लिये ही यह व्यवस्था की गयी थी। यदि आप चाहें तो मैं कमरे का अन्य विवरण भी आप को दे सकता हूं। शायद आप स्वयं वहां हो आये होंगे।"

"मुझे अभी तक यह गौरव प्राप्त नहीं हुआ है। इस मुलाकात का उद्देश्य क्या था?"

"प्रथम मुलाकात की भांति इस बार भी मार्शल स्टालिन ने मेरे साथ मित्रता तथा सहृदयता का व्यवहार किया था। मुझ पर उनका बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा था। मेरी समझ से मार्शल स्टालिन एक आत्मतुष्ट, सहृदय तथा शान्तिप्रिय व्यक्ति हैं।"

"और फिर भी तुम उस युद्धपिपासु ट्रूमन के पास जाकर यह बोले कि मार्शल स्टालिन तुम्हारे पूंजीपति देश के विरुद्ध युद्ध की तयारी कर रहे हैं?"

"मैंने उन्हें यह रिपोर्ट न दी थी, महाशय। यदि किसी ने आप को ऐसा संकेत किया है तो वह जानबूझ कर झूठ बोला है। मैंने प्रेसीडेंट ट्रूमन से यही कहा था कि मार्शल स्टालिन याल्टा सम्मेलन में होने वाले समझौते की प्रत्येक धारा का पालन करने के लिये पूर्णतया प्रस्तुत हैं।"

"किन्तु तुमने प्रेसीडेंट ट्रूमन को यह रिपोर्ट दी थी कि तुम इस बात पर विश्वास नहीं करते कि मार्शल स्टालिन इस समझौते का पालन करेंगे।"

"मैंने ऐसी कोई रिपोर्ट न दी थी, महाशय। मैं इस प्रकार का विचार कैसे प्रकट कर सकता था? जब मुझसे मेरी सम्मति मांगी गयी थी तब मैंने यही कहा था कि समझौते की सफलता अथवा असफलता समय ही बता सकता है।"

"क्या तुमने इस बात का उल्लेख किया था कि मार्शल स्टालिन ने तुम्हारे साथ मित्रता का व्यवहार किया था?"

"केवल मित्रता ही क्यों, मैंने यह कहा था कि मार्शल स्टालिन ने मेरे प्रति घनिष्ठता का परिचय दिया था। हम दोनों की वार्त्ता प्रायः तीन घण्टे तक चली थी।"

"फिर भी तुमने इस सद्व्यवहार का यह बदला चुकाया कि मार्शल स्टालिन की हत्या के लिये षड़यन्त्रकारियों के एक दल को सहायता पहुंचाई?"

लैनी इस वाक्य से एकदम अवाक हो गया। यदि रूसी अधिकारी लैनी पर पिस्तौल तान कर खड़ा हो जाता तो भी शायद वह इतना अधिक आश्चर्य-चकित न होता। "हे भगवान! क्या कह रहे हैं आप?" उसने विस्मयविमुग्ध स्वर में कहा।

"क्या तुम इस बात से इनकार करते हो कि मार्शल स्टालिन की हत्या के लिए होने वाले षड़यन्त्र में तुम्हारा कोई भाग न था?"

"मैं दृढ़तापूर्वक इस बात को अस्वीकार करता हूं। मेरे मस्तिष्क में कभी यह विचार तक न आया था और आज पहले पहल ही मैं आप के मुंह से इस प्रकार की बात सुन रहा हूं।"

"क्या तुम इस बात से इनकार करते हो कि तुम पोलैण्ड इसीलिये गए थे कि मार्शल स्टालिन की हत्या के लिये षड़यन्त्रकारियों का एक दल खड़ा कर सको?"

"मैं इससे एकदम इनकार करता हूँ। पोलैंड में स्टूबेनडर्फ के अतिरिक्त अन्य किसी व्यक्ति के साथ मेरी भेंट न हुई थी। इनके अतिरिक्त मैं जिन व्यक्तियों के पास गया था वे बेचारे साधारण व्यक्ति थे। उनसे मैं कर्ट मेसनर तथा प्राचीन कला-चित्रों की जानकारी प्राप्त करना चाहता था। इसके अतिरिक्त मेरा अन्य कोई उद्देश्य न था।"

(७)

अधिकारी धीरे धीरे अपने कागज़ पर लैनी का उत्तर लिख रहा था। उत्तर लिखने में वह इतना विलम्ब करता था कि लैनी को सोचने का अवसर प्राप्त हो जाता था। उसके मस्तिष्क में एक तूफ़ान सा उठ रहा था। अब उसकी दृष्टि में यह बात स्पष्ट हो गयी थी कि उसके विरुद्ध स्टालिन की हत्या का प्रयत्न करने का अभियोग लगाया जायगा! वह जानता था कि इस अभियोग से अधिक घातक अभियोग और कुछ नहीं हो सकता। यह ठीक था कि यह अभियोग पूर्णतया निराधार और असत्य था। किन्तु वह जानता था कि कम्युनिस्ट लोग सत्य-असत्य के प्रति विशेष उत्सुकता नहीं रखते। इस सम्बन्ध में उन्होंने हिटलर के इस सिद्धांत को अङ्गीकार कर लिया था कि असत्य जितना ही विशाल होता है उतना ही विश्वसनीय हो जाता है।

लैनी की दृष्टि में सारी स्थिति स्पष्ट हो गयी। वे लोग उस पर यह भयानक अभियोग आरोपित करके येनकेनप्रकारेण उससे इसकी 'स्वीकृति' ले लेंगे और इसके बाद सारे संसार के सामने यह प्रमाणित कर देंगे कि अभियुक्त ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया है। इसके बाद की बात पूर्णतया स्पष्ट थी। अन्य अभियोगों के लिये दण्ड में कुछ रियायत हो सकती थी। किन्तु इस अभियोग के लिये मृत्युदण्ड के अतिरिक्त और कोई उपाय न था। स्टालिन के जीवन के विरुद्ध षड़यन्त्र करने वाले व्यक्ति के लिये क्षमा का प्रश्न ही न उठ सकता था और कोई दूसरा दण्ड भी न सोचा जा सकता था।

अधिकारी ने लैनी से फिर प्रश्न किया: "क्या तुम सारे प्रमाणों के विरुद्ध इस अभियोग से इनकार करना चाहते हो?"

"महाशय, इस प्रकार के निराधार अभियोग के लिये कोई प्रमाण नहीं हो सकता।"

"हम लोगों के पास प्रमाण हैं, अभियुक्त बड। तुम्हें शीघ्र ही इसका पता चल जायगा।"

"यदि आपके पास इस दिशा में कोई प्रमाण हैं तो मैं पहले से ही कहे देता हूँ कि वे एक दम जाली हैं।"

"अभियुक्त बड ! तुम्हें अपना अभियोग स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं है क्यों कि तुम्हारे सहयोगी फ्रित्ज मेसनर ने इस षड़यन्त्र में अपने भाग को स्वीकार कर लिया है।"

"मैं यही कह सकता हूँ कि फ्रित्ज पर असह्य अत्याचार करके उससे बलात यह बात कहला ली गई है।"

अधिकारी ने अपनी दोनों मुट्ठियां जोरसे मेज़पर पटकते हुए कहा, "तुम्हारा यह साहस कि तुम सोवियत सरकार पर अत्याचार का अभियोग लगा रहे हो !"

यह एक मजाक सा प्रतीत हो रहा था। किन्तु उस समय लैनी को हंसी न आयी। उसने गम्भीर स्वर में कहा, "महाशय, जिस समय मुझे यहाँ लाया गया मुझे एक छोटी सी कोठरी में बन्द कर दिया गया। इसके बाद भयानक शीत में मुझे ठिठुरा कर बर्फ की भांति जमा देने का प्रयत्न किया गया। इसके बाद भट्ठी की सी गर्मी पैदा करके मुझे जिन्दा ही सेंक डालने का प्रयत्न किया गया। फिर इस कमरे में लाकर बिजली की बत्तियों की भयानक चकाचौंध में मुझे प्रायः अन्धा बना डाला गया। यदि सोवियत रूस में ये सारी बातें अत्याचार नहीं समझी जातीं तो फिर अत्याचार क्या है ?"

"मैं तुम्हें बताता हूँ कि अत्याचार क्या है।" अधिकारी ने घृणा के स्वर में प्रत्युत्तर दिया। दूसरे ही क्षण लैनी की आँखों के सामने बिजली का वह प्रकाश फिर से जगमगाने लगा।

(८)

लैनी ने समझ लिया कि इस बार वह ईश्वर के पथ से विचलित हो गया था। उसने आवश्यकता से अधिक वाचालता दिखायी थी। किन्तु अब कोई उपाय न था। उसने शीघ्रता से अपनी आँखों को ढक कर नम्र स्वर में कहा, "महाशय, यह प्रकाश बन्द कर दीजिए अन्यथा मैं आपके प्रश्नों का उत्तर न दूंगा।"

"उत्तर लेने के लिए हमारे पास कुछ उपाय हैं।" अधिकारी ने कठोर स्वर में कहा। उसने तत्क्षण अपने वक्तव्य के सत्य को प्रमाणित कर दिया। "क्या तुम

इस बात से इन्कार करते हो कि तुमने हेटमन स्कोरोपोडस्की के साथ षड़यन्त्र किया था ?"

लैनी ने इस बात को समझ लिया था कि उसके विरुद्ध झूठे अभियोगोंका जाल तयार किया जा रहा है। वह जानता था कि यदि वह चुपचाप बैठा रहेगा तो इसका यह अर्थ लगा लिया जायगा कि उसने अपने अभियोग स्वीकार कर लिये हैं। इसलिए इन प्रश्नों का प्रतिवाद करना आवश्यक था। "हे भगवान ! यह व्यक्ति अभी तक जीवित है क्या ?"

"तब तुम उसको जानते हो ?"

"मेरा उसके साथ कभी परिचय नहीं हुआ। मेरे लिये यह एक नाममात्र है। मैंने सुना था कि वह एक यूक्रेनियन ह्वाइटगार्ड था। किन्तु उसके साथ मेरा कभी कोई लेन देन नहीं रहा।"

"न उसके अनुयायियों के साथ ?"

"नहीं, किसी के साथ नहीं।"

"तुम लिलीविच नाम के किसी व्यक्ति को जानते हो ?"

"मैंने कभी यह नाम नहीं सुना। मुझे यह नाम नकली प्रतीत होता है।"

"तुमने इस व्यक्ति के जरिये क्रेमलिन में एक खुफिया को घूस के रूप में एक लम्बी रकम देने का प्रयत्न नहीं किया ?"

"मैंने इस प्रकार का कोई काम नहीं किया।"

"किन्तु उस व्यक्ति ने एक लिखित पत्र में अपने इस अपराध को स्वीकार कर लिया है। तुमने उसे पांच हजार डालर दिये थे।"

"यह एकदम असत्य है। कदाचित उस पर अत्याचार करके उससे यह इजहारनामा ले लिया गया है।"

"तुम फिर सोवियत यूनियन का अपमान करने का साहस कर रहे हो ?"

"महाशय, मुझ पर प्रत्यक्ष रूप में अत्याचार हो रहा है। मैं अपनी आंखों की साक्षी की अवहेलना नहीं कर सकता। यदि आप भी मेज़ के इस ओर आकर मेरी बगल में बैठ जायं तो आपको भी इसका प्रत्यक्ष अनुभव हो जाय।"

"तुम्हें आदेश देने का कोई अधिकार नहीं है, अभियुक्त बड !"

"महाशय, हम दोनों सभ्य और सुसंस्कृत व्यक्ति हैं और हमें एक दूसरे के साथ भद्रता का व्यवहार करना चाहिये। मैं नहीं जानता कि आपके पास मेरे विरुद्ध जो प्रमाण आए हैं वे आपने स्वयं एकत्रित किये हैं या वे किसी दूसरी जगह से आपके पास भेज दिये गये हैं और आपने इन्हें सत्य मान लिया है। यदि ऐसी बात है तो मैं आपको कोई दोष नहीं दे सकता। किन्तु इतना मैं अवश्य कहूंगा कि मेरे विरुद्ध जो अभियोग लगाये गए हैं वे एकदम असत्य और निराधार हैं। हत्या और आतंक पर मैं विश्वास नहीं रखता और हत्याकारियों अथवा आतंकवादियों के साथ मेरा कभी कोई सम्बन्ध नहीं रहा।"

"हम लोगों मे पास प्रमाण हैं और अन्त में तुम देखोगे कि इन प्रमाणों को अस्वीकार करने का प्रयत्न व्यर्थ है। तुम्हारे लिये उचित मार्ग यही रह गया है कि तुम अपने अपराध को स्वीकार कर लो और षड़यन्त्र में अपने सहयोगियों के नाम बता दो।"

"महाशय, मुझे इस षड़यन्त्र की कोई जानकारी नहीं है। मैं जानता होता तो आप को अवश्य बता देता क्योंकि मैं षड़यन्त्रकारियों को खतरनाक व्यक्तियों के रूप में देखता हूं।"

"यदि मैं तुम्हें यह बताऊं कि फ्रित्ज मेसनर ने अपने लिखित बयान में तुम्हारे विरुद्ध अपना वक्तव्य दिया है?"

"तो मैं यह कहूंगा कि फ्रित्ज मेसनर पर अत्याचार करके उससे बलात यह बयान ले लिया गया था। यह सत्य नहीं है और मैं किसी भी अवस्था में अपने विरुद्ध इस भयानक अभियोग को सत्य न मानूंगा।"

(९)

समय की गति का अनुमान लगाने के लिये कोई उपाय न था। प्रश्न पर प्रश्न हो रहे थे और एक प्रश्न के साथ दूसरे का कोई सम्बन्ध न प्रतीत होता था। बीच बीच में नाना प्रकार के नाम आ जाते थे—रूसी नाम, पोलिश नाम, जर्मन नाम। लैनी केवल इतना ही कह देता था कि, "मैंने यह नाम कभी नहीं सुना।" इस पर अधिकारी बिगड़ उठता था। झिड़कियों से बचने के लिये लैनी ने एक

नये वाक्य का आविष्कार कर लिया था—"महाशय, इस व्यक्ति को मैं नही जानता।"

इधर वह भयानक विद्युत-प्रकाश लैनी की आंखों में बराबर चकाचौंध पैदा कर रहा था। वह अपने दोनों हाथों से आंखें ढके हुए था इसके फलस्वरूप उसके हाथ गर्मी के कारण जलने लगे थे। और भीतर आंखें भी उस गर्मी के कारण जलने लगी थीं। जब उसके हाथ थक जाते और क्षण भर के लिए शिथिल होकर गिर पड़ते तब वह विद्युत प्रकाश आंखों से टकराने लगता। उसे अपना सिर इधर उधर हिलाने की अनुमति न थी।

अन्त में लैनी ने कहा, "महाशय, मैं इस भयानक प्रकाशमें अपनी परीक्षा नहीं दे सकता। मैं इसके विरुद्ध अपना प्रतिवाद प्रकट करना चाहता हूं। कृपया सरकारी वकील को मेरे इस प्रतिवाद की सूचना दे दीजिये।"

"सरकारी वकील तुम्हारे इस प्रतिवाद पर कोई ध्यान न देंगे।"

"फिर भी मैं यह चाहता हूं कि मेरा यह प्रतिवाद लिख लिया जाय।"

"अच्छी बात है।" अधिकारी ने संक्षेप में कहा और अपने कागज पर लिख लिया। किन्तु इससे कोई लाभ न हुआ। प्रकाश पूर्ववत ही बना रहा।

लैनी इतनी देर से एक स्टूल पर बैठा हुआ था। उसकी कमर दुखने लगी थी। उसका अंग प्रत्यंग टूटा जा रहा था। किन्तु कोई उपाय न था। वह मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था। इसके फलस्वरूप उसकी चेतना शारीरिक यंत्रणा से हट कर कहीं अन्यत्र केन्द्रित हो जाती थी और वह अपने अत्याचारी पर एक प्रकार की विजय का अनुभव करने लगता था। उसने मन ही मन उन धार्मिक शहीदों की कल्पना की जो कठोर से कठोर यंत्रणाओं में भी पूर्ण आत्म-विश्वास का परिचय देते रहे थे। यह बात असम्भव नहीं है। आधुनिक मनो-वैज्ञानिकों ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि मनुष्य अपनी चेतना को वाह्य जगत से खींच कर अन्यत्र केन्द्रित कर सकता है। विलियम जेम्स ने 'दि वैराइटीज़ आफ रेलीजस एक्सपीरियन्स' नामक एक पुस्तक लिख कर इस बात को भली भांति स्पष्ट कर दिया है।

किन्तु लैनी ने अपने अत्याचारी को यह बात न मालूम होने दी कि वह मन ही मन ईश्वर की प्रार्थना कर रहा है। यदि उसे यह बात मालूम हो जाती तो वह और भी भड़क जाता। लेनिन ने यह घोषणा की थी कि "धर्म जनता की अफीम है" और कम्युनिस्टों ने लेनिन के इस वाक्य को बड़े बड़े अक्षरों में लिख कर मास्को के एक चौराहे पर टांग दिया था। किन्तु लैनी इस समय जानबूझ कर इस अफीम का प्रयोग कर रहा था। इस अफीम का कोई दाम भी उसको न देना पड़ रहा था। कभी कभी अधिकारी लैनी को खोया खोया देखता तो कठोर स्वर में बोल उठता, "मेरी ओर ध्यान दो, अभियुक्त बड !" लैनी विनय के स्वर में कहता, "मैं बहुत निर्बल हो गया हूं, महाशय ।" किन्तु मन ही मन वह सेण्ट पाल के इस वाक्य को दोहराता—"मैं मनुष्य के अत्याचार से न डरूंगा।"

(१०)

किन्तु लैनी प्रार्थना पर अपना पूरा ध्यान न लगा पाता था। उसे अधिकारी के प्रश्नों के उत्तर भी सोचने पड़ते थे। वह जानता था कि उसे जाल में फसाने का प्रयत्न हो रहा है और यह अधिकारी अपनी इस कला में बड़ा दक्ष है। वह बार बार घूम फिर कर फ्रित्ज मेसनर के प्रश्न पर आ जाता था। कदाचित उसे किसी प्रकार यह बात ज्ञात हो गयी थी कि फ्रित्ज मेसनर एक बार पोलेण्ड गया था और उसने मन ही मन यह अनुमान लगा लिया था कि उसकी इस यात्रा में लैनी का कोई न कोई हाथ अवश्य था। लैनी के सामने एक समस्या खड़ी हो गई थी। क्या फ्रित्ज अभी जीवित है ? या उसकी मृत्यु हो चुकी है ? यदि वह मर चुका है तो लैनी उसके विरुद्ध कुछ भी कह सकता था। किन्तु वह जीवित हुआ तो ? यह एक जटिल प्रश्न था। इसलिए उसने मन ही मन यह निश्चय कर लिया था कि वह कुछ भी स्वीकार न करेगा। वह यही कहेगा कि वह एक कला-विशेषज्ञ है और अपने पेशे के प्रसंग में ही योरोप आया था। इसी लिए वह पोलैण्ड गया था और बाद में हार्ज तथा टेगर्नसी की यात्रा की थी। अपने पेशे के प्रसंग में ही उसने जेनरल ग्राफ तथा लेडी डोनर्सटाइन से मुलाकात की थी। उसने यह निश्चय किया कि वह अधिकारी को अपने कला-चित्रों के नाम मूल्य, खरीद की तारीख और अपने मुनाफे का अधिक से अधिक विवरण देगा।

वह जानता था कि इतने लम्बे मुनाफे की बात सुनकर वह उसे 'मुनाफाखोर', 'डाकू' आदि के रूप में गालियां देगा किन्तु मन ही मन ईर्ष्या करेगा। लैनी जानता था कि अन्य सरकारी अधिकारियों की भांति यह व्यक्ति भी अभावपीड़ित होगा और एक जोड़ा जूता खरीदने के लिए उसे अपने भोजन में लम्बी कटौती करनी पड़ती होगी।

लैनी के मन में विचारों का यह अन्तर्द्वन्द्व भयानक रूप में चल रहा था। उसका शरीर इतना निर्बल हो गया था कि उसे ऐसा लग रहा था कि किसी भी क्षण वह स्टूल से गिर सकता है। अचानक उसके मस्तिष्क में एक विचार आया। उसने कहा, "महाशय, मैं एक बार बाथरूम में जाना चाहता हूं"। उसे आज्ञा मिल गयी। यह सचमुच एक आश्चर्यजनक बात थी! अधिकारी ने बटन दबाया और तुरन्त वार्डर आ गया। लैनी ने उठने का प्रयत्न किया किन्तु वह असफल रहा। वार्डर ने सहारा देकर उसे उठाया। वह धीरे धीरे लैनी को गलियारे से ले चला। लैनी को ऐसा लगा कि यह वार्डर सहृदय व्यक्ति है। वह मन ही मन अपनी प्रार्थना दोहराता गया। इतनी देर तक स्टूल पर बैठे रहने के बाद धीरे धीरे चलना एक आनन्दप्रद अनुभव था। उसकी नाड़ियों में फिर से रक्त का प्रवाह होने लगा और थकी हुई मांस पेशियां धीरे धीरे सजीव होने लगीं। बाथरूम से लौट कर जब वह फिर से उस अत्याचार-गृह में घुसा उसने अधिकारी को धन्यवाद दिया। वह अपने मन में सोच रहा था कि ईश्वर सचमुच मेरी सहायता कर रहा है।

वह भयानक विद्युत-प्रकाश अभी तक कायम था। अधिकारी के प्रश्न अनवरत रूप में चल रहे थे। किन्तु उसने समझ लिया था कि यह अभियुक्त शीघ्र ही चकमे में आने वाला नहीं है। फलस्वरूप वह खीझ उठा था। बीच बीच में वह भड़क उठता था और लैनी को गालियां देने लगता था। लैनी तुरन्त इन गालियों के विरुद्ध अपना प्रतिवाद प्रकट करता था। दोनों ओर से तर्क वितर्क होने लगता था। प्रकाश के वैज्ञानिक सिद्धांत, सोवियत कानून व्यवस्था आदि पर तर्क का कोई अन्त न था। जो व्यक्ति अमेरिका का नागरिक है और जिसे उसकी इच्छा के विरुद्ध सोवियत रूस में लाया गया है उस पर सोवियत कानून लागू होंगे या अम-

रीकी ? यह प्रश्न धीरे धीरे राजनैतिक न रह कर दार्शनिक बन गया। शायद हेग के अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय को भी इस पर विचार करने में काफी कठिनाई होती। किन्तु इस प्रश्न का समाधान यहां पर एक दूसरे ढङ्ग से हुआ। लैनी की चेतना शक्ति धीरे धीरे धुंधली होने लगी ; उसका शरीर शिथिल होने लगा। वह लुढ़क कर अपने जख्मी कंधे के बल कांक्रीट की कठोर फर्श पर गिर पड़ा।

अध्याय २७

● मनुष्य की विपत्ति ●

(१)

जब लैनी को होश आया उसने देखा कि वह लोहे की एक छोटी सी चारपाई पर लेटा हुआ है। वह इतने बड़े कष्ट से गुज़र चुका था कि इस समय उसे यह चारपाई भी बड़ी आनन्दप्रद प्रतीत हो रही थी। कठोर लोहे में उसे स्वर्गीय कोमलता का अनुभव हो रहा था। उसने देखा कि कोई व्यक्ति उसे कंधे के बल उठाकर कुछ पिलाने का प्रयत्न कर रहा है। उसने वह पेय पी लिया। इससे उसे बड़ी शान्ति मिली। धीरे धीरे उसकी चेतना वापस लौटी! उसने इस बात का अनुभव किया कि न तो वह पहले वाली कालकोठरी में है न उस भयानक विद्युत प्रकाश वाले कमरे में। उसे इस विचार से बड़ी सांत्वना मिली कि उसे बर्फ की भांति जमा देने अथवा भट्ठी की गर्मी में भून डालने का द्वितीय प्रयोग न होगा। वह मन ही मन और भी तत्परता के साथ ईश्वर की प्रार्थना करने लगा। उसने कृतज्ञ हृदय से ईश्वर को धन्यवाद दिया। यह एक अविश्वसनीय बात प्रतीत होती थी किन्तु एक व्यक्ति उसे सचमुच गोभी के शोरवे के साथ नर्म रोटी खिला रहा था। लैनी ने एक बार फिर इस चमत्कार के लिए ईश्वर को धन्यवाद दिया—'प्रभु! तेरी लीला सचमुच अपार है!"

लैनी के शरीर में फिर से शक्ति का सञ्चार होने लगा। अब वह उठकर अपने हाथ से रोटी खाने लगा। उसे गोभी का शोरवा विशेष प्रिय न था। किन्तु वह जानता था कि रूसी लोग इसी पर अपना निर्वाह करते हैं। इसके अतिरिक्त इस परिस्थिति में रुचि का कोई प्रश्न ही न उठता था। उसने कटोरे का अन्तिम बूंद तक चूस लिया। इसके बाद जब वार्डर ने उसे लेट जाने के लिये कहा वह चुपचाप लेट गया। वार्डर लोहे का दरवाजा बन्द करके चला गया। उसे इस समय एकाकीपन बड़ा भला प्रतीत हो रहा था। उसने अपनी थकी हुई आंखें

मूंद लीं और फिर से ईश्वर की प्रार्थना करने लगा। थोड़ी ही देर में उसे गहरी नींद आ गयी।

न जाने कब तक वह सोता रहा। अचानक किसी ने उसे झकझोर कर उठा दिया और कहा, "परीक्षा के लिये चलो।" लैनीकी नींद पूरी न हुई थी। उसे यह हस्तक्षेप बड़ा बुरा प्रतीत हुआ। उसने अपनी आंखें मूंद लीं और फिर सोने का प्रयत्न करने लगा। किन्तु आगन्तुक बार बार उसे झकझोर कर उठाने का प्रयत्न करने लगा। अन्त में उसने उसे बलात उठा कर खड़ा कर दिया। कोई उपाय न था। लैनी को वाध्य होकर फिर से उस कमरा नं० ८१४ में उपस्थित होना पड़ा।

इस बार वहां पर एक दूसरा अधिकारी बैठा हुआ था। लैनी समझ गया कि वे लोग पारी पारी से उसकी 'परीक्षा' लेंगे। प्रत्येक नया परीक्षक तरो ताज़ा होकर आएगा। दूसरी ओर आभागा बन्दी इस अत्याचार से थककर चूर चूर होकर उपस्थित होगा। परीक्षक के कपड़े लत्ते साफ सुथरे थे, उसकी हजामत बनी हुई थी। लैनी की दाढ़ी बढ़ी हुई थी और उसकी सम्पूर्ण वेश-भूषा एक दयनीय भिखारी की सी हो रही थी। उसे इस बार भी पहले वाले स्टूल पर बैठा दिया गया। किन्तु इस बार उसकी आंखों के सामने वह विद्युत-प्रकाश न उत्पन्न किया गया !!

यह अधिकारी मध्यवयस्क था; उसके बाल सफेद हो चले थे। वह कुछ स्थूलकाय था। उसकी आवाज मुलायम थी और वह चेहरे मोहरे से एक सहृदय व्यक्ति प्रतीत होता था। वह अंगरेजी बोल रहा था और उसका उच्चारण अधिक दोषपूर्ण न था। लैनी समझ गया कि उसके अत्याचारियों ने यह देख कर कि निर्दयता निष्फल प्रमाणित हुई है, इस बार सहृदयता का प्रयोग करने का निश्चय किया है।

अधिकारी ने कहा कि पिछली बार लैनी पर जो अत्याचार हुआ वह एक गलती के कारण ही हुआ। रूस में किसी बन्दी को न भूखों मारा जाता है न उस पर अन्य किसी प्रकार का अत्याचार किया जाता है। 'किन्तु दुर्भाग्यवश वार्डर ने यह समझ लिया था कि तुम्हारी कोठरी में जो रोटी रखी गयी थी उसे

तुमने खा लिया होगा।' लैनी ने कहा कि उसे रोटी खाने का समय ही न दिया गया था। उत्तर में अधिकारी ने कहा कि वार्डर पर इस बात का उत्तरदायित्व रहता है कि वह अपनी आँखों के सामने बन्दी को रोटी खिला दे और 'परीक्षा' के लिये उसे तब तक न ले जाय जब तक कि उसका पेट नहीं भर जाता। यदि अभियुक्त को जेलर के प्रति कोई शिकायत हो तो उसे उच्च अधिकारियों के सम्मुख अपना प्रतिवाद प्रकट करने का अधिकार है। लैनी ने नम्र स्वर में कहा, "धन्यवाद, महाशय !"

(२)

"मिस्टर बड"—इस अधिकारी ने 'अभियुक्त' के स्थान पर इस आदरसूचक सम्बोधन का व्यवहार किया—"मैं आयु में आप से बड़ा हूं। फलस्वरूप इस कठोर और कटु संसार का मुझे अधिक अनुभव है। मैं आप से एक पिता की भाँति ही बातें करूंगा और मैं आशा करता हूं कि आप मेरी बातों की ओर समुचित ध्यान देंगे।

"अवश्य, महाशय।" लैनी ने विनय के स्वर में कहा। मन ही मन वह सोच रहा था कि ईश्वर मेरी सहायता कर रहा है।

"आप उस सुदूर देश से आए हैं जिसे कभी शत्रुओं के आक्रमण का अनुभव नहीं हुआ। किन्तु मैं जिस देश में रहता हूं वह चारों ओर से शत्रुओं द्वारा घिरा हुआ है जो प्रतिक्षण उसके सर्वनाश का प्रयत्न करते रहते हैं। हमारे देश को अपनी सुरक्षा के लिये कोई प्राकृतिक साधन नहीं प्राप्त हुए हैं। हमारा एक-मात्र सम्बल जनता का दृढ़ मनोबल ही है।"

"यह एक विचित्र संयोग की बात है कि कुछ ही समय पूर्व जेनरल ग्राफ स्टूबेनडर्फ ने भी मुझसे ठीक यही बात कही थी। उन्होंने कहा था कि उनके देश जर्मनी की भी ठीक ऐसी ही स्थिति है।"

"सम्भव है यह बात दोनों देशों पर समान रूप में लागू पड़ती हो। भाग्य अथवा प्रकृति ने इन दोनों देशों पर यह भार समान रूप में लाद रखा है और इसे हम उतार फेंकने में असमर्थ हैं। जो भी हो हमारा देश अपने आत्म-संरक्षण

के लिये लड़ रहा है—जो कि प्रत्येक प्रत्येक प्राणी की प्रारम्भिक प्रवृत्ति है। मैं समझता हूं आप मेरी इस बात से इनकार न करेंगे।"

"मैं आप की बात स्वीकार करता हूं, महाशय।"

"लाखों करोड़ों शत्रु हमारे देश को नष्ट भ्रष्ट करने पर तुले हुए हैं। ये शत्रु साधारण नहीं हैं। वे रात दिन हमारे सर्वनाश के प्रयत्न में लगे रहते हैं और भांति भांति के उपायों का प्रयोग करते रहते हैं। हमें अपनी सुरक्षा के लिये कड़ी से कड़ी सतर्कता बनाए रखना आवश्यक होता है। यदि हमें इन शत्रुओं का भय न होता तो हम अपना ध्यान रचनात्मक कार्यों की ओर लगाते। किन्तु इस समय यह सम्भव नहीं है। आप इस बात को स्वीकार करते हैं न, मिस्टर बड ?"

"मैं स्वीकार करता हूं।" लैनी इस समय अपने अभियोग के अतिरिक्त और सब कुछ स्वीकार करने के लिये तयार था। फिर भी उसने कहा, "महाशय, क्या यह बात सम्भव नहीं है कि आप लोग इस खतरे को आवश्यकता से अधिक अतिरञ्जित कर रहे हों!"

"मान लीजिये कि कभी कभी हम इस खतरे को आवश्यकता से अधिक अतिरञ्जित कर देते हैं। फिर भी आप को यह स्वीकार करना होगा कि आखिर हम लोग भी मनुष्य हैं और हमसे गलतियां होना स्वाभाविक ही है, इसीलिये मैं आप से अनुरोध कर रहा हूँ कि आप मेरी बात ध्यान से सुनें। सम्भव है आप के मामले में हमने गलती की हो। आप इस दिशा में निश्चय ही संदिग्ध होंगे। किन्तु आप इस बात पर विचार कीजिये कि मैं इस प्रसंग में क्या कर सकता हूँ ? यह मामला मुझे अपने उच्च अधिकारियों से मिला है। मेरे उच्च अधिकारी कहते हैं कि इस मामले में ये ये प्रमाण हैं और तुम इन्हीं के आधार पर आगे बढ़ो। उनका आदेश है कि जब तक अभियुक्त अपना अपराध न स्वीकार कर ले तथा अपने सहयोगियों के नाम न बता दे तब तक उसे शान्ति न मिलने पाये। अब ऐसी अवस्था में मैं क्या कर सकता हूँ ?

मैं तो अपने उच्च अधिकारियों की आज्ञा का पालन करने वाला एक साधारण कर्मचारी मात्र हूँ। मैं उन पर अविश्वास कैसे कर सकता हूं ?

मैं इन्हें कैसे कह सकता हूं कि इस मामले में आपने जिन तथ्यों का संग्रह किया है वे असत्य हैं? मिस्टर बड, आप मेरी कठिनाइयों को समझने का प्रयत्न कीजिये।"

"मैं आप की परेशानी को समझ रहा हूँ, महाशय।" लैनी ने विनयपूर्वक कहा। वह मन ही मन अपनी प्रार्थना दोहराने लगा

"अब देखिये, मुझे यह काम पूरा करना है। मेरी जीविका इसी पर निर्भर करती है। मेरी पत्नी तथा मेरे दो बच्चों का उदरपोषण इस बात पर ही निर्भर करता है।"

"मेरे भी एक पत्नी है, महाशय। और आपकी भांति मेरे भी दो बच्चे हैं।"

"अच्छी बात है। इस प्रकार यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हम लोग किसी समझौते पर पहुँचने का प्रयत्न करें क्योंकि आठ आदमियों का जीवन-मरण इसी पर निर्भर करता है। मुझे यह आदेश दिया गया है कि इस अभियुक्त से उसका अपराध स्वीकार करा लो। मेरा सारा भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि मैं अपने इस कार्य में कहां तक सफल हुआ। यदि मैं असफल हुआ तो मुझे तुरन्त इस स्थान से हटा दिया जायगा और कोई दूसरा व्यक्ति यहां नियुक्त कर दिया जायगा। मेरे स्थान पर ऐसे व्यक्ति को नियुक्त किया जायगा जो आप से यह अपराध स्वीकार करा सके। सम्भव है कि मैं अपने कार्य में असफल रहूं और मुझ पर भी उन लोगों को सन्देह हो जाय और मुझे गिरफ्तार करके जेल में बन्द कर दिया जाय। तब मेरी स्थिति भी आप जैसी ही हो जायगी।"

"मैं आप की परेशानी को समझ रहा हूँ, महाशय।" लैनी ने सहानुभूति के स्वर में कहा और मन ही मन सोचा कि गुड़ दिखा कर ईंट मारने का प्रयास कैसे कौशल के साथ चल रहा है!

(३)

अधिकारी ने लैनी के प्रति बड़ा ही सहानुभूतिपूर्ण रुख लिया। यदि उसका व्यवहार कृत्रिम था तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह एक कुशल अभिनेता था।

लैनी भी मन ही मन सोच रहा था कि यह अभिनय जब तक चलता रहे अच्छा है क्योंकि इससे वह उस भयानक विद्युत प्रकाश से बचा रहेगा।

"तो मिस्टर बड, मैं आप से अनुरोध करता हूं कि आप मेरे साथ कोई न कोई समझौता कर लीजिये। आप मेरे बन्दी हैं। मुझे नहीं मालूम कि यह सब किस प्रकार हुआ। किन्तु जो भी हो, इस समय आप मेरे सामने एक बन्दी के रूप में पेश हुए हैं। आप एक सज्जन व्यक्ति प्रतीत होते हैं और मुझे आप के साथ कोई दुर्व्यवहार करना पड़ा तो मुझे बड़ा कष्ट होगा। मैं आप से वैसा ही व्यवहार करना चाहता हूं जैसा कि एक सज्जन व्यक्ति दूसरे से करता है। मैं आप के साथ मित्र का सा व्यवहार करना चाहता हूं—बशर्ते कि आप इसे स्वीकार करें। हम लोग एक दूसरे के प्रति सहानुभूतिपूर्ण रुख लेंगे तो सारी कठिनाइयों का समाधान हो जायगा।"

लैनी ने विनम्र स्वर में उत्तर दिया, "महाशय, इस दिशा में केवल एक बाधा है। मैं सत्यभाषण का कायल हूं। झूठ बोलने में मुझे बड़ा कष्ट होता है।"

"सत्य एक अमूर्त्त परिकल्पना मात्र है, मिस्टर बड। यह एक सापेक्ष वस्तु है। एक व्यक्ति के लिये जो बात सत्य होती है दूसरे के लिये वही असत्य हो जाती है। इस समय मेरे लिए यही सत्य है कि आप मेरे इन कागजों पर हस्ताक्षर कर दें। आप के लिये भी इस समय यही सत्य है। कल आप अपने संसार में लौट कर इसका मज़ाक उड़ा सकते हैं—कह सकते हैं कि उन लोगों को मूर्ख बनाने के लिए ही मैंने कागज़ों पर हस्ताक्षर कर दिये थे।"

"महाशय, मुझे यह बात सम्भव नहीं प्रतीत होती कि कोई अभियुक्त अपना अपराध स्वीकार करने के बाद यहां से लौट कर वापस अपने संसार में जा सकेगा!"

"यदि आप को केवल इसी बात की चिन्ता है तो आप को मैं आश्वासन देता हूं कि आप की आशङ्का निराधार है। आप को यह अभियोग बड़ा भयानक प्रतीत होता होगा कि आपने मार्शल स्टालिन की हत्या का प्रयत्न किया। किन्तु हम लोगों को यह एक अत्यन्त साधारण बात प्रतीत होती है। मैं कोई अतिशयोक्ति

नहीं कर रहा हूं, किन्तु आप विश्वास करिये, प्रति वर्ष हम लोग इस प्रकार के हजारों षड़यन्त्रों का पर्दाफाश करते हैं। सभ्य संसार का एक बहुत बड़ा भाग मार्शल स्टालिन की हत्या के लिये उत्सुक है, वह नित्य नयी नयी योजनायें बनाता रहता है। आप को मालूम ही होगा कि लेनिन पर गोली चलायी गयी थी। इसके बाद स्टालिन के सब से बड़े अंतरङ्ग मित्र तथा सहयोगी किरोव की भी हत्या हुई थी। सोवियत रूस में जितने व्यक्तियों को मृत्यु-दण्ड मिला है उनमें से अधिकांश पर यह अभियोग था कि उन्होंने हमारे प्रिय नेता स्टालिन की हत्या करने का प्रयत्न किया था।"

"महाशय, मेरी चिन्ता का ठीक यही कारण है। मैं फांसी पर चढ़ने का इच्छुक नहीं हूं।"

"किन्तु मिस्टर बड, आप की परिस्थितियां और उन लोगों की परिस्थितियों में बड़ा अन्तर था। सोवियत यूनियन का कोई नागरिक मार्शल स्टालिन की हत्या का प्रयत्न करता है तो यह एक अक्षम्य अपराध समझा जाता है। किन्तु कोई विदेशी यह प्रयत्न करता है तो उसका अपराध इतना गम्भीर नहीं समझा जाता। कोई विदेशी यदि कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य नहीं है तो उसके लिये स्टालिन की मृत्यु की इच्छा संसार में सब से अधिक स्वाभाविक वस्तु है। हम लोगों ने निश्चित रूप में इस बात को स्वीकार कर लिया है कि सम्पूर्ण पूंजीपति संसार स्टालिन की मृत्यु का इच्छुक है। इसलिये हम जब किसी विदेशी को इस षड़यन्त्र में पकड़ लेते हैं तो उसकी ओर विशेष ध्यान नहीं देते। हम उससे केवल एक प्रश्न ही पूछते हैं—वह यह कि षड़यन्त्र में कौन कौन सोवियत नागरिकों ने सहयोग किया था। इसके बाद हम उसे छोड़ देते हैं और इस बात की चिन्ता नहीं करते कि वह वापस जाकर क्या करेगा क्योंकि हम जानते हैं कि वह यहां से जाने के बाद वही करेगा जो अब तक करता रहा है और जो कि सारा पूंजीपति संसार कर रहा है। हम लोग विदेशियों की चिन्ता नहीं करते। जो विदेशी यहां आ जाते हैं उन पर हम सतर्क दृष्टि अवश्य रखते हैं—इसके अतिरिक्त उनमें हमारी अन्य कोई दिलचस्पी नहीं रहती। किन्तु जो लोग इन विदेशियों से बातें करते हुए देखे जाते हैं उन पर पूरी पूरी जांच रखी जाती है। मैंने इस

कमरे में अकेले बैठ कर आपसे एक घण्टे बात की है और इसलिये अब भविष्य में मुझ पर भी जांच रखी जायगी।"

"क्या आप को कभी ऐसा नहीं प्रतीत हुआ कि इस कमरे में होने वाले वार्त्तालाप को सुनने की कोई न कोई व्यवस्था हो सकती है?"

अधिकारी ने उदासीनता के भाव से अपने कन्धे हिलाते हुए कहा, "मेरा भविष्य केवल इस बात पर निर्भर करता है कि मैं आप को राजी करने में सफल हुआ अथवा नहीं?"

इस कष्ट में भी लैनी मुस्करा पड़ा। "आप काफी वाग्पटु हैं। यदि आप चाहें तो मैं आप को इस आशय का एक प्रमाणपत्र दे सकता हूं।"

"मेरे लिये केवल एक ही प्रमाणपत्र उपयोगी हो सकता है। वह यह कि आप अभियोग-पत्र पर हस्ताक्षर कर दें। मैं आप से यह भीख मांगता हूं: अब इनकार मत कीजिये। मैं आप को धमकी नहीं देना चाहता। फिर भी मैं आप को यह चेतावनी देना उचित समझता हूं कि प्रतिरोध व्यर्थ है। वर्षों का अनुभव मुझे यह बताता है कि आज तक कोई भी अभियुक्त प्रतिरोध करने में सफल नहीं हुआ। हम लोगों ने शारीरिक तथा मानसिक दोनों ही प्रकार के दक्ष विशेषज्ञ रख छोड़े हैं और ये भिन्न भिन्न विभागों में काम करते रहते हैं। हम जानते हैं कि मनुष्य का शरीर किस प्रकार कार्य करता है। हम उसकी सारी रासायनिक प्रक्रिया से भलीभांति अवगत हैं। इसी प्रकार हम मानव मस्तिष्क की सारी क्रिया-प्रक्रिया को भलीभांति समझते हैं और किसी आदर्शवादी चिन्तन-धारा के चकमे में नहीं आते हैं। हम लोग जानते हैं कि मनुष्य के मस्तिष्क को ऐसी स्थिति में कैसे लाया जा सकता है कि उसके स्नायुतन्तुओं में पूर्ण अराजकता की सृष्टि हो जाय।

"इस प्रकार की स्थित में पहुंच कर आपको इस बात का ज्ञान न रहेगा कि सत्य क्या है और असत्य क्या है। आपको इस बात का पता न रहेगा कि आप अपने पैरों पर खड़े हैं या सिर पर। अभी तक आपने जो अनुभव किया है वह तो एक भूमिका मात्र है! आवश्यकता पड़ी तो यह क्रम महीनों तक जारी रखा जायगा। अभी तक हमने देखा है कि अभियुक्त अधिक से अधिक छै सप्ताह तक

प्रतिरोध कर सका है। अन्त में उसे घुटने टेक देने पड़े। सभी अभियुक्तों ने अपने अभियोग-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये। कुछ ने खुले आम न्यायालय में अपने बयान दे दिये। उन्होंने अन्त में इस बात को समझ लिया कि जिसे सत्य कहा जाता है वह एक अमूर्त तत्व ही है। सोवियत रूस में सत्य वही है जो पार्टी चाहती है। आप एक विदेशी हैं। इसलिए हम यह नहीं चाहते कि आप खुलेआम न्यायालय में उपस्थित हों। आप से हम केवल इतना ही चाहते हैं कि आप इस षड़यन्त्र में भाग लेने वाले रूसी नागरिकों के नाम हमें बता दें।"

"चाहे वे निर्दोष ही हों।"

"वे निर्दोष हैं या अपराधी इसका निर्णय तो पार्टी करेगी, मिस्टर बड।"

"दूसरे शब्दों में इसका यह अर्थ हुआ कि रूस में कुछ ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें आपकी पार्टी के मुखिया अपने रास्ते से साफ कर देना चाहते हैं और इस कार्य के लिए वे मुझे एक उपयुक्त साधन बनाना चाहते हैं।"

वृद्ध अधिकारी ने ऐसा भाव दिखाया मानों उसे लैनी की बात से बड़ा कष्ट पहुंचा हो। "मैं तो आपको नाना प्रकार के भयानक कष्टों से बचाने का प्रयत्न कर रहा हूं। आपको इसके लिये मेरा कृतज्ञ होना चाहिये। मुझे दुःख है कि आप मेरे प्रस्ताव पर इस दृष्टि से विचार कर रहे हैं।"

"दुःख तो मुझे भी है, महाशय। मुझे कष्ट झेलनेमें कोई आनन्द नहीं आता किन्तु मैं इस अभियोग-पत्र पर हस्ताक्षर नहीं कर सकता क्यों कि मैं जानता हूँ कि ये अभियोग एकदम झूठे हैं।"

"इस पर विचार करने के लिए मैं आपको कुछ समय दूंगा। आप अपने मस्तिष्क का एक निष्पक्ष विवेचन करने का प्रयत्न कीजिये। आप देखिये कि यह गर्व की भावना है या ज़िद की या हमारे देश के प्रति घृणा की जो आपको इस प्रकार का दुर्भाग्यपूर्ण निश्चय करने के लिये वाध्य कर रही है।"

"मैं आपको विश्वास दिलाता हूं, मिस्टर बड। इनमें से कोई बात नहीं है। यह एक ऐसा रहस्य है जिसकी आपके मनोवैज्ञानिकों ने उपेक्षा की है। हम इसे विवेक के नाम से पुकारते हैं।"

"हम लोगों ने इस तत्व की उपेक्षा नहीं की, मिस्टर बड। किन्तु हम अपने

विवेक को पार्टी के हितों के लिये दबा देते हैं क्यों कि हम जानते हैं कि पार्टी ने सारे संसार के श्रमजीवी समाज को दासता की बेड़ियों से मुक्त कराने का बीड़ा उठाया है।"

"किन्तु महाशय, मैं आपकी पार्टी का सदस्य नहीं हूं। इसलिये मैं अपने विवेक के आदेश का ही पालन करूंगा। मैं स्पष्ट रूप में आपको अपना उत्तर दिये देता हूं—मैं इस अभियोग-पत्र पर कदापि हस्ताक्षर न करूंगा।"

(४)

अपनी कोठरी में वापस आकर चटाई पर लेटे लेटे लैनी इस मुलाकात पर विचार करने लगा। उसकी दृष्टि में यह बात स्पष्ट हो गई की उसके मनोबल को दबाने के लिये कैसे उपाय का प्रयोग किया जा रहा है। अभी कुछ मिनट पूर्व तक वह इस प्रश्न पर पूर्णतया सुनिश्चित था कि वह किसी भी निर्दोष व्यक्ति के विरुद्ध झूठी गवाही न देगा। किन्तु अब अत्याचारियों ने एक ऐसे वातावरण की सृष्टि कर दी थी कि सब कुछ संदिग्ध और अनिश्चित सा प्रतीत होने लगा था। अनिश्चय की यह स्थिति सचमुच बड़ी भयानक है। वह जानता था कि उसके अत्याचारियों का अनुमान है कि धीरे धीरे उसका मनोबल शिथिल पड़ने लगेगा। वे उस अवसर की ताक में हैं जब प्रतिरोध सम्भव न रहेगा और उनका एक प्रहार ही उसकी बची खुची इच्छा-शक्ति को समाप्त कर देगा।

किन्तु लैनी जानता था कि उसे अपने मनोबल को अचल रखना है। वह अपनी ईश्वर-प्रार्थना में लगा रहा—उत्तेजित अथवा भयातुर होकर नहीं बल्कि शान्ति और दृढ़ता के साथ। उसके मस्तिष्क में तीन वर्ष पूर्व की एक घटना घूम गयी। उस समय वह अपने मित्र फ्रेडी रोबिन के साथ डचाऊ के बन्दी-शिविर में गया था। फ्रेडी को अपने पिता का कुछ रेकर्ड लेना था; वे वहां बहुत दिनों तक एक बन्दी के रूप में रहे थे। वह एक भयानक दृश्य था। लगभग दस हजार व्यक्तियों को जान बूझ कर एक पतित तथा अमानुषिक स्थिति में रख दिया गया था। इनमें से सैकड़ों व्यक्तियों पर वे राक्षसी प्रयोग हुए थे जो विज्ञान के नाम पर आये दिन होते रहते हैं। वहां समाज के भिन्न भिन्न वर्गों से भांति भांति के व्यक्ति आये थे—धनी और निर्धन, युवक और वृद्ध। प्रति घण्टे

दो व्यक्तियों की मृत्यु हो जाती थी। उनके स्थान पर तुरन्त दो नये व्यक्ति आ जाते थे।

नाजियों से इन भयानक बन्दी-शिविरों का उद्धार होने के बाद लैनी ने उनके नये अमरीकी अधिकारियों से बातें की थीं। इनमें से कुछ वैज्ञानिक तथा डाक्टर थे। इनके मन में इस बात का कौतूहल था कि मनुष्य इन अत्याचारों को सहन करने की शक्ति कैसे प्राप्त कर लेता है। सब इस बात पर सहमत थे कि धार्मिक व्यक्तियों में यह शक्ति सबसे अधिक पायी जाती है। कारण स्पष्ट था। यदि आप यह विश्वास करते हैं आपका शरीर ही सब कुछ है तो शरीर निर्बल होते ही आपकी सारी सत्ता डगमगाने लगती है। किन्तु यदि आप यह विश्वास करते हैं कि शरीर आपकी आत्मा का क्षणिक निवासस्थान मात्र है और आपकी आत्मा जन्म-मृत्यु के बन्धन से मुक्त है तो आपके मन में मृत्यु का आतंक नहीं रहता। आप अपने अत्याचारियों की सारी विभीषिकाएं सहन करने का सामर्थ्य प्राप्त कर लेते हैं!

लैनी अमरत्व के प्रश्न पर शंकाशील था किन्तु इस बात पर विश्वास करता था कि संसार में एक ऐसी रहस्यमयी शक्ति अवश्य है जो उसकी अपेक्षा कहीं अधिक महान है। वह इस बात पर भी विश्वास करता था कि यह शक्ति सत्य पर आधारित है, मिथ्या पर नहीं। इस समय भी उसके अंतःकरण से यह स्वर उठ रहा था—"प्रभु! मेरी सहायता करो।" उसने मन ही मन उन महान शहीदों की बातें याद कीं जो मृत्यु के समय भी विचलित न हुए थे। उसने निश्चय किया कि वह सोवियत रूस के इन तानाशाहों को दिखा देगा कि उनकी पार्टी तथा सम्पूर्ण शासन तंत्र से भी अधिक शक्तिसम्पन्न कोई सत्ता है।

(५)

उसे थोड़ी ही देर आराम करने का अवसर मिला। वार्डर फिर आ उपस्थित हुआ। उसे फिरसे उस कमरे में जाना पड़ा। इस बार वहाँ एक नया परीक्षक बैठा हुआ था। लैनी समझ गया कि पहले वाला परीक्षक कोई उच्च अधिकारी था जो एक विशेष प्रयोग करने के लिये आया था। अब फिर से वही पुराना क्रम शुरू होगा।

बन्दी के लिये भी ! यह एक बेतुकी बात थी। वह बन्दी को मृत्यु की धमकी दे रहा था। किन्तु इस धमकी को सुनने के लिये बन्दी का जीवित रहना आवश्यक था। अभियोग-पत्र पर उसके हस्ताक्षर प्राप्त किये बिना बन्दी का मर जाना एक भयानक बात थी !

बेहरा भोजन ले आया। अधिकारी ने उसे लैनी के सामने रख दिया। लैनी छोटे छोटे निवाले उठाते हुए उसे खाने लगा। इधर अधिकारी गिद्ध की भाँति अपनी दृष्टि गड़ाए हुए खड़ा रहा। भोजन समाप्त करने के बाद लैनी ने शौचालय जाने की आज्ञा मांगी। आज्ञा मिल गयी। शौचालय से लौट कर आने पर उसे फिर से उसी स्टूल पर बैठा दिया गया और पहले की भाँति ही प्रश्नोत्तर का वह भयानक क्रम शुरू हो गया। अधिकारी की गालियाँ भिन्न-भिन्न भाषाओं में रूपायित होकर निकलने लगीं। उसने मानव शरीर के अंग प्रत्यंग का वर्णन करते हुए बताना शरू किया कि किस प्रकार इन्हे काटा, पीसा अथवा कुचला जा सकता है। किन्तु लैनी के मन पर इन धमकियों का कोई प्रभाव न पड़ा। वह इस समय अपनी चेतना के उस स्तर पर पहुंच गया था जहां इस विश्व ब्रह्माण्ड में निवास करनेवाली उस दैवी शक्ति का निवास रहता है जो हर प्रकार के आतंक और अत्याचार के परे है।

(६)

अत्याचारी अधिकारी के पास घड़ी न थी। वह प्रश्न पर प्रश्न करता जा रहा था। धमकियों और गालियों का क्रम भी साथ साथ चल रहा था। अन्त में एक वार्डर ने आकर उसे बताया कि समय बीत चुका है। लैनी को फिर से उसकी कोठरी में पहुंचा दिया गया। कुछ भोजन आया। लैनी जब तक खाता रहा वार्डर खड़ा खड़ा एकटक देखता रहा।

लैनी लेट गया। थकावट से चूर शरीर को यह शान्ति बड़ी भली लगी किन्तु लैनी जानता था कि यह अधिक समय तक न रहेगी। हुआ भी यही। ज्यों ही उसकी झपकी लगी एक व्यक्ति ने आकर उसे झकझोर कर जगा दिया। उसे फिर से 'परीक्षा' के लिये ले जाया गया। इस बार फिर वह युवक परीक्षक आया जिसके सामने लैनी सर्वप्रथम पेश हुआ था। पहली मुलाकात के अवसर

पर उसने कानून के प्रति श्रद्धा दिखाई थी। यही समझकर लैनी ने इस बार फिर प्रतिवाद किया कि उसकी आंखों के सामने जो विद्युत प्रकाश रखा जाता है उसे बन्द कर दिया जाय। लैनी ने कहा कि वह सरकारी वकील के पास अपना प्रतिवाद भेजना चाहता है। उसने अपना प्रतिवाद लिखने के लिये कागज और पेन्सिल मांगा। कागज और पेन्सिल मिलने पर उसने बड़ी कठिनाई से अपना प्रतिवाद लिखा। उसे इस बात का निश्चय न था कि उसका यह प्रतिवाद सरकारी वकील तक पहुंचेगा या नहीं। किन्तु उसने सोचा कि प्रयत्न करके देख लेने में क्या हानि है।

प्रश्नोत्तर का क्रम फिर शुरू हुआ। सब कुछ पहले की भांति ही हुआ। केवल एक अन्तर था। पहले की अपेक्षा इस बार लैनी बहुत अधिक निर्बल था। उसका सिर चक्कर काट रहा था। वह कई बार स्टूल से गिरते गिरते बचा। एक वार्डर ने आकर उसके कंधे पकड़ लिये ताकि प्रश्नों का क्रम जारी रहे। किन्तु लैनी की सम्पूर्ण चेतना शक्ति इस समय शारीरिक यंत्रणाओं के ऊपर उठकर कहीं अन्यत्र चली गयी थी।

अधिकारी ने प्रश्न किया कि जिस समय लैनी प्रथम बार मास्को गया था उसने किन किन व्यक्तियों से मुलाकात की थी। लैनी ने एक बार फिर बताया कि वह स्टालिन से मिला था और उनकी रिपोर्ट लेकर प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट के पास लौट गया था। अधिकारी को यह बात अविश्वसनीय प्रतीत हो रही थी कि कोई व्यक्ति स्टालिन से मिलने के बाद भी कम्युनिस्ट न बन जाय! यह व्यक्ति स्टालिन से मिलने के बाद भी वापस अमेरिका चला गया और सोवियत रूस का शत्रु हो गया!! स्टालिन के अतिरिक्त वह किन किन व्यक्तियों से मिला था? लैनी के लिये इस प्रश्न का उत्तर देना आसान न था। वह जानता था कि वह जिस व्यक्ति का नाम लेगा वह कम्युनिस्टों की आंख पर चढ़ जायगा। अपने इस मास्को-प्रवास के प्रसंग में लैनी अपने कम्युनिस्ट मामा जेसे ब्लैकलेस से मिला था। किन्तु जेसे की मृत्यु हो चुकी थी—कम से कम स्टालिन ने उसे याल्टा सम्मेलन के अवसर पर यही बताया था। सम्भव है यह बात सत्य न हो। किन्तु रूसियों को यह बात मालूम थी कि जेसे उसके मामा हैं; इसलिये उनका नाम लेने

में कोई विशेष हानि की सम्भावना न थी। वह मास्को में हैन्सी और बेस से भी मिला था। किन्तु उसने मन ही मन निश्चय किया कि वह इनके नाम न लेगा। वह मन ही मन सोचने लगा कि उस समय वह किन किन सोवियत अधिकारियों से मिला था। सोवियत अधिकारियों का नाम लेने में उसके सामने कोई बाधा न आती थी, यहाँ कर्त्तव्याकर्त्तव्य विवेक का कोई प्रश्न न उठता था। उसने एक एक करके उन सभी सोवियत अधिकारियों के नाम बता दिये जिनके साथ उसने उस समय भेंट की थी। उसने लक्ष्य किया कि उसके परीक्षक के चेहरे पर प्रसन्नता की एक लहर दौड़ गयी है। कदाचित वह सोच रहा था कि बन्दी से कुछ न कुछ भेद तो प्राप्त हुआ!

प्रश्नोत्तर का क्रम तब तक चलता रहा जब तक कि लनी मूर्छित न हो गया। किन्तु इस बार वह स्टूल से गिरा नहीं। गिरने के पूर्व ही उसे वार्डर ने सम्हाल लिया। उसे वापस कोठरी में पहुँचा दिया गया। एक बार फिर उसे रोटी तथा गोभी का शोरवा खाने के लिये दिया गया। इसके बाद उसे थोड़ी देर के लिये चारपाई पर लेट जाने के लिये अनुमति दे दी गयी। वह चारपाई पर लेट गया। वार्डर लोहे की छोटी सी खिड़की से उसकी ओर ताकता रहा।

(७)

मनुष्य का अवचेतन मन एक रहस्यमयी वस्तु है। सारे संसार में इससे अधिक आश्चर्यजनक दूसरी वस्तु नहीं। यह अवचेतन मन नाना प्रकार की क्रियायें करता रहता है। यह शरीर की आवश्यकता के अनुसार हृदय की गति को तेज़ या धीमा बनाए रखता है। इसी के कारण श्वास-प्रश्वास के समय मनुष्य की छाती फूलती या दबती रहती है, इसी के कारण असंख्य छोटी छोटी धमनियों से रक्त का सञ्चार होता रहता है। यही भोजन को पचाने तथा विजातीय द्रव्य को बाहर फेकने का कार्य करता है। इसके अतिरिक्त हमारा अवचेतन मन ही स्मृतियां का विराट कोष है। इसमें हमारी लाखों करोड़ों स्मृतियां संचित होती रहती हैं। संगीतज्ञ हैन्सी रोबिन के अवचेतन मन में जो लाखों सङ्गीत ध्वनियां सञ्चित थीं उन्हें कौन गिन सकता था? किन्तु जब वह श्रोताओं के

सम्मुख खड़ा होता था तो जिस क्षण जिस ध्वनि की आवश्यकता होती थी वह ऊपर उभर आती थी।

लैनी के अवचेतन मन में दो विचार बहुत गहरे गड़ गये थे। इसके बाद अन्य जीवन्त पदार्थों की भाँति ये भी धीरे धीरे विकसित होकर एक विशिष्ट रूप धारण करने लगे थे। पहला विचार यह था कि प्रश्नोत्तर के समय कम्युनिस्टों का नाम लेकर उनकी शासन व्यवस्था के अन्दर शङ्का और सन्देह की सृष्टि करने में कोई हानि नहीं है। कारण वह देख रहा था कि कम्युनिस्ट लोग उसके मन में शङ्का और सन्देह की सृष्टि करने में हर सम्भव प्रयत्न कर रहे हैं। मार्क्स, लेनिन और स्टालिन ने संसार में कितने भ्रम की सृष्टि की है! फिर उन्हीं के विष से उनके अनुयायियों को क्यों न मारा जाय?

दूसरा विचार अमेरिका के कम्युनिस्टों के सम्बन्ध में था। यह तीसरा परीक्षक एक दुष्ट प्रकृति का व्यक्ति था। उसे बेस के सम्बन्ध में सारी जानकारी थी। वह बेस की क्रियाशीलता, उसके मुकदमे तथा मुकदमे के निर्णय से भलीभांति अवगत था। लैनी के प्रति उसके क्रोध का एक कारण यह भी था कि उसे यह बात बड़ी बुरी लग रही थी कि बेस के इस नीच भाई को कम्युनिज्म के आदर्श को समझने का इतना सुन्दर अवसर प्राप्त हुआ और उसने इस ओर कोई ध्यान न दिया! उसने यहां तक कह डाला कि शायद लैनी ने ही अपनी बहन के साथ विश्वासघात करके उसका भेद पुलिस को दे दिया हो! उसने बार बार यह बात दोहरा कर लैनी के अवचेतन मन में एक बीज डाल दिया था और अवचेतन मन में पड़ने वाले अन्य बीजों की भांति यह बीज भी धीरे धीरे अपने ढंग से बढ़ने लगा था।

जो भी हो, जब लैनी अपनी कोठरी में सोकर उठा उसके मन में एक पूर्ण योजना बन कर तयार हो गयी थी। उसने इस पर निष्पक्ष दृष्टि से विचार करने की कोई आवश्यकता न समझी। शायद उसने यह समझ लिया था कि यह योजना उसके मन में उन पवित्र प्रार्थनाओं के परिणामस्वरूप ही आयी है।

(८)

वह फिर से 'परीक्षा' के लिये उस अत्याचार-गृह में पहुंचाया गया। इस

बार उस वयोवृद्ध द्वितीय अधिकारी की बारी थी जिसने भांति भांति की मीठी मीठी बातों से लैनी को फुसलाने का प्रयत्न किया था। उसे स्टूल पर बैठा कर वार्डर कमरे के बाहर चला गया। अधिकारी ने बटन दबाया और वह भयानक प्रकाश लैनी की आंखों के सामने चमकने लगा।

"महाशय", लैनी ने इस बार तत्परता के साथ कहा, "मैंने अपना विचार बदल दिया है। अब मैं समझ गया हूं कि आप का परामर्श ही ठीक था। मैं अब इस अत्याचार को सहन नहीं कर सकता। मैं आप के सम्मुख एक प्रस्ताव रखना चाहता हूं।"

"वाह!" अधिकारी ने प्रसन्न स्वर में कहा। "यह तो बड़ी अच्छी बात है। आप पहले ही मेरी बात मान लेते तो आप को इतना कष्ट न उठाना पड़ता।"

"मुझे दुःख है कि मैंने आप के परामर्श पर उस समय उचित ध्यान न दिया। जो भी हो, अब मैं तयार हूं। मैं नहीं जानता कि आप के सम्मुख मैं जो प्रस्ताव रखने जा रहा हूं उससे आप कहां तक सहमत होंगे। किन्तु पहले मैं आप से एक सुविधा का अनुरोध करूंगा।"

"वह क्या?"

"मुझे जमीन पर लेट जाने की अनुमति दी जाय। यह स्टूल मेरे लिये एक बहुत बड़ी यन्त्रणा हो उठा है। इस पर बैठ कर मैं कुछ सोच समझ नहीं पाता।"

"यह प्रार्थना नियमानुकूल नहीं है, मिस्टर बड। किन्तु जब कि आप मुझे कुछ सुविधा देने का आश्वासन दे रहे हैं तो मैं समझता हूं कि मैं भी आप के साथ कुछ रियायत कर दूं। आप जमीन पर लेट जाइये।"

लैनी ज़मीन पर लेट गया। प्रकाश बुझा दिया गया। उसने धीमे स्वर में कहना शुरू कियाः—

"महाशय, स्टालिन के सम्बन्ध में आपने मेरे सम्मुख जो प्रस्ताव रखा है, उसे मैं स्वीकार नहीं कर सकता क्योंकि मुझे यह कहानी सत्य नहीं प्रतीत होती। मैं इस अभियोग-पत्र पर हस्ताक्षर नहीं कर सकता कि मैंने स्टालिन की हत्या करने का प्रयत्न किया था। किन्तु मैं एक काम कर सकता हूं जो सम्भवतः आप

के लिए महत्वपूर्ण होगा। मैं आप को अमेरिका की कम्युनिस्ट पार्टी के सम्बन्ध में बहुत कुछ बता सकता हूं।"

"उसके सम्बन्ध में हम लोग काफी जानते हैं, मिस्टर बड।"

"मुझे मालूम है। किन्तु आप वह नहीं जानते जो मैं आप को बताऊंगा। मैं आप को अमेरिका की कम्युनिस्ट पार्टी के उन सदस्यों के नाम बता सकता हूं जो वस्तुतः सरकार के गुप्तचर हैं।"

अधिकारी एक अनुभवी और दक्ष व्यक्ति था। उसने यथासम्भव प्रयत्न करके अपने चेहरे पर उत्सुकता का कोई भाव प्रकट न होने दिया। किन्तु लैनी की दृष्टि से उसके चेहरे का भाव छिपा न रहा। इसके अतिरिक्त उसकी आवाज़ पूर्वापेक्षा कहीं अधिक नर्म हो गयी थी।

"यह बात शायद हम लोगों के लिये रोचक प्रमाणित हो, मि० बड।"

"मेरा प्रस्ताव यह है कि आप मुझसे यह जानकारी प्राप्त करके बदले में मेरे विरुद्ध लगाया गया यह अभियोग उठा लें कि मैंने स्टालिन की हत्या करने का षड़यन्त्र रचा था या इस षड़यन्त्र की मुझे कोई जानकारी थी। मैं जो कुछ जानता हूं आप को बता दूंगा। इसे स्वीकार करके आप मुझे पश्चिमी बर्लिन जाने की अनुमति दे देंगे। और आप खुलेआम इस बात की कोई घोषणा न करेंगे कि यह जानकारी आप को मुझसे प्राप्त हुई है। बोलिये, आप को यह प्रस्ताव स्वीकार है?"

"हमें इस बात का निश्चय किस प्रकार होगा कि आप जो कुछ कह रहे हैं वह सत्य है?"

"महाशय, आपको इस बात का पता कैसे चलता कि स्टालिन की हत्या के सम्बन्ध में आपने जिस षड़यन्त्र का उल्लेख किया है उसके बारे में मेरी बातें सत्य होंगी? मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप इस षड़यन्त्र की बात को बराबर कपोलकल्पित समझते रहे थे और आपको यह देख कर आश्चर्य हो रहा था कि झूठ बोलने की अपेक्षा मैंने इस भयानक अत्याचार को सहन करना अधिक श्रेयस्कर समझा। इससे आपको इस बात का पता चल गया होगा कि सत्य के प्रति मेरी निष्ठा किस प्रकार की है। अब मैं आपको जो कुछ बताऊंगा उसकी

जांच पड़ताल करने में निश्चय ही काफी समय लगेगा और मैं इस बात के लिए तयार नहीं हूं कि मैं इतने दिनों तक जेल में पड़ा रहूं। किन्तु मैं समझता हूं कि मेरी बातें सुनने के बाद आपको मुझ पर संदेह करने का कोई कारण न रहेगा मैं आपको यह भी बता देता हूँ कि मैं जो जानकारी आपको दूंगा वह स्टालिन वाले षड़यन्त्र की स्वीकृति की अपेक्षा कहीं अधिक बहुमूल्य प्रमाणित होगी। यदि मैं स्टालिन की हत्या के सम्बन्ध में इस कपोलकल्पित अभियोग-पत्र पर हस्ताक्षर कर दूंगा तो इससे आपको कोई विशेष लाभ न होगा। इससे केवल इतना ही लाभ होगा कि मुझे गोली मार देने के लिए आपको एक बहाना मिल जायगा। और यदि यह अभियोग स्वीकार करने के बाद भी आपने मुझे अपने देश लौट जाने दिया तो वहां मैं तुरन्त सबके सामने यह बात स्पष्ट कर दूंगा कि सारी बात कपोलकल्पित है। यह पहली घटना न होगी जिसमें किसी व्यक्ति पर अत्याचार करके उससे बलात कोई अभियोग स्वीकार करा लिया गया हो।"

"इस सम्बन्ध में मैं स्वयं कोई निश्चय नहीं कर सकता। मुझे अपने उच्च अधिकारी के साथ परामर्श करना पड़ेगा।"

फलस्वरूप वार्डर को बुलाया गया। वह लैनी को फिर से उसकी कोठरी में छोड़ आया। अपनी चारपाई पर लेट कर लैनी सोचने लगा। क्या वे लोग मेरी बातों का विश्वास करेंगे? क्या वे लोग मुझे आश्वासन देने के बाद उसका पालन करेंगे? यदि मैं उन्हें सत्य बातें बताऊंगा तो वे मेरा विश्वास न करेंगे; असत्य बताऊंगा तब भी न करेंगे। वे जांच पड़ताल करेंगे और फिर भी सन्तुष्ट न होंगे। किन्तु एक लाभ अवश्य होगा! मेरी बातें सुननेके बाद वे लोग चिन्तित हो उठेंगे और पार्टी के अनेकों व्यक्तियों के प्रति संदेह करने लगेंगे। इससे पार्टी के अन्दर कुछ न कुछ गड़बड़ी तो अवश्य फैलेगी। उन लोगों ने मेरे साथ बेईमानी का व्यवहार किया है इस लिये मैं भी उनके प्रति बेईमानी करूंगा। वे असत्य पर विश्वास करते हैं; मैं उनके साथ असत्य का व्यवहार ही करूंगा।

इस प्रकार लैनी ने अपने कर्त्तव्यपथ का निश्चय कर लिया। इससे और कुछ हो या न हो उसे थोड़ी देर के लिये राहत तो मिल ही गयी। उसने अपनी आंखें मूंद लीं और सोने का प्रयत्न करने लगा। थोड़ी ही देर में उसे गहरी नींद आ गयी।

(९)

जब उसे दुबारा परीक्षक के पास ले जाया गया वह पूर्वापेक्षा स्वस्थ था। अधिकारी ने कहा, "मिस्टर बड, मुझे आपका प्रस्ताव स्वीकार करने की अनुमति मिल गयी है। किन्तु यह आवश्यक है कि आप हम लोगों को जो कुछ बतावें वह सचमुच महत्वपूर्ण हो। अन्यथा समझौता समाप्त।"

लैनी ने कहा, "मैं आपको जो कुछ बताऊंगा वह निश्चय ही महत्वपूर्ण होगा। यदि आपके उच्च अधिकारीगण इसके महत्व को स्वीकार न करेंगे तो इसका अर्थ यह होगा कि वे अपने वचन का पालन नहीं करना चाहते।"

"ऐसी बात आपको न कहनी चाहिये, मिस्टर बड।"

इस बार वह भयानक प्रकाश न चालू किया गया। लैनी को एक दूसरे कमरे में ले जाया गया जहां एक सोफा पड़ा हुआ था। उसे सोफे पर लिटा दिया गया। वार्डर ने अधिकारी के सामने एक छोटी सी मेज़ रख दी और वह कागज कलम लेकर लिखने के लिए बैठ गया। वह कागज के कई पैड लेकर बैठा था। उसका अनुमान था कि उसे विस्तृत जानकारी प्राप्त होगी।

लैनी ने बोलना शुरू किया। वह न्यूयार्क के कम्युनिस्टों के नाम गिनाने लगा। वह कहता कि वस्तुतः यह व्यक्ति कम्युनिस्टों का शत्रु है और वह एफ० बी० आई के गुप्तचर के रूप में पार्टी के अन्दर काम कर रहा है। लैनी ने विख्यात व्यक्तियों के नाम न लिये क्यों कि वह जानता था कि यदि वह पाल रोबसन या विलियम जेड फोस्टर को एफ० बी० आई का गुप्तचर बतायेगा तो कोई उसका विश्वास न करेगा। उसने एक एक करके बेस के मित्रों के नाम गिनाने शुरू कर दिये; हैन्सी से उसे इनका सारा विवरण मालूम हो गया था। लैनी ने प्रायः छै व्यक्तियों के नाम बताये। परीक्षक ने लैनी के वक्तव्य का एक एक शब्द लिखने के बाद अचानक यह प्रश्न किया : "किन्तु मिस्टर बड, आपको इन बातों का पता कैसे चला?"

लैनी ने जो उत्तर दिया उससे वह कठोर व्यक्ति भी आश्चर्यचकित हो गया। बीस वर्ष का सुदीर्घ अभ्यास भी इस बार उसे संयत न रख सका।

"महाशय, मैं सारी बातें जानता हूँ।" लैनी ने पूर्ण आत्मविश्वास के स्वर में कहा, "क्यों कि मेरी बहन वेस स्वयं एफ० बी० आई की एजेण्ट है।"

"किन्तु मिस्टर बड, यह कैसे हो सकता है?" आश्चर्यचकित अधिकारी ने कहा, "आपकी बहन को कम्युनिस्ट पार्टी का कार्य करने के अपराध में कारावास का दण्ड दिया गया है!"

"वह तो होना ही था, महाशय। यदि एफ० बी० आई वाले उसे छोड़ देते तथा अन्य अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लेते तो क्या होता? आपकी एम० जी बी० भी इस प्रकार की स्थिति में ठीक वही करती जो एफ० बी० आई ने किया है।"

"हां, मिस्टर बड, किन्तु किन्तु इतनी लम्बी सज़ा—दस वर्ष का कठोर कारावास!"

"दण्ड जितना ही अधिक होता है उतना ही अच्छा होता है। इस लम्बी सजा से बेस पूर्णतया सुरक्षित हो गयी है। जहां तक जेल का प्रश्न है उसे दो चार दिन ही वहां रहना पड़ा था। इसके बाद उसे जमानत पर छोड़ दिया गया था और इस समय भी वह जमानत पर ही है।"

"हम लोगों को यह बात एकदम अकल्पनीय प्रतीत होगी!"

"फिर भी यह पूर्णतया सत्य है। मामले की अपील की गयी है किन्तु इसकी सुनवाई शुरू होने में काफी विलम्ब होगा। वहां अपील खारिज हो गयी तो फिर उससे ऊंचे न्यायालय में अपील होगी। इस प्रकार सुप्रीम कोर्ट तक का रास्ता खुला हुआ है। हो सकता है इसमें वर्षों का समय लग जाय। इसके बाद सम्भव है कोई न्यायालय मामले पर पुनर्विचार का आदेश दे दे और इधर सरकार यह देखे कि उसके गवाह इधर उधर हो गये हैं। फलस्वरूप सम्भव है वह इस मामले को चुपचाप समाप्त कर दे!"

"यह सब बड़ा विचित्र प्रतीत होता है। किन्तु मिस्टर बड, आप अपनी बात कहते जाइये। आपकी बहन ने क्या सोचकर एफ० बी० आई का गुप्तचर बनना स्वीकार किया था?"

"बहुत दिनों तक वह सचमुच कम्युनिज्म के आदर्श पर विश्वास करती रही

थी। बहुत दिनों तक वह पार्टी की सच्ची सदस्या के रूप में रही थी। किन्तु बाद में जब उसने देखा कि पार्टी के उच्च नेता बड़े ऐश्वर्य के साथ रहते हैं और भोग विलास में डूबे रहते हैं, तब उसका विश्वास शिथिल पड़ने लगा। उसने देखा कि पार्टी के उच्च नेता नाटक क्लबों में और बाजारू स्त्रियों के पीछे घूमने में अपना समय बिताते रहते हैं। पार्टी के अन्दर युवती सदस्याओं के साथ वे अनाचार करते हैं। श्रमजीवियों के आन्दोलन के लिये इकट्ठा होनेवाले चन्दे का अधिकांश भाग उनकी जेबों में चला जाता है। यह सब देखकर उसका मन बड़ा खिन्न हो गया। इसके अतिरिक्त वह रूस की वैदेशिक नीति से भी असंतुष्ट होने लगी थी। उसको ऐसा प्रतीत होने लगा कि कमिनफार्म की नीति अब अन्तर्राष्ट्रीयता की न होकर धीरे धीरे राष्ट्रीयता की होती जा रही है। इसके अतिरिक्त उसने रूस के अन्दर दास-मजदूर-शिविरों की जो भयानक कहानियां सुनी थीं उससे उसका रहा सहा विश्वास भी विचलित हो गया था। सबसे अधिक सदमा उसे इस बात से पहुंचा कि कुछ सोवियत एजेण्ट उसके पिता के वायुयान बनाने वाले कारखाने में जासूसी का कार्य कर रहे थे। ये बातें किसी भी व्यक्ति के विश्वास को हिला सकती हैं।"

"ठीक है मिस्टर बड; अमेरिका की कम्युनिस्ट पार्टी ने पूंजीपति समाज से आनेवाले सदस्यों का विश्वास करके भयानक गलती की थी। मैं आपकी बहन को पार्टी-कामरेड के रूप में कभी न स्वीकार करता।"

"बेस ने आकर मुझे बताया कि बड-अलिन्ग कारखाने में सोवियत जासूस क्या कर रहे हैं। मैंने अपने पिता से इसकी चर्चा की। उन्होंने इस मामले को एफ० बी० आई तक पहुँचा दिया। बेस मास्को में रह चुकी थी और कम्युनिस्ट पार्टी की विश्वासपात्रा थी। फलस्वरूप एफ० बी० आई ने उसे अपने काम के लिये राज़ी कर लिया। बेस पार्टी के अन्दर बनी रही और उसके रहस्य एफ० बी० आई तक पहुंचाती रही। वह पार्टी के सर्वोच्च व्यक्तियों के साथ उठती बैठती थी और उनके भेद एफ० बी० आई को बता देती थी।—मुझे आपको जो कुछ बताना था बता दिया। अब आप स्वयं देख सकते हैं कि यह कितना महत्वपूर्ण है।"

अधिकारी कई घण्टे तक लैनी के साथ ज़िरह करता रहा। वह छोटी से छोटी बात पर भी पूर्णतया संतुष्ट हो जाना चाहता था। इसके बाद उसे उसकी कोठरी में भेज दिया गया। इस बार उसे पहले की तुलना में अच्छा खाना दिया गया और चारपाई पर लेट कर सो जाने की अनुमति दे दी गयी। इस बार उसे तंग न किया गया—अब वह सोवियत सरकार का महत्वपूर्ण अतिथि था!



अध्याय २८

● पट का प्रत्यावर्त्तन ●

(१)

लैनी को इस बात का पता न चला कि वह कब तक सोता रहा। अचानक जब किसी ने एक झटके से उसे उठा दिया तो उसे ऐसा लगा मानों वह थोड़ी ही देर सो पाया हो। इस प्रकार नींद में खलल पड़ना उसे अच्छा न लगा। किन्तु वार्डर ने चिल्ला कर कहा, 'परीक्षा के लिये चलो'। वह लैनी को चारपाई से खींचकर ले चला। सुपरिचित पथ पार करके लैनी फिर उसी कमरे में पहुंचा। इस बार उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि फिर वही नं० ३ परीक्षक बैठा हुआ है जिसके चेहरे से घृणा और नीचता का भाव सब समय टपकता रहता था।

इस भयानक व्यक्ति को देख कर लैनी का हृदय सिकुड़कर बिन्दु मात्र रह गया। उसे फिर से उस छोटे से स्टूल पर बैठा दिया गया और आंखों के सामने वह भयानक प्रकाश फिर से चालू कर दिया गया। वार्डर बाहर चला गया। अधिकारी थोड़ी देर तक लैनी की ओर घूर घूर कर देखता रहा रहा। इसके बाद वह कठोर स्वर में बोला, "तो तुम यह समझते थे कि तुम हम लोगों को चकमा दे सकते हो?"

लैनी ने अस्फुट स्वर में कहा, "आप क्या कह रहे हैं, महाशय?" अधिकारी ने इस ओर कोई ध्यान न दिया और भांति भांति की गालियां बकने लगा। "प्रतिक्रियावादी बनमानुस! नीच कुत्ते!"

लैनी सचमुच आश्चर्य से अभिभूत हो गया। उसने प्रश्न किया, "महाशय क्या आपने वह वक्तव्य देखा है जो मैंने कल दिया था?"

"मैंने उसका एक एक शब्द पढ़ा है। मुझे इस बात पर आश्चर्य होता है कि तुमने हम लोगों को इतना मूर्ख कैसे समझ लिया? क्या तुम समझते हो कि हम लोग तुम्हारे इस चकमेमें आ जाएंगे? तुमने हम लोगों को जो कुछ

बताया है वह तो हम लोग पहले ही जानते थे। तुमने नयी बात कौन सी बतायी है?"

"आप यह सब पहले से ही जानते थे?" लैनीने आश्चर्यचकित स्वर में पूछा।

"हां, यह सब हम लोग पहले ही जानते थे।"

लैनी इसके लिये तयार था। वह जानता था कि कम्युनिस्ट लोग उसका भेद लेकर फिर अपने वचन का पालन न करेंगे। किन्तु उसे इस बात पर सचमुच आश्चर्य हो रहा था कि वे इस प्रकार की निर्लज्जता कर सकते हैं! यह उसके लिये एकदम कल्पनातीत था। यदि उसका शरीर इतना निर्बल न हो गया होता तो कदाचित वह हंसते हंसते लोट पोट हो जाता। किन्तु उसने बड़ी कठिनाई से अपने आप को संयत बनाए रखा और कहा; "महाशय, मुझे यह बात न मालूम थी कि आप ये बातें पहले से जानते हैं।"

अधिकारी ने गर्व के साथ कहा कि सोवियत सरकार सर्वप्रभुतासम्पन्न ही नहीं सर्वज्ञानसम्पन्न भी है। उसने लैनी को धमकी देते हुए कहा कि वह इस महा महिम सोवियत यूनियन के सामने एकदम असहाय व निरावलम्ब है। सोवियत यूनियन के शत्रु चाहे जो करें, वे उसका बाल भी बांका नहीं कर सकते। अन्तमें तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय ही नयी मानव सभ्यता का निर्माण करेगा। इस लम्बी वक्तृता का सारांश यही था कि लैनी को अभियोग-पत्र पर हस्ताक्षर करना पड़ेगा; जब तक वह इस अभियोग को स्वीकार न करेगा कि उसने स्टालिन की हत्या का प्रयत्न किया था तब तक उसे चैन न दी जायगी।

लैनी पर उल्कापात सा हो गया; उसकी अन्तिम आशा भी चली गयी। किन्तु उसकी अन्तरात्मा से अब भी यह आदेश आ रहा था कि वह किसी भी अवस्था में आत्मसमर्पण न करे! उसने अपनी मुट्ठियां कस कर बांध लीं और मन ही मन गुनगुनाने लगा, "ईश्वर मेरी सहायता कर रहा है।" उसने यह निश्चय कर लिया कि या तो वह इस अग्नि-परीक्षा से सफल होकर निकलेगा या इसमें अपने प्राण दे देगा। यह अन्तिम संघर्ष था। उसने ईश्वर के सम्मुख पूर्ण आत्म समर्पण कर दिया। यह ईश्वर कोई मनोवैज्ञानिक परिकल्पना नहीं बल्कि एक जीवन्त सत्य था। उसके रोम रोम से यह ध्वनि निकलने लगी :

'तुम बिन नाथ मेरा
और क्या सहारा ?
डूब रही है नाव मेरी
दूर है किनारा !'

किन्तु ईश्वर पर विश्वास करना इतना सरल नहीं है। मनुष्य के अन्तर्मन में बराबर द्वन्द्व हुआ करता है। आसुरी शक्तियां स्वच्छन्द गति से संसार में विचरण करती रहती हैं ; आस्तिक व्यक्ति पर भांति-भांति से आक्रमण करती रहती हैं। धर्मप्राण व्यक्ति अपनी आंखें बन्द करके इन आसुरी शक्तियों से बचने का प्रयत्न करता है, वह ईश्वर से सहायता की पुकार करता है। किन्तु उसे पग पग पर द्वन्द्व और संघर्ष का सामना करना पड़ता है।

लैनी का परीक्षक इन आसुरी शक्तियों का साक्षात् अवतार प्रतीत होता था। वह घृणा के सिद्धान्त पर विश्वास करता था। सम्भव है उसके मन में घृणा की यह भावना स्वाभाविक रूप में पैदा न हुई हो। किन्तु उसने उसे घृणा को वाह्य व्यवहार के एक अस्त्र के रूप में अवश्य अपना लिया था। यदि यह बात थी तो वह एक सुन्दर अभिनेता था। वह अपनी भूमिका का पालन बड़ी दक्षता के साथ कर रहा था। वह कभी ज़ोर ज़ोर से चिल्ला कर गालियां बकने लगता, कभी अपनी मुट्ठी हिलाने लगता, कभी मेज़ पर घूंसे मारने लगता। लैनी ने अपनी आंखें बन्द कर लीं और सब कुछ सहन करता गया। वह मन ही मन ईश्वर से प्रार्थन करने लगा कि वह उसे इस परीक्षा में सफल होने के लिये धैर्य और शक्ति प्रदान करे।

अधिकारी ने बार बार यह कहना शुरू किया कि लैनी ने स्टालिन की हत्या के लिये एक षड़यन्त्र रचा था। उसने एक अच्छा खासा कथानक भी तयार कर लिया। उसने अपनी कहानी वहां से शुरू की जब लैनी पहले पहल मास्को गया था। इसके बाद उसने जेनरल स्टूबेनडर्फ तथा कर्ट मेसनर के साथ लैनी की भेंट की चर्चा की। इसके बाद फ्रित्ज और उसकी पोलैण्ड-यात्रा का विवरण आया। उसने इस षड़यन्त्र में भाग लेने वाले सभी तथाकथित अभियुक्तों के नाम लिये, लैनी के तथाकथित सन्देशों की चर्चा की और उस रुपये का उल्लेख किया

जो लैनी ने इन अभियुक्तों को दिया था। लैनी प्रत्येक प्रश्न का नकारात्मक उत्तर देता गया क्योंकि चुप रहने का अर्थ स्वीकृति के रूप में लगा लिया जाता। वह बराबर यही कहता गया कि वह इन व्यक्तियों को नहीं जानता, उसने किसी को रुपया भी नहीं दिया और किसी प्रकार का षड़यन्त्र नहीं रचा। किन्तु प्रश्नों का क्रम बन्द न हुआ। बिजली के प्रकाश के कारण लैनी की आंखें फूल कर अंगारों की भांति हो गयी थीं। उसका सिर चकराने लगा था। अन्त में जब वह स्टूल से लुढ़क कर गिरने लगा एक वार्डर ने दौड़ कर उसे पकड़ लिया और वहीं पर खड़ा रहा।

(२)

थोड़ी देर के लिये परीक्षा स्थगित कर दी गयी। लैनी के लिये कुछ भोजन मंगाया गया। उसे भोजन करने की इच्छा न थी। किन्तु उसे वाध्य होकर खाना पड़ा। अधिकारी ने धमकी दी कि यदि वह स्वेच्छा से न खाएगा तो बलात यह खाना उसके मुंह में ठूंस दिया जायगा।

भोजन समाप्त होने के बाद फिर युद्ध शुरू हुआ। लैनी थक कर चूर चूर हो गया था; उसकी आंखों के सामने अंधेरा सा छा गया था। उसे इस बात का पता न था कि वह क्या कह रहा था। वह अस्फुट शब्दों में कहने लगा, "ईश्वर मेरी सहायता कर रहा है, अधिकारी ने लैनी की गुनगुनाहट सुन ली किन्तु वह समझ न पाया कि वह क्या कह रहा है। उसने चिल्ला कर आदेश दिया कि उसे जो कुछ कहना है जोर से कहे। वह अंगरेज़ी न जानता था। इसीलिये लैनी के शब्द उसकी समझ में न आ रहे थे। उसने वार्डर को भेज कर एक ऐसे व्यक्ति को बुलाया जो अंगरेज़ी जानता था। यह व्यक्ति आकर लैनी के पास बैठ गया। अधिकारी को विश्वास हो गया कि लैनी का मनोबल टूट रहा है और वह आत्मसमर्पण करने वाला है।

किन्तु लैनी प्रार्थना में मग्न था। उसे इस बात का ज्ञान न रह गया था कि उससे क्या कहा जा रहा है। वह एक बार फिर बोल उठा, "ईश्वर मेरी सहायता कर रहा है।" आगन्तुक व्यक्ति ने रूसी भाषा में इस वाक्य का अनुवाद कर दिया। सुनते ही अधिकारी भड़क उठा।

"बड़ा ईश्वर वाला बना है !" उसने चिल्ला कर कहा।

अधिकारी के लिये इस ईश्वर शब्द का अर्थ समझना कठिन था। वह 'घड़ियाल' तथा 'नास्तिक' जैसे साप्ताहिक पत्रों को पढ़ते रहने के बाद अब इस प्रश्न पर एकदम सुनिश्चित हो गया था कि 'धर्म जनता की अफीम है।" किन्तु यह भी सम्भव है कि उसके अन्तर्मन के किसी कोने में यह शङ्का विद्यमान हो कि शायद ईश्वर नाम की कोई वस्तु हो ! सम्भव है उसके मन में इस रहस्यमयी वस्तु के प्रति एक प्रकार का प्रच्छन्न आतङ्क हो। जो भी हो, उसे इस बात का पता चल गया कि लैनी के मन में क्या विचार घूम रहा है और उसकी इस असाधारण शक्ति तथा साहस का स्रोत क्या है। पहले तो उसने लैनी को भांति भांति की गालियां दीं। इसके बाद उसके साथ तर्क करना शुरू किया। इस बीसवीं शताब्दी में ईश्वर जैसी कल्पित वस्तु पर आस्था रखना मूर्खता है; यह एक सभ्य पुरुष को शोभा नहीं देता, यह एक भयानक अन्धविश्वास मात्र है। किन्तु लैनी ने कोई उत्तर न दिया। वह चुपचाप सुनता रहा। इस प्रकार की परिस्थिति में लैनी का ईश्वर एक जीवन्त, संवेदनशील ईश्वर था, तार्किक की शाब्दिक परिकल्पना मात्र नहीं।

लैनी का ईश्वर महान था—बोलशेविक धर्म के मार्क्स-लेनिन-स्टालिन रूपी त्रिमूर्ति से भी अधिक महान। अधिकारी के रूप में बैठा हुआ शैतान भी इस ईश्वर के सामने अपने आप को पराजित अनुभव करने लगा। उसके माथे पर पसीना आ गया। उसकी आवाज़ शिथिल पड़ने लगी। अन्त में वह थक कर बैठ गया। उसने लैनी को चेतावनी दी कि आवश्यकता पड़ने पर परीक्षकों की एक पंक्ति की पंक्ति तैनात कर दी जायगी। इसके बाद उसने वार्डर को बुलाया और उसे आदेश दिया कि वह बन्दी को ले जाकर वापस उसी कोठरी में बन्द कर दे। किन्तु लैनी इतना निर्बल हो गया था कि वह अपने पैरों पर खड़ा न हो सकता था। वार्डर को उसे उठा कर ले जाना पड़ा।

(३)

कोठरी में पहुँच कर लैनी प्रगाढ़ निद्रा में मग्न हो गया। वह कितनी देर तक सोता रहा इसका अनुमान लगाना कठिन था। जिस समय उसकी नींद खुली उसने

देखा कि दो वार्डर उसे चारपाई से खींच रहे हैं। वे उसे घसीटते हुए ले चले। किन्तु इस बार वे उसे परीक्षा-गृह की ओर न ले गए। वे उसे पत्थर के एक लम्बे जीने से उतारते हुए दूसरी दिशा की ओर चले। लैनी मन ही मन सोचने लगा कि अब किसी नये अत्याचार की तयारी तो नहीं हो रही! सम्भव है अब वे लोग उसकी गर्दन पर गोली मार कर उसे इस धरा धाम से विदा कर दें। यदि ऐसा हुआ तो उसे सदा के लिये इस यंत्रणा से मुक्ति मिल जायगी और यह अच्छा ही होगा। लैनी ने सोचा कि इस कार्य के लिये सम्भवतः कोई गुप्त तहखाना होगा जहां बन्दी को मारकर उसका रक्त सरलतापूर्वक साफ कर दिया जाता होगा।

वे लोग उसे एक गलियारे से ले चले। लैनी की नींद पूरी तरह खुल चुकी थी और वह अपने पैरों से चलने लगा था। उसने बचपन से ही अपने शरीर का पूरा पूरा ध्यान रखा था। वह टेनिस का एक अच्छा खिलाड़ी रहा था। फल-स्वरूप इतने लम्बे अत्याचार के बाद भी उसका शरीर एकदम बेकार न हुआ था। चलते चलते वह मन ही मन सोच रहा था। वह जानता था कि अब जो दृश्य सामने आएगा वह आनन्दप्रद न होगा। इसलिये मन में व्यर्थ की आशाएं बाँध कर बाद में निराश होने की अपेक्षा पहले से ही बुरी से बुरी बात के लिये तयार रहना कहीं अधिक अच्छा है। वह दत्तचित्त होकर अपनी प्रार्थना दोह-राता रहा।

गलियारा पार करने के बाद उसने देखा कि वह एक लम्बे चौड़े प्रशस्त स्थान में पहुंच गया है। यहां लोहे के दोहरे फाटक लगे हुए थे और सशस्त्र प्रहरी पहरा दे रहे थे। एक ओर एक बड़ी सी मेज़ रखी हुई थी। उसके पीछे एक व्यक्ति बैठा हुआ था। पास ही सैनिक वर्दी में एक दूसरा व्यक्ति खड़ा हुआ था। यह कोई सोवियत अधिकारी प्रतीत होता था। लैनी को अब पूरा पूरा निश्चय हो गया कि उसे गोली मारने का प्रबन्ध हो रहा है। उसने मेज़ के पीछे बैठे हुए व्यक्ति की ओर ध्यान से देखा। उसका चेहरा साफ सुथरा और सौम्य सा प्रतीत हुआ। किन्तु लैनी इस बात को जानता था कि सोवियत अधिका-रियों के चेहरों के साथ हृदयों का विशेष सम्बन्ध नहीं रहता। वे ऊपर से

सौम्य दिखाई पड़ते हुए भी आवश्यकता पड़ने पर गोली चलाने का आदेश दे सकते हैं।

दोनों अधिकारियों के बीच रूसी भाषा में कुछ बात चीत हुई जो लैनी न समझ पाया। मेज़ के पीछे बैठे हुए व्यक्ति के सामने एक कागज रख दिया गया। उसने उस पर हस्ताक्षर कर दिया; इसके बाद उसने वार्डरों को कोई आदेश दिया। आदेश सुनते ही वार्डर लैनी को लेकर लोहे के दोहरे फाटकों की ओर बढ़े। फाटक पार करने के बाद लकड़ी का एक मोटा ताजा दरवाजा मिला। अधिकारी ने फिर वार्डरों को कोई आदेश दिया और उन्होंने इस दरवाजे को खोलकर लैनी को बाहर निकाल दिया। पांच छै सीढ़ियां पार करने के बाद एक ऊंची दीवार मिली और एक फाटक फिर पार करना पड़ा।

फाटक पार करते ही सामने सड़क दिखाई पड़ी। रात का समय था। चारों ओर अंधकार छाया हुआ था। सड़क की मोड़ के पास एक मोटर खड़ी हुई थी। लैनी को उस मोटर के अन्दर ढकेल दिया गया। लैनी के बाद वह अधिकारी भी भीतर बैठ गया। मोटर तुरन्त चल पड़ी। चारों ओर अंधकार में कुछ भी दिखाई न दे रहा था। अचानक अधिकारी ने लैनी की ओर झुक कर धीरे से उसके कान में कहा, "तुम छूट गये! मैं तुम्हें पश्चिमी जर्मनी की ओर ले जा रहा हूँ!"

(४)

क्षण भर के लिए तो लैनी को विश्वास न हुआ। इसके बाद जब उसने इन शब्दों के मर्म को समझा उसका हृदय उछल सा पड़ा। दूसरे ही क्षण उसके मन में फिर से शंका उठ खड़ी हुई। क्या यह कोई चाल है? किन्तु तुरन्त उसके मन में यह विचार आया कि बन्दियों को एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाने के लिये सोवियत रूस में सैनिकों की कमी नहीं है। इस छोटे से कार्य के लिये वे उसके साथ एक उच्च अधिकारी को क्यों भेजते?

लैनी के मन में शक्ति का संचार हुआ। उसने इस अपरिचित व्यक्ति से प्रश्न किया, "आप कौन हैं?" उत्तर मिला, "मैं एक मित्र हूं।"

लैनी को यह 'मित्र' शब्द बड़ा विचित्र लगा। उसने सोचा कि शायद यह

व्यक्ति एक रूसी अधिकारी है और इसलिए उससे प्रश्न पूछना ठीक न होगा किन्तु वह अपनी उत्सुकता को दबा न सका। कुछ ठहर कर उसने पूछा, "क्या मेरी गिरफ्तारी की बात पश्चिमी जर्मनी वालों को ज्ञात हो गयी थी?" उसने जानबूझ कर 'गिरफ्तारी' शब्द का प्रयोग किया था क्यों कि वह 'अपहरण' शब्द का प्रयोग करके अपने इस रूसी मित्र को रुष्ट न करना चाहता था।

"पश्चिमी बर्लिन के समाचार पत्रों में रात दिन केवल इसी बात की चर्चा हो रही थी। 'रिआस' प्रति क्षण इसी बात की रट लगाये हुए था।"

मोटर एक मोड़ पर घूमी फिर दूसरे पर। शायद उसे आशंका थी कि कहीं अधिकारियों का विचार फिर से न बदल गया हो और वे पीछा न कर रहे हों। अन्त में वह एक स्थान पर आकर खड़ी हो गयी। दो तीन मकानों के बाद ही पश्चिमी बर्लिन की ओर जाने वाला वह सुप्रसिद्ध रास्ता था जो 'ब्रेन्जलारवर्ग प्लाजा' के नाम से प्रसिद्ध था। यह एक भूगर्भ-मार्ग था जिसे जर्मनी में 'अन्टर वान' कहते हैं।

लैनी जानता था कि पश्चिमी बर्लिन जाने के लिये यह सबसे सुगम और सीधा रास्ता है। बर्लिन के हजारों व्यक्ति पूर्व में रहते थे और काम करने के लिये प्रति दिन पश्चिम की ओर जाते थे। इतने अधिक व्यक्तियों की जांच करने का कोई उपाय न था। इस समय रात थी और यातायात की भीड़ न थी। फिर भी जांच पड़ताल के लिये कोई पहरेदार तैनात न थे। अधिकारी ने टिकटें खरीदीं और दोनों सीढ़ियों से उतर कर नीचे प्लैटफार्म पर आ गए। थोड़ी ही देर में रेल आ गयी। निर्बलता के कारण लैनी का सिर चक्कर काट रहा था। अधिकारी ने सहारा देकर उसे रेल में चढ़ा दिया। डब्बे में थोड़े से ही यात्री थे। लैनी डगमगाते पैरों से सीट की ओर बढ़ा। अधिकारीने मुस्करा कर उसके कान में कहा, "चिन्ता मत कीजिए। ये लोग समझेंगे कि आप शराब के नशे में चूर हैं।"

(५)

जेल में लैनी नींद भंग होने और अत्याचारियों के सम्मुख बार बार पेश होने का इतना अभ्यस्त हो गया था कि यहां रेल की बर्थ पर लेटे लेटे भी

उसके मन में इसी प्रकार के विचार उठ रहे थे। अब मुझे किस परीक्षक के सम्मुख पेश किया जायगा ? नम्बर १ के सम्मुख ? या नम्बर २ या नं० ३ के सम्मुख ? काफी देर बाद वह इस सम्बन्ध में आश्वस्त हो सका कि अब वह अपने अत्याचारियों के हाथों से निकल आया है। रूसी अधिकारी साक्षात देवदूत-सा प्रतीत हो रहा था। उसने लैनी को सहारा देकर उठाया। रेल पश्चिमी बर्लिन के प्लेटफार्म पर आ चुकी थी। उसने लैनी को धीरे से बाहर उतारा। लैनी को आश्वस्त करते हुए उसने मुस्करा कर कहा, "अब कोई चिन्ता नहीं है। हम लोग पश्चिमी बर्लिन में हैं।"

लैनी ने प्लेटफार्म पर खड़े खड़े उन्मुक्त वायु के स्पर्श का अनुभव किया—आह ! यह वायु उस जेल की वायु से कितनी भिन्न है !

"आप कौन हैं ?" लैनी ने अपने अपरिचित सहायक से प्रश्न किया।

"मेरा नाम है टोकाएव। मैं रूसी सेना में लेफ्टीनेन्ट कर्नल के पद पर एक इञ्जीनियर हूं।"

"किन्तु, आपने मेरी सहायता क्यों की ?"

"आपका एक मित्र है—किन्तु उसके बारे में आप कुछ मत पूछिये। आप सकुशल पश्चिमी बर्लिन पहुंच गये—इतना ही पर्याप्त है।"

लैनी ने दुबारा अपना कौतूहल प्रकट करना उचित न समझा। किन्तु मन ही मन उसकी उधेड़ बुन चलती रही। उसका यह रहस्यमय मित्र कौन हो सकता है ? जितनी बार वह इस प्रश्न पर विचार करता उसके मन में एक ही उत्तर उठता—हाइनरिक ग्राफ आइन्सीडेल ! लैनी को याद आया कि उसने एक बार आइन्सीडेल की सहायता की थी और आइन्सीडेल ने कहा था कि अवसर आने पर वह इस परोपकार का बदला चुकाने का प्रयत्न करेगा !

"किन्तु आप वापस जाएंगे तो वे लोग आपको गिरफ्तार कर लेंगे।" लैनी ने सशंक स्वर में कहा।

"मैं वापस न जाऊंगा। मैंने पश्चिमी जर्मनी में आ जाने का निश्चय कर लिया है। उन लोगों को संदेह हो गया है कि मैं उनका शत्रु हूँ। मुझे अपने मित्रों से चार बार चेतावनी मिल चुकी है। सरकार ने मुझे मास्को जाने का

आदेश दिया है। मैं जानता हूं मुझे वहां क्यों बुलाया जा रहा है। पूर्वी बर्लिन में वे मुझे गिरफ्तार नहीं करना चाहते क्योंकि यहां मैं काफी लोकप्रिय हूँ। मैं सेना विभाग में लेफ्टीनेण्ट कर्नल हूं और मुझे उड्डयन, राकेट निर्माण तथा अन्य वैज्ञानिक विषयों पर एक विशेषज्ञ के रूप में नियुक्त किया गया है। सैकड़ों विद्यार्थी मुझे जानते हैं। यदि मुझे यहां गिरफ्तार किया जाता तो हल-चल मच जाती। किन्तु एक बार मास्को में बुला लेने पर मुझे ठिकाने लगा देना कोई बड़ी बात नहीं है। फलस्वरूप मैंने यह निश्चय कर लिया था कि मैं पश्चिमी जर्मनी चला जाऊंगा। मुझसे प्रस्ताव किया गया कि जाते समय मैं आपको भी साथ ले लूं।"

"आप विवाहित हैं?"

"मेरे एक पत्नी और दो बच्चे हैं। वे कल पश्चिमी बर्लिन पहुँच गए हैं।"

"आपने मेरा जीवन बचाया है। इस उपकार को मैं कभी न भूलूंगा।" लैनी के पैर लड़खड़ा रहे थे। उसने युवक कर्नल की बांह का सहारा लेते हुए कहा, "मैं कुछ नाश्ता करना चाहता हूँ। बड़ी कमजोरी लग रही है।"

कर्नल लैनी को लेकर एक छोटे से काफे में गया। रेडियो बज रहा था। लैनी इसे सुनते ही प्रफुल्लित हो उठा। 'रिआस' से 'ब्यूटीफुल ब्लू डैन्यूब' की सुपरिचित स्वरलहरी प्रसारित हो रही थी। उसकी अन्तरात्मा इस तान के साथ थिरक उठी!

(६)

भोजन के बाद लैनी के शरीर में कुछ शक्ति का संचार हुआ तो वह अपने मित्र से भांति भांति के प्रश्न करने लगा। उसे समय का कोई ज्ञान न रह गया था। कम्युनिस्टों के हाथों में वह कितने दिन रहा था इसका उसे कोई अनुमान न था। टोकाएव ने बताया कि वह चार दिन और चार रात वहां रहा था।

"शायद इससे अधिक मैं और न सह पाता। मेरा दिमाग प्रायः एकदम खराब हो गया था।"

लैनी के शरीर में धीरे धीरे शक्ति का संचार होने लगा। अब भी उसके

शरीर में दर्द हो रहा था किन्तु अब उसका ध्यान इस ओर न था। वह अपने नये मित्र के साथ बड़ी उत्सुकता के साथ बातें करने लगा।

"वे लोग तुमसे क्या जानना चाहते थे?" नये मित्र ने प्रश्न किया।

"वे मुझसे यह अभियोग स्वीकार कराना चाहते थे कि मैंने स्टालिन की हत्या के लिए एक षड़यन्त्र रचा था।"

"वह षड़यन्त्र तो किसी न किसी दिन होगा ही। किन्तु इससे किसी को कोई लाभ न होगा। स्टालिन के स्थान पर मालेनकोव आ जायगा और वह स्टालिन से भी बुरा प्रमाणित होगा। स्टालिन बूढ़ा हो गया है। वह फूक फूक कर कदम रखता है। किन्तु मालेनकोव अभी युवक है। वह उद्दण्ड और घमण्डी है।"

"आप इन दोनों को जानते हैं?"

"मैं दोनों को भली भांति जानता हूं। मैं आपको यह बताना भूल गया था कि मैं 'रेड बैनर' और 'आर्डर आफ लेनिन' जैसी सम्मानीय उपाधियों से विभूषित हो चुका हूं और मास्को की मिलिटरी अकादमी में लेक्चरर रह चुका हूँ।"

यह व्यक्ति अङ्गरेजी धाराप्रवाह रूप में बोलता था। ऐसा प्रतीत होता था मानों वह किसी पुस्तक से पढ़ रहा हो। उसने कहा, "कई वर्षों तक मैंने सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के सर्वोच्च अधिकारियों के साथ काम किया है। सोवियत युवक आंदोलन तथा ट्रेड यूनियन आन्दोलन के प्रसंग में भी मैं कई उच्च पदों पर रह चुका हूँ। मैं पोलिटब्यूरो के अन्दर प्रवेश पा गया था और बहुधा स्टालिन के साथ मिला करता था। मैंने राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों पर कई बार स्टालिन की गुप्त से गुप्त वार्त्ताओं में भी भाग लिया है।'

"हे भगवान! तब तो आप हम लोगों के लिए बड़े काम के आदमी प्रमाणित होंगे।"

"मैं जो कुछ जानता हूँ आप लोगों को बता दूंगा। मैं इञ्जीनियरिन्ग के सम्बन्ध में बहुत कुछ जानकारी रखता हूं क्यों कि मैं मास्को इन्स्टीच्यूट में बहुत दिनों तक प्रोफेसर रह चुका हूं। मैं आप से यह आशा करूंगा कि आप समुचित अधिकारियों के साथ मेरा सम्पर्क स्थापित करा कर पश्चिमी जर्मनी में रहने के लिए मुझे अनुमति दिला देंगे।"

"मैं बड़ी प्रसन्नता के साथ यह सब ठीक कर दूंगा। अच्छा, मुझे यह तो बताइये कि आपने जिस मित्र की चर्चा की थी क्या वह रूस में ही बना रहेगा?"

"वह एक वीर पुरुष है और तब तक वहां बना रहेगा जब तक कि इससे किसी प्रकार का हित साधन होता रहेगा। किन्तु आप किसी के सामने उसकी चर्चा मत कीजिएगा।"

"वीर तो आप भी हैं।" लैनी ने मुस्करा कर कहा। उस काल-कोठरी में बन्द होने के बाद यह प्रथम अवसर ही था कि लैनी मुस्कराया हो। मुस्कराना तो वह एक प्रकार से भूल ही चुका था।

कर्नल ने कहा कि यह कोई बड़ी बात नहीं है। उसने बताया कि उसके दल के पास अनेकों प्रकार के सरकारी कागजों का एक अच्छा खासा भंडार है। ये कागज सरकारी कार्यालयों से चुरा कर लाए गये थे। इसी प्रकार के एक कागज पर मार्शल सोकोलोव्स्की के जाली हस्ताक्षर बना कर लैनी की रिहाई का आज्ञापत्र बना लिया गया था।

"बेचारा सोकोलोव्स्की!" कर्नल ने हंसते हुए कहा। "उसे जब इस जालसाजी का पता चलेगा वह अपना सिर पीट लेगा। यह कलङ्क सारी जिन्दगी के लिये उसके गले मढ़ गया है। किन्तु वह जानता है कि मैं उसका विरोधी हूं। वह यह भी जानता है कि अब वह जनता का सच्चा सैनिक नहीं बल्कि अत्याचारियों के आदेशों को पालन करने वाला एक पुतला मात्र रह गया है। मिस्टर बड, आप 'प्रेन्जलारबर्ग' जेल का अनुभव कर आए हैं और आप को अब कुछ बताना बाकी नहीं रहा। किन्तु आपको यह जान कर आश्चर्य होगा कि मैं भी भुक्तभोगी हूं और मेरे शरीर पर भी एन० के० वी० डी० के अत्याचारों के अगणित चिन्ह बने हुए हैं। सोवियत यूनियन में एन० के० वी० डी० के षड़यन्त्रों से बचना किसी के लिये भी सम्भव नहीं है। ज्यों ही आप किसी महत्व पूर्ण पद पर पहुंच जाएंगे और आप की मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होने लगेगी त्यों ही कुछ लोग आप के प्रति ईर्ष्यालु हो उठेंगे और भांति भांति के षड़यन्त्र करने लगेंगे। सबके साथ ऐसा ही होता है। सौभाग्यवश अब हम दोनों उन लोगों की पहुंच के बाहर हैं।"

(७)

दोनों वहीं काफे में बैठे हुए बातें करते रहे। अचानक रेडियो पर संगीत समाप्त हो गया और 'रिआस' की ओर से समाचार प्रसारित होने लगे। समाचार जर्मन भाषा में प्रसारित हो रहे थे किन्तु टोकाएव जर्मन भाषा जानता था। दोनों ध्यानपूर्वक सुनने लगे। अचानक रेडियो पर एक ऐसा समाचार आया जिसे सुन कर लैनी चौंक उठा। रेडियो पर 'रिआस' का प्रवक्ता गम्भीर स्वर में कह रहा था :

"श्रीमती लैनी प्रेस्काट बड आज पूर्वी बर्लिन में मार्शल सोकोलोव्स्की से मिलने के लिए गयीं। मार्शल ने उनके साथ भद्रता का व्यवहार किया। किन्तु उन्होंने कहा कि उन्हें श्रीमती बड के पति के सम्बन्ध में किसी प्रकार की जानकारी नहीं है। अमरीकी क्षेत्र में लौट कर श्रीमती बड ने कहा कि वे मार्शल सोकोलोव्स्की के आश्वासन पर विश्वास नहीं कर सकतीं। उन्होंने कहा कि उन्हें इस बात में किञ्चित मात्र संदेह नहीं है कि उनके पति का अपहरण किया गया है और मार्शल को इस बात की पूरी पूरी जानकारी है। यदि मार्शल को इस बात का पता नहीं है तो इसका यह अर्थ होगा कि वे एकदम अयोग्य और निकम्मे व्यक्ति हैं।"

लारेल! लैनी चीख सा उठा। इस सारी उथल पुथल के बीच उसके उत्तेजित मस्तिष्क में यह कल्पना न आयी थी कि उसके गायब होने का समाचार सुनकर लारेल वायुयान द्वारा जर्मनी आ सकती है। अब उसे अपनी यह भूल बड़ी बेतुकी प्रतीत होने लगी। वह सोचने लगा : लारेल पहले वाशिन्गटन के अधिकारियों के पास गयी होगी और उसने अनुनय विनय करके अपना पासपोर्ट बनवा लिया होगा। इसके बाद वह पहले वायुयान से बर्लिन के लिये रवाना हो गयी होगी। बर्लिन पहुँचकर उसने मान्क, जेनरल क्ले और 'रिआस' के यहां धरना धर दिया होगा।

उसने सोचा कि उसका कर्त्तव्य है कि सबसे पहले वह लारेल के साथ अपना सम्पर्क स्थापित करे और बता दे कि वह सकुशल है। उसने अनुमान लगाया कि इस समय वह कहां होगी। बर्लिन में इस समय कमरे मिलने में बड़ी कठिनाई

होती थी। सम्भवतः उसने उसकी होटल वाला कमरा ही ले लिया होगा। काफे में टेलीफोन था। कर्नल की बांह का सहारा लेकर लैनी टेलीफोन तक पहुँचा। उसने अपने होटल का नम्बर मिलाया। होटल के अधिकारियों ने इतनी रात के समय श्रीमती बड को जगाने में आनाकानी की। बड़ी मुश्किल से वे लैनी की लाइन लारेल के कमरे के साथ मिलाने के लिये राजी हुए।

"हेलो! लारेल! मैं हूं लैनी!"

जीवन में प्रथम बार लैनी ने अपनी पत्नी को चीत्कार करते हुए सुना। "लैनी SSS! कहां हो तुम?"

"मैं यहां पश्चिमी बर्लिन में सकुशल हूं। तुम कोई चिन्ता मत करो।"

"लैनीSSS उन लोगों ने तुम्हारे साथ क्या किया? तुम्हें कुछ हुआ तो नहीं?"

"मैं सकुशल हूं। तुम कोई चिन्ता न करो। मैं शीघ्र ही तुम्हारे पास आ रहा हूं।"

कोई उत्तर न मिला। लैनी ने एक बार फिर टेलीफोन पर अपनी बात दोहराई। फिर भी कोई उत्तर न मिला। लैनी को संदेह हुआ कि लारेल बेहोश हो गयी है। उसने टोकाएव से कहा। टोकाएव ने होटल के अधिकारियों को टेलीफोन करके कहा कि वे ऊपर जाकर देखें कि क्या बात है।

दोनों मित्र प्रतीक्षा करते हुए बैठे रहे। टोकाएव ने कहा, "आप को 'रिआस' को खबर दे देनी चाहिये। वे लोग आपके लिये बड़े चिन्तित थे।" लैनी ने स्वीकृति जनाते हुए कहा, "आप ही 'रिआस' को टेलीफीन करके मेरे उद्धार का समाचार दे दीजिये।"

इस समय रात के तीन बजे थे। किन्तु 'रिआस' आजकल रात भर चलता था। टोकाएव ने टेलीफोन करके 'रिआस' के प्रोग्राम-डायरेक्टर को बताया कि लैनी प्रेन्जलारबर्ग जेल से निकल भागा है और वह इस समय पश्चिमी बर्लिन में है। वह चार दिन के अनवरत अत्याचार के कारण थक कर चूर हो गया है, किन्तु थोड़ा सा विश्राम करके वह शीघ्र ही रेडियो-स्टेशन में उपस्थित होगा।

"आप कौन हैं ?" प्रोग्राम-डायरेक्टर ने प्रश्न किया।

"मैं वह व्यक्ति हूं जिसने लैनी बड को भागने में सहायता पहुँचाई थी। किन्तु मेरे सम्बन्ध में अभी किसी प्रकार की चर्चा न होनी चाहिये। आप मिस्टर बड से बात कीजिये।"

लैनी ने टेलीफोन अपने हाथ में लेकर कहा, "मैं हूं लैनी बड। मैं सकुशल हूं। आप रेडियो पर इसकी घोषणा कर दीजिए। नहीं, इस समय मैं आपको नहीं बता सकता कि मैं जेल से कैसे भागा। मैं यह रहस्य आपको बाद में बताऊँगा।"

छोटे से काफे में जहां से लैनी बात कर रहा था इस समय मालिक के अतिरिक्त अन्य कोई व्यक्ति न था। उसने टेलीफोन पर होने वाला यह वार्तालाप सुन लिया था। वह उत्साह के अतिरेक से गद्‌गद होकर लैनी के पास आया और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर बोला, "मैंने रेडियो पर आपके भाषण सुने थे। आप ही हर फ्रोहलिच हैं न ? 'रिआस' ने आपके सम्बन्ध में सब बातें घोषित कर दी थीं। जर्मन लोगों को आपके सकुशल भाग आने का समाचार सुन कर बड़ी प्रसन्नता होगी।"

लैनी ने देखा कि वहं एक प्रसिद्ध व्यक्ति हो गया है। इसके पूर्व भी एक बार वह प्रसिद्ध हो चुका था। जिस समय उसने नूरेनबर्ग के मुकदमों के प्रसंग में गोयरिन्ग के विरुद्ध गवाही दी थी उस समय एक हलचल सी मच गयी थी। किन्तु उस समय लैनी को अपनी यह ख्याति अच्छी न लगी थी। इससे उसकी परेशानी बहुत बढ़ गयी थी। उसे हजारों व्यक्तियों के साथ हाथ मिलाना पड़ता था; लोगों को बार बार अपनी कहानी सुनानी पड़ती थी। इस बार नाजियों के स्थान पर कम्युनिस्टों ने उसे प्रसिद्ध बना दिया था। किन्तु इस बार लैनी को ऐसा प्रतीत हो रहा था कि यह प्रसिद्धि काफी उपयोगी प्रमाणित होगी। अब अधिकाधिक लोग 'रिआस' के प्रोग्रामों में दिलचस्पी लेने लगेंगे। वह रेडियो पर कम्युनिस्टों के रहस्यमय तरीकों की बात बताएगा। लोग यह सुनकर अवाक रह जायंगे कि किस प्रकार वहां लोगों से झूठे अभियोगों पर हस्ताक्षर ले लिये जाते हैं और उन अपराधों के लिये दण्डित किया जाता है जिनकी उन बेचारों ने

कल्पना तक न की थी। कुछ अभियुक्तों ने खुलेआम अदालत में अपने बयान दिये थे। उस समय उनकी चेतनाशक्ति साधारण स्थिति में प्रतीत होती थी। यह सब कैसे सम्भव हुआ था? यह विज्ञान के विकृत प्रयोगों के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाला एक अविश्वसनीय चमत्कार था!

(८)

इतनी रात बीते होटल जाना एक समस्या थी। सड़क पर कोई टैक्सी न दिखाई देती थी। काफे के मालिक ने कहा कि उसके एक पड़ोसी के पास एक छोटी सी ट्रक है; वह ट्रक इस समय काम दे सकती है। उसने काफे बन्द करके साथ चलने का आश्वासन दिया। तीनों व्यक्ति साथ साथ गए। अन्त में एक मकान के सामने खड़े होकर काफे के मालिक ने घण्टी बजायी और दरवाज़ा खटखटाया। थोड़ी ही देर में एक व्यक्ति उठकर खिड़की के पास आया। वह नींद से उठकर आया था और उसके चेहरे से खुमारी का भाव टपक रहा था। किन्तु जब उससे कहा गया कि उसे उसकी सेवाओं के लिये अच्छा पारिश्रमिक दिया जायगा तो वह राजी हो गया। वह तुरन्त अपनी ट्रक ले आया। शीघ्र ही सब लोग होटल पहुँच गए।

लारेल दौड़कर लैनी से चिपट गयी। किन्तु दूसरे ही क्षण वह भयभीत होकर लैनी की ओर एकटक दृष्टि से ताकने लगी। उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि लैनी का शरीर किसी भी क्षण टुकड़े टुकड़े होकर गिर सकता है। वह इस समय अपने पुराने व्यक्तित्व का प्रेत सा प्रतीत हो रहा था।

"लैनी! लैनी!!" लारेल चीखकर रोने लगी। उसने बताया कि टेलीफ़ोन पर जब उसे समाचार मिला था तब उसे गश आ गया था और वह लेट गयी थी।

"लैनी, उन लोगों ने तुम्हें क्या बना डाला!" वह अपनी हिचकियों के बीच कहने लगी। लैनी ने उसे आश्वासन दिया कि उसे कोई गम्भीर चोट नहीं पहुँची है, दो चार दिन में वह ठीक हो जायगा। उसने कहा कि इस समय उसे नींद की आवश्यकता है। बिस्तर पर लेट कर वह चौबीस घन्टे के लिये संसार को भूल जाना चाहता है।

उसे अपने मित्र का ध्यान आया। उसने लारेल के साथ टोकाएव का परिचय

कराते हुए कहा कि इन सज्जन की सहायता के फलस्वरूप ही उसके प्राणों की रक्षा हो सकी थी। लारेल ने अपने आँसू पोछ डाले और टोकाएव का अभिवादन किया। वह भी चार रातों की जागी थी और उसका शरीर भी बुरी तरह झिटक गया था।

टोकाएव ने परामर्श दिया कि दोनों को इस समय चुपचाप सो जाना चाहिए। उसने एक सैनिक की भाँति कहा, "मैं भी इसी होटल में एक कमरा लेकर सो जाऊंगा। इसके बाद कल सबेरे आप लोगों से बातें करूंगा।" किन्तु लारेल ने कहा कि होटल में कमरा मिलना असम्भव है; बर्लिन में कमरों का अकाल सा पड़ गया है। टोकाएव ने कहा, "कमरा न सही, एक कुर्सी तो मिल ही जायगी। मैं बाहर बरामदे में उसी पर रात काट लूंगा। मैं सैनिक हूँ।'

किन्तु लारेल न मानी। एक तो उसको स्त्री का हृदय मिला था, दूसरे दूसरों के प्रति करुणा और ममता की भावना उसमें बहुत अधिक थी। उसने टोकाएव को अपने कमरे के सोफे पर सुला दिया।

लैनी बिस्तर पर पहुंच चुका था। उसने अपना कोट तो उतार लिया था किन्तु जूते उतारना भूल गया था। लारेल ने आकर उसके जूते खोले। किन्तु लैनी गहरी नींद में डूब गया था। उसे इसका पता न चला। लैनी के शरीर पर कम्बल ढककर और उसकी तकिया सम्हाल कर लारेल बाथरूम में अपने कपड़े बदलने चली गयी। वहां से लौटकर वह अपने पति के पास लेट गयी। टोकाएव ने सैनिक सौजन्यता के साथ बत्ती बुझा दी और करवट लेकर अपनी आँखें मूंद लीं। थोड़ी ही देर में वह भी प्रगाढ़ निद्रा में मग्न हो गया।

(९)

सब से पहले टोकाएव की नींद खुली। सबेरा हो गया था और धूप चढ़ आयी थी। किन्तु लैनी और लारेल अभी तक सो रहे थे। उसने अपना कोट पहना और जूते हाथों में लेकर बिना किसी प्रकार की आहट किये कमरे के बाहर चला गया। वह लिफ्ट से नीचे उतरा। नीचे आकर उसने स्नान किया, दाढ़ी बनाई और अपने जूतों पर पालिश कराई। इसके बाद उसने नाश्ता किया। होटल की लाबी में रेडियो बज रहा था। बहुत से लोग उसके चारों

ओर बैठे हुए थे और ध्यानपूर्वक सुन रहे थे। टोकाएव भी वहीं जा कर बैठ गया। रेडियो पर इस आशय की घोषणा हो रही थी कि लैनी कम्युनिस्टों की जेल से निकल कर सकुशल आ गया है और वह पश्चिमी जर्मनी में सकुशल है। होटल के एक बेहरे ने बताया कि प्रत्येक आधे घण्टे पर 'रिआस' इस समाचार को दोहरा देता है। होटल में प्रत्येक व्यक्ति को यह बात मालूम हो गयी थी कि लैनी जेल से निकल आया है और इस समय अपने कमरे में सो रहा है। सब के चेहरे पर कौतूहल और उत्तेजना का भाव था।

टोकाएव लैनी के कमरे में अपना हैट भूल आया था। किन्तु वह उसे लेने के लिए वापस नहीं गया। उसे भय था कि कहीं इससे उन दोनों की नींद न खुल जाय। फलस्वरूप वह बिना हैट के ही एक टैक्सी में बैठ कर उस मकान की ओर चला जहां उसकी पत्नी और बच्चों ने पूर्वी जर्मनी से भाग कर शरण ली थी। वह अपनी सारी सम्पत्ति पीछे छोड़ आया था और इसलिए एक हैट की हानि कोई विशेष महत्व न रखती थी।

लारेल की नींद मध्याह्न के समय खुली। किन्तु लैनी अब भी सो रहा था। लारेल को भय था कि कहीं हिलने डुलने से उसकी नींद न टूट जाय। इसलिये वह चुपचाप पड़ी रही और मन ही मन ईश्वर की प्रार्थना करने लगी। जेल में लैनी बार बार अपने आप को समझाया करता था कि ईश्वर उसकी सहायता कर रहा है। अब लारेल की बारी थी। उसने बचपन में प्रार्थना के जितने शब्द सीखे थे उन्हें दोहरा डाला। उसके लिए ईश्वर पर विश्वास करना लैनी की अपेक्षा अधिक सरल था क्योंकि उसके आदिभौतिक अनुभवों ने उसके मन से सन्देह के बादल साफ कर दिये थे। वह समझ गयी थी कि उसका यह मन खोपड़ी नामक हड्डी के सन्दूक में बन्द एक यन्त्र मात्र नहीं है; वह निखिल विश्व ब्रह्माण्ड की चिन्मय सत्ता का एक अंश है। उसे हर्बर्ट स्पेन्सर की एक बात याद आ रही थी। हर्बर्ट स्पेन्सर ने कहा था कि मनुष्य के लिये ईश्वर की कल्पना करना उतना ही कठिन है जितना कि एक कछुए के लिये मनुष्य की कल्पना करना।

जिस समय लैनी की नींद खुली रात हो गयी थी। कमरे में अंधेरा छा

गया था। इस अन्धकार में उसे अपनी मुलायम तकिया और पलङ्ग का गुदगुदा बिछावन विचित्र सा प्रतीत हो रहा था। किन्तु फिर उसे इस बात का ध्यान आया कि वह जेल में नहीं बल्कि अपनी होटल में है। उसने लारेल को पुकारा किन्तु कोई उत्तर न मिला। वह समझ गया कि लारेल कुछ खाना लाने के लिये गयी है।

वह बिस्तर पर उठ कर बैठ गया। अब भी उसके शरीर के भिन्न भिन्न बारह स्थानों में दर्द हो रहा था। किन्तु अब उसका सिर न चकरा रहा था। बिस्तर के किनारे पर बैठ कर उसने अपने दोनों पैर नीचे लटका दिये और साहस बटोर कर जमीन पर खड़ा हो गया। इतनी देर तक विश्राम करने के बाद अब वह काफी स्वस्थ हो गया था। उसने बिजली का बटन दबा कर बत्ती जला दी। प्रकाश से उसकी आँखें चकाचौंध हो गयीं। उसने समझ लिया कि उसकी आंखों को प्रकाश से अभ्यस्त होने में कुछ समय लगेगा। फलस्वरूप उसने बड़ी बत्ती बुझा कर हल्की रोशनीवाला एक सायेदार लैम्प जला लिया।

बिस्तर पर बैठे बैठे उसने अपने सारे कपड़े उतार डाले और अपने अङ्ग प्रत्यङ्ग की परीक्षा करने लगा। उसका कन्धा अभी तक सूजा हुआ था। किन्तु उसने अपने कन्धे को चारों ओर हिला कर देखा। वह टूटा न था। उसकी कुहनी भी दर्द दे रही थी। किन्तु उसे भी हिला डुला कर उसने इस बात का निश्चय कर लिया कि वह टूटी नहीं है। बाथरूम में जाकर शीशे में उसने अपना चेहरा देखा। उसकी समझ में आ गया कि लारेल उसे देख कर अकारण न रोई थी। उसका सारा शरीर सूख कर काँटा हो गया था। सारा शरीर गन्दा हो रहा था और उसके मन में स्नान करने की प्रबल इच्छा हो रही थी। किन्तु बाथ-रूम में वह अकेले घुसने का साहस न कर पा रहा था। फलस्वरूप उसने लारेल के लौट आने तक प्रतीक्षा करने का निश्चय किया। बाथरूम में हजामत बनाने का सारा सामान पड़ा था। किन्तु उसे छूरा चलाने का साहस न हुआ। उसने निश्चय किया कि वह होटल के हज्जाम से अपनी दाढ़ी बनवा लेगा।

उसे इस बात की आशङ्का हो रही थी कि लोग उसे घेर कर उसकी कहानी सुनना चाहेंगे। वह जानता था कि इस रहस्यमय काण्ड को प्रकाश में लाना

उसका कर्त्तव्य है। किन्तु इस समय उसमें बातें करने की शक्ति न थी। वह जानता था कि मान्क और सेना विभाग के अधिकारी इस बात पर जोर देंगे कि लैनी इस घटना का अधिक से अधिक विस्तार करे। उसने निश्चय कर लिया कि वह 'रिआस' पर एक वक्तृता दे देगा और इसके बाद 'रिआस' अपनी सुविधा के अनुसार उसका विस्तार करता रहेगा। इसके अतिरिक्त वह अपनी वक्तृता के कुछ रेकाड भी तयार करवा लेगा। जब कोई उससे यह कहानी सुनाने का आग्रह करेगा वह ग्रामोफोन पर यह रेकार्ड चढ़ा देगा और श्रोता को इसे सुनने के लिये छोड़ कर दरवाज़ा बन्द करके बाहर चला जायगा!

(१०)

लारेल लौट आयी और उसने लैनी की देख भाल शुरू कर दी। उसने कहा कि वह उसे थोड़ा थोड़ा खाना खिलाएगी ताकि वह पच सके। रोटी का एक टुकड़ा, एक गिलास दूध और एक गिलास सन्तरे का रस—बस इतना पर्याप्त होगा। इसके बाद उसने लैनी के शरीर की परीक्षा शुरू की। उसके घावों को देख कर वह एक बार फिर रो पड़ी। वह लैनी को लेकर अस्पताल जाने के लिये तयार होने लगी। किन्तु लैनी ने उसे समझाया कि अस्पताल जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। वह यों ही ठीक हो जायगा।

लैनी ने लारेल को थोड़ा बहुत वृत्तान्त बता दिया। किन्तु उसने उसे वे बातें न बतायीं जिन्हें सुन कर उसके हृदय पर आवश्यकता से अधिक आघात पहुँचता। किन्तु उसने लारेल को जो कुछ बताया वही उसे अवाक कर देने के लिये पर्याप्त था। वह चुपचाप लैनी की ओर ताकती हुई अविचल भाव से बैठी रही। उसने पहले भी इस प्रकार की वीभत्स कहानियाँ सुनी थीं। किन्तु उसे इन पर पूरा पूरा विश्वास कभी न हुआ था। वह इस बात को न समझ पाती थी कि लोग इस प्रकार की बर्बरता पर कैसे उतर आते हैं। अब उसे विश्वास हो गया कि कम्युनिस्ट लोग सचमुच पागल हो गए हैं और वे सारे संसार को पागल बना देना चाहते हैं। लैनी ने टोकाएव की चर्चा की। उसने कहा कि सम्भवतः वह अपने परिवार से मिलने के लिये चला गया होगा। लारेल ने कहा कि वह अपना हैट छोड़ गया है और शायद इसे लेने के लिये उसे वापस आना पड़ेगा।

"उस बेचारे के लिये हमें कुछ न कुछ करना चाहिये।" लारेल ने कहा। लैनी ने अपनी सम्मति जनाते हुए कहा कि टोकाएव के लिये वह हर सम्भव सहायता देने का प्रयत्न करेगा। वह उसके उपकार को कभी न भूलेगा।

लारेल ने ध्यानपूर्वक लैनी को स्नान कराया। इसके बाद उसे साफ-सुथरे कपड़े पहनाए। फिर उसने बताया कि मान्क और शब बाहर बरामदे में बैठे हुए उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। लारेल ने उन्हें आश्वासन दे रखा था कि जितनी जल्दी हो सकेगा वह उन्हें लैनी से मिला देगी। लैनी भी अपने इन मित्रों से मिलने के लिये उत्सुक था।

थोड़ी ही देर में दोनों व्यक्ति भीतर आए। लैनी ने सारी घटना आद्योपान्त सुना दी—वे बातें भी सुना दीं जो वह पहले लारेल से छिपा रहा था। उसने उन्हें बताया कि किस प्रकार कम्युनिस्ट उसे बलात् उठा कर पूर्वी जर्मनी में ले गए थे, किस प्रकार उसे एक काल कोठरी में बन्द कर दिया गया था, किस प्रकार उस पर अनवरत रूप में अमानुषिक अत्याचार होता रहा था, और अन्त में किस प्रकार एक रूसी अधिकारी की सहायता से उसका उद्धार हुआ। उसने मान्क और शब को इस रूसी अधिकारी का नाम न बताया क्योंकि वह टोकाएव की अनुमति लिये बिना उसका नाम न खोलना चाहता था।

शब ने लैनी को बताया कि जिस समय कम्युनिस्ट लोग उसे उठा कर भाग गये थे उसी समय किसी ने 'रिआस' को टेलीफोन करके इसकी सूचना दे दी थी। 'रिआस' ने तुरन्त शोरगुल मचाना शुरू कर दिया था। वह पाँच दिन तक लगातार रेडियो पर इस घटना की घोषणा करता रहा। मान्क ने लैनी को बताया कि ए० एम० जी ने किस प्रकार सोवियत अधिकारियों की नाक में दम कर दिया, किस प्रकार लारेल आ गयी और किस प्रकार जेनरल क्ले ने मार्शल सोकोलोव्स्की के साथ उसकी मुलाकात की व्यवस्था कराई। सोवियत अधिकारी बराबर यही कहते रहे कि उन्हें लैनी बड के सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है और अब जब कि 'रिआस" द्वारा लैनी के भाग आने की खबर प्रसारित हो गयी है, सोवियत अधिकारी पहले की भांति ही मौन साधे हुए हैं।

शब ने लैनी से विदा ली क्योंकि वह 'रिआस पर लैनी के भाग आने

का वृतान्त सविस्तार सुनाने का इच्छुक था। उसने कहा कि सारा जर्मनी इस घटना को सुनने के लिए इच्छुक है। यह घटना भी कासेनकीना काण्ड की भांति बड़ी चांचल्यकर प्रमाणित होगी। प्रेस रिपोर्टर इस बात का पता लगाने के लिए आकाश पाताल एक किए हुए थे कि लैनी कहां पर ठहरा हुआ है, किन्तु अभी तक उन्हें इस रहस्य का पता न चल पाया था। लैनी को प्रथम वार इस बात का पता चल पाया कि होटल में पहुचने के बाद बराबर वह सशस्त्र प्रहरियों के पहरे में रहा था। लारेल ने स्वयं इस पहरे की व्यवस्था की थी।

लैनी के सूटकेस में एक पिस्तौल भी थी। लारेल ने उसे निकाल कर अपनी तकिया के नीचे रख लिया था। उसने निश्चय कर लिया था कि वह बराबर यह पिस्तौल अपने साथ रखेगी। अब उसने अपने पति की देख रेख में किंचित मात्र लापरवाही न करने का संकल्प कर लिया था।



अध्याय २६

● स्वतंत्रता का स्वप्निल देश ●

(१)

कर्नल टोकाएव अपना हैट लेने के लिए वापस आया। लैनी और लारेल ने उसका बड़ा स्वागत किया। उसे एक आराम कुर्सी में बैठा कर उन दोनों ने उसे शरबत पिलाया और बार बार अपनी कृतज्ञता प्रकट की। इसके बाद उन्होंने टोकीएव से उसकी अद्भुत और रोमांचकारी कहानी सुनी। टोकीएव ने अपनी कहानी के तारतम्य में लैनी और लारेल को बोलशेविज्म के उस पवित्र तीर्थस्थान के दर्शन कराए जहां साधारण व्यक्ति पहुंचने की कल्पना भी नहीं कर सकता। यह तीर्थस्थान था क्रेमलिन में पोलिटब्यूरो का वह मंत्रणा-गृह जहां स्टालिन, मोलोटोव और मालेनकोव तथा उनके गुट के अन्य व्यक्ति बैठ कर आपस में गुप्त विचार विनिमय किया करते थे।

टोकाएव रूसके ब्लाडीकाएवकाज नामक कृषक अंचल के एक छोटे से गांव में पैदा हुआ था। यह प्रदेश उत्तरी काकेशस में पड़ता था। वह एक साधारण किसान का बेटा था। प्रथम महायुद्ध के समय उसकी आयु केवल पांच वर्ष की थी। जिस समय बोलशेविक लोग रूस में सत्तारूढ़ हुए थे उसकी आयु आठ वर्ष की थी। फलस्वरूप वह कम्युनिस्ट शासन-व्यवस्था के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार की सामाजिक व्यवस्था से परिचित न था। जब वह उन्नीस वर्षका हुआ स्थानीय ट्रेड यूनियन की सिफारिश के बल पर वह लेनिनग्राड की 'माइनिन्ग एकेडेमी' में भर्ती हो गया। सरकारी छात्रवृत्ति प्राप्त करके उसने उच्च शिक्षा प्राप्त की। उसने कहा कि कम से कम इस बात के लिए वह सदा क्रांति का कृतज्ञ रहेगा। लाखों व्यक्तियों को क्रांति का यह प्रसाद प्राप्त हुआ है और निश्चय ही यह एक सुन्दर बात है।

किन्तु उसके मन में स्वतंत्रता की कल्पना भली भांति प्रस्थापित हो गयी थी। उसका परिवार भी समृद्ध किसानों की श्रेणी में आता था जिन्हें रूसी अधिकारी

'कुलक' कहते थे। इन 'कुलकों' के प्रति सरकार की ओर से जो नृशंस अत्याचार होता था उसे देख देख कर उसका हृदय भीतर से विद्रोह कर उठता था। वह अपने आपको 'सामूहिकीकृत' न होने देना चाहता था। मास्को में पहुँच कर उसने सरकार की इस नीति की आलोचना करते हुए कहा कि इससे बेचारे किसानों का सर्वनाश हो रहा है। इससे पार्टी के अन्दर खलबली मच गयी। उसकी बड़ी भर्त्सना हुई और आगे चल कर उसे पार्टी से निकाल बाहर किया गया। इसके बाद एन० के० वी० डी० ने उस पर जांच रखनी शुरू कर दी। एन० के० वी० डी की इस कृपा का कारण यह था कि उसने हंसी हंसी में स्टालिन के सम्बन्ध में एक कहानी कह दी थी। यह कहानी धीरे धीरे चारों ओर फैलने लगी और एन० के० वी० डी के अधिकारियों को यह संदेह हो गया कि उसने स्टालिन की हत्या के लिए एक षड़यन्त्र रचा था। उन्होंने उसे पकड़ लिया और इतना पीटा की वह बेहोश हो गया। लैनी को याद आया कि जेल में उसके प्रथम परीक्षक ने उसे बताया था कि रूस में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जिस पर कभी न कभी स्टालिन की हत्या का प्रयत्न करने का अभियोग न आरोपित हुआ हो। टोकाएव ने अपनी कहानी सुनाते हुए लैनी के अनुभव का पुष्टीकरण किया : "मेरा स्वस्थ सबल शरीर ढांचा मात्र रह गया था ओर मैं एक अस्थि-कंकाल मात्र प्रतीत होने लगा था।"

उस बात को बीते आज प्रायः दस वर्ष हुए। उसने प्रयत्न करके अपनी पिछली भूलों को क्षमा करा लिया था। उसे सेना विभाग में एक रासायनिक प्रयोगशाला में स्थान प्राप्त हो गया था। धीरे धीरे वह मिलिटरी अकादमी का प्रोफेसर हो गया।

इसके बाद द्वितीय महायुद्ध शुरू हुआ। हिटलर और स्टालिन ने आपस में एक गुप्त समझौता करके पोलैण्डको बांट खाया। जिस समय हिटलर अपने पश्चिमी मोर्चे को सम्हालने में व्यस्त था स्टालिन ने पोलैण्ड के शेष भाग को भी हथिया लेने की योजना बनाई थी। किन्तु इसकी यह योजना सफल न हो सकी क्यों कि हिटलर ने पहले ही आक्रमण कर दिया। टोकीएव की यह बात सुन कर लैनी को कुछ आश्चर्य हुआ। किन्तु टोकाएव ने कहा कि स्टालिन की योजना

ऐसे ही थी और सेना के सभी उच्च अधिकारिकों को इसका पता था। अकादमी की एक खुली बैठक में यह योजना पेश की गयी थी। स्टालिन की योजना यह थी कि शत्रु को आक्रमण का अवसर देने के स्थान पर स्वयं पहले आक्रमण कर दिया जाय। स्टालिन को विश्वास था कि उसकी विजय सुनिश्चित है।

जब हिटलर की सेनाएं मास्को के पास पहुंच गई थीं तब अकादमी का कार्यालय वहां से हटाकर स्वेर्डलेस्क भेज दिया गया था। वहां से टोकाएव युद्ध की 'जघन्य बर्बरता' को देखता रहा। इसके बाद रूसियों के पुराने मित्र शीत-देवता की कृपा के फलस्वरूप हिटलर की पराजय हुई। युद्ध समाप्त होने पर टोकाएव को बर्लिन में एलाइड कन्ट्रोल काउन्सिल के प्रथम सोवियत सेक्रेटरी के रूप में भेजा गया। उसने वहां के प्रसिद्ध कार्लशोर्स्ट भवन में काम शुरू किया जो आगे चल कर बर्लिन के क्रेमलिन के रूप में विख्यात हुआ।

बर्लिन में अपने प्रवास के तारतम्य में इस युवक सोवियत अधिकारी को जीवन में पहली बार वाह्य संसार के दर्शन हुए। रूस में सदा उसे इस वाह्य संसार की 'दरिद्रता' और 'दयनीयता' की कहानियां सुनाई जाती थीं और यह कहा जाता था कि सोवियत रूस की जनता अन्य देशों की तुलना में कहीं अधिक सुखी और समृद्ध है किन्तु टोकाएव ने रूस के बाहर आकर जो कुछ देखा उससे वह स्तम्भित रह गया। एक औसत जर्मन मज़दूर का घर रूसी मजदूर की कोठरी की तुलना में भव्य राजप्रासाद सा प्रतीत होता था। जर्मनी के प्रत्येक मजदूर के घर में रेडियो आदि दैनिक उपयोगिता की वस्तुएं अनिवार्य रूप में रहती थीं।

रूस में केवल पार्टी के बड़े बड़े मुखिया ही इस प्रकार के ऐश्वर्य की कल्पना कर सकते थे।

लाल सेनाओं ने बर्लिन में लूट पाट और बलात्कार का जो दृश्य उपस्थित कर दिया था उससे भयभीत होकर बेचारे नागरिक इधर उधर भागने लगे थे। टोकाएव यह सब देख सुन कर मन ही मन बड़ा दुखी होता था। उसे इस बात पर आश्चर्य होता था कि रूसी अधिकारी जर्मनों पर ऐसा भयानक अत्याचार करने के बाद भी यह आशा करते थे कि जर्मन जनता उनसे प्रेम करेगी। रूसियों ने जर्मनी में 'सोवियत संस्कृति' के प्रचार के लिए भिन्न भिन्न उपायों का अव-

लम्बन शुरू किया था। किन्तु बेचारे जर्मनों को आलू खिला खिला कर जीवित रखा जाता था। रूसी लोग जर्मनी की फैक्टरियों से सारी मशीनें उठा ले गये थे; जो मशीनें बच गई थीं वे वर्षा में भीग भीग कर नष्ट हो रही थीं। उन्होंने जर्मन लोगों को चकमा देने के लिए सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी के नाम से एक नया संगठन खड़ा किया था। इस संगठन के वास्तविक स्वरूप की एक झलक लैनी को कार्ल सीड्ल से मिल चुकी थी।

बर्लिन में अपनी स्थिति को भली भांति जमा लेने के बाद कम्युनिस्टों ने एक आम चुनाव की घोषणा कर दी। टोकाएव ने कहा कि यह अनिवार्य था क्यों कि रूसियों को यह प्रमाणित करना था कि वे पूर्वी जर्मनी में एक गणतांत्रिक शासन व्यवस्था की स्थापना कर रहे हैं। किन्तु उस समय उनके आश्चर्य की सीमा न रही जब उन्होंने देखा कि उन्हें केवल बीस प्रतिशत वोट मिले हैं जब कि हर प्रकार के दमन के बावजूद सोशल डेमोक्रेट लोगों को पचास प्रतिशत से भी अधिक वोट मिल गये। इस चुनाव में रूसियों ने पानी की तरह रुपया बहाया था और आकाश पाताल एक कर दिया था किन्तु इससे कोई लाभ न हुआ।

(२)

एक दिन जब शरणार्थी कर्नल अपने बर्लिन वाले फ्लैट में शान्तिपूर्वक काम कर रहा था टेलीफोन पर उसे आदेश मिला कि वह तुरन्त वायुयान द्वारा मास्को के लिये रवाना हो जाय। दो चार मिनट बाद ही एक बार फिर टेलीफोन की घण्टी बजी और एक अन्य उच्च अधिकारी ने इस आदेश को दोहराते हुए उसे आदेश दिया कि वह अविलम्ब मास्को के लिये रवाना हो जाय। थोड़ी ही देर बाद फिर टेलीफोन आया। इस बार उसे बताया गया कि उसे मन्त्रिमंडल के सम्मुख उपस्थित होना होगा; शायद स्वयं स्टालिन उसके साथ बातें करना चाहें। उसे सारे काम छोड़कर मास्को के लिये रवाना हो जाना चाहिये।

मौसम बुरा था और वायुयान द्वारा यात्रा करना खतरे से खाली न था। किन्तु वह साहस बटोर कर मास्को के लिये रवाना हो गया था। मौसम प्रतिकूल होने के कारण मार्ग में प्राणों से हाथ धोने की नौबत आ गयी थी। फिर

भी मास्को में उसकी तीव्र भर्त्सना हुई थी क्योंकि वायुयान देरी से पहुंचा था। उसी दिन संन्ध्या के समय उसे मंत्रिमण्डल के सम्मुख पेश होना पड़ा था।

टोकाएव ने इस घटना का वर्णन करते हुए लैनी को सारा वृत्तान्त बताया। लैनी ने प्रश्नोत्तर के समय अपने परीक्षक से कहा था कि उसे जिस समय क्रेमलिन में स्टालिन से भेंट करने के लिये ले जाया गया था उस समय अंधकार था और फलस्वरूप वह यह न देख सका था कि उसे किस रास्ते से ले जाया गया था। अब टोकाएव से उसे मालूम हुआ कि उसे 'बोरोबिचेस्कीये फाटक' से ले जाया गया था; अतिथियोंको सदा इसी फाटक से ले जाया जाता है। मास्को नगर के बीच में क्रेमलिन स्वयं एक प्राचीन नगर की भांति बसा हुआ है। इसके चारों ओर बीस पचीस फीट ऊंची दीवार की चाहारदीवारी है। एम० वी० डी के सशस्त्र पहरेदार रातदिन इसके चारों ओर पहरा दिया करते हैं। ये सशस्त्र प्रहरी इन दीवारों की छतों पर तेज़ विद्युत-प्रकाश में घूमते रहते हैं। इन दीवारों के पीछे विशाल सोवियत साम्राज्य के चौदह मालिक निवास करते हैं। इन पर जितना सतर्क पहरा रहता है उतना अन्य किसी भी देश के शासक पर नहीं रहता। क्रेमलिन के सारे फाटक बन्द कर दिये गए हैं; केवल दो खुले रखे गए हैं। सोवियत नागरिकों को 'स्यास्की फाटक' से प्रवेश कराया जाता है जो 'रेड स्क्वायर' पर खुलता है।

कोटाएव ने लैनी को बताया कि क्रेमलिन में कोई व्यक्ति तभी प्रवेश कर सकता है जब उसे वहां के महाप्रभुओं से अनुमति प्राप्त हुई हो। अनुमति मिल जाने पर भी आगंतुक व्यक्ति की कड़ी तलाशी ली जाती है। फाटक पर उसके कागजों की अत्यन्त सतर्कतापूर्वक जांच की जाती है। इस बात की जांच भी होती है कि आगन्तुक के पास कोई हथियार तो नहीं हैं। सदर फाटक पार करने पर एक दूसरा फाटक मिलता है जो अपेक्षाकृत छोटा है। यहां फिर आगंतुक व्यक्ति की सतर्क जांच होती है। अनुमति-पत्र पर लगे हुए फोटो के साथ उसके चेहरा का मिलान किया जाता है। कागज पर प्रत्येक हस्ताक्षर और प्रत्येक सील की जांच की जाती है। सब कुछ ठीक निकलने पर आगे बढ़ने की अनुमति दे दी जाती है। कुछ दूर आगे जाने पर एक और सशस्त्र प्रहरी

मिलता है। वह फिर से सारे कागजों की जांच पड़ताल करता है। यदि वह पूर्णरूप में संतुष्ट हो जाता है तो आगन्तुक को एक कमरे की ओर संकेत कर देता है। वहां आगन्तुक अपना हाथ मुंह धोकर बालों में कंघी कर सकता है। इसके बाद वह विशाल सीढ़ियां पार करता हुआ मंत्रालय की भव्य इमारत की ओर बढ़ता है। यहां पहुंच कर एक पहरेदार द्वारा जांच की पिछली कार्यवाही फिर दोहराई जाती है। इसके बाद—टोकाएव ने सौगन्ध खाकर कहा कि यह सत्य है—प्रत्येक दस गज पर एक संतरी मिलता है जो पारी पारी से आगन्तुक के कागजों की जांच करता है। अन्त में एक सैनिक अधिकारी आगन्तुक को साथ लेकर उस कमरे के अन्दर जाता है जो उसके अनुमति-पत्र पर लिखा रहता है।

(३)

टोकाएव ने लैनी को बताया कि उसके प्रति अधिकारियों को जो इतना संदेह हो गया उसका मुख्य कारण "सैन्गर रिपोर्ट" ही थी। सैन्गर जर्मनी का एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक था। युद्ध के अन्तिम दिनों में उसने हिटलर को एक विशेष प्रकार के विशाल राकेट वायुयान तयार करने की नयी योजना दी थी। उसका दावा था कि ये वायुयान अटलाण्टिक महासागर को एक ही उड़ान में पार करके न्यूयार्क अथवा वाशिन्गटन पर बम डालकर वापस आ सकेंगे। इस रिपोर्ट से हिटलर बड़ा प्रसन्न हुआ था। उसने इसे पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित करवा दिया था। इस पुस्तक की एक प्रति किसी प्रकार टोकाएव के हाथ पड़ गयी थी। उसने इसका अध्ययन करके इस पर अपना मत तयार किया था। इस बात की भनक मंत्रिमन्डल तक पहुँच गयी थी। मंत्रिमण्डल के सदस्य यह सुनकर पागल से हो उठे। उन्हें यह कल्पना बड़ी ही सुन्दर प्रतीत हुई कि कोई ऐसा वायुयान भी बन सकता है जो रूस से चलकर सीधे न्यूयार्क और वाशिन्गटन पर एक एक अणु-बम गिरा कर वापस आ सकता है।

मंत्रिमण्डल ने टोकाएव के उच्च अधिकारी लेफ्टीनेण्ट जेनरल कुत्सेवालोव से इस विषय पर एक विस्तृत रिपोर्ट मांगी। यह व्यक्ति एकदम मूर्ख था। उसने बिना सोचे समझे एक लम्बा चौड़ा भाषण दे डाला। यह भाषण एकदम मूर्खता-

पूर्ण था। उसने दर्पपूर्ण स्वरमें यह घोषणा की कि 'सैन्गर वायुयान सोवियत वायुवाहिनी के लिये नयी नयी सफलताएं सम्भव बना देंगे।...सैन्गर वायुयान पिछले सारे रेकर्ड तोड़ देंगे। हमें इन वायुयानों का उत्पादन अविलम्ब शुरू कर देना चाहिये। ...वाल स्ट्रीट और डाउनिन्ग स्ट्रीट ने इन वायुयानों का उत्पादन शुरू कर दिया है। हमें शीघ्रता करके इस कार्य में पूंजीपति संसार से आगे निकल जाना चाहिये। उड्डयन कला के महान मर्मज्ञ, सोवियत यूनियन के महान नेता और सारे संसार की श्रमजीवी-क्रान्ति के प्रवर्त्तक कामरेड स्टालिन की ऐसी ही इच्छा है।'

इस भाषण से मंत्रिमण्डल खीज उठा था और इसीलिये उसने यह आदेश दिया था कि टोकाएव को अविलम्ब उसके सम्मुख उपस्थित किया जाय। किन्तु टोकाएव जानता था कि इस प्रकार के वायुयान बनाना कोई हंसी खेल नहीं है। पहले काफी लम्बे समय तक विशेषज्ञों द्वारा इसकी जांच पड़ताल आवश्यक होगी और इसके लिये अनेकों शोधशालाओं की स्थापना करनी पड़ेगी। राकेट वायुयानों के निर्माण के मामले में सोवियत रूस अन्य देशों की तुलना में काफी पिछड़ा हुआ था। वहां इस विषय की जानकारी रखनेवाले अधिक वैज्ञानिक न थे। हां, थोड़े से जर्मन वैज्ञानिक वहां थे जो इस विषय पर शोधकार्य कर सकते थे। सोवियत अधिकारियों की धारणा था कि प्रलोभन देकर जर्मनी से कुछ और वैज्ञानिकों को उड़ाया जा सकता है। उनका विचार तो यहां तक था कि स्वयं सैन्गर को जर्मनी से उड़ा कर रूस में ले आया जाय।

(४)

इन राकेट वायुयानों के उत्पादन के प्रश्न पर विचार करने के लिये चार व्यक्तियों की एक कमेटी बनायी गयी। इसमें कोटाएव को भी एक सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया। कोटाएव ने वस्तुस्थिति का अध्ययन करके अपनी रिपोर्ट तयार की। शीघ्र ही उसे पोलिटब्यूरो के सदस्यों तथा स्टालिन के सम्मुख पेश किया गया।

"मैं मन ही मन गर्व से फूल उठा।" टोकाएव ने लैनी से कहा। "अनायास शक्ति तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करके मैं घबरा सा गया। किन्तु उस समय मैंने इस

बात की कल्पना तक न की थी कि यहीं से मेरा पतन शुरू होगा। जब स्टालिन ने मुझसे पूछा कि मैं अपने सहयोगियों के कार्य से संतुष्ट हूं या नहीं तो मैंने स्पष्ट रूप में कह दिया कि वे अयोग्य व्यक्ति हैं और उनसे किसी प्रकार की आशा करना व्यर्थ है। इसके फलस्वरूप ये व्यक्ति मेरे कट्टर शत्रु बन बैठे। इन व्यक्तियों में स्टालिन का पुत्र वासिली भी था जिसे वायु-सेना का जेनरल बना दिया गया था। यह एक दुष्ट प्रकृति का व्यक्ति था। इसने अपने आप को कमेटी के पांचवें सदस्य के रूप में नियुक्त करा लिया और मुझे भांति भांति से परेशान करने लगा।

"हम लोगों की योजना यह थी कि सैन्गर का पता लगाकर उसे भांति भांति के प्रलोभन देकर अपनी ओर फोड़ लेने का प्रयत्न किया जाय। यह पहले से ही निश्चित कर लिया गया था कि सैन्गर जो आश्वासन मांगे उसे दे दिये जायं और बाद में अपना काम निकल जाने पर उसे अंगूठा दिखा दिया जाय। किन्तु कोई भी जर्मन वैज्ञानिक हमारी बातों पर विश्वास करके आने के लिये तयार न होता था। वासिली ने इस समस्या का एक सरल समाधान उपस्थित किया। उसने यह सुझाव दिया कि इन वैज्ञानिकों का अपहरण कर लिया जाय। उसके लिये यह बात कोई महत्व न रखती थी कि ये वैज्ञानिक कहां हैं—बर्लिन में या पेरिस में, अम्सटर्डम में या वियेना में। उसका कहना था कि वे जहां भी हैं वहां से उन्हें उड़ा लाया जाय और उनसे बलात काम कराया जाय। कदाचित स्टालिन इस योजना का समर्थन न करता क्योंकि वह जानता था कि वैज्ञानिकों से इस प्रकार काम नहीं कराया जा सकता। किन्तु स्टालिन मास्को में बैठा हुआ था और हम लोग सैकड़ों मील दूर बर्लिन में थे। स्टालिन के साथ मेरा कोई प्रत्यक्ष सम्पर्क न था। धीरे धीरे मेरे विरोधियों ने मेरे विरुद्ध स्टालिन के कान भरने शुरू किये।

"मैं साल भर तक इस योजना पर मनोयोगपूर्वक काम करता रहा किन्तु मुझे कोई विशेष सफलता न प्राप्त हुई। धीरे धीरे मेरी दृष्टि में तानाशाही की बुराइयां स्पष्ट होने लगीं और मैं एक ऐसी संस्था के साथ योगदान करने लगा जो रूस की इस एकतांत्रिक शासन व्यवस्था को समाप्त कर देने के लिये कृतसंकल्प थी। किन्तु मैं चारों ओर शत्रुओं से घिरा हुआ था। मेरे दो चार मित्र फिर

भी रह गये थे और ये मुझे बार बार चेतावनी दे रहे थे कि मेरे विरुद्ध गम्भीर रूप में षड़यन्त्र रचा जा रहा है। आखिर मुझे मास्को आने का आदेश दिया गया। आप जानते ही हैं कि इसका क्या अर्थ था। पूर्वी बर्लिन में मुझे गिरफ्तार करने पर बड़ा शोर गुल मचता। इसीलिये यह निश्चय किया गया था कि मास्को में बुला कर मुझे चुपचाप ठिकाने लगा दिया जाय। फलस्वरूप मैं मास्को न गया—एक के बाद एक बहाना करता रहा। मुझे तीन बार मास्को चले आने का आदेश मिला था और तीनों बार मैंने कोई न कोई बहाना बना दिया था। अन्त में एम० वी० डी० ने मेरे लिये बर्लिन में रहना असम्भव कर दिया। वे लोग मेरे घर का टेलीफोन उठा ले गए ओर मेरे पास अनेकों गुप्तचर तैनात कर दिये! अन्त में मेरे मित्रों ने आखिरी बार मुझे चेतावनी दी और इसके बाद जो हुआ आप जानते ही हैं।'

"आपको अपनी यह कहानी सारे संसार के सामने रखनी चाहिये।" लैनी ने परामर्श दिया।

"मैं संसार को अपनी कहानी अवश्य सुनाऊंगा—किन्तु इंगलैण्ड पहुँचने के बाद। मैं अपनी यह कहानी एक वाक्य में कह सकता हूं—स्टालिन का अर्थ है युद्ध! मैं स्वतन्त्र संसार के सामने यह घोषणा कर सकता हूं कि मैं पोलिट-ब्यूरो की गुप्त मंत्रणाओं के समय उपस्थित था। मैं जानता हूं कि सोवियत रूस के वर्तमान शासक युद्ध को अनिवार्य मानते हैं—गणित के नियमों की भांति निर्विवाद मानते हैं। प्रश्न केवल यह है कि इस युद्ध का श्रीगणेश कब किया जाय। पोलिटब्यूरो के एक सदस्य मिकोयन ने यह प्रस्ताव किया था कि रूसी जनता की आर्थिक अवस्था में सुधार करने का प्रयत्न किया जाय और रचनात्मक कार्यों द्वारा कम्युनिज्म का प्रसार किया जाय। किन्तु मिकोयन की इस दलील की ओर किसी ने कोई ध्यान न दिया। और इसमें कोई संदेह नहीं कि यदि वह बार बार अपनी इस दलील को दोहराता रहेगा तो उसे पोलिटब्यूरो से निकाल कर किसी दास-मजदूर-शिविर के हवाले कर दिया जायगा।"

(५)

"आपको मेरे सम्बन्ध में पता कैसे चला?" लैनी ने प्रश्न किया।

"मैं रेडियो पर हर फ्रोहलिच के भाषण सुनता रहता था। इसके बाद मुझे आपके अपहरण का समाचार भी मिल गया था। जब मैंने यह निश्चय कर लिया कि मैं पूर्वी जर्मनी से निकल पश्चिमी जर्मनी चला जाऊंगा तो आप के एक मित्र ने आकर मुझसे कहा कि मैं आपको भी जेल से छुड़ा कर निकाल ले जाने का प्रयत्न करूं। मैंने कहा कि मैं उसे जेल से कैसे छुड़ा सकता हूँ? उसने कहा कि मैं इसकी व्यवस्था कर दूंगा। उसने मुझे आपकी रिहाई का एक आदेशपत्र लाकर दे दिया जिस पर मार्शल सोकोलोव्स्की के हस्ताक्षर थे। ये हस्ताक्षर जाली थे किन्तु ये इतनी सफाई से बनाये गए थे कि साधारण व्यक्ति के लिए इस जाल को समझना असम्भव था। मैं यह जाली आदेशपत्र लेकर आपको छुड़ाने के लिए चला गया। मन ही मन मैं बड़ा भयभीत हो गया था और मेरे मन में भांति भांति की आशंकाएं उठ रही थीं। किन्तु जेल वाले मेरे प्रभाव में आ गये। कारण यह है कि मैं रूसी सेना का कर्नल था। वे सेना विभाग को टेलीफोन करके असलियत का पता लगा सकते थे। किन्तु उन्हें मुझ पर शंका करने का साहस न हुआ। और इस प्रकार हम लोग निकल आए।"

"हम लोग आजन्म आपके आभारी रहेंगे।" लारेल ने कृतज्ञता के स्वर में कहा। "आपके इस ऋण को चुकाने के लिए हम सदा प्रस्तुत रहेंगे।"

"मैं इङ्गलैण्ड जाना चाहता हूँ। वहां मेरे कुछ मित्र हैं। वे मेरी सहायता करने के लिए तयार हैं। किन्तु इङ्गलैण्ड जाने के लिए अनुमतिपत्र प्राप्त करने की समस्या है।"

"यह तो आसान काम है।" लैनी ने कहा। "वहां मेरा एक घनिष्ट मित्र है जो पार्लियामेन्ट का सदस्य है। यहां आप ब्रिटिश अधिकारियों के पास पासपोर्ट के लिए आवेदन कर दीजिए। इधर मैं अपने इस मित्र को लिख दूंगा और वह अपने प्रभाव का प्रयोग करके आप को यथाशीघ्र अनुमति दिला देगा।"

"आप मेरे 'ड्यूस एक्स मशीना' हैं।" लारेल ने विनयपूर्वक कहा। टोकाएव यह सुन कर कुछ स्तम्भित सा हो गया। वह वायुयानों के कल पुर्जों के बारे में काफी जानकारी रखता था किन्तु ग्रीक नाट्यकला के सम्बन्ध में उसकी अभिज्ञता अत्यन्त सीमित थी। लारेल ने उसे समझाया कि प्राचीन ग्रीक नाटक

कार जब रङ्ग मंच पर अपने नायक को इस प्रकार की क्लिष्ट परिस्थिति में डाल देते थे कि किसी भी प्रकार उसका उद्धार न हो सकता था तब वे रङ्ग मञ्च पर एक मशीन ले आते थे जिससे एक देवता प्रकट होकर सब कुछ ठीक कर देता था। टोकाएव अपने आपको एक ग्रीक देवता के रूप में कल्पना करके मुस्करा उठा। किन्तु यह असम्भव न था। वह एक सुन्दर और स्वस्थ युवक था और यह भूमिका उसके लिए काफी उपयुक्त रहती।

"आपको आज से चौबीस सौ वर्ष पूर्व पैदा होना चाहिए था।" लारेल ने मुस्कराते हुए कहा।

"उस समय पैदा होने का अर्थ यह है कि मैं एक बर्बर के वेष में घोड़े पर सवार होकर रूस के विशाल वनस्थल प्रदेश में घूमता फिरता।"

"एक स्काइथियन के रूप में।" विद्वान लैनी ने प्रत्युत्तर में कहा।

(६)

अपने पति के साथ एकान्त में बातें करते हुए लारेल ने बताया कि वह किस प्रकार मार्शल सोकोलोव्स्की के पास गयी थी। वह अमेरिका से आकर जेनरल क्ले के यहां धरना देकर बैठ गयी थी। अन्त में जेनरल क्ले को वाध्य होकर मार्शल सोकोलोव्स्की के साथ उसकी भेंट की व्यवस्था करनी पड़ी थी। उन्होंने उसके साथ अपना एक प्रतिनिधि भी भेज दिया था। फिर भी इस मुलाकात के लिये आवश्यक अनुमतिपत्र प्राप्त करने के लिये लारेल को पूर्वी बर्लिन में सोवियत सदर मुकाम में जाना पड़ा था। वहां से एक सोवियत सैनिक उसके पास गया था—शायद यह बताने के लिये कि अनुमतिपत्र में जिस महिला का उल्लेख हुआ है वह यही है। सोवियत सदर मुकाम एक विशालकाय झमेला सा था। प्रायः पन्द्रह सोलह मकानों को घेर कर एक मकान के रूप में परिवर्त्तित कर लिया गया था। लारेल ने बताया कि उसकी खानातलाशी तो न ली गयी थी किन्तु कागज़ों की बड़ी सतर्क जांच हुई थी।

इस विपत्ति के समय भी लारेल की तीव्र दृष्टि ने बहुत कुछ देख लिया था। पहले आगन्तुक अतिथि को तथाकथित सत्कारगृह में जाना पड़ता था जहां एक सैनिक अधिकारी उसके कागज़ों की जांच करता था। इसके बाद एक अध्ययन-

कक्ष मिलता था जहां बड़ा सुन्दर प्राचीन फर्नीचर सजा हुआ था। यह फर्नीचर शायद किसी किले से निकाल कर यहाँ सजा दिया गया था। इसके बाद मार्शल का कमरा था। इस विशाल कमरे के बीचोबीच एक वृहदाकार मेज़ के पीछे मार्शल सोकोलोव्स्की बैठे थे। मेज़ पर हरे रङ्ग का मखमली कपड़ा बिछा हुआ था। उनकी कुर्सी भी दरबारी ढङ्ग की थी। सामने की ओर भी इसी प्रकार की दो कुर्सियां रखी हुई थीं। लारेल और उसके साथ जाने वाला जेनरल क्रे का प्रतिनिधि वहां पहुँचे तो उनकी अभ्यर्थना के लिए महान मार्शल कुर्सी से उठे नहीं। उन्होंने बैठे ही बैठे आगन्तुक अतिथियों को उनकी कुर्सियों की ओर इशारा कर दिया।

मार्शल ने लारेल से कहा कि वह जो कुछ कहना चाहती हो कहे। लारेल का गला रुंध रहा था। बड़ी कठिनाई से वह अपने स्वर को संयत बनाए हुए थी। उसने विनय के साथ अपनी सारी कहानी सुना दी। मार्शल ने नम्र किन्तु संवेदनशून्य स्वर में कहा कि उन्हें उसके पति के सम्बन्ध में किसी प्रकार की जानकारी नहीं है और वे इस बात पर विश्वास नहीं कर सकते कि उसके पति का अपहरण हुआ है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के अपहरणों की अफवाहें यदाकदा उठती रहती हैं किन्तु वे पूर्णतया निराधार हैं—अनर्गल प्रचार मात्र। उन्होंने आश्वासन दिया कि इस मामले में वे विशेष रूप से जांच पड़ताल का आदेश देंगे। लारेल ने कहा कि उसके पति के अपहरण के सम्बन्ध में किसी प्रकार के संदेह की गुंजायश नहीं है; कुछ लोगों ने इस काण्ड को अपनी आंखों के सामने होते देखा था और बाद में 'रिआस' को टेलीफोन किया था। इस पर मार्शल ने उदासीन भाव से कहा, "हम लोग गुमनाम रिपोर्टों और टेलीफोनों पर कोई ध्यान नहीं देते।"

मार्शल सोकोलोव्स्की के कमरे की दीवारों पर स्टालिन, मार्क्स, एन्जेल्स और लेनिन के चित्र टंगे हुए थे। लारेल के सामने की ओर जो दीवार पड़ती थी उस पर एक विशालकाय चित्र टंगा हुआ था। यह चित्र चौड़े कन्धों और कठोर मुख मुद्रा वाले एक भयानक व्यक्ति का था। उसकी बड़ी बड़ी मूंछें चेहरे को और भी कठोरता का भाव प्रदान कर रही थीं। वह एक सैनिक वर्दी पहने

हुए था और नेपोलियन की भांति एक हाथ अपने ओवरकोट के अन्दर डाले हुए था। लारेल समझ गयी कि यह स्टालिन का चित्र है। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों यह चित्र मार्शल सोकोलोव्स्की की ओर घूर घूर कर देख रहा हो और धमकी देते हुए कह रहा हो—'खबरदार! पार्टी-लाइन से एक इञ्च भी मत हिलना।'

अमरीकी लोग मजाक में इस व्यक्ति को 'चाचा जी' कहा करते थे। किन्तु लारेल का विचार भिन्न था। वह इस व्यक्ति के अन्दर किसी प्रकार की सहृदयता के दर्शन न कर पाती थी। उसने इस कठोर व्यक्ति को सम्बोधित करते हुए एक कविता बनायी थी:—

एकाकी गिद्ध! अदय कठोर!
स्पर्द्धा की छाया से दूर!
अरे बैठा है तू निश्चिन्त
अपने सिंहासन पर क्रूर!
किन्तु दया ममता से रिक्त
बना कर अपना मन निस्पन्द—
कभी मिलता है क्या ऐ नीच!
तुझे जीवन का शुभ आनन्द?

(७)

धीरे धीरे लैनी के शरीर में शक्ति का संचार होने लगा। स्वास्थ्य लाभ कर लेने पर वह 'रिआस' पर अपनी कहानी सुनाने के लिए गया। इस बार वह एक सशस्त्र प्रहरी के साथ मोटर पर बैठ कर गया था। लारेल भी स्वयं उसके साथ गयी थी और उसके थैले में भी एक भरी हुई पिस्तौल सुरक्षित थी। उसने इस बार संकल्प कर लिया था कि अब कम्युनिस्टों को उसके पति की छाया तक न मिलेगी—वे लोग अपनी सारी सेना लेकर आवें तब भी नहीं। इस समय उसके मन में एक ही विचार था। वह यह कि शीघ्र से शीघ्र अपने पति को जर्मनी से बाहर निकाल ले जाय।

लैनी ने रेडियो पर अपनी कहानी सुना दी और श्रोताओं पर इसका बहुत

बड़ा प्रभाव पड़ा। रेडियोवालों ने इस भाषण के पृथक रेकार्ड भी बना लिये ताकि आवश्यकता पड़ने पर इसे दोहरा सकें। उन्होंने निश्चय किया कि इस भाषण के रेकार्डों का एक सेट वे 'वायस आफ अमेरिका' को दे देंगे ताकि सारे संसार के लोग इस बात से अवगत हो सकें कि सोवियत रूस गुण्डों के हाथों में पड़ गया है और उसकी सारी शासन व्यवस्था एक भयानक तथा जघन्य चिन्तन-धारा पर टिकी हुई है।

लारेल ने लैनी से तर्क करना शुरू किया। उसका कहना था कि लैनी का कर्त्तव्य पूरा हो गया; अब उसे अमेरिका के लिये रवाना हो जाना चाहिये। घर पर शांति-परिवार उसकी प्रतीक्षा कर रहा है; बच्चे प्रतीक्षा कर रहे हैं; उसके इष्ट मित्र प्रतीक्षा कर रहे हैं। वह एक बार न्यूयार्क में जाकर अपनी कहानी सब को सुना दे और इसके बाद एडगरमीयर में कुछ दिनों के लिये शांति से बैठे। लारेल का कहना था कि वह एडगरमीयर में भी सशस्त्र पहरे का प्रबन्ध करेगी क्योंकि अमेरिका में भी सोवियत रूस के शत्रुओं का बहुधा अपहरण होता रहता है और उनकी हत्या कर दी जाती है।

किन्तु लैनी इतनी जल्दी अमेरिका लौटने के लिये तयार न था। इस समय उसके अपहरण-काण्ड के फलस्वरूप बर्लिन में बड़ी उत्तेजना फैली हुई थी और लैनी चाहता था कि वह कुछ समय तक रुक कर यह तमाशा देखे। शीत-युद्ध धीरे धीरे आग्नेय युद्ध का रूप ले रहा था और इस बात का अनुमान लगाना कठिन था कि कुछ ही घण्टों बाद वस्तुस्थिति का क्या स्वरूप होगा। मास्को में स्टालिन ने अमरीकी प्रतिनिधियों के साथ मुलाकात की थी और बर्लिन का घेरा समाप्त करने के सम्बन्ध में बातचीत चल रही थी। किन्तु दूसरी ओर कम्युनिस्ट गुण्डे नगरपालिका के नवनिर्वाचित सदस्यों की मीटिंगें भङ्ग करने के लिये पाशविक बल का प्रयोग कर रहे थे। बर्लिन की नगरपालिका का सभामण्डप पूर्वी क्षेत्र में पड़ता था और ज्यों ही सभा शुरू होती थी त्यों ही गुण्डों के दल के दल लारियों पर चढ़ कर आ जाते थे और सभा को तितिर बितिर कर देते थे। इन सभाओं में 'रिआस' के प्रतिनिधि भी रहते थे और वे रेडियो पर सारी घटना का वृत्तान्त सुना देते थे। गुण्डों द्वारा इन पर भी आक्रमण होता था।

ये गुण्डे केबिल के तार काट डालते थे और माइक्रोफोन तोड़ फोड़ कर फेंक देते थे। अमरीकी पत्र-प्रतिनिधि यदि बीच में पड़ने का प्रयत्न करते थे तो उन्हें भी पीटा जाता था। एक बार एक पुरुष रिपोर्टर तथा एक महिला रिपोर्टर को पकड़ कर सोवियत सशस्त्र पुलिस के सदर मुकाम में बन्द कर दिया गया था। अमरीकी सैनिक सरकार के अधिकारी इन सभाओं में भाग लेने के लिये जाते तो उन पर भी आक्रमण किया जाता। पश्चिमी बर्लिन के पुलिस अधिकारी यदि हस्तक्षेप करने का प्रयत्न करते तो उन्हें भी पकड़ कर जेल में डाल दिया जाता।

लैनी ने एक छोटा सा रेडियो ले लिया था। वह होटल में अपने बिस्तर पर पड़ा पड़ा सारे समाचार सुनता रहता था। इसके बाद वह टैक्सी में बैठ कर 'रिआस' की ओर आता था। लारेल भी उसके साथ जाती थी। लैनी इस समय सोवियत अत्याचार का जीता जागता स्वरूप बन बैठा था और वह रेडियो पर जो कुछ कहता था उसे जर्मन लोग बड़े ध्यान से सुनते थे। उसने रेडियो पर अपने भाषण में कहा कि दीर्घकालीन अनुभव इस बात की ओर संकेत करता है कि जब कभी मित्रराष्ट्र सोवियत रूस के प्रति किसी प्रकार की उदारता दिखाते हैं, इसे एक दुर्बलता के रूप में समझ लिया जाता है और सोवियन शासकों की ओर से कुछ नयी मांगें पेश कर दी जाती हैं। इसलिये यह आवश्यक है कि मित्रराष्ट्र अब रूस के प्रति किसी प्रकार की उदारता न दिखायें और एक सुदृढ़ रुख अपना लें। बर्लिन की जनता के लिये भी आवश्यक है कि वह मित्रराष्ट्रों के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर खड़ी रहे। "आप के नेता आप का विश्वास चाहते हैं—हम मित्रराष्ट्रों को भी आप का विश्वास चाहिये।"—लैनी ने स्पष्ट रूप में घोषणा की।

किन्तु जनता अपने विश्वास का प्रमाण किस प्रकार दे? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न था। हाल ही में नगरपालिका के जो चुनाव हुए थे उनमें सोशल डेमोक्रेट पार्टी को लगभग पचास प्रतिशत वोट प्राप्त हुए थे। ऐसी अवस्था में यह स्पष्ट था कि जनता का नेतृत्व इस पार्टी को ही सौंपा जाय। पार्टी के अध्यक्ष ने 'रिआस' पर यह घोषणा की कि बर्लिन की जनता राइखस्टाग की इमारत के

सामने उपस्थित होकर एक स्वर से यह घोषणा करे कि वह स्वतन्त्र संसार के साथ रहेगी और कम्युनिस्ट तानाशाही का विरोध करेगी।

'रिआस' को यह विचार पसन्द आ गया। उसने उसे अधिक से अधिक रूप में प्रसारित करने की व्यवस्था की। 'रिआस' का नया नारा था—'बर्लिन संसार को बुला रहा है!'

'बर्लिन के निवासियो! कल संध्या के पांच बजे आप लोग राइख्स्टाग के सामने उपस्थित हों और यह घोषणा कर दें कि आप गणतान्त्रिक संसार के साथ हैं। प्रेग की बात सोचिये, बेलग्रेड की बात सोचिये, पूर्वी अञ्चल की बात सोचिये! हम लोगों की स्थिति अब भी इनसे काफी अच्छी है। हम अपने विचारों को व्यक्त करने के लिये स्वतन्त्र हैं। संसार की आंखें हमारी ओर लगी हुई हैं। सारे संसार की पीड़ित जनता हमारी ओर ताक रही है। मेयर रायटर तथा उनके सहयोगी हमारे प्रवक्ता हैं। हमें अपनी स्वाधीनता की रक्षा करनी है। पूर्वी और पश्चिमी बर्लिन के निवासियो! कल संध्याके पांच बजे राइख्स्टाग के सम्मुख उपस्थित होना मत भूलिये। कल बर्लिन सारे स्वतन्त्र संसार का आह्वान करेगा! कल बर्लिन संसार को कम्युनिस्टों के अत्याचार और आतङ्क के विरुद्ध अपना अस्तित्व अडिग रखने का संकल्प बताएगा। अपनी स्वाधीनता की रक्षा करना आप का प्रथम कर्त्तव्य है। —भूलियेगा मत—कल संध्या के पांच बजे राइख्स्टाग के सम्मुख उपस्थित होइये!'

यह सभा रोकना सम्भव न था क्योंकि लोग जलूस बना कर न जाने वाले थे; एक एक दो दो करके जा रहे थे। पश्चिमी जर्मनी और पूर्वी जर्मनी दोनों से लोग आ रहे थे। हर गली कूचे से लोग इस सभा में योगदान करने के लिये जा रहे थे। 'रिआस' ने लोगों को बता दिया था कि वे किस रास्ते से आवें। उसने उन्हें सावधान कर दिया था कि वे पूर्वी जर्मनी वाले स्टेशन पर न उतरें बल्कि कुछ चक्कर काट कर पश्चिमी जर्मनी वाले स्टेशन पर आकर उतरें।

एक विचित्र परिस्थिति यह थी कि 'रिआस' पश्चिमी जर्मनी में पड़ता था और बर्लिन के घेरे के कारण बिजली तथा कोयले की इतनी तंगी हो गई थी कि वह दिन में केवल तीन घण्टे चल सकता था। दूसरी ओर पूर्वी जर्मनी का

रेडियो चौबीस घण्टे चल सकता था। इस अभाव की पूर्ति के लिए पश्चिमी जर्मनी की सरकार ने एक दूसरी व्यवस्था कर ली। सैकड़ों जीपों पर लाउडस्पीकर लगा दिये गये और ये जीपें नगर के भिन्न भिन्न चौराहों पर जा जाकर उपरोक्त घोषणा प्रसारित करने लगती थीं। प्रत्येक जीप पर बड़े बड़े अक्षरों में 'रिआस' अंकित था। जहां ये जीपें पहुंचती थीं जनता की भीड़ लग जाती थी।

पूर्वी जर्मनी की जनता के लिए यह अपूर्व दृश्य था। कारण यह था कि इस अंचल में लोगों को समाचार पत्र आदि खरीदने की दिशा में पूर्ण स्वाधीनता न थी। कुछ चुने हुए समाचारपत्र ही मिल पाते थे। राजनैतिक सभाएं आयोजित करने पर प्रतिबन्ध था। यह प्रथम अवसर ही था कि पूर्वी जर्मनी वालों को अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए कोई अवसर मिला हो। फलस्वरूप उत्साह स्वाभाविक था। लैनी भी यह सब देख कर उत्तेजित हो उठा। वह अपना कमज़ोरी भूल गया और सभा के आयोजन में पूरा उत्साह लेने लगा। वह बर्लिन की गली गली से अवगत था। उसी ने लोगों को बताया कि पूर्वी बर्लिन में लाल पुलिस का मुख्य अधिकारी कर्नल मार्कग्राफ वही व्यक्ति है जिसे हिटलर ने सम्मानित करके उच्च उपाधि से विभूषित किया था! और आज यह व्यक्ति कम्युनिस्टों का मित्र बन बैठा था!! इस प्रकार प्रतिक्रियावादी सारे तत्व इकट्ठा होकर एक सम्मिलित मोर्चा बना रहे थे। आवश्यकता इस बात की थी कि स्वतंत्रता की शक्तियां भी आपस में मिल कर एक सम्मिलित मोर्चा तयार करें।

(८)

उस दिन जर्मनी के सम्पूर्ण इतिहास का सबसे अधिक महत्वपूर्ण दिन था। जिस स्थान पर यह सभा आयोजित हुई थी वहीं पर वह विशाल ब्रैण्डेनबर्गर फाटक था जिसे प्रशिया के साम्राज्यवादी शासकों ने अपनी विजय के स्मारक के रूप में बनवाया था। यह फाटक पूर्वी और पश्चिमी बर्लिन की सीमा के पास पड़ता था। राइख्स्टाग की इमारत युद्धके समय नष्ट भ्रष्ट हो गयी थी और इसकी मरम्मत न हुई थी। पंद्रह वर्ष पूर्व जब सोशल डेमोक्रेट लोग सत्तारूढ़ होने ही वाले थे हिटलर के षड़यन्त्रकारियों ने इस इमारत में आग लगाकर चुनाव से सम्बन्धित सारे कागजों को जला दिया था और इसका दोष कम्युनिस्टों के

सिर मढ़ दिया था। इसके बाद वे लोग स्वयं सत्तारूढ़ हुए थे और जर्मनी में तानाशाही की स्थापना हो गयी थी। किन्तु आज राइरव्स्टाग की यह इमारत जर्मनों के लिये स्वतन्त्रता के प्रतीक के रूप में खड़ी थी। उन्होंने यह निश्चय कर लिया था कि उन्हें जो गणतान्त्रिक शासनव्यवस्था प्राप्त हो गयी है उसे वे किसी भी अवस्था में न खोयेंगे।

दिन भर के कार्य भार से थके हुए जर्मन भी उत्साह के साथ इस सभा में भाग लेने के लिये आ पहुंचे। धीरे धीरे सभास्थल भर गया। इसके बाद आस पास की सड़कें और गलियां भी भरने लगीं और धीरे धीरे ऐसी स्थिति आ गयी कि तिल रखने के लिये भी स्थान न रह गया। अनुमान किया गया था कि इस सभा में कम से कम तीन लाख व्यक्ति एकत्रित हुए थे। चारों ओर लाउड स्पीकर लगा दिए गए थे ताकि लोग आसानी के साथ वक्ताओं के भाषण सुन सकें। सभा में सोशल डेमोक्रेट पार्टी के अध्यक्ष और बर्लिन के मेयर अर्न्सट् राय टर का भाषण होने वाला था। इसके अतिरिक्त भिन्न भिन्न ट्रेड यूनियनों के नेता भी बोलने के लिये आए थे। सब लोग बड़ी उत्सुकता के साथ इनके भाषणों की प्रतीक्षा कर रहे थे। कुछ देर तक 'रिआस' से मधुर संगीत प्रसारित होता रहा; इसके बाद वातावरण में ये गम्भीर शब्द गूंज उठे :

"आज राइरव्स्टाग की इस टूटी फूटी इमारत के सामने बर्लिन की जनता खड़ी हुई है। आज बर्लिन की जनता कम्युनिस्टों के आतंक और अत्याचार के विरुद्ध अपना प्रतिवाद व्यक्त करने के लिये एकत्रित हुई है। इस नगर के अधिवासियों ने अपने देश के पिछले इतिहास से बहुत कुछ सीखा है। इस नगर के लोगों की दृष्टि से यह बात छिपी नहीं है कि तानाशाही और निरंकुश शासन व्यवस्था के कारण ही आज हम इस दयनीय स्थिति को पहुँचे हैं। अब हम तानाशाही के अत्याचार और निरंकुशता को पास न फटकने देंगे। बर्लिन की जनता कम्युनिस्ट तानाशाही के विरुद्ध अपना प्रतिवाद प्रकट कर रही है; वह आतंक और अत्याचार को एक राजनैतिक अस्त्र के रूप में परिणत होते हुए नहीं देख सकती।"

मेयर रायटर ने मंच पर खड़े होकर बोलना शुरू किया : "आज इस भाषण में राजनीतिज्ञ लोग अथवा बड़े बड़े सेनापति बोलने के लिये नहीं आए हैं···आज

बर्लिन की जनता के प्रतिनिधि बोलने के लिये खड़े हुए हैं। ···हम लोग अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक हैं और भरसक उसके पालन को प्रयत्न कर रहे हैं। हम लोग सारे संसार से सहायता का आह्वान करते हैं। सारे स्वतन्त्र संसार के साथ हमारा आदर्शगत ऐक्य है। इन आदर्शों की रक्षा पर ही हमारा और आपका सारा भविष्य निर्भर करता है।'

इसके बाद सोशल डेमाक्रेट पार्टी के नेता फ्रान्ज न्यूमान बोलने के लिये खड़े हुए। उन्होंने अपने भाषण में कहा : "बर्लिन के निवासियो! यह बात मत भूलो कि तुम अपनी स्वाधीनता की रक्षा तो कर ही रहे हो, उन पददलित लोगों को भी उत्साह और प्रेरणा प्रदान कर रहे हो जो आज सोवियत तानाशाही के बोझ से दबे जा रहे हैं। सोवियत क्षेत्र में पड़नेवाली जर्मनी की जनता भी तुम्हारी ओर ताक रही है···हम अपने इन भाइयों के लिये भी लड़ेंगे···हम पूर्वी जर्मनी की जनताको हर प्रकार के सहयोग का आश्वासन देते हैं। हम सारी जर्मनी की जनता का आह्वान करते हैं।····हमारा नारा है स्वतन्त्रता, स्वतन्त्रता, केवल स्वतन्त्रता!"

जर्मनी में 'स्वतन्त्रता' का यह शब्द कई बार जादू का असर पैदा कर चुका था। किन्तु पिछले कई वर्षों से यह शब्द सुनाई पड़ना बन्द हो गया था। आज बहुत दिनों बाद यह शब्द फिर से वातावरण में गूंजा था। सभा एक आस्ट्रियन गीत गाकर समाप्त हुई। इस गीत की टेक थी—'बढ़े चलो प्रकाश की ओर! स्वाधीनता की ओर!!' इसी प्रकार के एक गीत ने किसी समय रूसी जनता को अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह करने के लिये प्रोत्साहित किया था। यह गीत सेण्टपीटर्सबर्ग की जेल में एक विद्रोही कवि द्वारा लिखा गया था। इस गीत ने प्रायः एक शताब्दी पूर्व विद्यार्थियों के प्राणों में स्वतन्त्रता की आग सुलगा दी थी जो एक विशालकाय विद्रोह के रूप में भड़क उठी थी। सन् १९०५ में होने वाली क्रान्ति के समय भी जनता ने इसी गीत को अपनाया था। इसके बाद सन् १९१७ में जब सारे रूस में ज़ार के विरुद्ध एक सबल और सफल क्रान्ति हुई थी तब भी यह गीत एक बार फिर वातावरण में गूंज उठा था। किन्तु अब यह गीत कहीं न सुनाई पड़ता था। अब इसे आवश्यकता से अधिक क्रान्ति-

कारी समझा जाने लगा था ! किन्तु रूस की जनता इसे भूली न थी। स्टालिन के विरोधी सारे देश में इसका प्रचार कर रहे थे। इस समय भी रूसकी एम० वी० डी० के अधिकारी कुछ दूरी पर अपनी मोटरों पर बैठे हुए दुर्बीन से सभा की कार्यवाही देख रहे थे। ये लोग भी इस गीत की स्वर लहरी से अवगत थे किन्तु अब इसके सम्बन्ध में उनके विचार पहले जैसे न रह गए थे।

(९)

लनी ने टोकाएव को जो आश्वासन दिया था उसे पूरा करने के लिये सचेष्ट हो गया। उसने लन्दन में अल्फी को एक पत्र लिख दिया था कि वह टोकाएव के लिये पासपोर्ट दिलाने की व्यवस्था कर दे। वह टोकाएव को साथ लेकर बर्लिन के ब्रिटिश अंचल के अधिकारियों से मिलने के लिये गया। यह निश्चय हुआ कि टोकाएव एक इजहारनामा लिखकर दे दे और उसके आधारपर ब्रिटिश सरकार उसे एक राजनैतिक भगोड़े के रूप में स्वीकार कर लेगी। इङ्गलैण्ड में टोकाएव का बस जाना लैनी के लिये बड़ी प्रसन्नता की बात थी। उसे लंदन में ठहरने के लिये एक नया अड्डा मिल जायगा।

लैनी भी अमेरिका लौट जाने की तयारी करने लगा। उसने 'रिआस' के कर्मचारियों से विदा ली। लास्की तथा उसके सहयोगियों से भी उसने मुलाकात की और अपना आभार प्रकट किया। मान्क लैनी से मिलने के लिए आया। लारेल की विपत्ति के समय वह बराबर उसके साथ रहा था और उसे धैर्य बधाता रहा था। अब विदा लेते समय लारेल का गला भर आया। उसने गद्गद स्वर में मान्क के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की। उसने कहा कि वह लन्दन से उसके लिये एक सोने की घड़ी भेजेगी। वह उस घड़ी पर मान्क का नाम अंकित करा देना चाहती थी। किन्तु मान्क ने कहा कि उसके कई छद्म नाम हैं, इस लिये घड़ी पर किसी प्रकार का नाम न रहना ही उचित होगा।

अमेरिका का रास्ता लन्दन होकर था। बर्लिन से उन्हें सीधे लन्दन जाना था। लारेल ने टेलीफोन पर वायुयान में अपनी सीटें बुक करा लीं। लारेल ने वायुयान कम्पनी से कहा कि जिस वायुयान में वह यात्रा करे उसमें सबसे अच्छा चालक दिया जाय। लैनी समझ गया कि लारेल को क्या आशंका सता रही

है। उसे भय था कि वायुयान के इञ्जिन में कोई गड़बड़ी पैदा हो गई ओर उसे रूसी अंचल में उतरना पड़ा तो लैनी फिर शत्रुओं के हाथों में पड़ जायगा। लारेल ने वायुयान कम्पनी वालों को कहा कि किसी को यह बात मालूम न होने पावे कि लैनी किस वायुयान में यात्रा कर रहा है। चारों ओर गुप्तचर घूमते रहते थे और आकाश में सोवियत वायुवाहिनी के लड़ाकू वायुयान मड़राते रहते थे। लारेल तब तक निश्चिन्त न हो सकती थी जब तक उसका वायुयान रूसी अंचल को पार करके निकल न जाय।

लारेल अपना सामान बांधने लगी। वह सब कुछ स्वयं सम्हाल रही थी; लैनी को हाथ भी न लगाने देती थी। वह लैनी से कहती थी कि वह चुपचाप लेटा रहे। उसे ऐसा लग रहा था कि लैनी कागज का पुतला है जो जरा सा आघात पहुंचते ही टूट फूट कर नष्ट हो जायगा। टेलीफोन की घण्टी बजी। उसने रिसीवर उठा कर कहा, 'मिस्टर बड टेलीफोन पर नहीं आ सकते। आप कौन हैं?"

उसने लैनी की ओर मुड़ कर कहा, "यह व्यक्ति अपना नाम—बड़ा विचित्र नाम है—अन्टर सुचन्गस्फान्ग निस!"

लैनी अपने बिस्तर से उछल पड़ा। उसने लपक कर टेलीफोन का रिसीवर पकड़ लिया। प्रसन्न स्वर में उसने कहा, "हैलो! आइन्सीडेल!"

एक हंसती हुई आवाज ने उत्तर दिया, "मैंने अपना ऋण चुका दिया है। कृपया मेरी बधाई स्वीकार कीजिये।"

"तुम हजार बार मेरे ऋण से मुक्त हो गए। बल्कि तुमने मुझे अपने उपकार के बोझ से दबा दिया है। इस समय तुम कहां हो?"

"मैं पश्चिमी जर्मनी में हूं। किन्तु मैं आप के होटल में नहीं आ सकता। मैं अभी खुलेआम पश्चिमी बर्लिन में नहीं आया हूँ। किन्तु मैं शीघ्र ही यहां आ जाने का विचार कर रहा हूँ।"

"जितनी जल्दी तुम पूर्वी जर्मनी छोड़ कर आ जाओगे उतना ही अच्छा रहेगा।" लैनी ने परामर्श दिया।

"अभी वहां कुछ मित्र हैं जिनकी सहायता करना आवश्यक है। उनका

प्रबन्ध करके मैं शीघ्र ही आ जाऊंगा। मैंने आप को टेलीफोन इसलिये किया है कि मैं आप को बता दूं कि जेल में आप के साथ उन लोगों ने जो जिरह की थी उसकी रिपोर्ट हमारे पास आ गयी है। वह मैंने पढ़ी है। आप के उत्तर बड़े ही सुन्दर रहे। किन्तु आप मेरी इस टेलीफोन वार्त्ता की चर्चा किसी से मत कीजियेगा।—बधाई!"

लैनी ने रिसीवर रख दिया। लारेल से उसने कहा, "मुझसे उसने यह कहा है कि मैं इस टेलीफोन वार्त्ता की चर्चा किसी से न करूं। इसलिये मैं तुम्हें पूरी बात नहीं बता सकता। बस इतना ही समझ लो कि मास्को और पूर्वी बर्लिन में कम्युनिस्ट तानाशाही के विरुद्ध गुप्त क्रियाशीलता चल रही है।"

किन्तु पश्चिमी बर्लिन में कम्युनिस्टों की गुप्त क्रियाशीलता भी तो चल रही है।" लारेल ने शंका के स्वर में उत्तर दिया।

(१०)

वे वायुयान द्वारा लन्दन के लिये रवाना हो गए। वायुयान जिस समय ज़मीन छोड़ कर आकाश की ओर उठने लगा लारेल गम्भीर चिन्ता की मुद्रा में बैठी रही! आधे घण्टे तक वह इसी प्रकार तनी हुई सी बैठी रही क्योंकि वायुयान रूसी क्षेत्र से गुज़र रहा था। किन्तु जब वायुयान रूसी क्षेत्र पार कर के आगे निकल गया लारेल निश्चिन्त हो गयी। तीन घण्टे बाद वायुयान लन्दन के हवाई अड्डे पर सकुशल उतर गया। अल्फी हवाई अड्डे पर लैनी और लारेल को लेने के लिये आया था। सब ने एक दूसरे का पारस्परिक अभिवादन किया। इसके बाद अल्फी उन्हें अपने घर ले गया जहां लैनी ने अपने जीवन के बहुत से सुखद क्षण बिताए थे।

अल्फी ने टोकाएव के मामले पर अधिकारियों के साथ बातचीत कर ली थी। उसने लैनी को बताया कि टोकाएव जैसी व्यवस्था चाहेगा वैसी हो जायगी। यह सुन कर लैनी बड़ा प्रसन्न हुआ। उसके सिर से एक बोझ उतर गया। अल्फी भी एक बार स्पेन में जेल का अनुभव कर चुका था। उस जेल से लैनी ने ही उसे छुड़ाया था; फलस्वरूप वह लैनी का कृतज्ञ था। हाल ही में उसने विवाह कर लिया था। उसकी पत्नी लेबर पार्टी की सदस्या थी किन्तु उसका पिता कट्टर

टोरी था। शीघ्र ही अल्फी एक पिता बनने जा रहा था। यह समाचर लैनी के लिये विशेष रूप से सुखद था।

तीन दिन तक लैनी और लारेल ने अल्फी के घर में विश्राम किया। यह घर एक ऐसी सुन्दर दृश्यावली के बीच में था जिसे न तो युद्ध ही नष्ट भ्रष्ट कर पाया था न समाजवादी प्रयोग। अल्फी ने प्रस्ताव किया कि लैनी और लारेल आस-पास के सुन्दर पार्वत्य प्रदेश का भ्रमण कर आवें। पास ही वह 'लेक अंचल' पड़ता था जिसका वर्णन हम वर्डस्वर्थ की कविताओं में पाते हैं। अन्य कोई अवसर होता तो लैनी राजी हो जाता। किन्तु इस समय उसका स्वास्थ्य ऐसा न था कि वह मोटर में बैठ कर तीन चार सौ मील की यात्रा कर सके। फलस्वरूप यह निश्चय हुआ कि यात्रा मोटर से न करके रेल द्वारा की जाय। रेल में सोने के लिये विशेष प्रकार की बर्थें प्राप्त थीं। अल्फी ने सीटें बुक करा लीं।

दूसरे दिन प्रातःकाल वे स्काटलैंड के एक छोटे से ग्राम में पहुँचे। महायुद्ध के पूर्व यह मछुओं की एक छोटी सी बस्ती थी। किन्तु युद्ध के तारतम्य में इसे एक विशालकाय हवाई अड्डे के रूप में परिवर्त्तित कर दिया गया था। इस समय भी यहां प्रतिदिन दर्जनों मालवाही वायुयानों का आवागमन हो रहा था क्योंकि बर्लिन का घेरा अभी तक चालू था और मित्र राष्ट्रों के वायुयान बर्लिन के निवासियों को आवश्यक माल पहुंचाने में लगे हुए थे। यहीं से लैनी और लारेल ने अमेरिका की ओर जाने वाले एक वायुयान को पकड़ा और स्वदेश की ओर रवाना हो गए।

(११)

हवाई अड्डे पर फ्रेडी रोबिन उपस्थित था। उसने लैनी और लारेल की अभ्यर्थना की और कहा कि वह उन्हें अपनी मोटर में एडगरमीयर पहुंचा देगा। एडगामीयर पहुंच कर लैनी ने दो तीन दिन पूर्ण विश्राम किया। इसके बाद सरकार के स्टेट विभाग से एक टेलीफोन आया। वे लोग लैनी के अनुभवों का वृत्तान्त सुनने के लिये उत्सुक थे। लैनी वाशिंगटन के लिये रवाना हो गया। उसने अपने साथ उन भाषणों की प्रतिलिपियां भी ले लीं जो उसने 'रिआस' पर दिये थे। वाशिंगटन पहुँच कर वह स्टेट विभाग के अन्डर-सेक्रेटरी मिस्टर

अचीसन से मिला। उसने अपने अपहरण-काण्ड का पूरा पूरा वृत्तान्त सुना दिया। स्टेट विभाग ने इस बयान को लिपिबद्ध कर लिया और उस पर लैनी के हस्ताक्षर करा लिये। उसने टोकाएव की चर्चा भी की और स्पष्ट रूप में यह कहा कि रूसी सेना विभाग के इस उच्च अधिकारी—जो पोलिटब्यूरो की गुप्त यन्त्रणाओं में भाग लेता रहा है और भीतरी बातों की पूरी जानकारी रखता है—का भी यही मत है कि 'स्टालिन का अर्थ है युद्ध !'

टोकाएव ने एक पुस्तक लिखने की योजना बनाई थी। उसका विचार था कि इस पुस्तक का नाम ही यह रखा जाय – 'स्टालिन का अर्थ है युद्ध !' लैनी ने निश्चय किया था कि वह इस पुस्तक को लेकर प्रेसीडेंट ट्रूमन के पास जायगा और उनके मस्तिष्क में यह बात भलीभांति जमा देने का प्रयत्न करेगा कि स्टालिन युद्ध का उतना ही इच्छुक है जितना कि बाघ मांस का। मांस-भक्षण बाघ का स्वभाव है ; इसी प्रकार युद्ध स्टालिन के स्वभाव में है। यदि स्टालिन शान्ति की बातें करता है तो इसका यही अर्थ है कि वह युद्ध के लिये अभी पूरी तरह तयार नहीं है। किन्तु वह भीतर ही भीतर तयारी कर रहा है। ज्यों ही उसके पास इतने अणु-बम हो जाएंगे जिनसे अमेरिका की औद्योगिक शक्ति को नष्ट भ्रष्ट किया जा सके त्यों ही वह युद्ध की घोषणा कर देगा।

लैनी ने विलम्ब न किया ! वह प्रेसीडेण्ट ट्रूमन से मिलने के लिये गया और उनसे कहा, "पूरी तयारी कर लेने के बाद स्टालिन आप के पास एक दूसरे ढंग का शांति-प्रस्ताव भेजेगा और आप हस्ताक्षर के लिये ज्यों ही कलम उठायेंगे त्यों ही उसका बम आप के सिर पर फट पड़ेगा !"

"एक अमरीकी के लिये इस बात पर विश्वास करना कठिन है कि संसार में इस प्रकार के भी व्यक्ति हो सकते हैं !" प्रेसीडेण्ट ट्रूमन ने उत्तर दिया।



अध्याय ३०

● संघर्ष के बाद शान्ति ●

(१)

लैनी के लिये एक अन्य आवश्यक काम था। उसे बेस के साथ बातें करनी थीं। उसने लारेल के साथ इस प्रश्न पर परामर्श किया। उसने कहा कि सम्भव है मेरा भयानक अनुभव बेस की आंखें खोल दे। लैनी ने लारेल को यह न बताया था कि उसने कम्युनिस्टों से बेस के सम्बन्ध में क्या कहा था। अब वह सब बताने की कोई आवश्यकता भी न रह गयी थी

उसने टेलीफोन पर बेस के साथ इस मुलाकात के समय तथा स्थान का निश्चय कर लिया। इसके बाद वह न्यूयार्क में बेस के नये फ्लैट पर गया। उसे आशा थी कि बेस ने समाचारपत्रों में उसके अपहरण का विवरण अवश्य पढ़ा होगा और इससे उसके मन पर कुछ न कुछ प्रभाव पड़ा ही होगा। उसे यह आशा भी थी कि जेल में उसने अमरीकी कम्युनिस्टों के सम्बन्ध में जो कुछ कहा था उस पर मास्को के महाप्रभुओं ने कोई न कोई कदम अवश्य उठाया होगा। अमेरिका की कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर कुछ न कुछ गड़बड़ी अवश्य मची होगी; लोग एक दूसरे का विश्वास करने में हिचकने लगे होंगे।

सितम्बर का महीना था ; बड़ी गर्मी पड़ रही थी। बेस एक हल्के कपड़े का ब्लाउज पहने हुए थी। उसके चेहरे पर थकावट का भाव था और वह बड़ी उद्विग्न प्रतीत हो रही थी। वह लगातार सिगरेटें पी रही थी। वह जानती थी कि लैनी उसे जेल के अनुभव सुनाने आ रहा है। उसे यह अग्नि-परीक्षा पसन्द न थी।

"मैंने समाचार पत्रों में सारी बात पढ़ ली है। विस्तारपूर्वक उसकी चर्चा करने की कोई आवश्यकता नहीं है।"

"मैं समझता हूं तुम्हें यह कहानी मेरे मुंह से सुनना चाहिये। यह आवश्यक है।" लैनी ने आग्रह किया।

"मैं समझती हूँ। तुम्हारी धारणा है कि तुम मुझे यह सब सुना कर शंकाशील बना दोगे और मेरा विश्वास हिल जायगा ; किन्तु यह तुम्हारी भूल है। मैं अब भी अपने विश्वास पर अडिग हूँ।"

"फिर भी तुम्हें मेरी कहानी सुन लेनी चाहिये।"

"तुम सोवियत रूस के शत्रु हो और हर सम्भव उपाय से उसका विरोध कर रहे हो ऐसी अवस्था में यह स्वाभाविक ही था कि वे तुम्हारा मुंह बन्द करने का प्रयत्न करें।"

"बेस, क्या तुम इस बात का समर्थन करती हो कि बन्दियों पर इस प्रकार का अमानुषिक अत्याचार किया जाय?"

"मैं इसका समर्थन नहीं करती किन्तु यह मैं जानती हूँ कि हर देश की सेना अपने बन्दियों के साथ इसी प्रकार का व्यवहार करती है।"

"यहां तुम भूल कर रही हो। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ, अमरीकी सैनिक अपने बन्दियों के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करते।"

"यह तुम्हें कैसे मालूम हुआ? वे लोग दूसरों को यह बात नहीं बताते कि वे अपने बंदियों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं।"

"नहीं; उन्होंने मुझे स्पष्ट रूप में सब कुछ बता दिया था। तुम इस बात को भूल रही हो कि मैं महीनों तक अमरीकी सेना के साथ रहा था। मेरा काम ही था बन्दियों से प्रश्न पूछना और उनके उत्तर प्राप्त करना। पहले मैं जेनरल पैच की सेना में रहा था, इसके बाद जेनरल पैटन की सेना में। मुझे स्पष्ट रूप में यह आदेश दिया गया था कि मैं कैदियों को धमकाऊं नहीं और उन पर किसी प्रकार का बल प्रयोग न करूं।"

"वे लोग जानते थे कि तुम एक भद्र पुरुष हो, इसीलिये उन्होंने तुम्हें भद्रता के काम दिये थे।"

"बेस, तुम मूर्खता की बातें कर रही हो। मेरे साथ अन्य व्यक्ति भी काम कर रहे थे। हमारी सारी सेना में अत्याचार का नाम निशान भी न था। वास्तविकता की ओर ध्यान देने का प्रयत्न करो। तुम्हारे उन कम्युनिस्ट बन्धुओं ने मुझे बलात पकड़ लिया, अपहरण द्वारा मुझे अपने क्षेत्र में ले गए और इसके

बाद उन्होंने यह प्रयत्न किया कि मैं स्टालिन की हत्या का प्रयत्न करने का कपोल-कल्पित अभियोग स्वीकार कर लूं। वे तथाकथित परीक्षक भी इस बात को जानते थे कि यह अभियोग एकदम मनगढ़न्त है; फिर भी उन्होंने भांति भांति के अमानुषिक अत्याचारों द्वारा मुझसे यह स्वीकार करा लेने का प्रयत्न किया। पहले मैं जब तुमसे इस प्रकार की बातों की चर्चा करता था तो तुम यही कहती थीं कि मैं सोवियत रूस के विरुद्ध झूठे अभियोग लगाकर अनर्गल प्रचार कर रहा हूँ। किन्तु अब तुम यह नहीं कह सकतीं क्यों कि मैं भुक्तभोगी हूँ; मैं यह सब देख सुन कर - उन नारकीय यंत्रणाओं का प्रत्यक्ष अनुभव करके—लौटा हूं। मैं चाहता हूँ कि तुम्हें भी उस नर्क की एक झलक दिखा दूं।"

"अभिनय मत करो, लैनी।" बेस ने एक दूसरी सिगरेट जलाते हुए कहा।" स्टालिन की हत्या के लिये बहुधा षड़यन्त्र होते रहते हैं। इन षड़यन्त्रों का भण्डाफोड़ भी यदा कदा होता ही रहता है। इस बार यदि वे आवश्यकता से अधिक सतर्क हो उठे और एक गलत व्यक्ति को अभियुक्त समझ बैठे तो इसमें ऐसी कौन सी आफत हो गयी? यह मानवीय दुर्बलता ही है। आखिर वे लोग भी मनुष्य हैं, देवता नहीं और मनुष्य से गलती होना कोई असम्भव बात नहीं है।"

"वे मनुष्य होते तब तो कोई बात ही नहीं थी—वे मानव स्तर के नीचे चले गए हैं। क्या तुम इस बात को नहीं समझ पातीं कि तानाशाही के कारण ही किसी देश में इस प्रकार की शंका और घृणा का वातावरण बनता है। प्रत्येक मनुष्य इस प्रकार की परिस्थिति में अपने आप को खतरे में समझने लगता है। ऐसे वातावरण में षड़यन्त्रों और गुप्त क्रियाशीलता की बाढ़ आ जाती है। विश्वास और सहयोग का नामनिशान भी नहीं रह जाता।"

"मैं जानती हूं। किन्तु यह हमारे विकास-पथ की एक आवश्यक तथा अनिवार्य मंजिल है। बाद में यह स्थिति न रहेगी।"

"किन्तु इस अस्थायी स्थिति में भी मानव-मूल्यों की यह भयानक उपेक्षा क्यों? निर्दोष व्यक्तियों से कपोलकल्पित अभियोग पत्रों पर हस्ताक्षर कराने का यह प्रयत्न क्यों? क्या वह पार्टी अधिक समय तक जीवित रह सकती

है जिसके सदस्य एक दूसरे का विश्वास नहीं कर सकते अथवा जिसके सदस्य एक दूसरे पर जासूसी करते हुए भांति भांति के षड़यन्त्र रचते रहते हैं ?'

"मैं सब कुछ जानती हूं, लैनी। किन्तु वे लोग मनुष्य ही हैं, देवता नहीं—और उनमें मानव हृदय की सारी दुर्बलताएं रहेंगी ही।"

(२)

लारेल उद्विग्न हो उठी थी। लैनी की दृष्टि से यह बात छिपी न रही। किन्तु उसने उतावली न प्रकट की। वह बेस को समझा बुझा कर ठीक रास्ते पर लाने के लिये आया था। उतावली से बेस के मन में शंका की सृष्टि हो सकती थी। इसीलिए वह फूक फूककर कदम बढ़ा रहा था।

"बेस, मैं जानता हूं कि तुम्हें यह बात पीड़ा दे रही है कि तुम्हारे भाई पर लगातार चार दिन और चार रात अमानुषिक अत्याचार होता रहा था। अच्छा जाने दो। मैं इसकी चर्चा न करूंगा। किन्तु मैं तुम्हें यह बात अवश्य बता देना चाहता हूँ कि इस समय पूर्वी जर्मनी में क्या हो रहा है। मैं वहीं से सीधे आ रहा हूँ ; तुम्हें वहां का हालचाल देखे एक लम्बा अर्सा बीत चुका है।"

लैनी ने अपनी कहानी कार्ल सीड्ल से शुरू की—किस प्रकार वह नवगठित सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी का सदस्य हुआ, किस प्रकार उसे अपने साथियों पर नजर रखने के लिए बाध्य किया गया, किस प्रकार वह अपनी जान बचा कर वहां से भागा। उसने बेस को 'रिआस' की बात बतायी—किस प्रकार पूर्वी जर्मनी के कारखानों में सोवियत जासूस भरे हुए हैं और अपने साथियों के साथ विश्वास-घात कर रहे हैं। उसने बेस को बताया कि वह पूर्वी जर्मनी से भाग कर आनेवाले शरणार्थियों के शिविर में हो आया है और प्रत्येक शरणार्थी के मुंह से पूर्वी जर्मनी की भयानक परिस्थितियों का वर्णन सुनने के बाद उसे अब किसी प्रकार का संदेह नहीं रह गया है। उसने बेस को आइन्सीडेल की बात भी बतायी। उसने आइन्सीडेल का नाम न लिया क्यों कि वह बेचारा अब भी शत्रुओं से घिरा हुआ था। उसने केवल इतना ही बताया कि एक उच्च कुलीन जर्मन युवक जिसे कम्युनिस्टों ने अपनी ओर फोड़ लिया था अब वर्त्तमान शासन व्यवस्था के विरुद्ध होकर उसे उलट देने का प्रयत्न कर रहा है।

लैनी ने देखा कि बेस उसकी बातें ध्यान पूर्वक सुन रही है। उसके मन में आशा का संचार हुआ। वह अब कुछ उत्सुकता प्रकट करने लगी थी ; वह बीच बीच में लैनी से प्रश्न पूछ लेती थी। उसकी दृष्टि में एक बात स्पष्ट थी—वह यह कि लैनो अपने प्रत्यक्ष अनुभवों की चर्चा कर रहा है और वे अनुभव उसकी कल्पित धारणाओं के कितने ही विपरीत क्यों न हों, उनकी वास्तविकता से इनकार नहीं किया जा सकता।

बातों के तारतम्य में धीरे धीरे लैनी टोकाएव पर आया। मन ही मन बेस भी यह जानने के लिए उत्सुक थी कि उसके भाई का उद्धार किस प्रकार हुआ। लैनी ने बेस को टोकाएव के सम्बन्ध में सारी बातें सविस्तार बतायीं उसके उच्च पद, उसके सुदृढ़ चरित्र, उसकी लोकप्रियता, बुद्धिमत्ता आदि की चर्चा की। उसने यह भी बता दिया कि टोकाएव की इतनी प्रतिष्ठा थी कि वह पोलिटब्यूरो की गुप्त मंत्रणाओं तक में बुला लिया जाता था। यह उच्च पदस्थ सम्मानित रूसी अधिकारी – वहां की संस्कृति का सबसे सुन्दर पुष्प—भी आखिर वर्त्तमान शासकों के काले कारनामों से ऊब उठा और अन्त में किसी प्रकार अपनी जान बचा कर इङ्गलैंड भाग गया। उसे किसी ने घूस देकर न खरीदा था, वह कोई अपराध करके भी न भागा था। वह एक सच्चा आदर्शवादी व्यक्ति था और वह अपने चारों ओर फैली हुई गंदगी से घबरा कर ही भागा था।

"इसके अतिरिक्त कासेनकीना की बात तो तुम जानती ही हो। समाचार-पत्रों में तुमने इस वीभत्स काण्ड को अवश्य पढ़ा होगा"

"पढ़ा था, लैनी।"

"बर्लिन में कुछ ऐसे व्यक्तियों के साथ मेरी मुलाकात हुई थी जो जेन्जीनोव को जानते थे। उन्होंने मुझे बताया कि क्रांति के दिनों में जेनजीनोव ने कैसा शानदार काम किया था। क्या तुम इस बात पर विश्वास कर सकती हो कि टाल्सटाय की पुत्री—जो आजीवन अपने महान पिता के चरणचिन्हों का अनुसरण करती रही—एक 'ह्वाइट गार्ड' मात्र है?.....कम्युनिस्टों ने न्यूयार्क में अपना जो स्कूल खोल रखा था वह भी सोवियत शासन व्यवस्था का एक छोटा

सा नमूना था—चारों ओर घृणा, संदेह और षड्यन्त्र ! वहां भी नैतिक पतन की भयानक दुर्गन्ध आ रही थी।"

(३)

बेस का कौतूहल जाग उठा था। अब लैनी ने उसे अपनी कहानी सुनानी शुरू की। उसने प्रत्येक घटना विस्तारपूर्वक सुनाई—किस प्रकार पहले उसे भयानक शीत में ठिठुराया गया, किस प्रकार उसे भट्टी की आग में सेंका गया, किस प्रकार उसकी आंखों के सामने असह्य विद्युत प्रकाश रखा गया, किस प्रकार उसे पल भर के लिये भी झपकी न लेने दी गयी, किस प्रकार उसे बराबर भांति भांति की धमकियां दी जाती रहीं। बेस भी आखिर मनुष्य थी, उसका हृदय भी साधारण रक्त मांस से बना था, पत्थर से नहीं। वह यह सब सुन कर दहल गयी। इस बार वह लैनी पर बिगड़ी नहीं। उसकी अंगुलियां कांप रही थीं और वह अनजान में अपनी सिगरेट ऐशट्रे में मसल रही थी। अन्त में लैनो ने देख लिया कि उसका अवसर आ पहुंचा है। उसने कोमल स्वर में बेस से कहा, 'बेस, मुझे सच बताओ, क्या तुमने कभी अपनी पार्टी की निम्नगामी नैतिकता को लक्ष्य नहीं किया ?"

"मैंने लक्ष्य किया है, लैनी।" उसने उत्तर दिया ! "किन्तु मैं तुम्हें बता चुकी हूं कि इस सम्बन्ध में मेरा क्या दृष्टिकोण है। मुझे मनुष्यों के साथ काम करना है, देवताओं के साथ नहीं।"

"तुमने उन लोगों के लिए बड़े बड़े त्याग किये हैं। किन्तु क्या तुम्हें कभी यह आशंका नहीं हुई कि तुम्हारे विरुद्ध भी षड्यन्त्र रचा जा सकता है ; तुम्हारे साथ भी विश्वासघात हो सकता है ?"

लैनी ने देखा कि बेस अपने होठ काट रही है। उसने अपना मुंह दूसरी ओर फेर लिया। वह प्रतीक्षा करने लगा। अन्त में बेस ने कहा, "लैनी, क्या मैं तुम्हारा विश्वास कर सकती हूँ ? तुम मेरे साथ विश्वासघात तो न करोगे ?"

"तुम्हारे मन में ऐसा विचार कैसे आया, बेस ?"

"नहीं, मेरा यह मतलब न था। मेरा अभिप्राय यह है कि मैं तुमसे जो कुछ कहूं उसकी चर्चा किसी से न करना—लारेल से भी नहीं।"

"नहीं, नहीं। मैं तुम्हारी स्थिति को समझता हूं। किन्तु यदि तुम सरकार के विरुद्ध किसी षड़यन्त्र की बात बताओगी तो इसे मैं गुप्त न रख सकूंगा। हां, व्यक्तिगत बात होगी तो मैं इसे अपने हृदय तक ही सीमित रखूंगा—मैं आश्वासन देता हूँ।"

"मेरे साथ एक भयानक घटना हो गई है। मेरी समझ में नहीं आता कि यह सब कैसे हुआ।"

लैनी ने अपनी आंखें नीची ही रखीं; उसे भय था कि कहीं बेस उसके चेहरे से उसका मनोभाव न ताड़ जाय।

"कोई मेरा विश्वास नहीं करता।" लारेल ने कहा। "पार्टी ने मेरे विरुद्ध कोई अफवाह सुन ली है और वह मेरे प्रति सशंक हो उठी है। मेरी जांच हो रही है।"

लैनी सब कुछ समझ गया। जांच का अर्थ यह था कि मास्को का एक प्रतिनिधि आकर सारे मामले पर अपने दृष्टिकोण से विचार करेगा, स्थानीय पार्टी-सदस्यों का इसमें कोई हाथ न रहेगा। यह प्रतिनिधि सर्वशक्तिसम्पन्न होगा। याल्टा सम्मेलन के अवसर पर स्टालिन ने प्रेसीडेंट रूजवेल्ट को यह आश्वासन दिया था कि वह कमिन्टर्न को समाप्त कर देगा। किन्तु हुआ केवल इतना ही कि कमिन्टर्न का नाम बदल कर कमिन्फार्म कर दिया गया। वही पुराने अधिकारी पहले की भांति ही अपना काम करते रहे।

"यह तो बड़ी बुरी खबर है," लैनी ने सहानुभूतिपूर्ण स्वर में कहा। "किन्तु बेस तुम्हें इससे आश्चर्य न होना चाहिये। कुछ भी हो, कम्युनिस्टों की दृष्टि में तुम बुर्जुआ ही हो। तुम एक 'घड़ियाल' की लड़की और एक 'नरमांसभक्षी' की बहन हो।"

"लैनी, तुम मेरे साथ निर्दय हो रहे हो। कम्युनिस्ट लोग मेरे वंश आदि के सम्बन्ध में पहले भी सब कुछ जानते थे; फिर भी उन्होंने सदा मेरा विश्वास किया। अब अचानक न जाने क्यों उन्हें सन्देह हो गया है।"

"अब क्या हो गया?"

"यही तो मैं समझ नहीं पा रही। मास्को से आने वाले प्रतिनिधि के साथ

मेरी तीन मुलाकातें हुई हैं। प्रत्येक मुलाकात प्रायः चार घण्टे की रही थी। वह मुझसे भांति भाँति के प्रश्न पूछ रहा था। किन्तु वह मुझे यह न बता रहा था कि आखिर मेरे विरुद्ध अभियोग क्या है।"

"क्या प्रश्नोत्तर के समय तुम्हारी आंखों के सामने वह भयानक विद्युत-प्रकाश रखा गया था?"

"नहीं।"

"क्या तुम्हें एक ऐसे स्टूल पर बैठाया गया था जिसकी चौड़ाई एक बीते से अधिक न हो?"

"ओह, लैनी! तुम मेरे साथ क्रूर हो रहे हो।"

"बेस, तुम अपने आप को धन्यवाद दो कि तुम अमेरिका में हो और वे लोग तुम्हारे ऊपर वैसा अत्याचार न कर सके जैसा कि उन्होंने मेरे साथ किया था।"

"किन्तु लैनी मेरे प्रति अविश्वास का कारण क्या हो सकता है?"

"बेस, तुम अब भी नहीं समझीं? तुम पार्टी के अन्दर एक प्रमुख स्थान रखती हो। इसलिये पार्टी के अनेकों सदस्य तुम्हारे प्रति ईर्ष्यालु होंगे। इसके अतिरिक्त ईर्ष्या के लिये अन्य कारण भी हो सकते हैं। क्या तुमने कभी किसी सदस्य की अयोग्यता की ओर संकेत नहीं किया? क्या तुमने कभी किसी व्यक्ति पर सन्देह नहीं किया? सोच कर देखो। पार्टी के अन्दर काम करते हुए इस प्रकार के अनेकों अवसर आए होंगे। और अनेकों बार तुमने अपने कुछ शत्रु तयार कर लिये होंगे। आज इन शत्रुओं को अवसर मिला है और वे अपना बदला ले रहे हैं। इनका नेतृत्व वह व्यक्ति कर रहा होगा जो पार्टी के अंदर तुम्हारा स्थान लेने के लिये उत्सुक होगा।"

"किन्तु पार्टी के अन्दर अब मेरा क्या स्थान है? मुझे दस वर्ष की जेल का दण्ड मिल चुका है। यह बात किसी से छिपी नहीं है।"

"यहां भी तुम गलती कर रही हो। पार्टी के अन्दर तुम्हारा एक आश्चर्य-जनक स्थान है। ऐसे व्यक्तियों की संसार में कमी नहीं जो शहीद बनना चाहते हैं बशर्ते कि बाद में उनकी चर्चा होती रहे और पार्टी के इतिहास में

उनके नाम को कोई महत्व प्राप्त हो सके। तुम एक ऐसे सङ्गठन के साथ संयुक्त हो जो घृणा को गौरव प्रदान करता है। तुम्हारे इस संगठन में सदा 'वर्ग-घृणा' और 'वर्ग-युद्ध' की बातें होती रहती हैं। किन्तु वर्ग स्वयं एक अमूर्त्त तत्व है, मनुष्य से ही वर्गों का निर्माण होता है। पार्टियां भी मनुष्यों से ही बनती हैं। जो वर्ग से घृणा करता है वह वस्तुतः मनुष्य से घृणा करता है। वर्ग से घृणा करना सीखने के बाद लोग आपस में एक दूसरे से घृणा करना भी सीख जाते हैं। मैं सदा तुम्हें यही समझाने का प्रयत्न करता रहा हूं, बेस।"

"मेरी विपत्ति के इस अवसर से लाभ उठा कर तुम उपदेश देने का प्रयत्न कर रहे हो।"

"तुमने मेरी सलाह मांगी है और मैं जो अच्छा समझता हूँ वह तुम्हें बता रहा हूं। घृणा से घृणा का जन्म होता है; घृणा मनुष्य की निम्नतर प्रवृत्तियों को उभाड़ देती है।—जो व्यक्ति तुम्हारी जांच करने के लिये आया है वह रूसी है क्या?"

"हां, वह रूसी है।"

"तब तुम इस बात की आशा कैसे करती हो कि वह अपना निर्णय तुम्हारे पक्ष में देगा? याद रखो वह एक ऐसे देश में आया जिससे वह घृणा करता है। तुम इसी देश की नागरिका हो। इसके अतिरिक्त वह तुम्हें बुर्जुआ समाज की एक सदस्या के रूप में देखता है। तुम्हारे पिता आज भी एक सुप्रसिद्ध उद्योगपति हैं और तुम पार्टी के लिये चाहे जितना बड़ा त्याग करो, अन्त में तुम बुर्जुआ ही रहोगी। वह व्यक्ति इस बात पर विश्वास ही नहीं कर सकता कि बड अर्लिन्ग परिवार की लाड़ली पुत्री कभी हृदय से कम्युनिस्ट हो सकती है। इस बात को स्वीकार कर लेने का अर्थ है मार्क्स—लेनिन—स्टालिनवाद की आधारभूत मान्यताओं को तिलांजलि दे देना। वह व्यक्ति किसी भी अमरीकी का विश्वास नहीं कर सकता। इस समय मास्को के शासकों की नीति यह है कि सारे अमरीकियों से घृणा करो। आज यह नीति एक सिद्धान्त का रूप ले चुकी है।"

(४)

"लैनी, यह बात बड़ी ही कष्टप्रद है। मैंने अपना सारा जीवन जिस

आदर्श के लिये समर्पित कर दिया आज वही मेरे विरुद्ध खड़ा हो गया है। आज उस आदर्श में मेरा कोई स्थान नहीं रहा। कोई मेरा विश्वास नहीं करता।"

"वह व्यक्ति तुम्हें यह नहीं बताता कि तुम्हारे विरुद्ध अभियोग क्या है?"

"नहीं, वह मुझे चकमा देने का प्रयत्न कर रहा है। वह मुझे यह विश्वास दिलाना चाहता है कि सन्देह मुझ पर नहीं बल्कि कुछ अन्य व्यक्तियों पर है। वह मुझसे मेरे परिचितों के सम्बन्ध में भांति भांति के प्रश्न पूछता रहता है। मेरा विश्वास है कि इस मामले में कई व्यक्ति जांच पड़ताल कर रहे हैं।"

"वह तुम्हें क्या करने के लिये कहता है?"

"वह मुझे कुछ भी नहीं बताता। उसने केवल इतना ही कहा है कि शायद मुझे मास्को में बुलाया जाय।"

इस वाक्य ने लैनी के हृदय को एक गहरा झटका दिया। "नहीं बेस! तुम किसी भी अवस्था में मास्को जाने के लिये तयार मत होना। मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ। एक बार तुम वहां चली जाओगी तो तुम्हारी भी ठीक वही दशा होगी जो मेरी हुई थी।"

"किन्तु मैं अभी जा भी कैसे सकती हूँ? मैं जमानत पर हूं। मैं अभी चली जाऊंगी तो उन लोगों को पचास हजार डालर से हाथ धोना पड़ेगा।"

"वे तुम्हें पाने के लिये यह रुपया सहर्ष दे देंगे। बेस, तुम मुझे वचन दो कि तुम किसी भी अवस्था में मास्को जाने के लिये तयार न होगी। एक बार तुम उस रौरव नर्क में पहुंच जाओगी तो फिर लौटकर न आ सकोगी। तुम इस बात को भलीभांति समझ लो। उनकी दृष्टि में तुम्हारा कोई मूल्य नहीं है—तुम्हारी पिछली सेवाएं, त्याग, तपस्या, सब कुछ अर्थशून्य है। वहां पहुंचने पर तुम्हें मृत्यु ही सबसे अधिक सुन्दर वस्तु प्रतीत होने लगेगी और तुम मन ही मन उसके लिये प्रार्थना करोगी।"

अब बेस के लिये यह सम्भव न था कि वह पहले की भांति लैनी की उपेक्षा करे। पहले जब कभी लैनी इस प्रकार के अत्याचारों, षड़यन्त्रों और झूठे अभियोगों पर बलात हस्ताक्षर कराने की चर्चा करता था बेस विश्वास न करती थी। वह सदा यह कहती कि यह प्रतिक्रियावादियों का प्रचार मात्र है। किन्तु अब

यह सम्भव न था। लैनी स्वयं इस अत्याचार से गुज़र कर आया था। वह भुक्त-भोगी था। उसने बेस को सारी बातें सविस्तार बतायीं। वह एकटक दृष्टि से लैनी की ओर ताकती रही। कभी कभी वह कांप उठती थी। कभी कभी उसकी मुट्ठियां बंध जाती थीं। उसका पुराना दम्भ समाप्त हो गया था। उसका आत्म विश्वास नष्ट हो चुका था। लैनी से यह बात छिपी न रही। वह अपनी पूरी शक्ति लगाकर बेस को प्रभावित करने का प्रयत्न करने लगा।

"बेस, तुम मेरी बात सुनो। भगवान के लिये तुम अपने आप को उस व्यक्ति के हाथों में मत सौंपना। तुम उससे मिलना जुलना बन्द कर दो। वह स्टालिन का एक छोटा रूप है। वह एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति है; उसका विश्वास है कि आगे चलकर उसी को अमेरिका पर शासन करना है। उसका सारा जीवन इस महत्वाकांक्षा के आस पास ही चक्कर काटता रहता है। अमेरिका की समृद्धि उसके मन में ईर्ष्या पैदा करती है। वह उस दिन की आशा में बैठा हुआ है जब वह अमेरिका का भाग्य-विधायक होकर आएगा और अपने सारे विरोधियों को मौत के घाट उतार देगा। वह हमारे सारे समाचार पत्रों पर अधिकार कर के उन्हें छोटे छोटे 'प्रवदाओं' के रूप में परिवर्त्तित कर देगा। वह हमारे रेडियो स्टेशनों पर अधिकार कर लेगा और उन्हें स्टालिनवाद के प्रचार-यंत्रों के रूप में वरिवर्तित कर देगा।"

"लैनी, तुम यह सब बंद करो।" बेस ने कहा।

"बेस, मैं तुम्हें वही बता रहा हूं जो मैं निश्चित रूप में जानता हूं। यह केवल मेरा अनुभव नहीं है; यह उन सारे व्यक्तियों का अनुभव है जिनसे मैं मिलकर आया हूं। आज यदि पश्चिमी जर्मनी के फाटक खोल दिए जायं तो पूर्वी जर्मनी के अधिकांश व्यक्ति वहां से भाग आएंगे। यों भी लुके छिपे सैकड़ों व्यक्ति प्रतिदिन पश्चिमी जर्मनी में आ रहे हैं। पूर्वी योरोप ने अपनी स्वाधीनता खो देने के बाद ही स्वाधीनता के महत्व को समझा है। अत्याचार के वातावरण में रहते हुए अपनी जबान पर ताला लगाकर रखना कितनी भयानक बात है! प्रतिक्षण यह शंका रहती है कि कहीं तुम्हारे चेहरे का भाव तुम्हारा भेद न खोल दे। किसी भी क्षण कोई व्यक्ति अधिकारियों के पास तुम्हारी चुगली कर सकता

है और इसके फलस्वरूप तुम्हारा सर्वनाश हो सकता है। आज तुम्हारे साथ क्या हो रहा है, बेस? किसी ने तुम्हारे विरुद्ध शिकायत कर दी है। वे लोग स्पष्ट रूप में तुम्हें यह नहीं बताते कि तुम्हारे विरुद्ध क्या अभियोग लगाया गया है। कारण यह है कि यह अभियोग ठीक उसी प्रकार कपोलकल्पित होगा जिस प्रकार कि मेरे विरुद्ध लगाया गया यह अभियोग कि मैंने स्टालिन की हत्या करने का प्रयत्न किया।"

(५)

लैनी ने देखा कि बेस की आंखों में आंसू आ गए हैं और किसी भी समय वह बरस पड़ सकती है। "आखिर मैं क्या करूं, लैनी?" उसने कम्पित स्वर में प्रश्न किया।

"पहला काम तो तुम यह करो कि यह फ्लैट छोड़कर किसी दूसरी जगह चली जाओ। यहां तुम्हें अकेले न रहना चाहिये। यह एक खतरनाक बात है। क्या यह बात तुम्हें नहीं मालूम कि स्टालिन की कार्यप्रणाली में हत्या का भी बहुत बड़ा स्थान है? रूस में तो हत्याओं की कोई गणना नहीं की जा सकती। योरोप और अमेरिका में स्टालिन के विरोधी अधिक समय तक जीवित न रह सके। ट्राटस्की की हत्या की बात तो तुम जानती ही हो। उसके पुत्र सेडोव का सिरविहीन शव नदी में तैरना हुआ पाया गया था। जोस रोबल्स और कर्ट लण्डाऊ का अपहरण करके इनकी हत्या कर दी गयी। विली मुन्जेनबर्ग एक समय बर्लिन में स्टालिन के प्रचार विभाग का अध्यक्ष था—उसी ने 'सहयात्री' प्रणाली का आविष्कार किया था। किन्तु जब स्टालिन के साथ उसका मतभेद हो गया उसकी हत्या कर दी गयी; उसका शव फ्रांस के एक जंगल में पड़ा हुआ मिला। कार्लो टेरका की हत्या यहां अमेरिका के फिफ्थ एवेन्यू में की गयी। योरोप में सोवियत गुप्तचर विभाग के अध्यक्ष वाल्टर क्रिवित्सकी की हत्या यहां वाशिंगटन में की गयी। और भी अनेकों उदाहरण दिये जा सकते हैं।"

"लैनी, इतना ही पर्याप्त है। मैं सब कुछ जानती हूं।"

"मैं तुम्हें यह समझाने का प्रयत्न कर रहा हूं कि तुम मास्को से केवल आधे घण्टे की दूरी पर हो।"

"मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझी।"

मेरा मतलब यह है कि यहां हमारे बन्दरगाह में रूसी जहाज भी हैं। प्रत्येक रूसी जहाज एक छोटा मोटा मास्को है और प्रत्येक जहाज का कप्तान एक छोटा मोटा स्टालिन है। जो व्यक्ति मास्को से तुम्हारी जांच पड़ताल करने के लिये आया है वह चाहे तो किसी दिन रात के समय दो जहाजी मल्लाहों के साथ आकर तुम्हें बलात उठाकर ले जा सकता है। वे लोग तुम्हें क्लोरोफार्म सुंघाकर और तुम्हारे हाथ पैर बांधकर उठा ले जा सकते हैं—ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि मुझे ले गए थे। इसके बाद वे तुम्हें अपने जहाज के तहखाने में डाल देंगे जहां तुम्हारी सारी चीख पुकार व्यर्थ होगी। तीन चार सप्ताह में तुम मास्को पहुंच जाओगी—इसके बाद लुबियान्का जेल में। वे वहां तुम से बलात कोई अभियोग स्वीकार करा लेंगे और इसके बाद साइबेरिया की ओर निर्वासित कर देंगे। साल दो साल में अमानुषिक परिश्रम और यंत्रणा के कारण तुम्हारा शरीर नष्ट हो जायगा और तुम्हें एक नामशून्य कब्र में दफना दिया जायगा।"

"क्या तुम सचमुच इस प्रकार की बातों को सम्भव समझते हो?"

"सम्भव समझता हूँ? मैं निश्चित रूप में जानता हूँ। जो लोग किसी प्रकार बचकर निकल आए उनसे मुझे सब कुछ ज्ञात हो गया है। यहाँ न्यूयार्क में भी दो एक भुक्तभोगी मिल जायंगे। यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हें इन व्यक्तियों से मिला सकता हूं।"

"तुम मुझे कहां भाग जाने के लिये कहते हो लैनी?"

"मैं कहता हूँ कि तुम इस भयानक आंदोलन से ही अलग हो जाओ जिसने मानव जाति की आशाओं अभिलाषाओं के साथ ऐसा कुत्सित विश्वासघात किया है। तुम इस बात को समझ लो कि अब तुम कुछ भी क्यों न करो इस आन्दोलन में तुम्हारा कोई स्थान नहीं रहा। अब तुम दागी हो गई हो और अब कोई तुम्हारा विश्वास न करेगा। शायद दो एक घनिष्ट मित्र तुम्हारे साथ बने रहें किन्तु इससे उनका भविष्य भी संदिग्ध हो उठेगा। अब तुम्हारा साथ वही दे सकते हैं जिन्हें ट्राटस्कीवादी, ब्राउडरवादी आदि के नाम से गालियां दी जाती हैं। अब शायद 'बडवादी' नामक एक नयी गाली की सृष्टि हो जाय।"

"तुम इस बात को भूल रहे हो कि मुझे जेल जाना है।"

"हो सकता है तुम्हें जेल जाना पड़े। किन्तु साथ ही यह भी सम्भव है कि तुम्हें जेल जाने की कोई आवश्यकता न रहे। सम्भव है तुम कम्युनिस्टों से अपना सम्बन्ध तोड़ लो तो रोबी बड तुम्हें अधिकारियों से क्षमादान दिलवा दें। मुझे इस बात का निश्चय नहीं है किन्तु इतना मैं कह सकता हूं कि वे कोई उपाय उठा न रखेंगे।"

"किन्तु मेरा परिवार क्या मुझे वापस लेने के लिए तयार होगा?"

"वापस लेने के लिए तयार होगा? क्या कह रही हो तुम? तुम्हारे माता पिता केवल यह बात सुनने के लिये व्यग्र हैं कि तुमने कम्युनिस्टों से अपना सम्बन्ध सदा के लिये तोड़ लिया है। तुम्हारी मां तुम्हारे लिए रो रो कर आकाश पाताल एक कर रही है। यदि तुम अपने जीवन में घृणा के स्थान पर प्रेम का राज्य चाहती हो तुम अपने परिवार में लौट जाओ। एक बात और भी है। वहां तुम निरापद रूप में रह सकोगी। रोबी बड अपनी सम्पत्ति की रक्षा करना तो जानते ही हैं, मनुष्यों की रक्षा करना भी जानते हैं। उनके मकान के आसपास कम्युनिस्ट षणयंत्रकारियों की छाया तक न पहुंच सकेगी। वहां तुम अपना जी बहलाने के लिए फिर से पियानो का अभ्यास शुरू कर सकती हो।"

"किन्तु अब मेरा पियानो कौन सुनेगा। यदि अन्त में मुझे जेल जाना पड़ा तो?"

"वहां भी संगीत का स्थान रहेगा ही। स्त्रियों की जेल में संगीत की व्यवस्था अनिवार्य है। आज कल तो कारखानों में भी संगीत का प्रबन्ध किया जा रहा है।"

बेस रोने लगी। उसकी हिचकियां बंध गयीं। लैनी क्षण भर के लिये स्तब्ध रह गया। इसके पूर्व उसने बेस को इस प्रकार रोते हुए न देखा था। बेस ने अपना मुंह दोनों हाथों से ढक लिया और सिसकने लगी। लैनी ने मन ही मन निश्चय किया कि यह उपयुक्त अवसर है। उसने कोमल स्वर में कहा, "सुनो बेस, मैं टेलीफोन करके एस्थर को बुलाए लेता हूँ। वे तुरन्त आ जाएंगी—इसका मुझे

पूर्ण विश्वास है। मैं जानता हूं कि तुम इस समय बहुत ही दुःखी हो किन्तु इस रूप में तुम्हें देखकर एस्थर की प्रसन्नता की कोई सीमा न रहेगी।"

"अच्छा, लैनी। बुला लो।" बेस ने कहा। लैनी तुरन्त टेलीफोन की ओर बढ़ गया।

लाइन जुड़ने में कोई कठिनाई न हुई। सौभाग्यवश एस्थर इस समय घर पर थीं।

"मैं हूं लैनी। बेस के फ्लैट से बोल रहा हूं। बेस तुमसे मिलना चाहती है। —नहीं वह बीमार नहीं है। किन्तु वह तुमसे मिलने के किये उत्सुक है। देरी मत करो। पहली ट्रेन से रवाना हो जाओ। नहीं, कोई चिन्ता की बात नहीं है—वह सकुशल है। किन्तु इस समय उसके सामने एक बौद्धिक संकट उपस्थित हो गया है। नहीं, इस समय कुछ मत पूछो। फौरन चली आओ। ठीक है।"

टेलीफोन करके लैनी ने बेस को बता दिया। कि एस्थर पहली गाड़ी से रवाना हो रही हैं। लैनी ने देखा कि वह आवश्यकता से अधिक बोल चुका है। "मेरी प्यारी बहन बेस मैं अधिक समय तक कुर्सी पर बैठा नहीं रह सकता। मैं अब भी बहुत कमजोर हूं। इस लिए मुझे थोड़ी देर के लिए लेट कर एक झपकी ले लेने दो।"

बेस के कमरे में एक ही पलंग था। उसने इस पर लैनी को लिटा दिया। लेटने के पहले लैनी ने बेस को चेतावनी दे दी कि यदि दरवाजे की घण्टी बजे तो वह तुरन्त दरवाजा न खोल दे बल्कि इस बात का निश्चय कर ले कि आगन्तुक कौन है। यदि आगन्तुक मास्को से आने वाला कम्युनिस्ट अधिकारी हो तो बड किसी भी अवस्था में दरवाजा न खोले। 'शायद तुम्हें उससे कोई भय न लगता हो। किन्तु मुझे लगता है।' उसने मुस्करा कर कहा।

इसके बाद वह सो गया। नींद कितनी सुन्दर वस्तु है इसका अनुभव लैनी को कम्युनिस्ट जेल से छूटने के बाद ही हुआ था। उस नारकीय यन्त्रणा ने उसके अवचेतन मन में एक गांठ सी डाल दी थी। यहां अमेरिका में भी उसकी नींद खुलती तो उसे तुरन्त उन भयानक 'परीक्षकों' का ध्यान आ जाता।

थोडी ही देर में कमरे के अन्दर अस्फट शब्दों की एक ध्वनि गूंज उठी।

लैनी समझ गया कि एस्थर आ गयी है। लैनी पलंग से उतर कर बेस के कमरे में गया। वहां उसने जो दृश्य देखा उसने उसे क्षण भर के लिए अभिभूत कर दिया। मां बेटी दोनों एक सोफे पर बैठी हुई थीं। बेस का सिर एस्थर की गोद में था। दोनों की आंखें लाल थीं। लैनी समझ गया कि दोनों हृदय आपस में मिल गये हैं और अब चिन्ता की कोई बात नहीं है। रोना धोना स्त्रियों का काम था। इसमें पुरुषों का कोई स्थान न था। फलस्वरूप वह दो एक बातें करके वापस एडगरमीयर चला गया। घर पहुंच कर उसने लारेल को सब कुछ बता दिया। अब इसे छिपा कर रखने की कोई आवश्यकता भी न थी।

किन्तु उसने एक बात छिपा ली। उसने लारेल को यह भेद न बताया कि बेस पर कम्युनिस्ट पार्टी का संदेह उत्पन्न होने का कारण वह वक्तव्य है जो उसने प्रेन्जलाअरबर्ग की जेल में दिया था। लैनी ने मन ही मन यह निश्चय कर लिया था कि फिलहाल वह इस भेद को प्रकट न करेगा। उसने अपनी बहन का भाग्य अपने हाथों में ले लिया था। किन्तु उसके अन्तर्मन में एक द्वन्द्व उठ रहा था। उसने बेस का उपकार किया या अपकार? इस द्वन्द्व में विजय लैनी के विवेक की ही हुई। उसने निश्चय किया कि और कुछ भी क्यों न हो वह हैन्सी और रोज़ के सुख में किसी प्रकार की बाधा न उपस्थित होने देगा। उसने लारेल से इस सम्बन्ध में विचार विनिमय किया। लारेल ने भी यही मत प्रदर्शित किया कि हैन्सी को बेस के हृदय परिवर्त्तन की बात न बतायी जाय क्योंकि इससे उसका मन डांवाडोल हो उठेगा और नये दाम्पत्य जीवन की शान्ति भंग हो जायगी।

(६)

इस प्रकार एक भयानक यात्रा के बाद लैनी फिर अपने घर लौट आया। इस बार उसने लारेल को यह आश्वासन दे दिया कि वह कुछ समय तक बाहर न जायगा। उसने अपने बच्चों की ओर ध्यान लगाया। वे बच्चे कितने सुन्दर थे! लैनी को उनके साथ अपना परिचय फिर से पैदा करना था। लैनी के बड़े बच्चे को उसके पिता के कटु अनुभवों की पूरी बात न बतायी गयी थी; केवल इतना ही बताया गया था कि कुछ बदमाश उसके पिता को उठा ले गये थे। किन्तु

बालक की कोमल कल्पना के लिये इतना ही प्रर्याप्त था। वह भांति भांति की कल्पनाएं करने लगा था। उसे अपने बगान की प्रत्येक झाड़ी के पीछे ये बदमाश व्यक्ति छिपे हुए दिखाई देते थे। वह अपने हाथ में छड़ी लेकर इन काल्पनिक बदमाशों से लड़ने के लिए निकल पड़ता था और एक एक का संहार करके अपने पिता का उद्धार करता रहता था! उसकी छड़ी एक सहस्रमुखी मशीन गन बन गयी थी। और प्रत्येक झाड़ी शत्रुओं का एक भयानक गढ़! लारेल स्वभाव से ही एक शान्तिप्रिय महिला थी। उसे अपने पुत्र के अन्दर इस प्रकार की भयानक प्रवृत्तियों का सृजन होते देख कर बड़ा भय होता था। कभी कभी वह सचमुच सिहर उठती थी।

एक बात और भी थी। लारेल का सिद्धांत था कि बच्चों के मस्तिष्कों को आवश्यकता से अधिक उत्तेजना न मिलनी चाहिये। किन्तु उसके पुत्र ने वर्णमाला के साथ अपना परिचय प्राप्त कर लिया था और अब शब्दों के रहस्य लोक में प्रवेश करने के लिये आवश्यकना से अधिक उत्सुकता दिखा रहा था। वह समाचार पत्रों तथा मासिक पत्रिकाओं से अपना ज्ञान संवर्धन करने का भयानक प्रयत्न करने लगा था। वह समाचार पत्रों के शीर्षकों को पढ़ने लगा था—जिन शीर्षकों का अर्थ उसकी समझ में न आता था उन्हें वह छोड़ न देता था बल्कि नौकरों के पास जाकर उन अक्षरों का भेद समझने का प्रयत्न करता था। बाल-साहित्य के स्वप्निल संसार के साथ भी उसने घनिष्ट परिचय प्राप्त कर लिया था। इससे लारेल को बड़ी चिन्ता हो रही थी। किन्तु लैनी का कहना था कि कोई चिन्ता की बात नहीं है। बाल-साहित्य बच्चों के लिये ही लिखा जाता है। बच्चे बड़े हो जाते हैं तब उनके मस्तिष्क से इस साहित्य के सारे संस्कार भी अपने आप मिट जाते हैं।

लैनी की बच्ची भी अब अपने पैरों पर चलना और बोलना सीख रही थी।

उसकी शिक्षा दीक्षा नियमानुकूल रूप में चल रही थी। संक्षेप में लैनी परिवार के अन्दर सब कुछ ठीक था केवल इस बात की आवश्यकता थी कि लैनी कुछ दिनों तक घर पर ही रहे और बाहर जाने का संकल्प न करे। लैनी की अनुपस्थिति में रिक और नीना ने शान्ति परिवार का काम सम्हाला था। अब

इस बात की आवश्यकता थी कि उन्हें कुछ दिनों के लिए छुट्टी मिले। इर्मा और सेडी न्यूयार्क आ रहे थे। वे इङ्गलैंड से रुपया न ला सकते थे किन्तु अमेरिका में भी इर्मा के पास पर्याप्त रुपया था। उन लोगों ने यह योजना बनाई थी कि जाड़ा फ्लोरिडा में बिताया जाय। स्क्रबी और फ्रांसेस ने निश्चय किया था कि वे मोटर द्वारा फ्लोरिडा जाकर इर्मा से मिलेंगे।

ऐसी अवस्था में यह स्पष्ट था कि शान्ति-परिवार का काम सम्हालने के लिये लैनी अकेला रह जायगा। यह भी स्पष्ट था कि अशान्ति के वातावरण में शान्ति-परिवार की पुरानी रट ज्यों की त्यों चलती रहेगी। यह एक विचित्र समस्या थी।

यह बात भली भांति स्पष्ट थी कि शत्रु शान्ति का नहीं बल्कि युद्ध का इच्छुक है और वह प्रति क्षण युद्ध की तयारी कर रहा है। किन्तु यह सब जानते हुए भी इस ओर से शान्ति की रट लगाते रहना आवश्यक था। यह इसलिये आवश्यक था क्योंकि शत्रु का विशालकाय प्रचार यंत्र अनवरत रूप में घूम रहा था। वह मित्र राष्ट्रों पर 'युद्ध-पिपासु' होने का अभियोग लगा रहा था। इसलिये मन में इच्छा न रहते हुए भी प्रत्येक शान्ति सम्मेलन में भाग लेना आवश्यक था, प्रत्येक शान्ति-वार्ता में योगदान करना अनिवार्य था। इसके बाद इन शान्ति-वार्त्ताओं की असफलता पर प्रकाश डालते हुए अपनी स्थिति को स्पष्ट करना भी आवश्यक हो जाता था। जनता को समझाना पड़ता था कि शान्ति की दिशा में होनेवाले प्रयत्न क्यों और कैसे असफल हुए।

स्टालिन का हृदय-परिवर्त्तन असम्भव था, उसे शान्ति के पक्ष में लाने की कोई आशा न थी। शान्ति और सहयोग की बातों का उस पर किंचित मात्र प्रभाव न पड़ता था। किन्तु स्टालिन ही सारा रूस न था। रूस की बात सोचते समय वहां के करोड़ों भोले भाले नागरिकों की बात भी सोचनी पड़ती थी—उन नागरिकों की जो स्टालिन के अत्याचार के अंदर प्रतिक्षण पिस रहे थे। वे बेचारे केवल स्टालिन का प्रचार ही सुन पाते थे; शेष संसार के साथ उनका कोई सम्बन्ध न था। तानाशाह भले ही युद्ध और गुलामी की बातें सोचते रहें किन्तु जनता सदा शान्ति और स्वतन्त्रता के स्वप्न देखती रहती है। इस बात की

आवश्यकता रहती है कि आप जनता के हृदय तक पहुँचने का प्रयत्न करें और उसके दुःख सुख के प्रति एक सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण लें। आपको भले ही 'युद्ध-पिपासु' घोषित कर दिया जाय किन्तु आप को बराबर शान्ति की बातें करते रहना होगा, शान्ति की प्रशंसा करते रहना होगा, शान्ति के लिये अनुरोध करते रहना होगा। आपको इस बात पर प्रकाश डालना होगा कि शान्ति के पथ पर बाधा कौन उपस्थित कर रहा है—आप या आपका शत्रु ?

(७)

लैनी और लारेल योरोप से यह विश्वास लेकर लौटे थे कि कम्युनिस्टों के प्रचार के सामने मित्र राष्ट्रों का प्रचार फीका पड़ जाता है। इसका कारण यह था कि मित्र राष्ट्र अपने शत्रु के वास्तविक स्वरूप को समझने का प्रयत्न न करते थे और वे प्रचार के महत्व को भी भलीभांति न समझ पाते थे। कम्युनिस्ट लोग अपने बन्दी देशों की जनता को धोखा देकर अपने पक्ष में मिलाने के लिये पानी की भांति रुपया बहाते रहते थे। वे योरोप, एशिया तथा अफ्रीका की दरिद्र जनता को अपनी ओर फोड़ लेने के लिये सतत प्रयत्नशील रहते थे। प्रतिवर्ष वे अपने प्रचार कार्य पर अरबों रुपये खर्च करते थे। किन्तु अमेरिका की कांग्रेस नाना प्रकार के अनुनय विनय के बाद थोड़ा सा रुपया ही प्रचार कार्य के लिये स्वीकृत करती थी। आवश्यकता इस बात की थी कि शत्रु के प्रचार का दृढ़ता के साथ सामना किया जाय। संसार के पददलित समाज के सामने यह बात स्पष्ट करना आवश्यक था कि अमेरिका पूंजीपतियों और जमींदारों का देश नहीं बल्कि स्वाधीनता का देश है—वाशिन्गटन और जेफर्सन का देश है—जैक्सन, लिन्कन और रूजवेल्ट का देश है। वह अत्याचार और निरंकुशता का नहीं बल्कि मानवता का देश है—टाम पायन, पैट्रिक हेनरी, जीने डेब्स, ह्विटियर, ह्विटमन और एमर्सन का देश !

ये नाम आज भी अर्थशून्य नहीं हुए हैं; आज भी इनका आकर्षण समाप्त नहीं हुआ है। स्वतन्त्र संसार के युवकों के हृदय और मस्तिष्क को ये आज भी स्पर्श करते हैं। इन युवकों को सावधान करना आज नितान्त आवश्यक भी है। स्टालिन ने उनको अपनी ओर आकर्षित करने के लिये एक लुभावना जाल फैला

रखा है। एक बार इस जाल में फंस जाने के बाद वे सदा के लिये दासता की बेड़ियों में जकड़ जाएंगे। मित्र राष्ट्रों के लिये यह आवश्यक है कि वे इन युवकों को स्वाधीनता का सच्चा पथ दिखाएं। यह स्वाधीनता केवल राजनैतिक ही नहीं बल्कि आर्थिक भी हो।

लैनी ने रेडियो पर भाषण दिया :

"यह सोचना एक भयानक भूल होगी कि एशिया और अफ्रीका के करोड़ों भूखे लोग हमारे दास बनना स्वीकार करेंगे। यह सोचना भी भयानक भूल होगी कि हम अपने देश के करोड़ों मजदूरों के संगठित सहयोग के बिना शब्द-युद्ध अथवा वास्तविक युद्ध में विजयी होंगे। यह आशा रखना व्यर्थ है कि हम अपनी जनता के एक बड़े भाग को असन्तुष्ट रख कर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकेंगे। हमें आज स्पष्ट रूप में इस बात को समझ लेना चाहिये कि विकास-वाद का सिद्धान्त केवल राजनैतिक क्षेत्र पर नहीं बल्कि आर्थिक क्षेत्र पर भी लागू पड़ता है। हमें अन्य देशों के लोगों के आदर्शों तथा आवश्यकताओं को समझने का प्रयत्न करना चाहिये। स्टालिन उन्हें भांति भांति के प्रलोभन दे रहा है; हमें उन्हें वास्तविक सहायता देनी चाहिये और यह स्पष्ट कर देना चाहिये कि स्टालिन के आश्वासनों की भांति हमारे आश्वासन धोखा नहीं हैं: वे वास्तविक और व्यवहारिक हैं।

"हमें शीघ्रता से काम करना होगा। स्टालिन हमारे साथ होड़ लगा रहा है। वह चूहे के बिल के पास बैठी हुई बिल्ली की भांति हमारे प्रत्येक कदम पर सतर्क दृष्टि रखे हुए है। वह हमारी सारी निर्बलताओं को जानता है और उनसे लाभ उठाने का प्रयत्न करता रहता है। वह अपनी योजनाओं को गुप्त रख सकता है—तानाशाही को यह सुविधा प्राप्त है; किन्तु गणतन्त्र को खुलेआम काम करना पड़ता है। यह ऊपर से देखने पर गणतांत्रिक शासन व्यवस्था की निर्बलता प्रतीत होती है; किन्तु विचार करने पर यही गणतन्त्र की वास्तविक शक्ति प्रतीत होगी।

"टाम पाइन ने अमरीकी राज्यक्रान्ति के समय घोषणा की थी कि—यह वह समय है जो मनुष्य की आत्मा की परीक्षा लेता है। आज हमें फिर से वही

दृष्टिकोण अपनाना चाहिये। हमें दूरदर्शिता और साहस के साथ वस्तुस्थिति पर विचार करना चाहिये। यह कहना कोई अतिशयोक्ति न होगी कि आज हमारी सम्पूर्ण सभ्यता—हमारी सम्पूर्ण बौद्धिक तथा नैतिक संस्कृति—एक संक्रमण काल से गुजर रही है। यदि स्टालिन की विजय हुई तो इस सभ्यता का लोप हो जायगा। केवल इतना ही नहीं, इस बात की सम्भावना भी है कि स्टालिन की पराजय होने पर भी इस सभ्यता का अस्तित्व न रह जाय। हमारे लिये सैनिक प्रतिरोध की व्यवस्था करना आवश्यक है, किन्तु उससे भी अधिक आवश्यक है बौद्धिक तथा नैतिक प्रतिरोध। हमें आज अपने इस नये कर्त्तव्य के प्रति वैसी ही जागरूकता दिखानी चाहिये जैसी कि हमारे पूर्वजों ने फोर्ज और गैटीसबर्ग की घाटियों में दिखाई थी।

'हमें संसार के जन साधारण के हृदय और मस्तिष्क पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिये। हमें उन्हें कम्युनिज्म की झूठी आशाओं के मायाजाल से निकालने की चेष्टा करनी चाहिये। हमें जन साधारण के सामने स्वाधीनता और गणतन्त्र के आदर्श को उपस्थित करना चाहिए। हमारा यह आदर्श केवल राजनैतिक स्वाधीनता का न हो बल्कि वह आर्थिक स्वाधीनता का भी हो। सत्य हमारी ओर है किन्तु वह हमारी रक्षा तभी कर सकता है जब हम उसकी रक्षा के लिये कृतसंकल्प हो उठें। हमें आज फिर से उन पुनीत शब्दों की आत्मा को जाग्रत करना है जो टामस जेफर्सन ने लिपिबद्ध किये थे और जिन पर हमारे पठपन महान पूर्वजों ने अपने हस्ताक्षर किये थे· 'इस घोषणापत्र का पुष्टीकरण करते हुए और ईश्वर की सहायता पर अडिग विश्वास रखते हुए हम एक दूसरे की रक्षा के लिये अपने जीवन, अपने धन और अपने पवित्र सम्मान की शपथ लेते हैं।'

